गीत संजीवनी

संपादक
डॉ. प्रणव पण्ड्या

आत्मीय निवेदन, समझें और लाभ उठायें

युग ऋषि (**वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. आचार्य श्रीराम शर्मा**)ने विचार क्रांति को गति देने के लिए संगीत को प्रवचनों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली बताया है।

उनके अनुसार किसी वक्ता का प्रवचन सुनने लोग तभी इकट्‌ठे होते हैं, जब वह कोई प्रसिद्ध वक्ता, प्रतिष्ठित संत या नेता हो। लेकिन संगीत इन बाधाओं से मुक्त है। यदि किसी का कंठ सरस और भाव अच्छे हैं तो संगीत सुनने के लिए अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित सब इकट्‌ठे हो

जाते हैं। इसके अलावा संगीत में विचार के साथ भावनाओं को भी छूने की असाधारण क्षमता होती है। भारत की धर्मप्राण जनता के भावों को प्रभावित करने में जितना प्रभाव धार्मिक कर्मकाण्ड का (धर्मतंत्र से लोकशिक्षण) होता है लगभग उतना ही संगीत का भी होता है।

युगऋषि के निर्देशन एवं अनुशासन में जन जागरण के लिए युग गायनों के विकास और विस्तार पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। यह विधा बहुत लोकप्रिय भी हुई है। जिस तरह युग निर्माण आंदोलन के अन्तर्गत होने वाले यज्ञों के यज्ञाचार्यों के बारे में कोई नहीं पूछता, उसी प्रकार युग संगीत की टोली में कौन कलाकार आ रहे हैं यह भी कोई नहीं पूछता। बस युग

निर्माण मंच, युग संगीत की टोली होने का प्रचार जन–जन को आकर्षित करने के लिए प्रर्याप्त होता है।

भारत विशाल जनसंख्या वाला देश है। क्षेत्रों की आवश्यकता को देखते हुए युगसंगीत की टोलियों की संख्या बढ़ाना जरूरी हो गया है। क्षेत्र में पूर्णकालीन न सही थोड़ा–थोड़ा समय दे सकने वाले संगीतज्ञ ऐसी पर्याप्त संख्या में तैयार हो रहे हैं। यह '**गीत संजीवनी**' संगीत संग्रह ऐसे ही युग संगीतज्ञों को सहयोग देने की दृष्टि से तैयार की गई है।

इसमें वे संगीत, भजन आदि शामिल किए गये हैं, जो जनता के बीच बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। इनमें **वन्दना, भजन, राष्ट्र जागरण,**

व्यसनमुक्ति, कुरीति उन्मूलन, सत्प्रवृत्ति संवर्धन, नारी जागरण, साधना, शिक्षा, स्वावलम्बन आदि विविध आंदोलनों से संबधित गीत हैं। क्षेत्रीय युग संगीत की टोलियाँ इनका उपयोग विवेक- पूर्वक करें तो किसी भी प्रकार के जन समूह में युग विचारों का संचार सहज एवं सरस ढंग से किया जा सकता है। यदि थोड़ा सा अध्ययन करके, इनके साथ बीच में संक्षिप्त सार्थक टिप्पणियों का अभ्यास किया जा सके फिर तो कहना ही क्या है? इस प्रकार भजनोपदेश जैसी शैली के आधार पर छोटी-छोटी संगीत टोलियाँ बड़े-बड़े उपदेशकों से अधिक प्रभाव फैला सकती है।

आशा की जाती है कि युगक्रांति के लिए युग संगीत की विधा का

प्रयोग करने वाले लोकसेवी '**गीत संजीवनी**' पुस्तिका का भरपूर लाभ उठायेंगे इस छोटे से प्रयास को सार्थक बनायेंगे।

विषय-सूची

अ

33 वन्दना प्रार्थना
44 अब नवयुग की गंगोत्री....
46 अवतरित हुई माँ गायत्री...
48 अनुदान और वरदान...
51 अपनी राह चला लो...
54 अगर हम नहीं देश के...
56 अब फिर से सतयुग...
59 अपनी भक्ति का अमृत...
62 अन्धकार आसुरी वृत्ति का
64 अपना रूप निहारो री...
66 अब तेरा दुःख दर्द हृदय...
70 अनुदानों का ऋण चुका...
72 अद्वितीय है निर्माणों में...
76 अब सौंप दिया इस जीवन..

आ

77 आदमी-आदमी को सुहाता.
82 आज जरूरत भारत माँ...
84 आज आपके लिए दिलों...
87 आदि शक्ति भगवती...
89 आ जाना बन ध्यान...
91 आइए श्रेष्ठ जन शुभ...
94 आओ-आओ सुहागिन...
96 आओ मन में बसालें...
98 आदिशक्ति तुम वीर प्रसूता.
101 आया-आया युग परिवर्तन..
105 आप हैं गुरुरूप भगवन...
107 आपके पूत हैं प्यार भी है...
110 आज ऐसी कृपा आप कर...
114 आज मोहे गुरुवर की...
116 आत्म साधना ऐसी हो...
119 आप हैं प्राणों के आधार...
121 आदत बुरी सुधार लो....
123 आयुर्वेद महान जगत में...
126 आपका स्वागत है श्रीमान्..
128 आप क्या मिल गये...

132 आज बेचैन है स्वर्ग की...
134 आपसे माँ ! हमें यह...
138 आओ शिव संकल्प करें...
140 आज युग पुकारता जाग...
142 आज दाँव पर लगा देश...

इ-ई

146 इस धरा के लिए इस...
148 इतने रत्न दिये हैं कैसे...
151 इन्सान से नफ़रत करते...
153 इस दहेज ने ही फैलाया...
156 इतनी शक्ति हमें देना...
158 इन दिनों बात उनसे...
162 इस कुल का ये दीपक...
163 इन्द्र धनुष सी छटा निराली
166 इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों...
169 इस विवाह में वर वालों...

उ ऊ

171 उठो जवान देश के...
174 उठो-उठो हे मातृशक्ति...
176 उन चरणों को पूजो...

178 उनके पद चिन्हों पर...
182 उठो सुनो प्राची से उगते...
187 उगो सूर्य की तरह गगन...
189 उठो प्रबुद्ध नारियों...

ए ऐ

192 एक तुम्ही आधार सद्गुरु..
194 ऐसा कोई सुमन नहीं...
197 ऐसी भी क्या कायरता...
200 ऐ मेरे दिल के टुकड़ों...
204 ऐसी कृपा करो जग...
206 एक दिन ही जी मगर...
209 ऐ धरती के रहने वालों...
211 ऐसी ज्योति जगा जगदम्बे.
214 एक रहेंगे, नेक रहेंगे...
217 ऐ हिन्द देश के लोगों...
219 ऐ वतन गम न कर...
222 एक ही आधार गुरुवर...

ओ औ

225 ओऽम नमः नमो ओंकार...
227 ओ सपूतों भारत की...

229 ओऽम भूः ओऽम भुवः
231 ओ बहिनों माताओं आओ..
234 ओ धर्म की पताका फहरो..
237 औरों के हित जो जीता है...

क

240 कर रहे भाव पूजन तुम्हारा
242 किसी के काम जो आये...
245 कोठरी मन की सदा रख...
249 क्रांति का अध्याय लिखकर
253 कुल की परम्परा मर्यादा...
255 कर रहे हैं साधना हम...
258 कर्मों के फल से न बचोगे..
261 कर लो माँ स्वीकार हमारे..
263 काटना है अगर जिन्दगी...
266 किये मंत्र जप माला फेरी...
268 क्यों न गुरु को करें हम...
271 करें व्यक्ति निर्माण धरा...
273 कसकर कमर खड़े हो...
276 कहाँ छुपा बैठा है अब...
278 कौमी तिरंगे झण्डे...

ग

280 गुरु तेरे कौन-कौन गुण...
282 गुरुवर दया के सागर...
285 गुरु तेरे चरणों में...
287 गुरु बिन ज्ञान नहीं नहीं...
289 गुरुवर तुम्हीं बतादा...
292 गुरु की छाया में...
294 गुरुदेव आप ऐसी झंकार...
297 गुरु ही नैया (अ)...
301 गुरु बिन कौन लगावे...
302 गायत्री यज्ञ हेतु आइये...
305 गुरु ही नैया (ब)...
307 गुरु ब्रह्मा हैं, विष्णु वही हैं..
310 गाये जा गाये जा...
312 गुरुवर ने सौंपी पीर...
315 गुरुवर हम शिष्य कहाते...
318 गुरु का अमृत मिला...
321 गँवा दिया किस लिए बावरे
323 गुरुदेव इस अधम पर...
326 गुरु चरणों में आकर देखा.
328 गुरु रूप की तुम्हारे...

331 गायत्री माँ की उपासना...
333 गढ़ फिर कोई दीप नया...
338 गायत्रीमय आप हो गये...
340 गुरुसत्ता का मिला हमें...
342 गुरु महिमा है अपार...
344 ग्राम स्वावलम्बन...
346 गिरिजा गिरे न मस्ज़िद...
349 गायत्री के महामंत्र से...

घ

351 घर-घर में निराली ज्योति...
354 घने अंधेरे में हम घिरे...
355 घर-घर अलख जगायेंगे...
358 घर-घर नगर-नगर में...
360 घड़ी संकट भरी यह...

च

363 चन्दन सी इस देश की...
365 चल-चल, चल ओ साथी...
369 चलो गुरुदेव के सपने...
373 चार दिन की जिन्दगी...
376 चलो करें स्वागत...
378 चलो रे मन शान्तिकुञ्ज...
380 चलो रे मन शान्तिकुञ्ज...

383 चलेंगे हम जगत जननी...
385 चरणों में तेरे जीना मरना..
388 चाहते यदि बनाना जगत...
390 चाहता है यदि सफलता...

ज

393 जब-जब पीड़ित पाप-पतन.
395 जगतवंद्य माँ शक्ति दो...
397 जपले हरि का नाम बन्दे...
400 जो नहीं दे सका कोई भी...
403 जागेगा इन्सान जमाना...
404 जुट जायें हम सब मिलकर
407 ज्योति पुंज के द्वार साँझ...
410 जीवन बन तू फूल समान...
412 ज्योति से ज्योति जगाओ...
414 जय महाकाल (संकीर्तन)...
416 जो अपना कर्तव्य उसी पर.
419 जन्म लिया आँवलखेड़ा...
421 जीवन के देवता को...
424 जन्म दिन पर सभी हम...
426 जाग गई नारियाँ सावधान.

428 जिस डाल पे बनकर फूल...
431 जो देते लहू वतन को...
433 जीवन बड़ा महान भाईयों..
436 जोश न ठंडा होने पाये...
438 जीवन ईश्वरीय अनुकम्पा..
441 जिसकी सांसे और पसीना.
443 जीवन के बुझते दीपों में...
446 जिन्दगी हवन करें...
448 जगदम्बे सविनय प्रणाम...
452 जिसने जल-जलकर...
453 जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं...
456 जब-जब, सौ-सौ बाँह...
459 जिसके हों पद्चिन्ह अमिट.
462 जय गणेश गणपति...
465 जन्म लिया फिर भागीरथ..
468 जय अम्बे जय जगदम्बे...
470 जब तक करुणा पिघल...
472 जब तक मिले न लक्ष्य...
474 जिन गुरु में साकार हो...
477 जन्म दिन के शुभ समय...

478 जवानों! निरर्थक जवानी...
483 जन्म शताब्दी वर्ष (अ)...
485 जन्म शताब्दी वर्ष (ब)...
487 जीवन खतम हुआ तो...
490 जब कभी असहाय तुम...

त

492 तुम्हारी शपथ हम...
496 तपःपूत यह कौन दमकता..
498 तुम्हारे पद्म चरणों में...
500 तू सत्‌चित आनन्दमयी...
502 तुम्हें प्यार से था बुलाया...
507 तपकर ज्योति अखण्ड...
509 तुम्हें आत्म मंदिर की...
511 तरुणाई को जमाना दे...
513 तुझमें ओऽम् मुझमें ओऽम्
515 तुम्हें जन्म दिन की बधाई..

थ

519 थाम लो भारत माँ के...

द

521 देव संस्कृति वेदना अनुभव.
524 दो हमें गुरुवर सहारा...
527 दुनियाँ आगे बढ़ती जाये...

529 देख खुला है द्वार पुजारी...
532 दीप हैं जलते रहेंगे...
534 दे न पाओ यदि मुझे...
537 दरबार हजारों हैं...
539 देश के रण बाँकुरों...
542 देवत्व को बचाने संघर्ष भी..
545 देव संस्कृति दिग्विजय को..
548 देव कलश आये बड़े भाग्य.
550 देवियाँ देश की जाग जायें..
553 दीपयज्ञ का पर्व आया है...
555 देवताओं की सामूहिक...

ध

563 धन्य है जिन्दगी यह हमारी
565 धरा पर अंधेरा बहुत छा...
568 धर्म ध्वजा फहरे गगन में...

न

571 नमो वेदमाता, नमो...
573 नमामि मातु भगवतीम्...
575 नटवर नागर नन्दा...
577 नये जगत की नयी...

579 नहीं स्वयं को अबला...
582 न सोचो अकेली किरण...
584 नौजवानों उन्हें याद कर...
588 नन्हें बच्चों आने वाले...
589 नौजवान देश के कर्णधार...
592 नारी तेरी साध सुगढ़...
594 नया युग क्यों? न आयेगा.
597 नशे आदमी को कर देते हैं.
599 नौजवानों उठो वक्त यह...
603 नर से नारायण बन जायें...
605 नौ जवानों जरा ख्याल...
607 नयी शक्ति दूँगा...
609 नारी युग जल्दी ही आयेगा
612 निष्ठा लगन परिश्रम से...

प

614 परिवर्तन के बिना न होता..
617 पवन सुगन्धित जैसे मन...
619 पाकर जन्म पिता के घर...
624 पाप-पतन से आज मनुज...
627 पितु-मातु सहायक स्वामी..

629 पर्यावरण बचाओ! धरती...
632 पूज्य गुरुवर शक्ति दे दो...
634 परम पिता से प्यार नहीं...
637 प्रभु के सुन्दर है सब नाम..
638 पुकारती नई धरा...
641 प्रगति पंथ पर एक साथ...
643 पाप ताप हर लेती सबके...
648 प्रभाती कोई दूर पर गा रहा
650 पाओगे जीवन का सार...

फ

652 फिर से संस्कार परिपाटी...
655 फिर अपने गाँवों को...

ब

657 बदला जाये दृष्टिकोण यदि..
660 बदल दो जमाना धरा...
663 बदलो अपनी चाल...
665 बिगुल बज गया महाक्रांति.
667 बहुत सो चुकी अब तो...
670 बड़े भाग्य से ये मनुज तन.
673 बिलख रहे होते सारे प्राणी.

675 बसायें एक नया संसार...
678 बढ़े चलो, बढ़े चलो...

भ

681 भारत वर्ष हमारा प्यारा...
683 भागीरथ तो गये किन्तु...
686 भक्ति की झंकार उर के...
688 भ्रम के भटकावे छोड़ो...
693 भारती पुकारती संस्कृति...
695 भारत है देश सबकी...

म

698 माँ तेरे चरणों में...
700 माता तेरे चरणों में...
703 माँ गायत्री प्रज्ञा माता...
705 माँ जैसे भी हैं हम...
707 माँ भगवती परमेश्वरी...
709 मनुज देवता बनें...
712 मिल न पाये सद्गुरु यदि..
714 मानव जीवन इस जगती...
716 महायज्ञ पर्व है यजन करो..
720 माँ! तू हम सबको वर दे...

722 महाकाल की चली सवारी..
725 माँ इतनी कृपा कर दे...
727 माँ उमड़ती जब हृदय में...
729 माँ की ममता पीकर...
731 मानवता का पतन देखकर.
735 मेरे घटवासी राम...
736 मंगल कलश सजाकर...
739 मिले गुरु से अनुदान...
741 मातृभूमि की माटी लेकर...
745 मातेश्वरी वर दे हमें...
747 महाकाल को नये सृजन...
750 मोर्चे जब जवानी संभाले...
752 मुसीबत कितनी ही आये...
754 महकना फूल सी बनकर...
757 मंदिर समझो मस्ज़िद...
759 मन रे ! बन जा कुशल...
762 मनुजता विकल है...
764 माँ बस यह वरदान चाहिए.
767 माँ शारदे वर दे हमें...

य

769 यह राह नहीं है फूलों की...
772 याद हमको आ रहे हो...
774 यदि तुम अपना मन धो...
776 युग-युग पूजित गायत्री...
778 युग-युग तक जग याद...
780 युगऋषि ने युग का तम...
782 युग की यही पुकार...
785 युगतीर्थ में जब साधक...
787 युग धर्म निभाने को...
791 युवा चेतना तू हिमालय...
793 युग-युग से हम खोज रहे..
796 ये हमारा वतन...
801 युवा शक्ति को झकझोरें...
803 ये है भारत की महिलाएँ...

र

806 रोम-रोम पुलकित हो...
808 राम और श्रीराम एक हैं...
813 रे मन! जीवन धन्य बना...
816 राहें नई दिखा जाता जो...
818 रामायण पर्याप्त न पढ़ना...

820 रंग बसन्ती प्रभा केशरी...
822 रंग लाने लगा त्याग ऋषि..
826 रोज खोया गँवाया है...
827 राष्ट्र के जागरण का समय.

ल

831 लागी रे लगन ओ माँ...
834 लाँघ चला सारी सीमायें...
836 लिया पाथेय भी पूरा...
839 लाखों घर बरबाद हो गये...
842 लाल ये मशाल पूज्य...

व

844 विवाह दिन पर सभी...
847 वरण आचार्य करने की...
848 वह सच्चाई आँखिन देखी...
851 विधाता तू हमारा है...
852 वेदमाता देवमाता...
854 विदाई ले रहे सबसे...
857 विश्वासों के दीप (अ)...
859 विश्वासों के दीप (ब)...
861 विश्व हमारा धरती अपनी..

864 वह शक्ति हमें दो दयानिधे.

स

865 सद्गुरु बिना किसी को...
867 सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने...
869 साथ दे जाओ जरा...
872 सबसे पहले स्वयं बदलने...
874 सुनों युगऋषि के जीवन...
879 समयदान और अंशदान...
881 समय आ गया नये सृजन..
883 सदा सुखी सम्पन ये जोड़ी.
886 सपूतों भारती के माँ तुम्हें..
888 स्वयं भगवान हमारे गुरु..
891 संस्कृति रही कराह...
893 स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन...
895 सजे दीपक के थाल...
898 सीख नहीं पाये चादर...
902 सत्संग की गंगा बहती है...
903 सावधान हो जाओ...
906 सत्संग है ज्ञान सरोवर...
908 सावधान होशियार...
912 सद्गुरु हमको सहारा...
913 सुनो सुनो भारत माता...

917 सद्‌गुरु के ही चरणों में...
919 साथियों! यदि हमें सिद्धियाँ
923 सही रूप उभरेगा उस दिन.
926 संग्राम जिन्दगी है...
928 सविता का ध्यान धरते...
931 सुप्त युग जाग्रत करो...
933 सौन्दर्य से तुम्हारे...
935 समय रहते जगो साथी...
938 संस्कारों की परम्परा...
940 स्वागत गीत (स्वागतम्...
942 सुख चाहें यदि नर जीवन..
943 सप्तऋषि आवाहन (गायन).
947 सर्वतोभद्र पूजन (गायन)..
964 संगीतमय शांतिपाठ...

श

965 शांतिकुंज गुरुकुल है...
968 शांतिकुंज की तरूणाई...
971 शायद रूठ गयी नारी से...
974 शारदे वरदान दे माँ...
976 शांतिकुंज सुन्दर है...

978 शत्-शत् तुमको प्रणाम...
981 शंख बजे दीप जले...

ह

984 हे हंस वाहिनी माँ...
986 हमें भक्ति दो माँ...
990 है यह सत्य अटल...
994 हर प्राणी में रूप तुम्हारा...
997 हे गुरुवर हे जग जननी...
999 हे ऋत्विज होताओं आओ...
1004 होता है सारे विश्व का...
1006 हमारा है यह दृढ़...
1009 हम गायत्री माँ के बेटे...
1012 हम बदलेंगे युग...
1014 हर दिनों से ये दिन...
1017 हरि ओम हरि ओम...
1020 हमको अपनी भारत...
1022 हमने आँगन नहीं...
1024 हे जगजननी मातु...
1027 हे गुरुवर श्रीराम...
1029 हे प्रभो! जीवन हमारा...

1032 हे जगजननी गायत्री...
1034 हम लौह खण्ड ही हैं...
1036 हम नव जाग्रति के...
1039 हो रहा हो संस्कृति...
1042 हरो विश्व विपदा...
1044 हाथ पर यूँ हाथ...
1048 है निमंत्रण पुनः ...
1051 हम अपने पथ को पा...
1053 हर युग का इतिहास...
1055 हमें फिर से धरा पर...
1058 होनहार देश के...
1061 हमने पायी थाह आज..
1063 हम सुरक्षित नहीं...
1068 हृदय से लगा लो...
1071 हे गुणधाम हे सुखधाम...
1074 हमें आपका स्नेह..
1077 हे गायत्री माता तेरी...
1078 हे प्रभो! अपनी कृपा...

ज्ञ+ऋ+श्र

1079 श्रीराम सद्गुणधाम...
1081 ज्ञान गंगा नहा ले मन...
1083 ऋतम्भरा माँ तुम्हें..

1086 श्रद्धा सहित जो आया...
1089 श्री राम भक्ति ऐसी...
1092 ऋषियों के तप त्याग...

आरती, प्रार्थना

1094 श्री गायत्री माता की...
1099 श्री गायत्री चालीसा....
1104 गायत्री स्तवन...
1110 यज्ञ महिमा...
1112 आरती श्री प्रज्ञा पुराण...
1115 आरती श्री गणेश जी...
1116 आरती श्री सद्गुरु...
1117 ॐ जय जगदीश हरे...
1120 श्रीभगवद् गीता आरती...
1122 श्री शिवजी की आरती ...
1124 श्री कृष्ण जी आरती ...

कृष्ण जन्माष्टमी

1127 जब जन्में कृष्ण भगवान.
1129 जग में पीड़ा पतन बढ़ा...
1131 हमको जीवन नीति...
1133 कृष्ण गोविन्द गोपाल...
1134 श्री राधे गोविन्दा मन...
1136 कृष्ण कन्हाई मेरे कृष्ण...

1137 सखी आज गोकूल में...
1139 कब आओगे कृष्ण...
1141 आओ चक्र सुदर्शन...
1142 जय गोविन्दा गोपाला...
1143 जो तू मिटाना चाहे...

धन्वन्तरि

1146 आयुर्वेद महान...
0893 स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन...
1147 वृक्ष देवता वन्दना...
1149 आरती धन्वन्तरि जी...

दीपावली पर्व

1150 आज दीप से दीप...
1153 आई दीवाली आई...
1155 प्रेम उमंगे खुशियाँ लाया
1156 दूर करेंगे तम अनीति को
1157 संदेश नया कुछ लाया
1159 दीप हैं जलते रहेंगे
1161 ज्योति जली घर घर मे
1163 दीपावली शुभ पर्व पर
1165 मिटायेंगे धरा पर

1168 शुभ दिवाली आ गई

महाशिवरात्रि पर्व

1170 जय-जय देव जय...

1172 हे! महादेव हे! महादेव

1174 सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

1175 बोले मेरी सांसो का

1176 संसार तुम्हारा जहाँ-जहा

1178 तुम भोले भाले शम्भू

1179 जय-जय आद्यशक्ति...

1181 हे! नीलकण्ठ त्रिपुरारी

1183 शिव शक्ति रूप भगवन्

1186 शिव का सुमिरन हर घड़ी

1187 शिव भोले हितकारी

होली पर्व

1189 मन का मैल मिटाने...

1192 मन में नव उल्लास भर...

1193 रंग बरसे मस्त मनायें...

1195 होली का पर्व देखो आया

1197 आया मंगल पर्व

1198 होली आई रे आई रे

1199 मस्ती में झूम जाओ

1202 होली खेलो आज मिल

1204 प्रज्ञा पुत्रों की टोली आई
1207 आओ हिलमिल खेलें रे
1209 खेलो खुशी से भैया
1211 प्यारी होली रंग रंगीली
1213 रंगों का ये मौसम
1214 होली के रंग से प्रभो
1216 समता का शंख बजाता
1217 रंग बसन्ती प्रभा केशरी
1219 होली का आया त्यौहार

अन्य गीत/ वन्दना

1222 प्यार तो है हमें जिन्दगी..
1225 प्यार है यदि हमें राम...
1228 इस तरह से रामनवमी...
1230 ओ लार्ड! यू आर दी काज़
1233 श्री गुरुपद चिन्ह (वन्दना

विषयानुसार गीतों की सूची

1236 वन्दना
1238 गायत्री महिमा
1239 गुरु महिमा (वन्दना)
1243 कलश यात्रा/यज्ञ
1243 महाकाल से साझेदारी
1245 कार्यकर्त्ता गोष्ठी

1247 नारी जागरण
1248 शान्तिकुञ्ज परिचय
1248 विद्यालय व युवाओं हेतु
1251 संस्कार परक
1252 कीर्तन/भजन
1253 मानव जीवन की गरिमा
1255 प्रेरणा गीत
1257 विदाई गीत
1258 दीपयज्ञ गीत
1259 आरती/प्रार्थना
1260 कृष्ण जन्माष्टमी
1260 धन्वतरि जयन्ती
1261 दीपावली पर्व
1261 महाशिवरात्रि पर्व
1262 होली पर्व
1263 रामनवमी पर्व

गुरु वन्दना (वन्दना-प्रार्थना)

ॐ अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोहस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धा-प्रज्ञायुता च या।।

हरने को अज्ञान-ज्ञान की ज्योति अखण्ड जलाई।
भू-पर लाने स्वर्ग योजना, युग निर्माण चलाई।।
ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित, जिनका जीवन सारा।
उन सद्गुरु श्रीराम चरण में, विनम्र प्रणाम हमारा।।

ॐ वन्दे बोधमयं नित्यं, गुरुं शंकररुपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोह्यपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।
ॐ मातरं भगवतीं देवीं, श्रीरामञ्च जगद्गुरुम्।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा, प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।
ॐ गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
ॐ अखण्डानन्दबोधाय, शिष्यसन्तापहारिणे।
सच्चिदानन्दरूपाय, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
नमोह्यस्तु गुरवे तस्मै, गायत्रीरूपिणे सदा।

यस्य वाग्मृतं हन्ति, विषं संसारसंज्ञकम्।।
ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम्।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधीसाक्षिभूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तं नमामि।

गुरु ही ज्ञान, ध्यान, जप, पूजा, गुरु विद्या विश्वास।
जो गुरु के गुण, गौरव जाने, गोविन्द उसके पास।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितम् येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ॐ यथा सूर्यस्य कान्तिस्तु, श्रीरामे विद्यते हिया।
सर्वशक्तिस्वरूपायै, दैव्ये भगवत्यै नमः।।

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वरनऊँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार।।
बुद्धि हीन तनु जानि कै, सुमिरौं पवन कुमार।
बल, बुधि, विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार।।

गणपति वन्दना

गजाननंभूतगणादिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतंशोकविनाशकारकं, नमामिविघ्नेश्वरपादपंकजम्॥

सरस्वती वन्दना

शुक्लांब्रह्मविचारसारपरमाम्, आद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्तेस्फाटिकमालिकांविदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदाम् शारदाम्॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।

या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती, निःशेषजाड्यापहा॥

गुरु परमात्मा रुप हैं, महिमा अमित अपार।
जो हिय में धारण करें, हों भवसागर पार।।
गुरुवर गुरुता दीजिए, हे पावन श्रीराम।
जन-जन के सुख-चैन हित, कभी न लें विश्राम।।
गुरु कुम्हार सिस कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्दर हाथ सहाय दे , बाहर मारै चोट।।

अभिषेकः

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः, ता नहृऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।
ॐ यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।
ॐ तस्माहृअरं गमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च
नः।।

मंगलाचरणम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाऽसस्तनूभिः व्यशेमहि देव हितं यदायुः।।

अग्नि स्थापना

ॐ अग्नेनयसुपथाराये, अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नमहृउक्तिं विधेम।।

दीप पूजनम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः
स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः
स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

शुभकामनाएँ

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त, यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिव वन्दना

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै ‘न’ काराय नमः शिवाय॥

महाकाल वन्दना

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं, प्रचण्ड झञ्झावृत्तिरोधसक्षमम्।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं, परं महाकालममुं नमाम्यहम्।।

श्रीराम वन्दना

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरन्तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्ति, पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः,

शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः, सर्व ꣳ शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः,
सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
सर्वारिष्ट-सुशान्तिर्भवतु॥

अब नवयुग की गंगोत्री

अब नवयुग की गंगोत्री से, बही ज्ञान की धारा है।
हम युग का निर्माण करेंगे, यह संकल्प हमारा है॥
गुरुसत्ता ने थकी मनुजता, को नूतन विश्वास दिया।
पतितों के उद्धार के लिए, उनने सदा प्रयास किया।
उनकी ही कारण सत्ता का, हमको सतत् सहारा है॥
हैं दीपक की तरह जलें हम, करने युग निर्माण चले।
जलती हुई मशाल हाथ में, लेकर अमर निशान चले।
आज असुरता के विनाश को, चमका यही दुधारा है॥

धरती के कोने-कोर्ने में, गली-गली मे जायेंगे।
तपी हवाओं से मुरझाई, कली-कली विकसायेंगे।
गुरु का चिंतन दु:खी मनुजता, की शीतल रसधारा है॥
नया ज्ञान का सूर्य उगेगा, तिमिर नहीं रह पायेगा।
मानव में देवत्व जगेगा, स्वर्ग धरा पर आयेगा।
अंधकार कितना ही हो पर, सूरज कभी न हारा है॥

मुक्तक-

ब्रह्मकमण्डल से धरती पर, उतर सुरसरी आई।
नवयुग के शङ्कर ने जिसके,लिए जटा फैलाई॥

हम उसका अमृत जल लेकर,जन–जन तक जायेंगे।
शाप मुक्त करने की अब तो, हमने शपथ उठाई॥

अवतरित हुई माँ गायत्री

अवतरित हुई माँ गायत्री, युग शक्ति बनी निश्चय जानो।
आ गया समय युग बदलेगा, इस काल शक्ति को पहचानो॥
जब–जब होता है धर्म नष्ट, बदली अधर्म की छाती है।
जब अनाचार बढ़ जाता है, यह मानवता दुःख पाती है।
तब कोई राम, कृष्ण, गौतम, गाँधी, इस भू–पर आते हैं।

पृथ्वी को देते अभय और, उसका संताप मिटाते हैं।
वह शपथ पुनः पूरी होगी, चिर सत्य यही है सच मानो॥
इस समय हमें भी चुप न बैठना, और सामने आना है।
अपनी–अपनी लाठी का बल दे, गोवर्धन उठवाना है।
बनकर वानर दे साथ राम का, पुनः सेतु बँधवाने में।
प्रज्ञावतार का यश फैले, घर–घर में और जमाने में।
तज स्वार्थ भाव परमार्थ मार्ग पर, चलने की मन में ठानो।
मन की संकल्प शक्ति मानव को, क्या से क्या कर देती है।
निष्क्रिय शरीर में गति मन में, नव चेतनता भर देती है।

व्रत लो युग के आवाहन पर, तत्काल दौड़ते जायेंगे।
युग धर्म निभाकर नवयुग के, अभिनव शिल्पी कहलायेंगे।
तुम महामनस्वी हो सब कुछ, कर सकते हो मनु संताने॥

मुक्तक

दुष्कर्मों की आँधी छाई, विपरीत धर्म आचरण हुआ।
युग-युग की रक्षा करने वाली, युगशक्ति का अवतरण हुआ॥

अनुदान और वरदान प्रभो!

अनुदान और वरदान प्रभो, जो माँगे उनको दे देना।

गुरुदेव! हमें निज अन्तर की, पीड़ा में हिस्सा दे देना॥

यह दर्द बड़ा दुर्लभ है, ऋषियों की थाती है।
शुभ ज्योति जहाँ टिकती है, यह ऐसी बाती है।
इसके बूते ही संभव है, जग की पीड़ा को धो देना॥

सुख सुविधाओं से चाहो, भर दो जग की झोली।
आशीर्वाद की चाहो, खेलो खुलकर होली।
पर हमको आकर्षण देकर, यह माँग नहीं झुठला देना॥

इसको पाकर शूरों ने, हँस-हँस बलिदान किया।
इसको सेया संतों ने, जग का कल्याण किया।

मन नहीं चाहता है अपना, उस परम्परा को खो देना॥
अधिकार हमारा भी है, इन्कार नहीं करना।
जो हक समझो दे देना, उपकार यही करना।
इस बाजी पर रक्खा हमने, सुख, वैभव, सारा ले लेना॥
हम भले बुरे जो भी हैं, गुरुवर के कहाते हैं।
बदनाम न हो यह रिश्ता, सब भाँति मनाते हैं।
तुम पीर कहाते हो हमको, वे पीर कहाने मत देना॥

मुक्तक–

प्रभो! हम माया जनित–सुख साधनों का क्या करेंगे?

जो तुम्हारा प्रिय बनाये, साधना वह ही करेंगे ?
बाँट दो उनको विपुल धन, स्वर्ग, यश जो माँगते हैं।
हम तुम्हारे हृदय की, संवेदना शुभ चाहते हैं।

अपनी राह चला लो गुरुवर

अपनी राह चला लो गुरुवर,अपनी राह चला लो।
हमें साथ ले, हाथ-हाथ ले,अपना रास रचा लो गुरुवर॥
    चरण हमारे,चाल तुम्हारी, नटवर! गतिलय, ताल तुम्हारी।
    रंगमंच के पात्र-मात्र हम,संयोजना,विशाल तुम्हारी।

पात्र,मंच पर होता जैसा,वैसा हमें बना दो गुरुवर।।
प्राण हमारे, साँस तुम्हारी,मात्र बाँसुरी देह हमारी।
जीवन का संगीत तुम्हारा,गीतों को है आश तुम्हारी।
प्राण फूँक,पोली बंसी में,शाश्वत स्वर में गा लो गुरुवर।।
मन मंदिर में मूर्ति तुम्हारी,प्राणों में है प्रीति तुम्हारी।
करो मूर्ति में प्राण,प्रतिष्ठा,वैसी जैसी कीर्ति तुम्हारी।
इस पत्थर जैसी काया में,जीवन शक्ति जगा दो गुरुवर।।
मंदिर में,क्यों रहे अंधेरा,आत्म ज्योति पर तम का घेरा।
वह प्रकाश फैले अन्तर में,रहे नहीं अज्ञान बसेरा।

तुम प्रकाश के सहज पुंज हो,बाती बुझी जला लो गुरुवर॥
जाग रहा युग,रहा न सोता,ज्ञान यज्ञ के साज संजोता।
महायज्ञ के आयोजन में,हम आहुति हों तुम हो होता।
जनमंगल के महायज्ञ में,आहुति हमें बना दो गुरुवर॥
जीवन आहुति का यश ले लें,स्वस्थ सुगन्धि सृष्टि में फैले।
हम जब पावन यज्ञ रचाएँ,फिर जन-मन त्रिताप क्यों झेले।
शापित,तापित जन जीवन पर,स्नेह सुधा बरसा दो गुरुवर॥

मुक्तक-

यह समय विकराल है,हर ओर काँटों की डगर।

दूर तक तम है घना, मंज़िल नहीं आती नज़र॥
थाम लो यह हाथ गुरुवर, धन्य हम हो जायेंगे।
छल न पायेगी हमें, कोई नयी भीषण भंवर॥

अगर हम नहीं देश के

अगर हम नहीं देश के काम आये।
धरा क्या कहेगी गगन क्या कहेगा?
चलो श्रम करें देश अपना संवारें।
युगों से चढ़ी जो खुमारी उतारें॥

अगर वक्त पर हम नहीं जाग पाये।
सुबह क्या कहेगी पवन क्या कहेगा?
मधुर गंध का अर्थ है खूब महके।
पड़े संकटों की भले मार चहके॥
अगर हम नहीं पुष्प सा मुस्कराये।
व्यथा क्या कहेगी चमन क्या कहेगा?
बहुत हो चुका, स्वर्ग भू-पर उतारें।
करें कुछ नया, स्वस्थ सोचें विचारें॥
अगर हम नहीं ज्योति बन झिलमिलाये।

निशा क्या कहेगी भुवन क्या कहेगा॥

मुक्तक

हे ईश! भारतवर्ष में, शत् बार हमारा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का, देशीय कारक कर्म हो॥
यदि देश हित मरना पड़े, हमको सहस्त्रों बार भी।
तो भी न हम इस कष्ट को, निज ध्यान में लायें कभी॥

अब फिर से सतयुग आयेगा

अब फिर से सतयुग आयेगा, यह बोल रहा है महाकाल।

निश्चय ही दुनियाँ बदलेगी, निश्चित ही परिवर्तन होगा।
नव भव्य भावना जागेगी, नवयुग का आरोहण होगा।
है कौन शक्ति जो रोक सके, अब काल चक्र की प्रबल चाल॥
है वर्ष हजारों बीत चुके, अन्यायों को सहते-सहते।
है बीत चुकी सदियाँ अनेक, इस कलियुग में रहते-रहते।
चल चुकी बहुत पर अब न चलेगी, कलि की कोई कुटिल चाल॥
अन्यायी अत्याचारी की अब, खैर नहीं निश्चित जानो।
सत्ता लोलुप मिट जायेंगे, चाहे मानो या न मानो।
अब खड़ा हो चुका जनमानस, ले महाक्रांति की नव मशाल॥

क्यों है निराश क्यों है हताश, तू है भारत माँ का सपूत।
आने वाले कल का तो तुझको, ही बनना है अग्रदूत।
इसलिए भीरुता छोड़ प्रकट, कर दे अपना पौरुष कराल॥

अब दूर नहीं है वह दिन जब, सबमें मानवता आयेगी।
सब ओर विश्व में सत्य न्याय की, धर्म ध्वजा फहरायेगी।
टूटेंगे सब ये क्षुद्र बाँध, लहरायेगा सागर विशाल॥

मुक्तक-

नहीं दिन दूर है अब वह, मनुज भगवान जब होगा।
नये इन्सान का युग का, नया निर्माण अब होगा॥

मनुज के आत्म गौरव का, पुनः उत्थान अब होगा।
जगत् में शांति का हर कण्ठ से, जयगान अब होगा।।

अपनी भक्ति का अमृत

अपनी भक्ति का अमृत पिला दो प्रभु।
पार नैया मेरी अब लगा दो प्रभु॥

मन का स्वामी हूँ मैं, मन मेरा दास है।
मन के मंदिर में भगवन्! तेरा वास है॥
अपनी ज्योति से, मन जगमगा दो प्रभु॥

हर समय ध्यान तुझमें लगाता रहूँ।
तेरे गुण अपने जीवन में लाता रहूँ॥
धर्म पथ का पथिक अब बना दो प्रभु॥

तू ही बन्धु मेरा–प्यारा सच्चा सखा।
तू ही रक्षक मेरा, स्वामी माता–पिता॥
अपनी गोदी में, अब तो बिठा लो प्रभु॥

तेरे ही ध्यान में, रहता हूँ मैं मगन।
तेरे दर्शन की मन को, लगी है लगन॥
द्वैत का अब ये, पर्दा हटा दो प्रभु॥

ज्योति की दो मुझे, एक अपनी किरण।
दीप्त हो जाये मेरा, यह अन्तः करण॥
मेरी कुटिया को, अब जगमगा दो प्रभु॥

मुक्तक-

नाथ! भक्ति का अमृत पिला दीजिए।
प्यास मन की सदा को मिटा दीजिए॥
वासना कामना का न चक्कर रहे।
प्रेम सागर में हमको डुबो दीजिए॥

अंधकार आसुरी वृत्ति का

अंधकार आसुरी वृत्ति का, जिसने दूर भगाया।
देवदूत उतरा धरती पर, जग पहचान न पाया॥
सुधा समझ विष के प्याले थे, हम हाथों में पकड़े।
पेट और प्रजनन–कारा में, सभी रात दिन जकड़े।
धोकर कल्मष पंक यहाँ, जिसने पंकज विकसाया॥
रहा जागता वह युग प्रहरी, हम सब बेसुध सोते।
मुस्कानों से रहे निरंतर, पीर परायी ढोते।
करती रही प्राण–मन शीतल, बोधि विटप की छाया॥

गूँज रही सतयुगी ऋचा सी, अब भी जिसकी वाणी।
दिखा रही दिग्भ्रांत जगत को, दिशा नयी कल्याणी।
दिया प्रकाश अखण्ड ज्योति का, दीपक दिव्य जलाया॥
फैले आज प्रखर प्रज्ञा के, सूक्ष्म जगत में कंपन।
बन सकते नर से नारायण, जुड़कर जिससे जन–जन।
छोड़ गई पद्चिन्ह क्रांति के, जिसकी पावन काया॥

मुक्तक–

आते पीर हमारी हरने, धरती पर भगवान स्वयं ही।
पर पहिचान नहीं पाता है, उनको भी इन्सान स्वयं ही॥

इस युग में भी युग दृष्टा ने, हमको राह बताई आकर।
अब दुर्भाग्य हमारा होगा, बन जाएँ नादान स्वयं ही॥

अपना रूप निहारो री

अपना रूप निहारो री बहिनों,
अपने को पहचानों री बहनों।
मत इतिहास बिसारो री बहिनों॥
राम कृष्ण की तुम हो माता।
तुम तो लव-कुश की निर्माता॥

भारत का भाग्य संवारो री बहिनों॥

तुम हो झाँसी की महारानी।
और तुम्हीं हो हाड़ा रानी॥
क्यों तुम हिम्मत हारो री बहिनों॥

तुम सोया देवत्व जगा दो।
लक्ष्मी हो घर स्वर्ग बना दो॥
धरती पर स्वर्ग उतारो री बहिनों॥

देश सृजन हित आगे आओ।
नारी की गरिमा दर्शाओ॥

अपना देश उबारो री बहिनों॥

मुक्तक–

नारी की गौरव गरिमा को–बहनों तुम्हें जगाना है।
गौरवमय इतिहास तुम्हारा–फिर से लिखा जाना है॥
राम, कृष्ण, गौतम गाँधी–व महावीर, गुरु नानक की।
माताओं की भव्य भूमिका–फिर से तुम्हें निभाना है॥

अब तेरा दुःख दर्द

अब तेरा दुःख दर्द हृदय का–माँ! हमने पहचाना।

इसीलिए तो पहन लिया है–यह केसरिया बाना॥
बहती है अब देश–देश में, उग्रवाद की धारा।
लगता जैसे लगा दाँव पर, है अस्तित्व हमारा॥
नफरत से हर हृदय झुलसता, देता हमें दिखाई।
अरे उसी बढ़ती ज्वाला में, जलती है तरुणाई॥
हर पल बढ़ती हुई आग से, हमको विश्व बचाना॥
यह बाना तप और त्याग की, खरी प्रेरणा देगा।
इसमें सारा विश्व नये, युग की किरणें देखेगा॥
दुर्भावों से यही मनुज का, रक्षक ढाल बनेगा।

अंधियारे में यही धधकती, हुई मशाल बनेगा॥
भरी नज़र से देख रहा है, इसकी तरफ ज़माना॥
तप बल से जो तपोनिष्ठ ने, ऊर्जा यहाँ जगाई।
धरती के हर कोने में है, वह ऊर्जा बिखराई॥
बिखरी हैं जो दिव्य शक्तियाँ, उन्हें साथ है लाना।
देववृत्तियों का अब फिर से, है संगठन बनाना॥
संघशक्ति से असुर वृत्ति का, अब है दम्भ मिटाना॥
जिसके ऋषियों ने धरती को, अनुपम ज्ञान दिया था।
वैभव संस्कृति शान्ति व्यवस्था, का अनुदान दिया था॥

जिसका है आभार विश्व के, हर अणु पर हर कण पर।
है प्रभाव मानवी चेतना, पर चरित्र-चिन्तन पर॥
ध्वज हमको अब इस संस्कृति का, जग में है फहराना॥

मुक्तक-

माता हम तेरे सपूत हैं, दुनियाँ को यह दिखला देंगे।
भेद भाव की खाई पाटकर, प्रेमभाव फिर विकसा देंगे॥
सबके हित में स्वार्थ त्याग का, व्रत अब हमने ठाना है।
इसी शपथ की याद दिलाता यह केशरिया बाना है॥

अनुदानों का ऋण

अनुदानों का ऋण चुका सकें, वह शक्ति हमें देना गुरूवर।
उपकार नहीं हम भुला सकें, अभिव्यक्ति हमें देना गुरूवर॥

जीवन का ताना-बाना ही है, बुना गया अनुदानों से।
ऋण भार नहीं चुक पायेगा, जीवन भर ही प्रतिदानों से।
हर साँस समर्पित करा सकें, वह शक्ति हमें देना गुरूवर॥

संयम तप त्याग साधनामय, जीवन जीने का बल देना।
प्रामाणिक जीवन जीने की, सामर्थ्य और सम्बल देना।
हम ऐसा साहस जुटा सकें, अनुरक्ति हमें देना गुरूवर॥

नादान बालकों सी न करें, माँगें हम खेल खिलौनों की।
प्रौढ़ों जैसी समझें बूझें, पीड़ायें दुखियों दीनों की।
परहित कष्टों को उठा सकें, सद्वृत्ति हमें देना गुरूवर।।
बालक होकर भी क्या गुरूवर, बन सकते ध्रुव प्रह्लाद नहीं।
पाकर तरुणाई रामकाज हित, हम क्यों करें प्रमाद कहीं।
प्रभुहित सब कुछ हम लुटा सकें, आसक्ति हमें देना गुरूवर।।
गुरुवर प्रकाश के पुञ्ज आप, हमको आलोक पिलाया है।
आलोक बाँटने का गुरुतर, दायित्व कि हम पर आया है।
जन मानस का तम मिटा सकें, वह युक्ति हमें देना गुरूवर।।

मुक्तक-

झोलियाँ भर दी हमारी आपने अनुदान से।
कर दिया हमको लबालब आपने वरदान से।।
अब चुकाने की हमें सामर्थ्य भी तो दीजिए।
हम समर्पित हैं चुकाने के लिए जी जान से।।

अद्वितीय है निर्माणों में

अद्वितीय है निर्माणों में, गुरुओं का निर्माण।
जिनने फूँके चलती फिरती, प्रतिमाओं में प्राण॥

विश्वामित्र और संदीपन, राम, कृष्ण निर्माता।
अंगुलिमाल, अम्बपाली का, जुड़ा बुद्ध से नाता॥
थे चाणक्य कि चन्द्रगुप्त के, अनुपम भाग्य विधाता।
और शिवाजी थे समर्थ के, सपनों के उद्‌गाता॥
गुरु के अनुदानों की महिमा, अनुपम और महान्॥

दयानन्द बन सके मूलशंकर, गुरु की गरिमा से।
बने विवेकानन्द नरेन्द्र भी, गुरुता की महिमा से॥
एकलव्य तो धन्य हुआ, केवल गुरु की प्रतिमा से।
बना जगत्‌गुरु देश हमारा, गुरुता की गरिमा से॥

पावनतम गुरु परम्परा के, अनगिन हैं अनुदान॥
किन्तु पात्रता प्रामाणिकता, और समर्पण भाव।
कर पाता है गुरु गरिमा का, ग्रहण अचूक प्रभाव॥
मृदु माटी का सहज समर्पण, वाला सरल स्वभाव।
कुम्भकार से रहने देता, नहीं दुराव छुपाव॥
तभी शिल्प को मिल पाते हैं, शिल्पी के वरदान॥
हमें मिला है इस युग में भी, ऐसा ही संयोग।
नहीं हाथ से जाने दें यह, अवसर और सुयोग॥
कर अपना शिष्यत्व प्रमाणित, करें अचूक प्रयोग।

ताकि कट सकें गुरु अनुकम्पा, से सारे भव रोग॥
करें समर्पण द्वारा आओ, नवयुग का उत्थान॥

मुक्तक-

जगत्गुरु था अगर भारत, तो था गुरु की कृपाओं से।
धरा, नभ गूँजते थे, उन्हीं की गुरुत्तर ऋचाओं से॥
उन्होंने शिष्य को पारस, परस से कर दिया कंचन।
समर्पण कर गुरू को, मुक्त हों, कल्मष कषायों से॥

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब भार तुम्हारे हाथों में।।
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब दोष समर्पित हैं, करतार तुम्हारे हाथों में।।
जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, गुरुदेव तुम्हारे हाथों में।।

मुझमें-तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

आदमी आदमी को

आदमी आदमी को सुहाता नहीं,
आदमी से अरे डर रहा आदमी।
हाल इतना बुरा है कि विश्वास भी,
आदमी पर नहीं कर रहा आदमी॥
पालतू पशु बने पात्र विश्वास के,

संग साथी बने वे रुदन हास के।
आज विश्वास पशु पर भले हम करें,
पर पड़ोसी न विश्वस्त हैं पास के ॥
है न विश्वास घाती मनुज से अधिक,
बस इसी भाव से भर रहा आदमी ॥
इस पतन का ही देखो ये परिणाम है,
इस तरह आदमी आज बदनाम है।
अस्मतें तक चुराने लगा यह अरे,
हाय! नैतिक पतन का यह अंजाम है ॥

आदमी–आदमी से बिचकने लगा,
कर्म ऐसे अरे कर रहा आदमी॥
ऐ मनुज! किस पतन गर्त में खो गया,
आज देवत्व तेरा कहाँ सो गया।
देवता भी तरसते थे जिस देह को,
उस मनुज देह को आज क्या हो गया॥
जो मनुज था चढ़ा देव की दृष्टि में,
क्यों मनुज दृष्टि से गिर रहा आदमी॥
हम मनुज हैं मनुज का सहारा बनें,

डूबतों के लिए हम किनारा बनें।
क्यों न पाने हमें लोग बेचैन हों,
हम अगर स्नेह की पुण्य धारा बनें॥
लोग कहने लगें फिर हमें देखकर,
धन्य इतिहास को कर रहा आदमी।
आदमी आदमी को सुहाता नहीं,
आदमी से अरे डर रहा आदमी॥

मुक्तक-

आदमी को खल रहा है आदमी,

मरुस्थल सा जल रहा है आदमी।
दूसरे का कौर मुँह से छीनकर,
आजकल में पल रहा है आदमी॥
आदमी की शक्ल से अब डर रहा है आदमी,
आदमी ही मारता है मर रहा है आदमी।
आदमी को लूटकर घर भर रहा है आदमी,
समझ कुछ आता नहीं क्या कर रहा है आदमी॥

आज जरूरत भारत माँ को

आज जरूरत भारत माँ को, ऐसे वीर जवानों की।
परम्परा जो निभा सकें फिर, हँस-हँसकर बलिदानों की॥

नवयुग की वेला आयी है, उमड़ रही अरुणाई है।
अँगड़ाई लेती है धरती, लहराती तरुणाई है॥
गीत प्रभाती के गाकर माँ, तुमको आज जगाती है।
अग्रदूत बनना है युग का, ऐसा पाठ पढ़ाती है॥
मीठे सपने छोड़ थाम लो, डोर नये अभियानों की॥

वीर भूमि की ओ सन्तानों, पहचानों फिर अपने को।

पूर्ण करो तुम अब इस युग के, भारत माँ के सपनों को॥
शंकर, ज्ञानेश्वर, गौतम की, आत्मा तुम्हें बुलाती है।
सीता, अनुसुइया, दुर्गा की, परम्परा अकुलाती है॥
ले संकल्प पूर्ति करनी है, उन सबके अरमानों की॥
बलिदानी मिट्टी ने तुमको, भरकर आँख पुकारा है।
और हिमालय की चोटी से, ऋषियों ने ललकारा है॥
तुममें साहस हो कुछ भी तो, मोह छोड़ आगे आओ।
देवभूमि की गरिमा लेकर, भूमण्डल पर छा जाओ॥
तुम हो उनके अंश कि जिनने, गति मोड़ी तूफानों की॥

मुक्तक–

जवानी शौर्य की बलिदान की, प्रेरक कहानी है।
नये युग के सृजन में फिर, उसे जीवट दिखानी है॥
राष्ट्र की अस्मिता ने फिर, जवानी को पुकारा है।
विश्व नेतृत्व करने की, पुनः क्षमता जगानी है॥

आज आपके लिए दिलों में

आज आपके लिए दिलों में, उमड़ रहा अनुराग।
फिर से, जाग रे कबीरा जाग, जाग रे कबीरा जाग॥

यह दुनियाँ तो आनी–जानी, गहरी नदिया नाव पुरानी।
बहुत सुनाई कथा कहानी, मगर किसी ने बात न मानी।
सब अपनी सफेद चादर में, लगा रहे हैं दाग॥
छापा तिलक लगाने वाले, पोथी पाठ पढ़ाने वाले।
जग को ज्ञान सुनाने वाले, तन के उजले मन के काले।
हंस बने बैठे ऊपर से, भीतर विषधर नाग॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन पारसी बुद्ध बहाई।
आपस में सब भाई–भाई, लेकिन इनको समझ न आई।
खेल रहे हैं एक–दूसरे, से सब खूनी फाग॥

ऊँचे कुल में जन्म लिया पर, करनी नीच किया जीवन भर।
सोने कलश वारुणी भरकर, कौन सराहे वह नर पामर।
उससे तो वह हरिजन सुन्दर, दिये दोष सब त्याग॥
गुरु परमेश्वर गुरु ही प्यारे, गुरु ही पार लगावन हारे।
गुरु बिन कौन जगत् को तारे, ज्ञानरूप गुरुदेव हमारे।
सद्गुरु बिना नहीं हो सकती, युग की पूरी माँग॥

मुक्तक–

तुमने आँखिन देखी मानी, ज्यों की त्यों चादर लौटायी।
ढाई अक्षर पढ़कर पंडित, बनने की प्रतिभा दिखलाई॥

मोह निशा में सोये हैं जो, उनको तुम झकझोर जगा दो।
प्यार जगाकर सबके मन में, सबको जीवन नीति सिखा दो॥

आदिशक्ति भगवती आपको

आद्यशक्ति भगवती आपको, बारम्बार प्रणाम्।
अम्बे शत्-शत् तुम्हें प्रणाम्॥
दुर्गारूप सती रुद्राणी, गिरजा तुम्हें प्रणाम्।
आपको बारम्बार प्रणाम्॥
    सीता तुम्हीं तुम्हीं हो राधा, तुम्हीं विष्णु की माया।

गंगा गीता गायत्री माँ, तुममे जगत समाया।
कृपा आपकी हो माता तो, बनते बिगड़े काम ।।
नारी शक्ति शिरोमणि माता, जग-जननी कल्याणी।
तुमसे ही जीवन पाता, पलता बढ़ता हर प्राणी।
जय-जयकार हो रही अम्बे, तेरी सुबहो शाम।।
शुम्भ-निशुम्भ विनाशिनि माता, महिषासुर संहारक।
चण्ड-मुण्ड की संहन्त्री माँ, तुम्हीं देव उद्धारक।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र जपते हैं, अम्बे तेरा नाम।।
धन्य हो गया जीवन सबका, शरण तुम्हारी आकर।

निर्मल हमें बनाओ अम्बे, दुर्गुण सभी हटाकर।
माँ की गोदी में ही बालक, को मिलता आराम।।

मुक्तक-

आदिशक्ति गायत्री माता, तुमको कोटि प्रणाम।
हे ! करूणामयि पाप नाशिनी, प्रियजन मंगल धाम।।

आ जाना बन ध्यान

आ जाना बन ध्यान, हमारे कीर्तन में।
भर जाना माँ प्राण, हमारे जीवन में॥

आये गिरकर हमें सम्हलना, आये भूली राह बदलना।

सीखें हम कांटों पर चलना, ध्रुव, प्रह्लाद समान, न हारे जीवन में॥

भेद मिटाना भ्रान्ति मिटाना, मन की मलिन अशांति मिटाना।

क्रांति जगाना शांति जगाना, रह न सके अज्ञान, हमारे जीवन में॥

ऋद्धि-सिद्धि ही नहीं जगाना, शुचिता समता शक्ति जगाना।

तप से मेधा बुद्धि जगाना, बन जाना वरदान, हमारे जीवन में॥

कामधेनु के नहीं पुजारी, कल्पवृक्ष के नहीं भिखारी।

तपसी बनें देव अधिकारी, धीर-वीर बलवान, हमारे जीवन में॥

प्रज्ञामाता प्राण जगाना, ज्ञान जगाना ध्यान जगाना।

दया, क्षमा, उत्साह जगाना, कर जाना कल्याण, हमारे जीवन में॥

आइए श्रेष्ठ जन

आइए श्रेष्ठ जन, शुभ यजन के लिये।
लोकहित हो रहे, इस हवन के लिये॥
है न हिंसा दमन के लिये यज्ञ यह।
है नहीं आक्रमण के लिये यज्ञ यह॥
यज्ञ है राष्ट्र के उन्नयन के लिये॥
सत्पुरुष अब न बिल्कुल बिखरकर रहें।

साहसी बन जिएँ वे, न डर कर रहें।।
सज्जनों के सबल संगठन के लिये।।
यज्ञ से भूमि जल का मिटेगा जहर।
शुद्ध होगा पवन सौम्य ध्वनि और स्वर।।
प्राण से पूर्ण पर्यावरण के लिये।।
अब सुरक्षा कवच का न हो संक्रमण।
डगमगाए न फिर भूमि का संतुलन।।
अन्तरिक्षीय दृढ़ आवरण के लिए।।
यज्ञ से आप्तजन कर्मरत हों सकें।

उर्ध्वगामी बनें देववत् हो सकें।।
अनवरत दिव्यता के वरण के लिए।।

ताकि हो यज्ञ से आचरण यज्ञमय।
हों सके व्यक्ति में देवता का उदय।।
भूमि पर स्वर्ग के अवतरण के लिये।।
यज्ञ से विश्व गुरु बन सके देश फिर।
विश्व को दे सके दिव्य सन्देश फिर।।
सांस्कृतिक श्रेष्ठता को नमन के लिए।।

मुक्तक-

ब्रह्म स्वयं है यज्ञमय, वही जगत आधार।
जीवन हो यदि यज्ञमय, बन सुखी संसार।।

आओ–आओ सुहागिन नारि

'आओ–आओ सुहागिन नारि, कलश सिर धारण करो।
आओ सीता, लक्ष्मी नारि, कलश सिर धारण करो॥

कलश के मुख में विष्णु जी सोहे, कण्ठ में लगकर शंकर मोहे।
ये जी ब्रह्म सोहे मूलाधार–कलश.., तेरी चूड़ी अमर हो जाये॥

सात समुद्रों का निर्मल जल, सात द्वीप और पृथ्वी अंचल।

गंगा, यमुना की पावन धार–कलश.., तेरो ललना अमर हो जाये॥

चारों वेद का ज्ञान भरा है, वुसधा और संसार भरा है।

ये तो मन वांछित दातार–कलश.., तेरी बिंदिया अमर हो जाये॥

आओ माता बहनों आओ, कलश गीत सब मिलकर गाओ।

ये तो गायत्री सावित्री परिवार कलश., तेरो कंगना अमर हो जाये॥

मुक्तक–

कलश धारण करो बहिनों, देव सब ही समाये हैं।

सभी नदियाँ व पावन तीर्थ, इसमें उतर आये हैं॥

परम सौभाग्य है उनका, जिन्होंने शीश पर धारा।

दिव्य वरदान देवों के, सहज ही बरस आये हैं॥

आओ मन में बसा ले

आओ मन में बसा ले श्री राम को।
चलो तन से करें प्रभु काम को॥
माया के चक्कर में किसने क्या पाया।
सुख की मृग तृष्णा में मन को भटकाया।
अपने रथ पे बिठा ले घनश्याम को।।
छोड़ो ये लोभ-मोह छोड़ो ये माया।

व्यसनों में नष्ट न हो कंचन सी काया।
इष्ट अपना बना ले सुख धाम को।।

मन में हो ममता की प्यार भरी धारा।
प्रभु का ही रूप लगे हमें विश्व सारा।
आये उसकी ही याद सुबह शाम को।।

डूब जाये मन अपना प्रभु के अनुराग में।
थिरक उठे रोम-रोम उसके ही राग में।
मीत अपना बना गुण धाम को।।

मुक्तक-

हृदय को मंदिर बना श्रीराम का।
सफाया कर दें कलुष का काम का।।
भक्ति भावों की विमल धारा बहे।
विश्व सारा रूप हो भगवान का।।

आदिशक्ति तुम वीर प्रसूता

आदिशक्ति तुम वीर प्रसूता, प्रेम मूर्ति साकार।
दुष्प्रवृत्तियों के रावण का, करना है संहार।।
बहिनों हो जाओ तैयार।।

उठो समय आमन्त्रण देता, युग करता आह्वान।
नव। सृजन का समय आ गया, लाओ नया विहान॥
शान्ति मार्ग को रोके बैठा, अन्धकार अज्ञान।
बनकर ज्ञान सूर्य की किरणें, छेड़ो नव अभियान॥
छुआछूत का भूत भगाकर, करो देश उद्धार॥
भय कुरीतियों के जंगल में, पनप न पाते फूल।
ज्ञान बिना जीवन के सपने, आज चाटते धूल॥
ऊँच-नीच की रयी हुई है, छाती पर चट्टान।
मानवता की फसलें चरता, अहंकार अभिमान॥

भेदभाव की जड़ काटो तुम, लेकर शक्ति कुठार।।
परदा बन कलंक का टीका, देता है संताप।
आज अन्धविश्वास बना है, पाप ताप अभिशाप।।
चलो कदम से कदम मिलाकर, लेकर ज्ञान मशाल।
आज विश्व में ऊँचा कर दो, भारत माँ का भाल।।
अबला नहीं बनो तुम ष्ठबला, शक्तिपुंज अंगार।।

मुक्तक-

देवियों भूत की इन रूढ़ियों को तोड़ो तुम।
अपनी गरिमा का नया राग पुनः छेड़ो तुम।।

नवयुग की ओर तुम्हें बिना रूके बढ़ना है।
शक्तिरूपा तुम्हें संसार नया गढ़ना है।।

आया–आया युग परिवर्तन

आया–आया युग परिवर्तन काल।
गायत्री माता पुत्रों को कर दो निहाल॥
ठीक करलें हम जीवन की चाल।
जगदम्बे माताऽ हमें करेंगी निहाल॥

युग परिवर्तन की वेला है, चलो साधना करने को।

माता के दरबार में आओ, जीवन झोली भरने को॥
कर लें अपना सुधार, पायें माता का प्यार।
ऐसी साधना से सिद्धि हमऽ पायें रे॥
सारे कट जाये जग के जंजाल॥ गायत्री माता.... ॥

जीवन अपना शुद्ध बनायें, हम माता के प्यारे हों।
सादा जीवन-उच्चविचारों, मय (सद्) आचरण हमारे हों॥
जगे संयम की साध, श्रद्धा भक्ति अगाध।
श्रेष्ठ साधक के गुण हममें आयें रे॥
साधना फिर तो करेगी कमाल॥ जगदम्बें माता.... ॥

जप से तप से शक्ति बढ़ायें, आत्मविकास हमारा हो।
स्वाध्याय का क्रम अपनायें हम, अन्तस् में उजियारा हो॥
होवे आत्मविकास, फैले ज्ञान का प्रकाश।
लोक सेवा का व्रत पूरा करते जायें रे॥
माता फिर हों दयालु कृपाल॥ गायत्री माता.... ॥
लोभ,मोह,मद,अहंकार से, माता हमको मुक्त करो।
प्रेम और करूणा से मैया, मन हम सबका युक्त करो॥
मिटे मन से दुर्भाव, जगे देवों सा भाव।
जीवन आध्यात्म से भर जाये रे॥

ले लो हाथो में क्रांति मशाल॥ जगदम्बे माता.... ॥

दोहा-

ऋद्धि दे-सिद्धि दे, हितकर समृद्धि दे,
सद्गुण वृद्धि दे हे अम्बे।
सबको सद्ज्ञान दे, जीवन विज्ञान दे,
अभय वरदान दे जगदम्बे॥
निर्मल प्यार दे, जग से उद्धार दे,
भवसागर तार दे दास जानी।
मंगलमय नीति दे, गुरुपद से प्रीति दे,

जीवन में जीत दे, मातु भवानी॥

मुक्तक–

जब–जब बालक बिलख उठे माँ, पाने तेरा प्यार।
तब–तब उनको हृदय लगा, माँ तूने दिया दुलार॥

आप हैं गुरु रूप भगवन

आप हैं गुरू रूप भगवन्, आप ही दिनमान हैं।
आप हैं मन प्राण में प्रभु, आप ही अभियान हैं।।
लेखनी जो भी लिखेगी, आप की ही योजना।

आपका अभियान होगा, आपकी संयोजना।
आप ही हैं लेखनी प्रभु, आप ही सद्ज्ञान हैं॥
हम करेंगे कंठ से प्रभु, आपकी अभ्यर्थना।
भक्तिमय सुरताल से हम, ही करेंगे अर्चना।
आप ही सुरताल हैं प्रभु, आप ही भगवान हैं॥
आपकी ही दी हुई प्रतिभा, समर्पित आपको।
स्वाँस तन-मन सब समर्पित, जिन्दगी यह आपको।
आप में हमको मिला दो, आप गुण की खान हैं॥
जिस किसी से हम मिलें, बस आपकी चर्चा करेंगे।

आपसे सम्बल मिला जो, हम उसे सार्थक करेंगे।
हम तुम्हारे शिष्य हैं, इसका हमें अभिमान है।।

मुक्तक

आपका पाकर अनुग्रह, धन्य जीवन हो गया।
युग-युगों से खोज थी वह, लक्ष्य पावन मिल गया।।

आपके पूत हैं प्यार भी है

आपके पूत हैं प्यार भी है दिया,
किन्तु संवेदना भी जगा दीजिए।।

और अपनी तरह पुत्र का भी हृदय,
भावनापूर्ण कोमल बना दीजिए।।
    है मनुज तो मनुज पीर अनुभव करे,
    देख रोते हुओं को व्यथा से भरे।
    पोक्छ आँसू उन्हें सांत्वना दे सकें,
    कर कृपा दर्द उनका लक्टा दीजिए।।
दर्द हर एक का मातु अपना लगे,
काम ऐसा न कोई करें दिल दुखे।
सब जगह एक ही तत्व संव्याप्त है,

सार की बात अनुभव करा दीजिए।।

हृम समर्पण करें आपको इस तरह,
भाव में भाव होते विलय जिस तरह।
आपने इष्ट को ज्यों समर्पण किया,
वह समर्पण की विधि माँ सिखा दीजिए।।

है मनुजता बहुत ही विकल इन दिनों,
क्योंकि संवेदना की कमी इन दिनों।
भाव की सम्पदा दे मनुज मात्र को,
माँ अभावों की पीड़ा मिटा दीजिए।।

मुक्तक-

आप करुणा सिंधु हैं माँ, हमें करुणा दीजिए।
भावनाओं का मृदुल, संचार मन में कीजिए।।
मनुजता की पीर से हो, हृदय मर्माहत हमारा।
यही विनती पुत्र की स्वीकार माँ कर लीजिए।।

आज ऐसी कृपा आप कर

आज ऐसी कृपा आप कर दीजिए,
प्राण में सिन्धु सा ज्वार भर दीजिए॥

प्राण में क्रांति के स्वर मचलने लगे,
भाव संवेदनाएँ उछलने लगे।
क्रांति की राह पर ये चरण चल पड़े,
और व्यवधान के शीश पर जा चढ़े॥
क्रांति में प्राण फूँके वे स्वर दीजिए॥

आत्मबल हेतु आध्यात्मिक क्रांति हो,
दूर अज्ञान हो, दूर भ्रम भ्रांति हो।
दोष से दुर्गुणों से मनुज बच सके,
दुर्व्यसन का नशे का न पंजा कसे॥

ज्ञान के पुंज प्रज्ञा प्रखर दीजिए॥

क्रांति पथ पर बढ़े हैं हमारे चरण,
शक्ति सम्बल प्रभो! आपका कर वरण।
क्रांति का शंख फूँके चले जायेंगे।
पर तभी आपकी जब कृपा पायेंगे,
दूर अज्ञान का सब तिमिर किजिए॥

हम न भूलें कभी भी तुम्हारे वचन,
साधना हेतु करते रहें नित यतन।
प्रिय लगे सर्वदा प्रभु तुम्हारे चरण,

नित्य अर्पित करें भाव श्रद्धा सुमन।
इन मनों को सुमन नाथ कर दीजिए॥

मुक्तक–

श्रद्धा भरे हृदय लेकर, हम आये तेरे द्वार हैं।
चरण कमल में भाव सुमन, अर्पित करने तैयार हैं॥
भेंट हमारी रुचे अगर, स्वीकार उसे प्रभु कर लेना।
हृदय क्रांति से भर देना प्रभु विनती बारम्बार है॥

आज मोहे गुरुवर की

आज मोहे गुरुवर की सुधि आई।
बोलनि हंसनि मनोहर चितवनि, बिसरे नहिं बिसराई।।
गुरुवर श्लद्धप्व श्रीराम हमारे, संग भगवती माई।
नारि नटेश्वर रूप एक है, इनमें भेद न भाई।।
प्रज्ञारूप सर्वगत् गुरुवर, श्रद्धा रूपा माई।
दोउ एक रस भए जीवन में, जनम सुफल होइ जाई।।
सुख वैभव सब जग को बाँट्यो, इन्हें फकीरी भाई।
जगहित में पी लियो हलाहल, अजर-अमर गतिपाई।।

इन्हें रहत सुधि सब भक्तन की, कोउ चाहे जाय भुलाई।
मनवा इन्हें न भूल, अगर है साँची प्रेम सगाई।।
इनके बिन जीवन है सूनो, निश्फल है तरुणाई।
जिनने इन्हें हृदय धन मान्यो, सहज परम गति पाई।।

मुक्तक-

सूक्ष्म रूप से कण-कण में हो, बुद्धि तो यह समझाती है।
लेकिन गुरुवर भाव भूमि में, याद तुम्हारी आती है॥

आत्म साधना ऐसी हो

आत्म साधना ऐसी हो जो, चटका दे चट्टान को।
शाश्वत् प्राण ज्योति पी जाये, अंधकार अज्ञान को॥

साधक वह जो झेले जग के पाप,ताप,अभिशाप को।
सागर मंथन के पहले जो, मथ ले अपने आप को॥
औरों को दे सुधा रत्न खुद कर लेता विषपान है।
तपकर स्वयं ज्योति जग को, देना जिसका अरमान है॥
मानव करें वन्दना ऐसी–छूले तन, मन, प्राण को॥

जप,तप,पूजा,पाठ,साधना, जीवन की सौगात है।

तिमिर निशा के बाद सदा ही, आता सुखद प्रभात है॥
जिसका है विश्वास अलौकिक,धर्म,कर्म,ईमान में।
कर देता सर्वस्व न्यौछावर, जनहित के कल्याण में॥
जो देखे अन्तस् आँखों से, कण-कण में भगवान् को॥

बुझने देता ज्योति नहीं जो, शाश्वत् ज्ञान मशाल की।
करता है परवाह नहीं वह, काल,व्याल,विकराल की॥
बाँटा करता सारे जग को, अमर ज्ञान,सद्भाव जो।
प्रेम सुधा से भर देता है, जग के दुःखते घाव को॥
रात-रात भर जाग अकेला, लाता नये विहान को॥

विचलित होता कभी नहीं जो, आतप,वर्षा,शीत में।
जिसे आत्म सुख मिलता सच्चा, आत्मज्ञान संगीत में॥
जो करता है सतत् साधना, शांतिकुंज की छाँव में।
आत्मसुरभि भर देता क्षण में, मुरझे हुए गुलाब में॥
मुट्ठी में बाँधे फिरता जो, प्रलयंकर तूफान को॥

मुक्तक-

बिना साधना किसे भला,भगवान मिला करते हैं।
शापों में चलने से ही, वरदान मिला करते हैं॥
अम्बर भी शोभायमान है, जलते अंगारों से।

कुटिल कँटीले काँटों में ही, फूल खिला करते हैं॥

आप हैं प्राणों के आधार

आप हैं प्राणों के आधार, प्राण की श्रद्धा रही पुकार।
कि हम गुरुवर, क्षण भर बिना आपके रह न पाएँगे॥

बिना आपके थे अनाथ हम, दिया आपने प्यार।
आप मिल गये हमको गुरुवर, हम भूले संसार॥
साँस में धड़क रहे हैं आप, प्राण में उछल रहे हैं आप।
कि हम कैसे-2 साँसों के बिन, जीवित रह न पाएँगे॥

हमको घेरे अंधकार था, लाए आप प्रकाश।
मिटी उदासी इस जीवन की, जाग उठा उल्लास।।
आप हैं प्रज्ञा के अवतार, लगाना भवसागर से पार।
कि आपके बिन-2 कैसे इस भवसागर से तरने पाएँगे।।

अगर आपने ठुकराया तो, कौन करेगा प्यार।
बिना आपके हम पतितों का, कौन करे उद्धार।।
जुड़े हैं जन्म-जन्म के लिए, आपने पापी तार दिए।
कि अब तो हम-2 मरकर भी, इन चरणों को छोड़ न पाएँगे।।

आदत बुरी सुधार लो

आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।
मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन॥

दृष्टि में तेरे दोष है, दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आँज लो॥ बस हो गया...॥

आए कहाँ से और अब, जाना कहाँ तुम्हें।
मन में यही विचार लो॥... बस हो गया...॥

नेकी सभी के साथ में, जितनी बने करो।
मत सिर बदी का भार लो।... बस हो गया...॥

कटुता मनों से त्याग दो, मीठे वचन कहो।
वाणी का स्वर सुधार लो।।... बस हो गया...।।

अच्छे बुरे जो भी तुम्हें, कर्मों के फल दिये।
हँसकर सभी गुजार लो।।... बस हो गया...।।

मुक्तक-

निरंतर स्वस्थ चिंतन हो, यही सबसे बड़ा जप है।
न उतरा आचरण में जो, समूचा ज्ञान गपशप है।।
रहें भूखे मगर फिर भी, न खायें पाप की रोटी।
बचें बुरी आदतों से यही इस युग का बड़ा तप है।।

मुक्तक–(आयुर्वेद महान)

चारो वेदों में बढ़कर है, पावन आयुर्वेद महान।
ऋषि, मुनि और तपस्वी करते, आये हैं इसका गुणगान॥
चिरयौवन और जीवन विद्या, के महत्व को हम समझें।
दीर्घ आयु औ दिव्य स्वास्थ्य का, आओ हम पायें वरदान॥

आयुर्वेद महान जगत में

करना होगा सारे जग को, इसका ही गुणगान।
जगत में आयुर्वेद महान।।

हमने ईश्वर से इतना सुन्दर शरीर है पाया,
कञ्चन सी काया को लेकिन हमने धस्त्रल बनाया।
किया बहुत उपचार न पर हमने आहार सुधारा,
एक रोग का दमन कर दिया फिर दूसरा उभारा।
इन शाश्वत् सूत्रों से हम सब, हुए आज अनजान॥
त्रिविध शरीरों पर भोजन का, शुभ प्रभाव होता है,
अगर खिलाने वाले का, सात्विक स्वभाव होता है।
दुश्चितंन दुर्भावग्रस्त के, अन्न विकार बढ़ाते,
तभी कृष्ण भी दुर्योधन के, व्यजंन कभी न खाते।

आयुर्वेद इन्हीं सिद्धान्तों का है, अनुपम ज्ञान।।
ईश्वर ने प्राकृतिक व्यवस्था ऐसी यहाँ बनाई,
जिस ऋतु में जो रोग उसी की, औषधि है उपजाई।
हम ऋतु के अनुसार पथ्य लें, मौसम के फल खायें,
ऋतभुक, मितभुख, हितभुक के, अनमोल सूत्र हैं पाये।
फिर अखाद्य खाकर बन पाये, पेट न कब्रिस्तान।।
हे पश्चिमी चिकित्सा पद्धति के प्रेमी! अब जागो।
केवल अपने दृश्य देह की चिन्ता करना त्यागो।।
बनो सूक्ष्म आयुर्वेदिक शैली के सब अनुयायी।

ऋषियों ने जिसको अपनाकर दीर्घ आयु थी पायी।।
इस युग में केवल इससे ही हो सकता कल्याण।।

आपका स्वागत है श्रीमान्

आपका स्वागत है श्रीमान।
बड़े भाग्य जो आप बने हैं–हम सबके मेहमान॥
हुए मनोरथ पूर्ण हमारे–माननीय से मिलकर।
चार चाँद लग गये हमारे–इस पावन अवसर पर॥
आज आपके शुभागमन पर–बढ़ी हमारी शान।

हम सबका उत्साह आपने—कितना आज बढ़ाया।
हुए कृतार्थ और हम सबका—मन फूला न समाया॥
किस प्रकार से करें आपका—हम स्वागत सम्मान॥

अभिनन्दन हम करें आपका—उसे करें स्वीकार।
है श्रीमान प्रफुल्लित कितना—शान्तिकुञ्ज परिवार॥
करना क्षमा हुई जो भूलें—अगर कहीं अनजान॥

आज आपको मुख्य अतिथि—कहकर हम सब धन्य हुए।
जो भी भाव हमारे थे वह—सब अनुमन्य हुए॥
इससे बड़े और हो सकते—क्या कोई अनुदान॥

मुक्तक–

अतिथि देव बन आप पधारे, स्वागत हो स्वीकार।
द्वार हमारे आप आ गये–सहज लुटाते प्यार॥
साधन कम पर भाव विह्वल हैं–स्वागत को श्रीमान्।
आशा है स्वीकार करेंगे, भाव सुमन का हार॥

आप क्या मिल गये

आप क्या मिल गये स्वर्ग ही मिल गया,
फिर न ऐसी घड़ी तो कभी आयेगी।

साधना सिर पटकती रहे जन्म भर,
सिद्धि ऐसी कभी भी नहीं आयेगी॥
जब हमें सिद्धि का स्रोत ही मिल गया,
साधना की जड़ें सूखने क्यों लगी।
प्राण जुड़ ही गये जब महाप्राण से,
स्नेह की शृंखला टूटने क्यों लगी॥
प्राण की साधना जुड़ महाप्राण से,
साधना क्षेत्र में और रंग लायेगी॥
सिन्धु ने बिन्दु को आज स्वीकार कर,

सिन्धु के रत्न उपहार में दे दिये।
सिन्धु ने बिन्दु से दिव्य अनुदान ये,
सिर्फ करुणा जनित प्यार में दे दिये॥
क्या किसी और की भी हृदय सम्पदा-
इस तरह से द्रवित हो पिघल पायेगी॥

बिन्दु की मात्र आकाँक्षा है यही,
सिन्धु का स्नेह वह बाँटती ही चले।
स्नेह के बिन तड़पते त्रसित जो अधर,
भावना छलछला उन अधर पर ढले॥

स्नेह के सिन्धु! क्या बिन्दु की यह ललक–
पूर्ण होकर तुम्हारा सुयश गायेगी॥

मुक्तक–

स्रोत से जुड़ गये तो धार क्या है,
सिन्धु में जब मिल गये मझधार क्या है।
सिद्ध, सर्व समर्थ गुरु सत्ता हमारी,
सिद्धियों का और फिर भंडार क्या है॥

आज बेचैन हैं स्वर्ग की

आज बेचैन हैं स्वर्ग की शक्तियाँ–हे मनुज तुम उठो दिव्य अनुदान लो ॥
तुम उठे बुद्धि की शक्ति ले इस तरह–क्या धरा क्या गगन सब कहीं छा गए।
सिद्ध तुमने किये मंत्र विज्ञान के–नित नये उपकरण हाथ में आ गए॥
अब नियोजित इन्हें श्रेष्ठ पथ पर करो–सृष्टि का हित भली–भाँति पहचान लो ॥
बाहरी क्षेत्र के तुम विजेता बने–किन्तु अन्तर्जगत है अधूरा अभी।
आत्मबल के बिना बुद्धि बल मात्र से–लक्ष्य होगा तुम्हारा न पूरा कभी ॥
विश्व के तुम बनोगे मुकुटमणि तभी–जबकि विज्ञान के साथ सद्ज्ञान लो ॥
व्यक्तिगत मुक्ति कोई समस्या नहीं–व्यक्तिगत साधना ने शिखर को छुआ।

सन्त, अवतार आए दिशा दे गए–किन्तु सामान्य जीवन न विकसित हुआ॥
यह समूची मनुजता नया जन्म ले–तुम नये कल्प का वह नवोत्थान लो॥
कब उठे ऊर्ध्वगामी बने जाति यह–देवसत्ता प्रतीक्षा यही कर रही।
तुम बढ़ाते नहीं पात्र अपना यहाँ–है जहाँ से सुधा अनवरत झर रही॥
प्यार माँ का अपरिमित छलकता अरे–तुम स्वयं को यहाँ पुत्रवत् मान लो॥

मुक्तक–

देव दुर्लभ देह केवल भोग को मिलती नहीं।
साधना द्वारा अनूठी सिद्धियाँ मिलती यहीं॥
लोक–मंगल के लिए अनुदान मिलते हैं इसे।

श्रेय पाने से मनुज वंचित न रह जाए कहीं॥

आपसे माँ! हमें यह

आपसे माँ! हमें यह, विरासत मिली,
आप हमको अतुल सम्पदा दे गयीं।
भाव संवेदना से, हृदय भर गया,
मर्म की बात कुछ इस तरह कह गयीं॥
भाव संवेदना, सिन्धु की ही लहर,
जिस तरफ भी उठे, प्यार ही बाँटती।

आप जो दे गयीं, मर्म वाली नजर,
हर विकल अश्रु के, कष्ट को काटती।
नफरतों के जहर को, करेंगे दफन,
आप तो बाँटने की सुधा दे गयीं॥

गांठ में बाँध ली आपकी बात को,
मानवी पीर पीते रहेंगे सदा।
दर्द से मुक्त करने, मनुज मात्र को,
प्यार से जख्म सीते रहेंगे सदा।
आपके स्नेह के सूत्र से सब बंधे,

आप ऐसी अमर, एकता दे गयीं॥

हम जियेंगे अगर तो मिशन के लिए,
व्यक्तिगत कामना हम किसी की नहीं।
जो कहेंगे–करेंगे, मिशन के लिए,
स्वार्थ की भावना हम किसी की नहीं।
हम बहेंगे, उसी धार में माँ! सदा,
आप जिस प्यार की धार में बह गयीं॥

मातु स्वीकारिये, आज श्रद्धा सुमन,
लोकसेवी बने ही रहेंगे सदा।

ब्राह्मणोचित रखेंगे, सदा आचरण,
लोकहित में लगे ही रहेंगे सदा।
लोकहित में सहेंगे सभी कष्ट हम,
लोकहित के लिए आप जो सह गयीं॥

मुक्तक–

आपका आँचल सुखद लगता, अधिक माँ स्वर्ग से,
आपकी गोदी हमें प्रिय है, अधिक अपवर्ग से।
भाव–संवेदन जगाते, आपके ही गान हैं।
आप ही माँ! धड़कते हैं, आप ही माँ! प्राण हैं॥

आओ शिव संकल्प करें

आओ ! शिव संकल्प करें, आओ ! युग का शिल्प करें।
तरुणों में नव, प्राण जगाकर, जीवन धन्य करें॥
    जाग उठी सोई तरुणाई, चिंतन ने छूली गहराई।
    मंथन के अमृत को पीकर, काया कल्प करें॥
विष घूटों को राष्ट्र पिये क्यों ? निष्प्राणों सा राष्ट्र जिये क्यों।
भोगवाद के चक्कर में क्यों, आयु अल्प करें॥
    क्यों अज्ञान–तिमिर में भटकें, क्षणिक प्रलोभन में क्यों अटकें।
    ज्ञानामृत का अभिसिंचन कर, 'मुक्ति' विकल्प करें॥

मुक्त करें जीवन पतझर से, दे उछाल बासन्ती स्वर से।
तरुणाई का मंत्र फूँक दें, निष्क्रियता स्वल्प करें॥

तरुण चल पड़े गाँव,नगर में, शंख फूँकते डगर-डगर में।
युगशिल्पी-सैनिक का साहस, तनिक न स्वल्प करें॥

राष्ट्र सुदृढ़,समृद्ध बनाएँ, युग नेतृत्व सामर्थ्य जगाएँ।
विश्व राष्ट्र के लिए विश्व का, कायाकल्प करें॥

मुक्तक-

जवानी आँधियों तूफान से ही बात करती है।
जवानी मौत भी हो सामने दो हाथ करती है॥

जवानी जब करें संकल्प, तो नूतन सृजन होता,
मनुज में देव भू पर स्वर्ग, का श्रृंगार करती है॥

आज युग पुकारता

आज युग पुकारता, जाग नौजवान रे।
मोर्चे सम्भाल रे, सम्भाल तू कमान रे॥
दुर्दशा ग्रसित समाज, हाय छटपटा रहा।
भ्रष्ट हुआ तंत्र राष्ट्र, सम्पदा मिटा रहा।
मुँह सिला है न्याय का, मौन है विधान रे॥

खोखला समाज को, बना रही कुरीतियाँ।
मृत्युभोज हो रहे, झुलस रही हैं बेटियाँ।
क्या नहीं रहा जवान, खून में उफान रे॥

राष्ट्र और संस्कृति, पर प्रहार हो रहा।
बढ़ रही अनीतियाँ, अंधकार हो रहा।
दे चुनौतियाँ उन्हें, वीर वक्ष तान रे॥

हाँथ ले मशाल ज्वाल, चीर अंधकार तू।
संस्कार को निखार, काट दे विकार तू॥
कर विजय प्रयाण आज, लक्ष्य है महान रे।

मुक्तक–

राष्ट्र विपदा से ग्रसित है जवानों,
हर दिशा ही दिग्भ्रमित है नौजवानों।
तुम्हीं पर आशा टिकी है राष्ट्र की अब,
तुम्हारी ताकत विदित है नौजवानों॥

आज दाँव पर लगा

आज दाँव पर लगा देश का, स्वाभिमान सेनानी।
और पड़ा सोया तू कैसे, जाग वीर बलिदानी॥

सोया जाग वीर बलिदानी॥

भारत माँ ने था तुझको, पौरुष का पाठ पढ़ाया।
बलि पथ पर तूने आगे ही, आगे कदम बढ़ाया॥
लेकिन आज कौन सी तुझ पर, हाय! पड़ गयी छाया।
सब कुछ लुटा जा रहा लेकिन, तुझको होश न आया॥
रे दृग खोल और पढ़ पिछली, गौरवपूर्ण कहानी।

विधर्मियों के छद्म जाल में, फंसा देश यह सारा।
धर्म और ईमान मिट रहा, है अस्तिव हमारा॥
भाई को भाई से अपने लड़वाते-कटवाते।

हाय! हन्त हम किन्तु न उनकी चाल समझ हैं पाते॥
अपने ही सब रिश्ते-नाते टूट रहे जिस्मानी।
अपराधों का असुर चतुर्दिक्, झण्डा गाड़ रहा है।
बहिन-बेटियों की इज्जत से, हो खिलवाड़ रहा है॥
हाहाकार मचा धरती पर, भारी मारामारी।
ऋषियों की सन्तानों! तुम पर, क्यों चढ़ रही खुमारी॥
जाग राष्ट्र के पौरुष जागे, सोई हुई जवानी।
सूरज रुके, चन्द्रमा रोये, रीते सागर का जल।
आज हवाओं में करनी है, फिर से ऐसी हलचल॥

इज्जत लगी दाँव पर अपनी, जागो उसे बचाओ।
नयी विचार क्रान्ति का आओ, फिर से बिगुल बजाओ॥
उदासीन अर्जुन फिर से पढ़, गीता वाली वाणी।

मुक्तक-

भारत माता के सपूत हम, इसकी शान बढ़ायेंगे।
सबको आपस में मिल-जुलकर, जीना हम सिखलायेंगे॥
हमको प्राणों से भी प्यारी, इस पर बलि-बलि जायेंगे।
तेरे लिये जियेंगे माता, तेरे हित मर जायेंगे॥

इस धरा के लिये

इस धरा के लिए, इस गगन के लिए॥
हम जियेंगे–मरेंगे वतन के लिए।
इसकी माटी को चन्दन सा महकायेंगे।
इसके कण–कण को तारों सा चमकाएँगे॥
अपने कदमों को आगे बढ़ाते हुए।
इस वतन पर सभी कुछ लुटा जायेंगे॥
हम जियेंगे नई रोशनी के लिये।
सारा सुख–दुःख भी मंजूर है साथियों।

हौसला हम में भरपूर है साथियों॥
आओ हम सब गले से गले मिल चलें।
अब न मंजिल बहुत दूर है साथियों॥
सारी दुनियाँ में चैनो अमन के लिये।
यह अँधेरा मिटा करके दम लेंगे हम।
भेद सारा मिटा करके दम लेंगे हम॥
हर घरों को जो किरणों का उपहार दे।
वह सबेरा बुलाकर के दम लेंगे हम॥
आदमी-आदमी की खुशी के लिये।

मुक्तक–

प्राण से प्रिय हमारे लिए है वतन, स्वर्ग से भी बड़ा है हमारा वतन।
रक्त से भी अगर सींचना पड़ गया, बेहिचक सींच देंगे वतन का चमन।

इतने रत्न दिये हैं कैसे

इतने रत्न दिये हैं कैसे, जिससे देश महान है।
भारत की परिवार व्यवस्था, ही रत्नों की खान है॥
इसी खान के रत्नों के, इतिहास चाव से पढ़े गये।
अध्यायों की अँगूठियों में, यही नगीने जड़े गये॥

सजे हुए हैं यही रत्न तो, जन मंगल के थाल में।
दमक रहे हैं ये हीरे ही, मानवता के भाल में॥
इसी खान के रत्नों की तो, सदा निराली शान है॥
इसी खान में ध्रुव निकले थे, माँ ने उन्हें सँवारा था।
इस हीरे को नारद जी ने, थोड़ा और निखारा था॥
तप की चमक लिए जा बैठा, परमपिता की गोद में।
कितनों का बचपन कट जाता, है आमोद–प्रमोद में॥
नभ में ध्रुव परिवार कीर्ति का, शाश्वत अमर निशान है॥
जाना था वनवास राम को, लक्ष्मण सीता साथ गये।

कीर्तिमान स्थापित सेवा, स्नेह त्याग के किये नये॥
सौतेली माँ का मुख उज्ज्वल, किया सुमित्रा माता ने।
था सौहार्द्र सगे भाई से, ज्यादा भ्राता–भ्राता में॥
वह संस्कारित परिवारों का, ही अनुपम अनुदान है॥

ऐसे ही परिवार चाहिए, फिर से नव निर्माण को।
जहाँ देव परिवार मिल सकें, धरती के इन्सान को॥
राम, भरत का स्नेह चाहिए, घर–घर कलह मिटाने को।
दशरथ जैसा त्याग चाहिए, राष्ट्र धर्म अपनाने को॥
हों परिवार जहाँ नन्दन वन, वह भू स्वर्ग समान है॥

मुक्तक-

समझ पाते नहीं जब तक कि हम परिवार की गरिमा।
उजागर तब तलक होगी नहीं, परिवार की महिमा॥
बना परिवार संस्कारित, बनायें खान रत्नों की।
अरे परिवार में ही तो, गढ़ी जाती सुगढ़ प्रतिमा॥

इन्सान से नफरत करते हो

इन्सान से नफरत करते हो, भगवान को तुम क्या पाओगे।
इन्सान को तुम अपना न सके, भगवान को क्या अपनाओगे॥

इन्सान प्रभु का बन्दा है, नफरत ही नरक का फन्दा है।
इन्सान को धोखा देकर के, भगवान को तुम झुठलाओगे॥
इन्सान की इज्जत करना ही, भगवान की पूजा होती है।
इन्सान को अपमानित करके, प्रभु को न मान दे पाओगे॥
खुद अपने दोष छिपाते हो, औरों को दोष लगाते हो।
इन्साफ को धोखा देते हो, ईमान को तुम क्या पाओगे॥
इन्सां को न देखो बाहर से, इन्सान को परखो भीतर से।
इन्सान के अन्दर जा बैठो, भगवान को तुम पा जाओगे॥

मुक्तक-

खिदमते इन्सान ही पूजा अरे भगवान की।
इसलिए जितनी बने, सेवा करो इन्सान की।।
दिल दुखाकर किसी का, भगवान खुश होगा नहीं।
नफरते इन्सान से, हत्या अरे ईमान की।।

इस दहेज ने ही फैलाया

इस दहेज ने ही फैलाया, भारी अत्याचार है।
इस दानव को मार भगाओ, यह समाज का भार है॥
पुत्र जन्म लेते ही घर में, लहर खुशी की छा जाती॥

लेकिन कन्या इस धरती पर, एक समस्या बन जाती॥
कैसे हाथ करेंगे पीले, यदि अभाव घर में धन का।
घर–वर दोनो ठीक चाहिए, प्रश्न समूचे जीवन का॥
बात सैकड़ों की न कहीं भी, पहला अंक हजार है॥

शिक्षित और सुशील सुपुत्री, रूप गुणों की उजियारी।
किन्तु पिता के पास नहीं धन, इसीलिये बैठी क्वारी॥
चिन्ता ही दहेज की निशदिन, किये यहाँ हैरान बड़ा।
एक तरफ शादी का सौदा, एक तरफ ईमान खड़ा॥
परेशान होकर बहुतों ने, छोड़ दिया संसार हैलल

नारी का क्या मूल्य न कोई–क्या वह पशु से दीन कहो।
नर की तुलना में क्यों इसको, माना इतना हीन कहो॥
लड़के वाला लेन–देन में, कितनी अकड़ दिखाता है।
नीलामी जैसी बोली वह, नेगों की लगवाता है॥
यह पुनीत सम्बन्ध नहीं है, निन्दनीय व्यवहार है॥
इस कुरीति ने दुष्कृत्यों की, बाढ़ भयंकर फैलायी।
घूस, मिलावट, चोर–बजारी बेईमानी सिखलायी॥
ओ समाज के ठेकेदारों, कुम्भकरण बन सोते हो।
अनाचार से आँख फेरकर, बीज पाप के बोते हो॥

पैसे को भगवान बनाकर, रचा क्रूर व्यवहार है॥

मुक्तक–

है दहेज भीषण असुर–करे विकट संहार।
इसने ही तो खा लिया,हृदयों का शुभ प्यार॥

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना॥
हर तरफ जुल्म है बेवसी है, सहमा–सहमा सा हर आदमी है।

पाप का बोझ बढ़ता ही जाये, जाने कैसे ये धरती थमी है।
बोझ ममता का तू जो उठाले, तेरी रचना का ये अन्त हो ना॥
हम अंधेरे में हैं रोशनी दे, खो न दें खुद को ही दुश्मनी से।
हम सजा पायें अपने किये की, कष्ट भी हो तो सहलें खुशी से।
कल जो गुज़रा है फिर से न गुज़रे, आने वाला वो कल ऐसा हो ना।
दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना॥
हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।

फूल खुशियों के बाटें सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।
अपनी करुणा का जल तू बहाके,कर दे पावन हर एक मन का कोना॥

मुक्तक-

आत्मविस्तार की शक्ति देना हमें, श्रेष्ठ पथ से ही अनुरक्ति देना हमें।
दूर अज्ञान हो साथ सद्ज्ञान हो, लोक मंगलमयी भक्ति देना हमें॥

इन दिनों बात उनसे

इन दिनों बात उनसे कही जा रही।
सुन समझ सोचकर जो अमल कर सकें॥

आज की बात के मर्म को जानकर।
भाव संवेदनाएँ लिये चल सकें॥
जिन दिनों हो मनुजता लगी दाँव पर।
मौत मंडरा रही हो मनुज गाँव पर।।
जिन दिनों आँख इन्सान की हो विकल।
छलछलाई हुई हो मनुज घाव पर।।
इन दिनों पीर उनसे कही जा रही।
जो न पाषाण हो पीर से गल सकें॥
जो ग्रसित हो नहीं संकुचित स्वार्थ से।

मुक्त हों लोभ के,मोह के पाश से।।
रंग,कुल,क्षेत्र,भाषा विविध पंथ मत।
कर सकें ना किसी को जुदा राष्ट्र से।।
इन दिनों टीस उनमें भरी जा रही।
टूटकर भी स्वयं राष्ट्र हित ढल सकें॥

राष्ट्र वह दिव्यता का वरण जो करे।
विश्व बन्धुत्व का आचरण जो करे।।
देव बनकर स्वयं इस धरा धाम पर।
मानवी स्वर्ग का अवतरण जो करे।।

इन दिनों आश उनसे करी जा रही।
जो मनुज हो, मनुज को नहीं छल सके।।

मुक्तकः-

चल पड़ा है कारवां निर्माण का,हो सृजन की कामना तो साथ दो।
क्रूरता की आँख आँसू भर रही, हो सृजन की भावना तो साथ दो॥
जब विरोधी शक्तियां चरणों झुकी, हो चरण की साधना तो साथ दो।
रह न जायें प्राण ही निष्प्राण बन, हो लगन की चेतना तो साथ दो॥

इस कुल का ये दीपक

इस कुल का ये दीपक प्यारा–बालक आयुष्मान हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्वोत्तम विद्वान हो॥
परमभक्त बन परमप्रभु का, अपना यश फैलाये ये।
मात–पिता की सेवा कर–सच्चा सेवक कहलाये ये॥
नाम अमर कर दे जगती में, सर्वगुणों की खान हो।
बने सुमन सा सुन्दर कोमल–सबको सौरभ दान करे।
सूरज सा प्रकाश फैलाकर–सब जग का अंधियार हरे॥
मानव धर्म समझकर चलने वाला चतुर सुजान हो।

विजय चौतरफ जय हो इसकी–पावे सुख सम्मान भी।
शतायु होकर निर्भय हो–करे धर्म हित दान भी॥
देश भक्त हो कर्मवीर हो–जगती में सम्मान हो।

मुक्तक–

हम सबकी शुभ कामना, प्रभु की कृपा महान।
बालक पाए श्रेष्ठ सुख–जीवन का उत्थान॥

इन्द्रधनुष–सी छटा सुहानी

इन्द्रधनुष–सी छटा सुहानी–आज गगन में छाई।

दो आत्माओं के मिलने की– मंगल वेला आई॥
सखियों–स्वजनों ने मिल करके दुल्हन आज सजाई।
शुभ विवाह संस्कार है पावन, बजती है शहनाई॥
पाणिग्रहण के अवसर पर– उल्लास मनों में छाया।
नई वधू का स्वागत करने–हृदय–हृदय हर्षाया॥
बजी ढोलकें, गाईं सबने–भावों भरी बधाई॥
जीवन का यह पथ अनजाना–पर न तनिक घबराना।
परमेश्वर का कार्य समझकर–आगे कदम बढ़ाना॥
जब भी उलझन हो,सुन लेना– गुरु के निर्देशों को।

शान्त–संतुलित रह,आने मत–देना आवेशों को॥
इसे साधना समझा, तो फिर सद्‍गृहस्थ सुखदाई॥

सेवा, संयम और सहिष्णुता–दोनों को अपनाना।
धार–कूल या गंध–फूल जैसे पूरक बन जाना॥
पग–पग होगी, संस्कारों की–शुचिता अनुभव तुमको।
आत्मा का संतोष बनेगा– फिर शुभ वैभव तुमको॥
गुरु सत्ता ने तुम पर अपनी–अनुकम्पा बरसाई॥

एक दूसरे की कमियों पर–पल पल ध्यान न देना।
जो भी गुण हों, उन्हें परस्पर आत्मसात कर लेना॥

दोनों की प्रतिभाएँ विकसित हों–यह सदा प्रयास रहे।
शंकित कभी न हो मन, ऐसा आपस में विश्वास रहे॥
मंत्रों के माध्यम से ऋषि ने–यही बात समझाई॥

मुक्तक–

आओ विवाह में स्वागत है– हम गीत खुशी के गायेंगे।
सद्भावों से नव दम्पति के, जीवन को धन्य बनायेंगे॥

इतिहास के स्वर्णिम

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर–कुछ नाम लिखाये जायेंगे।

जो महाकाल के न्योते पर–कुछ नया सृजन कर पायेंगे॥
जिनने पहचाना समय और–हिम्मत कर आागे आए हैं।
उनने यश गौरव पाया है– वे ही नर श्रेष्ठ कहाये हैं॥
सदियों तक नाम अमर होगा– जग याद करेगा उन सबको।
उनने निज जीवन सफल किया सन्मार्ग दिखाया है जग को॥
उनके चरणों में श्रद्धा के कुछ– सुमन चढ़ाये जायेंगे॥
नवयुग का सूरज उदय हुआ–अँगड़ाई लेता महाकाल।
इस संधिकाल की बेला में–प्राची का मुखड़ा हुआ लाल॥
सोने का समय गया अब तो– जागो जागो हे सृजन वीर।

बढ़ चलो लक्ष्य की ओर सतत्–पथ की बाधाएँ चीर–चीर॥
तेरे चरणों पर अनायास ही–शीश झुकाये जायेंगे॥

कर्तव्य बुलाता है सबको–उनको जिनमें कुछ जीवन है।
यह समय चुनौती देता है– स्वीकार करें जिनका मन है॥
अँधियारा चाहे जितना हो–दीपक को बुझा नहीं सकता॥
बाधाओं का भय साधक की–निष्ठा को डिगा नहीं सकता॥
नन्हें से हैं तो भी दीपक ही–विजय अन्त में पायेंगे।

इस विवाह में वर वालों ने

इस विवाह में वर वालों ने, जो आदर्श निभाया है।
मानवता का मान बढ़ाकर, जीवन धन्य बनाया है॥
    जिसे मिली सद्‌बुद्धि, पड़ा वह बिल्कुल नहीं दिखावे में।
    व्यर्थ प्रदर्शन छोड़, न उलझा नेग–दहेज चढ़ावे में॥
    जिसने धन का लोभ छोड़कर, केवल गुण पर ध्यान दिया।
    कन्या वालों को भी उसने, अपनों–सा सम्मान दिया॥
    याद रखें वह पाठ, हमें जो गुरुवर ने सिखलाया है॥
भाग्यवान, जिसने बेटे की, कभी न बोली लगवाई।

पुत्र–ब्याह से घर भरने की, बात नहीं मन में आई॥
धन भी है अनमोल उसे तो, अपनेपन का कोष मिला।
रत्नखान–सी बेटी पायी, और आत्म संतोष मिला॥
धन्य वही, जिसने जीवन में, कुछ साहस दिखलाया है॥

ब्याह ऋचाओं से अभिमंत्रित, स्नेह, मिलन की बेला है।
बुद्धिहीन है जो ऐसे में, दम्भ–लोभ से खेला है॥
वृक्ष–वल्लरी के मिलने का, यही सुपावन अवसर है।
कटुता वे फैलाते जिनको, जरा न ईश्वर का डर है॥
उस पथ पर अनगिन चलेंगे, जो तुमने अपनाया है॥

मुक्तक–

है विवाह संस्कार अरे व्यापार नहीं है,
मिलन पर्व है, सौदे का बाजार नहीं है।
पुरुषार्थी पुत्रों के पिता बधाई तुमको,
क्योंकि तुम्हें दानव दहेज स्वीकार नहीं है॥

उठो जवान देश के

उठो जवान देश के–माँ भारती पुकारती॥
ज्योति प्राण की जलाओ–करो माँ की आरती॥

है मुकुट सजा हुआ–हिमालय इसकी शान है।
धो रहा है पाँव हिन्द–सागर महान है॥
बह रही पवित्र गंग–पाप से उबारती॥
राम, कृष्ण की ये भूमि–बुद्ध महावीर की।
अवतारों संतों की–नानक,कबीर की॥
कण–कण में इस धरा के–शक्तियाँ विराजती॥
बिस्मिल, आजाद, भगतसिंह से सपूत हैं।
जिनके बलिदान राष्ट्र–शान के सबूत हैं॥
घट न जाय इसकी–शान कहती माँ भारती॥

आज भेद–भाव, द्वेष–लोभ, मोह, बढ़ रहे।
भाई–भाई प्रेम छोड़–आपस में लड़ रहे॥
छोड़कर मनुष्यता–बनें हैं क्रूर स्वार्थी॥
ऋषि पुत्रों! युग ऋषि की–आपसे अपील है।
स्वयं के सुधार मेंऽ होती क्यों ढील है॥
आत्म शक्ति दुनियाँ को–पतन से उबारती॥

मुक्तकः–

उठो जवानो बन तेजस्वी, सोया राष्ट्र जगाओ।
भारतीय संस्कृति की गरिमा, को फिर से दर्शाओ॥

ब्रह्म तेज से चमक उठे, फिर भारत देश हमारा।
और विश्व को आत्म ज्ञान का, फिर से मिले उजाला॥

उठो-उठो हे मातृशक्ति

उठो-उठो हे मातृशक्ति अब, समय प्रभाती सुना रहा है॥
धुएँ में धरती की दम घुटी है, घृणा की लपटों से जल उठी है।
धधक रहे हैं अनल अंगारे, मनुजता सारी उबल उठी है॥
कहीं न पल भर है चैन पड़ता, कलह का जीवन जला रहा है॥
प्रभा किरण रश्मियों रचाओ, दिशा-दिशा का तिमिर मिटाओ।

हृदय-हृदय का मिटे कुहासा, उषाओ नव ज्योति में नहाओ॥
उतारो पलकों से वो खुमारी, सबेरा तुमको जगा रहा है॥
हठी समय की बनो भवानी, नचाओ इंगित से आग पानी।
तनी भृकुटियों से क्रान्ति जागे, कदम-कदम पर लिखो कहानी॥
ओ देवि दुर्गे! तुम्हीं हो नारी, तुम्हारा गौरव बुला रहा है॥

मुक्तक-

अँधेरे में घुटा है दम मनुजता की उषा जागो।
भटकती मनुजता तम में, प्रभाती बन प्रभा जागो॥
तुम्हारी भृकुटि दुर्गा है, अरे वाणी भवानी है।

तनिक हुंकार दो नारी! तनिक आलस्य को त्यागो॥

उन चरणों को पूजो

उन चरणों को पूजो, जिनने राहें नई बनायी है॥
रुके नहीं जो थके नहीं जो–अविरल गति अपनाई है॥
चरण जो कि ठोकर खाकर भी–हरदम आगे बढ़ते हैं।
चरण जो कि घायल होकर भी–गिरि शिखरों पर चढ़ते हैं॥
उन चरणों को पूजो जिनकी–प्रगति न रुकने पाई है॥
चरण जो कि भूले भटकों को–जीवन पथ दिखलाते हैं।

चुभे हुए हों काटें तो भी–आगे बढ़ते जाते हैं॥
उन चरणों को पूजो जिनसे–पीड़ा भी शरमाई है॥
चरण कि जिनने सघन वनों में–अपनी राह बनाई है।
चरण कि जिनने पत्थर में भी–सोती पीर जगाई है॥
उन चरणों को पूजो जिनने–मंजिल हमें दिखाई है॥
चरण अभय के चिह्न बनाते–जो कि हवा में उड़ते हैं।
चरण जो कि बिन सीढ़ी के ही–आसमान पर चढ़ते हैं॥
उन चरणों को पूजो जिनने–नभ तक राह बनाई है॥

मुक्तक–

वन्दनीय वे जन हैं जिनने, जीवन को आदर्श बनाया।
पूजनीय वे पग हैं जिनने, नया मार्ग रचकर दिखलाया॥

उनके पद्चिन्हों पर चलकर

उनके पद्-चिह्नों पर चलकर, यश-गौरव हम पायें।
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥

मातृभूमि के लिये जिन्होंने, अगणित कष्ट उठाये थे।
वन-वन भटके पर न जिन्होंने, अपने शीश झुकाये थे॥
बच्चे भूखे रहे न फिर भी, जो किंचित् घबराये थे।

जाति–धर्म के हित संघर्षों, के कण्टक अपनाये थे॥
सहीं देश के लिए जिन्होंने, अगणित विपदायें।
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥

जिये सत्य के लिए सदा जो, कष्ट अनेकों विहँस सहे।
आन निभाई चाहे बिककर, मरघट में बन भृत्य रहे॥
सम्पत्ति त्याग नारि–सुत बेचे, दुःख की सीमा कौन कहे।
फिर भी कष्ट पुण्य सम समझे, रहे सत्य का पंथ गहे॥
सत्य मार्ग से डिगे न, चाहे– आईं विपदाएँ।
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥

दानशील भी हुए यहाँ, निज तन–मन–धन देने वाले।
कवच और कुण्डल भी अपने, जिनने हँस–हँस दे डाले॥
मरण सेज पर भी आ पहुँचे, याचक बन छलने वाले।
स्वर्ण विमण्डित दाँत तोड़कर, दानशील ने दे डाले॥
अपने व्रत के लिये वार दीं, सारी क्षमताएँ।
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥
जीवन भर तप किया जिन्होंने, शक्ति अपरिमित पायी थी।
पर क्या अपने हित किंचित् भी, उनने वह अपनाई थी॥
लेकिन जब इस पावन भू पर–दनुजों की बन आई थी।

दिया विहँस निज अस्थि दान तब, देवों ने जय पायी थी॥
जिनकी जीवन ज्योति देखकर, जन–जन पथ पाएँ।
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥

वेदमूर्ति जो बने भगीरथ, ज्ञानगंग भू–पर लाये।
तप से सूक्ष्म जगत शोधितकर, तपोनिष्ठ वे कहलाये॥
ऋषि जीवन की परिपाटी को, जन जीवन से जोड़ दिया।
जन–जन में देवत्व जगाकर, चक्र आसुरी तोड़ दिया॥
उनके निर्देशों पर चलकर–नवयुग हम लायें॥
कि जिनने अमर किया इतिहास, आज हम उनकी जय गायें॥

मुक्तक–

खपे जो लोक मंगल में, करें सम्मान हम उनका।
तपे जो लोक हित में ही, करें गुणगान हम उनका॥
अमर, इतिहास में जो हो गए, बलिदान दे करके।
उन्हीं के चरण चिन्हों पर चलें धर ध्यान हम उनका॥

उठो सुनो प्राची से उगते

उठो सुनो प्राची से उगते सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥

देश की जिसने सबसे पहले, जीवन ज्योति जलाई।
और ज्ञान की किरणें सारी, दुनियाँ में फैलाई॥
मोह निशा में फँसे विश्व को, बन्धन मुक्त कराया।
भाई–चारे का प्रकाश, सारे जग में फैलाया॥
अगणित बार बचाई जिसने, मानवता की लाज॥
अपना देश बनेगा सारी, दुनियाँ का सरताज॥
इतना प्रेम कि पशु पक्षी तक, प्राणों से भी प्यारे।
इतनी दया कि जीव मात्र सब, परिजन सखा हमारे॥
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर, में भी प्रीति जगाई।

और पराक्रम ऐसा जिसकी, रिपु भी करें बड़ाई॥
उसी प्रेरणा से रच दें हम, फिर से नया समाज।
अपना देश बनेगा सारी, दुनियाँ का सरताज॥

मानवता के लिये हड्डियाँ, तक जिनने दे डाली।
माताओं की हुईं अनेकों, बार गोदियाँ खाली॥
पर न पाप के आगे उनने, अपना शीश झुकाया।
संस्कृति का सम्मान बढ़ाने, हँस-हँस शीश कटाया॥
रहे शिवाजी अर्जुन जैसा, निज चरित्र पर नाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज॥

दिया न्याय का साथ भले ही, हारे अथवा जीते।
गीद्ध, गिलहरी तक न रहे थे, परमारथ से पीछे॥
इसी भूमि में वेद पुराणों, ने थी शोभा पाई।
जन्म अनेकों बार यहीं, लेते आये रघुराई॥
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजायें साज॥
अपना देश बनेगा सारी, दुनियाँ का सरताज॥
सोये स्वाभिमान को आओ, सब मिल पुनः जगायें।
नव जागृति के आदर्शों को, दुनियाँ में फैलायें॥
ज्ञान यज्ञ की यह मशाल, हर लेगी युग तम सारा।

हम बदलेंगे–युग बदलेगा, आज लगायें नारा॥
सुनो अरे! युग का आवाहन, कर लो प्रभु का काज॥
अपना देश बनेगा सारी, दुनियाँ का सरताज॥

मुक्तक–

ओ! ऋषि पुत्रों उठो तुम्हारा, गौरव तुम्हें बुलाता है।
तन्द्रा छोड़ो नये सृजन हित, सूरज तुम्हें जगाता है॥
देवभूमि के वासी अपनी, दिव्य शक्तियाँ पहचानो।
अग्रदूत बन महाक्रान्ति के, हित कुछ करने की ठानो॥

उगो सूर्य की तरह

उगो सूर्य की तरह गगन पर, बन प्रकाश छा जाओ।
और अंधेरा इस जगती का, जलकर स्वयं मिटाओ॥
मंद हवा बनकर बाँटो, नव प्राण थकी साँसो को।
फूलों सी मुस्कान बनो, बिखरा दो उच्छ्वासों को॥
बन अषाढ़ के मेघ भिगो दो, सूखी धरती का तन।
जिससे नव उल्लास जगे, भर उठे मोद से कण–कण॥
और साथ में कोई सुखकर, संदेशा भी लाओ॥
बनो सुशीतल छाया तरु की, भ्रांति पथिक की हर लो।

औरों को उल्लास बाँटकर, जीवन सार्थक कर लो॥
सरिता के सम बहो, प्राण भरने दाने–दाने में।
देने में जो खुशी अरे, वह रखी कहाँ पाने में॥
सतत् समर्पण द्वारा सागर, की बड़वाग्नि बुझाओ॥
पर्वत से दृढ़ विश्व हितों के, शुभ संकल्प करो तुम।
निर्झर बनकर प्यास बुझाने, को अनवरत झरो तुम॥
राह दिखाओ सदा दूसरों, को बनकर ध्रुव तारा।
पड़े रोशनी बनकर धरती, पर प्रतिबिम्ब तुम्हारा॥
बन ऊषा की लाली जन–जन, के मन कमल खिलाओ॥

हृदय बनाओ अपना जैसा, विस्तृत नील गगन है।
सहनशील बन जाओ, जैसा धरती का आँगन है॥
सागर बनकर रत्न राशि, बांटो श्रमशील मनुज को।
बनो ओस के कण नम कर दो, दिन की तपती रज को।
शशि बन निशि में भी पथिकों, के हित प्रकाश फैलाओ॥

उठो प्रबुद्ध नारियों!

उठो प्रबुद्ध नारियों, प्रकाश विश्व में भरो।
जिन्हें न भान मार्ग का, अथाह अंधकार में।

न ले सके जो श्वाँस बैठकर मृदुल बयार में॥
है जिन्दगी पठार सी– दुरूह जिनके वास्ते।
भरे हैं मात्र कष्ट कण्टकों से जिनके रास्ते॥
बनो सुगन्ध युक्त पुष्प और राह में झरो।
उठो प्रबुद्ध नारियों, प्रकाश विश्व में भरो॥

जिन्हें न मिल सकी है तृप्ति–रूप बूँद स्नेह की।
न प्यास प्राण की बुझी न अग्नि शान्त देह की॥
जो स्वार्थों में लिप्त हैं, परमार्थ का न भान है।
कुछ जिन्हें न मानवीयता का तनिक ध्यान है॥

उन्हें कहो कि शांतिकारिणी सुनीतियाँ वरो।
उठो प्रबुद्ध नारियों, प्रकाश विश्व में भरो॥

जहाँ मरुस्थली वहाँ, सु-धार नीर की बनो।
जहाँ है वेदना वहीं समाप्ति पीर की बनो॥
अधर जो शुष्क हैं-सभी को बाँटती चलो मनी।
बनो असीम पूर्णता दिखे जहाँ-जहाँ कमी॥
बनाओ नई नीतियाँ-कि अशिवता का तम हरो।
उठो प्रबुद्ध नारियों, प्रकाश विश्व में भरो॥

एक तुम्हीं आधार सद्गुरु

एक तुम्हीं आधार सद्गुरु।
एक तुम्हीं आधार॥

जब तक मिलो न तुम जीवन में।
शान्ति कहाँ मिल सकती मन में।
खोज फिरा संसार सद्गुरु॥

कैसा भी हो तैरन हारा।
मिले न जब तक शरण सहारा।
हो न सका उस पार सद्गुरु॥

हे प्रभु! तुम्हीं विविध रूपों में।
हमें बचाते भव कूपों से।
ऐसे परम उदार सद्गुरु॥

हम आये हैं द्वार तुम्हारे।
अब उद्धार करो दुःखहारे।
सुनलो दास पुकार सद्गुरु॥

छा जाता जग में अंधियारा।
तब पाने प्रकाश की धारा।
आते तेरे द्वार सद्गुरु॥

मुक्तक:-

बीच भँवर में नाव हमारी, कोई न खेवनहार।
नैया कर दो पार सद्गुरु, एक तुम्हीं आधार॥

ऐसा कोई सुमन

ऐसा कोई सुमन नहीं है, जो न खिला इस धरती पर।
कितना प्यार भरा है इसमें, शान्तिकुञ्ज कितना सुन्दर॥
पावन प्रेम पिता का इसमें, माँ का मधुर दुलार भरा।
स्नेह भरा भाई-भाई में, बहनों का सत्कार भरा॥

गूँजा करते गान यहाँ पर, मानवीय गौरव के स्वर॥
यहाँ अखण्ड ज्योति जलती है, जग उजियारा करती है।
अंधकार कर दूर आत्मा, में नूतन बल भरती है॥
संस्कृति के संदीप यहाँ पर, रहते हैं प्रतिपल भरकर॥
सेवा के संदेश रात-दिन, यहाँ पुकारा करते हैं।
यहाँ शत्रु तक अपने मन का, मैल बुहारा करते हैं॥
अर्द्ध निशा में गीत सुनाती, गंगा की कल-कल हर-हर॥
यज्ञ यहाँ की प्राणवायु में, बल-आरोग्य बढ़ाते हैं।
सविता नित नूतन किरणों से, जिसका मान बढ़ाते हैं॥

यहाँ स्वयं गायत्री माता, हाथ फेरती हैं सिर पर॥

एक बार आने से इसमें, मन भर जाया करता है।
बार-बार आने को फिर भी, जी ललचाया करता है॥
ऐसी ममता प्यार महत्ता, छाई रहती इस दर पर॥

मुक्तक-

शान्तिकुञ्ज की तपस्थली का, चलो चलें हम वन्दन कर लें।
नवयुग के सच्चे तीर्थस्थल का, अभिनव अभिनन्दन कर लें॥
आओ हम धरती पर ऐसी, स्वर्ग भूमि के दर्शन कर लें।
जहाँ मिटे भ्रम जहाँ जगें हम, उसका ही तीर्थाटन कर लें॥

ऐसी भी क्या कायरता

ऐसी भी क्या कायरता, इतना तो नहीं डरो।
पाश्चात्य संस्कृति से अब तो, खुलकर युद्ध करो॥
बात वेशभूषा तक रहती, तो चुप रह जाते।
खान–पान से भी बच जाते, कभी न टकराते॥
दुश्चरित्रता लेकिन अब तो, हद तक बढ़ आयी।
कर लेना बर्दाश्त उसे तो, अतिशय दुःखदायी॥
विष पीकर मर जाना अच्छा, मन न अशुद्ध करो॥
अगर सिनेमा श्रृंगारिकता, तक ही रह जाता।

तो यह अन्तर्द्वन्द्व न शायद, इतना दुःख पाता॥
लेकिन वह तुल पड़ा, नारियों को नंगा करने।
खलनायक सीधे घुस आया, है अपने घर में॥
अस्त्र करो धारण, जनमानस को भी क्रुद्ध करो॥

भ्रष्टाचार दहाड़ रहा है, खुलकर दरवाजे।
नाच रही पशुता घर–घर में, बजा–बजा बाजे॥
प्रजातंत्र को कौन संभालेगा, आगे बढ़कर।
आँख मूँदकर बैठ गये यदि, हिंसा से डरकर॥
जनमानस का करो प्रशिक्षण, उसे प्रबुद्ध करो॥

आगे बूढ़ा भीष्म पितामह, पीछे कर्ण छली।
दायें द्रोणाचार्य बीसियों, बायें बाहुबली॥
चक्रव्यूह है कठिन, किन्तु अभिमन्यु न घबराना।
डर जाने से अच्छा उसमें, घुसकर मर जाना॥
वीरों और शहीदों का पथ, मत अवरुद्ध करो॥

उपज पड़े रावण–अहिरावण, अपने ही घर में।
सूर्पणखायें नाच रही हैं, 'जैक्सन' के स्वर में॥
अपने लोकगीत बेचारे, माँग रहे भिक्षा।
लोकपाल कह रहे कि यह, सब ईश्वर की इच्छा॥

इस कुत्सा को आग लगाओ, अब गृह युद्ध करो॥

मुक्तक-

सज्जनता अच्छी है, लेकिन कायरता से दूर रहे।
कौन सराहे शौर्य अगर वह, हृदयहीन या क्रूर रहे॥
संस्कृति चाह रही सज्जन को, शौर्यवान बनना होगा।
मानवता की रक्षा करने, धर्मयुद्ध करना होगा॥

ऐ मेरे दिल के टुकड़ों

ऐ मेरे दिल के टुकड़ों, कुछ करके तुम्हें दिखाना।

यह आश हमारी तुमसे, नवयुग तुमको ही लाना॥

जब साथ थी मेरी काया, हर पल तुमको दुलराया।
अब सूक्ष्म रूप होने पर, हर क्षण तुमको सहलाया॥
इस क्रम को तुम्हीं बढ़ाना, युग धर्म तुम्हीं अपनाना।
अकुलाए तृषित सुतों पर, करुणा ममता बरसाना॥

यह आस तुम्हीं से करते, नवयुग तुम ही लाओगे।
हर क्षण हर पल तुम मुझको, अपने करीब पाओगे।
मेरे नन्हें छौनों को, ममता रस तुम्हीं पिलाना।
इन दुखियारे पुत्रों को, बस ढाँढस तुम्हीं दिलाना॥

मैने सौंपी है तुम पर, संस्कृति की जिम्मेदारी।
धरती को स्वर्ग बनाने, तुमको करनी तैयारी॥
तुम स्वयं आज लो अणुव्रत, सबको संकल्प दिलाना।
मेरे विचार काया से, अवगत तुम उन्हें कराना॥
टूटे ना कोई भी दिल, बस ध्यान यही तुम रखना।
अभियान लक्ष्य तक पहुँचे, बस ध्यान नित्य तुम करना॥
कंधे मजबूत तुम्हारे, तुम श्रवण कुमार कहाना।
तुम पले स्नेह आँचल में, औरों को राह दिखाना॥
विद्या विस्तार समय है, अज्ञान ग्रसित मानवता।

देवत्व आज सोया है, बढ़ती जाती दानवता॥
मेरे विचार अमृत से, नवजीवन उन्हें दिलाना।
मेरे जीवन सूत्रों को, घर-घर में तुम फैलाना॥
मैं दीपक में रहता हूँ, तुम ज्ञान दीप प्रकटाना॥

मुक्तक-

ये मेरे दिल के टुकड़ों, तुम दर्द समझ लो दिल का।
तुम बनों नयन का तारा, ये अवसर है तुम सबका॥
पर मत भूलो तप मेरा, अनुदान बाँटने आये।
तुम याद उसे भी कर लो, आशीष सदा तुम पाये॥

ऐसी कृपा करो जग जननी

ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्री मय हो।
सद्चिन्तन सद्भाव जगे, सत्कर्मों की जग में जय हो॥
कण–कण में अणु–अणु में माता, रूप तुम्हारा पायें हम।
अपना ही परिवार मिले माँ, जहाँ कहीं भी जायें हम।
धूप खिले नयनों में उजली, मन में नव सूर्योदय हो॥
जीवन लक्ष्य सुझाया तुमने, कभी न उसको भूलें हम।
धन–साधन सम्मान मिले तो, जरा न मद में फूलें हम।
कहीं न हो पग डगमग–डगमग,पल भर भी न कभी भय हो॥

कितने ही दानी बन जायें, अथवा हों बलिदानी हम।
किन्तु किसी पल भी तो मन में, हो न सकें अभिमानी हम।
हर चिंतन हर कर्म हमारा, माता तुममें ही लय हो॥

ऐसा अंतकरण: हो माता, जैसा मान सरोवर हो।
वाणी हो वेदों सी पावन, कर्म सुमन से सुन्दर हो।
कृपा तुम्हारी पाकर माता, मन पावन देवालय हो॥

मुक्तक-

मन में वास तुम्हारा है माँ, पावन उसे बनाना है।
सुविचारों सद्भावों से माँ, उसको खूब सजाना है॥

कर्म प्रचण्ड करें हम हर क्षण, नहीं अहं का लेश रहे।
अन्दर आभा रहे तुम्हारी, चाहे जैसा वेश रहे॥

एक दिन ही जी

एक दिन ही जी, मगर इन्सान बनकर जी।
आपदा आये भले, मत छोड़ना संकल्प अपने।
हो सघन मत टूटने, देना कहीं सुकुमार सपने॥
देखना मुड़कर भला क्या? पंख बींधे कण्टकों को।
मत कभी देना महत्ता, मार्ग–व्यापी संकटों को॥

एक दिन ही जी, सफल अभियान बनकर जी!
एक छोटी नाव, उसके ही सहारे पार जाना।
हो भले तूफान राही! सोचना मत, जूझ जाना॥
कष्ट सहकर भी स्वयं, इस विश्व का उपकार कर जा।
छोड़ जा पदचिह्न अपने, तीर्थ नव-निर्माण कर जा॥
एक दिन ही जी, जगत की शान बनकर जी!
चमक बिजली-सा गगन में, जब कभी छायें घटायें।
बन अडिग चट्टान! तुझसे, आंधियाँ जब जूझ जायें॥
कुछ नहीं कठिनाइयाँ, विश्वास की ज्वाला जलाले।

युग नया निर्माण करने, की अटल सौगन्ध खा ले॥
एक दिन ही जी, मगर वरदान बनकर जी!

मुक्तक–

जिन्दगी थोड़ी जियें पर शान से–
जूझते जायें सदा तूफान से।
क्या नहीं संभव हुआ संकल्प से–
मौत भी घबरा गयी इन्सान से॥

ऐ धरती के रहने वालों

ऐ धरती के रहने वालों, धरती को स्वर्ग बनाना है।
है स्वर्ग कहीं यदि ऊपर तो, उसको इस भू पर लाना है।।
    है स्वर्गलोक इस धरती पर, ऊपर अथवा अन्यत्र नहीं।
    तुम उसको यहीं तलाश करो, जाओ न ढूँढने और कहीं।।
    अपने पुरूषार्थ प्रयत्नों से, कर दो उसका निर्माण यहीं।
    यह आशा का सन्देश तुम्हें, भू-मण्डल पर फैलाना है।।
पिता-पुत्र, पति-पत्नी भाई, भाई में हो प्यार जहाँ।
देवरानी और जेठानी में हो, प्रेम पूर्ण व्यवहार जहाँ।।

हो सास-बहू ,भाभी व ननद में, नहीं कभी तकरार जहाँ।
ऐसे परिवार बना करके, घर-घर में स्वर्ग बुलाना है।।
चिन्तायें तजकर लाभ-हानि, सबमें प्रसन्न रहना सीखो।
दुःख, व्यथा, विघ्न, बाधा, संकट, सबको हँस-हँस सहना सीखो।।
ईर्ष्या व द्वेष को छोड़, प्रेम की धारा में बहना सीखो।
रोने-धोने को छोड़ मधुर, संगीत सदा ही गाना है।।
सम्बन्धी मित्र पड़ौसी से, निष्कपट मधुर व्यवहार करो।
उनके सुख में तुम सुखी बनो, सेवा कर उनके दुःख हरो।।
निर्बल सज्जन से डरो सदा, बलवान दुष्ट से भी न डरो।

सच्चे अर्थों में बन मनुष्य, जीवन आदर्श बिताना है।।
जिस ग्राम, नगर में वास करो, उसको आदर्श बनाओ तुम।
दुर्गन्ध,गन्दगी दूर हटा, विद्या घर-घर फैलाओ तुम।।
कर दूर रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ, जग में नव-ज्योति जगाओ तुम ।
अज्ञान हटाकर इस जग का, फिर से आलोक जगाना है।।

ऐसी ज्योति जगा जगदम्बे

ऐसी ज्योति जगा जगदम्बे, जीवन पथ चल पायें हम।
मन का तिमिर मिटा दे अम्बे, छवि तेरी लख पायें हम॥

सूरज तेरी ज्योति जगाये, चाँद उतारे आरती।
दीप जलाये अनगिन तारे, माँग सँवारे भारती।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, किन शब्दों में गायें हम॥
ना जाने हम अर्चन-वन्दन, ना पूजा आराधना।
मंत्र न जानें तंत्र न जानें, ना सेवा ना साधना।
केवल नाम पुकारे अम्बे, और न कुछ कर पायें हम॥
तू अनन्त सागर हम तेरी, एक छोटी सी बूँद हैं।
राह न सूझे मंजिल ढूँढ़े, हम सेवक बेसूझ हैं।
बड़ी कठिन है डगर तुम्हारी, गिरें उठें बढ़ जायें हम॥

मुक्तक-

या देवि सर्वभूतेषु, मातृ रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै , नमस्तस्यै , नमो नमः।।
प्रज्ञा दुर्मति दूर कर, मंगल कर सब काज।
मन मंदिर उज्ज्वल करो, कृपा करके आज॥

मुक्तकः-

कहीं है स्वर्ग यदि तो वह, मनुज के आचरण में है।
मनुज की देह पाकर के, मनुजता के वरण में है।।
बसाता है जहाँ पर भी, मनुज बस प्यार की दुनियाँ।

वहीं है स्वर्ग क्योंकि, स्वर्ग तो अन्तःकरण में है।।

एक रहेंगे–नेक रहेंगे

एक रहेंगे नेक रहेंगे, गूँजे नया तराना।
हम सुधरेंगे युग सुधरेगा, जन–जन का हो गाना॥

नवयुग झाँक रहा प्राची से, मोह निशा को त्यागो।
असुर वृत्ति के अन्धकार को, मेटो! देवों! जागो॥
सत्कर्मों का दौर चलाकर, घर–घर स्वर्ग बनाना॥

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल, जलाओ युग निर्माणी।

जिससे गूँज रही है संत शिरोमणि की युगवाणी॥
झोलों में साहित्य लिए अब, घर–घर में फैलाना।
बनें ज्ञान मन्दिर घर–घर में, ऐसी ज्योति जलानी।
जिससे ले साहित्य पढ़ें सब, और बनें सब ज्ञानी॥
आहुतियाँ दुर्गण की दें, जीवन को यज्ञ बनाना॥
सीता, अनुसुइया, झाँसी (मीरा) वाली बन जाये नारी।
राणा, शिवा, भगत, गाँधी, फिर संतति बने हमारी॥
भारत के सोये गौरव को, फिर से आज जगाना॥
चलो नया निर्माण करेंगे, मिलकर नूतन युग का।

बढ़ो! सभी साकार करें हम, सपना फिर सतयुग का॥
तप की शक्ति हिमालय से, आती है मत घबराना॥

मुक्तक-

नये युग में मशालें ज्ञान की हमको जलाना है।
हमें गुरुदेव का संदेश जन-जन में सुनाना है।
नया युग अवतरित होगा, नए अन्दाज को लेकर ।
हमें वातावरण अनुकूल उसके ही बनाना है॥

ऐ हिन्द देश के लोगों

ऐ हिन्द देश के लोगों, मेरी सुन लो करुण कहानी।
क्यों दया धरम बिसराया, क्यों दुनियाँ हुई बिरानी॥
जब सबको दूध पिलाया, मैं गौ माता कहलाई।
क्या है अपराध हमारा, जो काटे आज कसाई॥
बस भीख प्राण की दे दो, मैं द्वार तिहारे आई।
मैं सबसे निर्बल प्राणी, मत करो आज मनमानी॥ क्यों..॥
जब जाऊँ कसाई खाने, चाबुक से पीटी जाती।
उस उबले जल को तन पर, मैं सहन नहीं कर पाती॥

जब यंत्र मौत का आता, मैं हाय-हाय चिल्लाती।
मेरा कोई साथ न देता, क्यों निपट क्रूरता ठानी।। क्यों..।।

उस समदर्शी ईश्वर ने, क्यों हमको मूक बनाया।
ना हाथ दिये लड़ने को, अपनों ने भी बिसराया।
कोई मोहन बन जाओ रे, जिसने मोहे कंठ लगाया।
मैं फर्ज निभाऊँ माँ का, पर जग ने प्रीत न जानी।। क्यों..।।

मैं माँ बन दूध पिलाती, तुम माँ का मांस बिकाते।
क्यों जननी के चमड़े से, तुम पैसा आज कमाते।।
मेरे बछड़े अन्न उपजाते, पर तुम सब दया न लाते।

गौ हत्या बंद करो रे, रहने दो वंश निशानी।। क्यों..।।

मुक्तक:-

गोपाल कृष्ण है इष्ट जहाँ, गौ माता पूजी जाती है।
उनके ही बीच कहो कैसे, गौ हत्यायें की जाती हैं।।
क्यों भूल कर रहे हो ऐसी, जिसको खुद झेल न पाओगे।
यदि गौ रक्षा में चूक गये, बर्बाद स्वयं हो जाओगे।।

ऐ वतन! गम न कर

ऐ वतन! गम न कर, चल पड़े कारवाँ।

ओ चमन! धैर्य धर, जग गये बागवाँ॥
दर्द दिल का तेरे जानते हैं सभी।
'दर्द अपना' उसे मानते हैं सभी।
तिलमिलाने लगी, दर्द की दास्तां॥
दर्द से हो द्रवित, वीर बालक चले।
अब समझ ले वतन, कष्ट तेरे टले।
हौसले ले चले, पुत्र तेरे जवां॥
अब जवानी उठी, तेज तूफान सी।
रौंदते शत्रु को वीर हनुमान सी।

दुष्टता का बचेगा, न नामोनिशां॥
नारियाँ आँधियों सी उठीं चल पड़ीं।
दुष्प्रथायें मिटाने कमर कस खड़ी।
अब प्रगति के चरण छू रहे आसमां॥
सद्विचारों के पंछी चहकने लगे।
सद्गुणों के सुमन, फिर महकने लगे।
देश होगा अमन,चैन का गुलशितां॥
विश्व को स्नेह–सौगात बाँटेंगे हम।
अब घृणा, द्वेष के गर्त, पाटेंगे हम॥

अब बदल कर रहेगी, जहाँ की फिजां॥

मुक्तक:-

मातृभूमि! है शपथ आपके साथ चलेंगे।
अब सारे दु:ख दर्द और व्यवधान टलेंगे॥
जूझेंगे हम सब मिलकर माँ! अन्यायों से।
समता, ममता, स्नेह , शान्ति के फूल खिलेंगे॥

एक ही आधार

एक ही आधार गुरुवर, एक ही विश्वास है।

आप हैं अन्तःकरण में , आप ही मधुमास हैं॥
दर्द होता जब हृदय में–आप देते सांत्वना।
आपका आशीष है–उज्ज्वल भविष्यत् कामना॥
आपके संकल्प में मुखरित समय की साँस है॥
शिष्य गण हैं आपके–गुरुवर तुम्हारे पूत हैं।
अंग अवयव हैं तुम्हारे–संस्कृति के दूत हैं॥
सोचकर हम धन्य हैं–गुरुवर हमारे पास हैं॥
धन्य है वह दीप पावन–आपकी वह साधना।
लोक–मंगल हित गला जो–धन्य है आराधना॥

तुम बसो मन प्राण में–गुरुवर तुम्हीं से आस है॥
क्या करें अर्पित तुम्हें–कैसे करें हम वन्दना।
नयन में है अश्रु धारा–बस यही अभिव्यंजना॥
पत्र–पुष्प सभी समर्पित–जो हमारे पास है॥

मुक्तकः–

तन मन जीवन करें समर्पित, श्रद्धा गहन जगा देना।
हे गुरुवर, इस भवसागर से, जल्दी पार लगा देना॥

ओऽम नमः नमो ओंकार

ओऽम नमः नमो ओंकार, हे त्रिगुणात्मक जगदाधार।।
भू प्राणों में प्राण विधाता, घट-घट वासी ओऽम्।
भुवः सकल दुःख भञ्जन पालक, हे अविनाशी ओऽम्।।
स्वः सुखकर आनन्द प्रदाता, जीवन दाता ओऽम्।
तीन लोक में बसे निरंतर, जगत् विधाता ओऽम्।।
तत् वह तत्व, ज्ञान-विज्ञान, विधायक स्वामी ओऽम्।
सविता, तेज शक्ति के दाता, अन्तर्यामी ओऽम्।।
भर्गो पाप-ताप दुःख हर्ता, जग हितकारी ओऽम्।

हे देवस्य दिव्य गुणदायक, मंगलकारी ओऽम्।।
धीमहि धारण कर जीवन में, नित-नित ध्यावे ओऽम्।
धियो सुबुद्धि विवेक ज्ञान की, ज्योति जगाये ओऽम्।।
योनः अन्तर्यामी बोधक, भाग्य विधाता ओऽम्।
प्रचोदयात् प्रेरणा पावन, सद्गति दाता ओऽम्।।

मुक्तक-

ओऽम इति अक्षर ब्रह्म है, निराकार–साकार।
गायत्री के संग जपो तो, कर देगा भवपार॥

ओ सपूतों भारत की तकदीर

ओ सपूतों, ओ सपूतों।
ओ सपूतों भारत की तकदीर बना दो।।
हम ऋषियों की संतान हैं, दुनियाँ को दिखा दो।।
    छोड़ विदेशी चकाचौंध को, अपना गौरव देखो।
    बन्धन जो रोकेहैं गति को, उनको तोड़ो फेंको।।
    जन-जन में फिर देवों, सा ईमान जगा दो।
छोड़ याचना देना सीखो, देव भूमि के वासी।
खिले फूल सी जिओ जिन्दगी, कर दो दूर उदासी।।

देव भूमि की दिव्य प्रेरणा, फिर भू पर फैला दो।
युग ऋषि ने आह्वान किया है, आदर्शों की राह पर।
आज लगा दो अंकुश पैना, क्षुद्र स्वार्थ की चाह पर।।
त्याग तपस्या की सुगंधि से, फिर भू को महका दो।
नये सृजन की नई उमंगे, लेकर आगे आओ।
खुला मोर्चा निर्माणों का, मिलकर कदम बढ़ाओ।।
राम राज्य के सपनों को, सच करके दिखा दो।

मुक्तक-

भारत माँ के पूतों का इतिहास निराला है।

जिनके आचरणों ने जग में नाम उछाला है॥
तुम पश्चिम की चकाचौंध में भटक नहीं जाना।
अरे! देवसंस्कृति का सूरज उगने वाला है॥

ओऽम् भूः ओऽम् भुवः

ओऽम् भूः, ओऽम् भुवः,ओऽम् स्वः ओऽम्।
सत् ओऽम्, चित् ओऽम्, आनन्द ओऽम्॥
प्रभु के नाम रूप अगणित हैं।
वह तो घट-घट में स्थित हैं।

प्रभु का बोध कराये ओऽम्।।
वह तो है निर्मल अति पावन।
दे सद्‌बुद्धि कुबुद्धि नसावन।
दूर विकार हटाये ओऽम्।।
प्रभु से डरे सो निर्भय होवे।
सब सुख लहैं दीनता खोवे।
कर विश्वास पुकारो ओऽम्।
उसके घर है सबको जाना।
सबका अंतिम वही ठिकाना।

अक्षर ब्रह्म सनातन ओऽम्।।

मुक्तक

ओऽम् ही है सर्व व्यापक, ओऽम् सबका सार है।
ओऽम् ही सद्ज्ञान है, सद्पथ दिखावनहार है।।
ओऽम् ही है ब्रह्म परमानन्द, का भी स्रोत है।
ओऽम् से उत्पन्न,पोषित,सुरक्षित संसार है।।

ओ बहिनों माताओं आओ

ओ बहिनों माताओं आओ–आओ कलश धरो।

अपना सुख सौभाग्य जगाने, आओ भ्रमण करो॥
–आओ मिलकर कलश धरो॥

मुख में विष्णु, कंठ में शंकर, तल में ब्रह्मा शक्ति भरे।
सप्तद्वीपमय वसुन्धरा सब, सिन्धु वेद भी वास करे॥

जीवन धन्य बनाने आओ, आओ कलश धरो।
दुर्गा शक्ति जगाने आओ, आओ कलश धरो॥

सतियों का अक्षत सुहाग हो, माताओं की गोद भरे।
घर–वर श्रेष्ठ मिले कन्या को, जो भी सिर पर कलश धरे॥
सब मिल भाग्य जगाओ अपना, आओ कलश धरो।

अपना सुख सौभाग्य जगाने, आओ कलश धरो॥
शान्ति विश्व में फैलायें सब, मानव का उद्धार करें।
नगर–नगर में,डगर–डगर में, प्रज्ञा का संचार करें॥
नवयुग का आमंत्रण देने, आओ कलश धरो।
माँ सीता, सावित्री आओ, जन उत्साह भरो॥
नारी शक्ति महान जगत की, यह सबको दिखलाना है।
लिए संदेशा नये सृजन का, द्वार–द्वार पर जाना है॥
युग धारा से जुड़ो देवियों, नवयुग सृजन करो।
अपनी सोई शक्ति जगाओ, युग निर्माण करो॥

मुक्तक–

बुला रहें हैं कलश देवता, मातृशक्तियों आगे आओ।
धारण करके इन्हें शीश पर, अपना सुख सौभाग्य बढ़ाओ॥

ओ धर्म की पताका

ओ! धर्म की पताका, फहरोऽऽ......।
फहरो धरा गगन में, गगन में।।
उड़ती हो गंध भीनी, ज्यों दूर तक चमन में।
ओ! धर्म की पताका, फहरो......।।

तू प्राण विश्व का है, अभिमान विश्व का है।
उज्ज्वल भविष्य का तू, अनुमान विश्व का है॥
उल्लास मिल सकेगाऽऽ- केवल......।
तेरे ही अनुकरण में-वरण में॥ उड़ती...॥

फैला जहर हवा में, धरती पे, आसमां में।
आशा बची है केवल, इस धर्म की ध्वजा में॥
तम का मरण छिपा हैऽऽ- निश्चय......।
ज्यों भोर की किरण में-किरण में॥ उड़ती...॥

कल्मष न कल मिलेगा, मानव सरल मिलेगा।

टूटेगा भ्रम जनम का, कर्मों का फल मिलेगा।।
लहरा के भाव भर दोऽऽ- भर दो......।
तुम यह हरेक मन में-मन में।। उड़ती...।।
युग शक्ति जाग जाये, हर व्यक्ति जाग जाये।
सद्वृत्ति के लिए फिर, अनुरक्ति जाग जाये॥
होवे उदारता फिर, भू–पर ऽऽ.................।
प्रत्येकआचरण में, चरण में....॥ उड़ती....॥
नव चेतना जगेगी, संवेदना जगेगी।
कल्याण को सभी के, भागीरथी बहेगी॥

डूबेगा फिर न कोई–कोईऽऽ........... ॥
असहाय अश्रु कण में–कण में॥ उड़ती..... ॥

मुक्तक–

उज्ज्वल भविष्य रचने,अब फिर से इस जहाँ का।
नवज्योति शक्ति लेकर,फहरेगी यह पताका॥

औरों के हित जो जीता है

औरों के हित जो जीता है,औरों के हित जो मरता है।
उसका हर आँसू रामायण,प्रत्येक कर्म ही गीता है॥

जो तृषित किसी को देख सहज,ही होता है आकुल–व्याकुल ।
जिसकी साँसों में पर पीड़ा,भरती है अपना ताप अतुल॥
वह है शंकर जो औरों की,वेदना निरन्तर पीता है॥
जो सहज समर्पित जनहित में,होता है स्वार्थ त्याग करके।
जिसके पग चलते रहते हैं,दु:ख दर्द मिटाने घर–घर के॥
वह है दधीचि जिसका जीवन, जगहित तप करके बीता है॥
जिसका जीवन संघर्ष बनी,औरों की गहन समस्या है।
तम में प्रकाश फैलाना ही,जिसकी आराध्य तपस्या है॥
जो प्यास बुझाता जन–जन की,वह पनघट कभी न रीता है॥

जिसने जग के मंगल को ही,अपना जीवन व्रत मान लिया।
परिव्याप्त विश्व के कण-कण में,भगवान् तत्त्व पहचान लिया॥
उस आत्मा का सौभाग्य अटल, वह ही प्रभु की परिणिता है॥

मुक्तक-

जिया स्वयं के लिये नहीं जो-औरों के हित मरना सीखा।
दुःखियारी पीड़ित मानवता-देख के जिसका अन्तस् चीखा॥
बना वही जग का पैगम्बर-मन्दिर का भगवान बन गया।
गुरुद्वारे का ज्ञानग्रंथ वह-गिरजाघर की शान बन गया॥

कर रहे भाव पूजन तुम्हारा

कर रहे भाव पूजन तुम्हारा, मातु स्वीकार लो धन्य कर दो।
मन, वचन, कर्म से हो समर्पण, भावना तीव्र अन्तर में भर दो॥
प्रीति पावन कहीं खो गई है, भाव संवेदना सो गई है।
स्नेह बन हों प्रवाहित जगत में, प्रेरणा आज यह हो रही है।
अर्घ्य बनकर चरण पर पड़ें हम, पुण्य रसधार का ज्वार भर दो॥
बढ़ गया द्वेष, सद्‌भाव है कम, आज इन्सान की आँख है नम।
द्वेष, दुर्गन्ध को दूर करने, बन सरस गंध जग में घुलें हम।
शुभ्र चन्दन बनें,हों समर्पित, कामना साधना दिव्य कर दो॥

यह जगत भर गया कण्टकों से, आज मानव घिरा संकटों से।
खिल सकें फूल से कण्टकों में, कष्ट को जीत लें जीवटों से।
पुष्प बनकर समर्पित रहें हम, तीव्र उल्लास संचार कर दो।।
स्वार्थ संकीर्णता की लहर है, लिप्त उसमें मनुज हर प्रहर है।
पुण्य परमार्थ बन दूर कर दें, आज घर-घर घुला जो जहर है।
शुद्ध नैवेद्य बनकर बटें हम, दिव्य संस्कार वह मातु भर दो॥

मुक्तक-

भावों के भगवान हृदय को, अब तो भव्य भाव से भर दो।
जीवन ही पूजा बन जाये, इतना पावन जीवन कर दो॥

मानव का मन झुलस रहा है, घृणा, द्वेष की क्रूर आग से।
अभिसिंचित कर सकें स्नेह से, हमें नेह रस से तर कर दो॥

किसी के काम जो आये

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है–कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा, कहीं ठोकर।
कोई हँस–हँस के जीता है, कोई जीता है रो–रोकर।
जो गिरकर फिर सँभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, वो अक्सर हो ही जाती है।
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं।।

यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
लिए इन्सान का दिल जो, वही परमार्थ करते हैं।
पथिक जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

मुक्तक-

दर्द का पीकर हलाहल, मुस्कुराना जिन्दगी है।
बच सके कोई अगर तो, चोट खाना जिन्दगी है।।

अगर किसी के काम न आए, कौन हमें इन्सान कहेगा।
गलती पर गलती दोहराए, कौन क्षमा का दान करेगा।।
मानव श्रेष्ठ कहा जाता है, केवल उसके आचारों से।
वही दुराचरण अपनाए, माफ नहीं भगवान करेगा।।

कोठरी मन की सदा

कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे।
कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे॥
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से।
कौन जाने कब निमंत्रण मान बैठे॥

दर्द यदि उभरे कभी मन में तुम्हारे।
खर्च मत करना बिना सोचे विचारे॥
दर्द से रिश्ता सदा प्रभु का रहा है।
नाम करूणा सिंधु ही उसका रहा है॥

एक भी आँसू न कर बर्बाद बन्दे।
कौन जाने कब समन्दर माँग बैठे॥
चाह हो तो राह बन जाती गगन में।
चाह से उत्साह भरता मन बदन में॥
चाह पूरी हो यही सब माँगते हैं।
किन्तु उसका मर्म कब पहचानते हैं॥
स्वर्ग भूतल पर गढ़े कैसे विधाता।
नर्क में ही सुख मनुज यदि मान बैठे॥
रोज मानव कर रहा दुःख की शिकायत।

दुष्टता की कर रहा फिर क्यों हिमायत॥
दुःख हरेंगे प्रभु स्वयं अवतार लेकर।
मानवी पुरुषार्थ को पर साथ लेकर॥
सूर्य उगकर भी भला क्या हित करेगा।
आँख से पट्टी अगर हम बाँध बैठे॥

माँगने की रीति सी कुछ चल पड़ी है।
कृपणता से प्रीति सी कुछ हो चली है॥
क्यों नहीं परमार्थ पथ का मान रखते।
क्यों नहीं इन्सानियत की शान रखते॥

है तुम्हें दाता विधाता ने बनाया।
क्यों अरे खुद को भिखारी मान बैठे॥

मुक्तक-

इष्ट से रिश्ता अगर सच्चा बनाना चाहते हैं।
और जीवन में विमल अनुदान पाना चाहते हैं।।
तो शिकायत के स्वरों में बात करना छोड़ दें।
और निज अंतःकरण को दिव्यता से जोड़ लें।।

क्रान्ति का अध्याय

क्रान्ति का अध्याय लिखकर दे गये हैं आप जो–
हम कदम उससे कभी, पीछे हटायेंगे नहीं।
याद तो हरदम, सतायेगी गुरुजी! आपकी–
कायरों की भाँति हम, आँसू बहायेंगे नहीं॥

आप शंकर बन, ज़हर पीते रहे संसार का।
पर न व्रत छोड़ा, कभी भी आपने उपकार का॥
दर्द इतना भर लिया है–जिन्दगी में आपने।
ध्यान तक आया नहीं, क्षण भर कभी अधिकार का॥

किस तरह हम आपसे फिर कामना सुख की करें।
बढ़ गये जिस राह पग, पीछे हटायेंगे नहीं॥
इन्द्र–सा ऐश्वर्य पाकर, भी सदा वामन रहे।
आह तक निकली न मुख से, घात हैं कितने सहे॥
घूँट जीवन भर प्रभो, अपमान का तुमने पिया।
भूल पाते हैं न कितना, दर्द दनुजों ने दिया॥
जानते हैं देव हम, उनको बहुत नजदीक से।
किन्तु हम उनसे कभी, बदला चुकायेंगे नहीं॥
दाँव पर बाजी लगी है, जीत हो या हार हो।

प्रश्न यह उठता नहीं, अब कौन सा आधार हो॥
हम जहाँ भी हैं हमारी, हैसियत छोटी-बड़ी।
आपके चरणारविन्दों का वही उपहार हो॥
पाँव में छाले पड़ें, या आग पर चलना पड़े।
किन्तु किंचित् भी कदम, यह डगमगायेंगे नहीं॥
आज दुनियाँ में भयानक, भेद है टकराव है।
जो हमारे हैं उन्हीं में, बैर है बिखराव है॥
उन सभी के ही लिए, गंगा बहा दी ज्ञान की।
जिन दिलों में द्वेष है, दुर्भाग्य है दुर्भाव है॥

हम सभी मिलकर रहेंगे, एक बनकर नेक बन।
आपने जो कुछ सिखाया, है भुलायेंगे नहीं॥

याद आती आपकी, पूजन प्रभो! कैसे करें।
लक्ष्य में आँखें लगीं जो, वे सलिल कैसे झरें॥
आप ओझल हो गये, तो क्या रहा संसार में।
अर्चना के थाल में, श्रद्धा सुमन कैसे धरें॥
आप जो दीपक जलाकर, रख गये हैं सामने।
लें प्रभो! विश्वास हम, उसको बुझायेंगे नहीं॥

मुक्तक-

हे ! वेदमूर्ति हे ! तपोनिष्ठ–हे युग–दृष्टा हे युग त्राता।
गूँजेगी सदियों तक तेरे–जीवन की प्रज्ञामय गाथा॥
श्रीराम तुम्हारे चरणों में–शत्–शत् वन्दन शत्–शत् वन्दन।
हो गया धन्य यह धरा धाम–पाकर पावन ये वरद चरण॥

कुल की परम्परा मर्यादा (बेटी की विदाई)

कुल की परम्परा मर्यादा, निभाये जाना बेटी।
अब सास–ससुर घर जाओ, मत रोओ और रुलाओ।
अपने बचपन का संसार, भुलाये जाना बेटी॥

सब काम समय पर करना, चीजें जहँ की तहँ धरना।
अपने उत्तम कर्म, विचार, बढ़ाये जाना बेटी॥
जो दे प्रभु सम्पत्ति भारी, तो भूल न जाना प्यारी।
अपने देश, धर्म हित दान, दिलाये जाना बेटी॥
घर में आ जाये गरीबी, मत धर्म छोड़ना फिर भी।
साहस से अपना काम, चलाये जाना बेटी॥
मत फैशन में पड़ जाना, मत फूहड़पन दर्शाना।
उत्तम गृहिणी का श्रृंगार, सजाये जाना बेटी॥
ये शिक्षा सार बताया, सुख होगा अगर निभाया।

सबको सज्जनता के गीत, सुनाये जाना बेटी॥

मुक्तक-

विदाई दे रहे बेटी, हृदय में टीस भारी है।
तुम्हारे हाथ में कुल की व मर्यादा हमारी है॥
समर्पण भाव से रोशन बनाना नाम इस कुल का।
इसी में स्नेह, सुख, सम्मान व समृद्धि सारी है॥

कर रहे हैं साधना हम

कर रहे हैं साधना हम, शक्ति गुरुवर आप देना।

देखना हम गिर न पायें, बीच में ही थाम लेना॥
कम पड़ी ऊर्जा अतः, आवाज हे! गुरुवर लगायी।
चल रहे हैं राह वह जो, आपने हमको बतायी॥
शक्ति चलने की सतत् दो, बीच में यह पग रुके ना॥
ध्यान में डूबे हृदय तो, हो प्रभामय छवि तुम्हारी।
दमकती हो तेज से प्रभु, प्राणमय आभा सुखारी॥
साथ ही वर दो कि सह लें, तेज वह ये निबल नैना॥
जन्म सार्थक हो गया, तुमने हमें यह कार्य सौंपा।
धन्य हैं हम जगत्हित की, योजना का अंश रोपा॥

अब किये बिन काम कुछ इस हृदय को पड़ता न चैना॥

(गुरुवर)

आप ही गुरु आप सविता, आप गायत्री हमारे।
शक्ति लेने अतः आये, आपके ही हृदय द्वारे॥
प्रभु हमें आलोक दो, मिट जाय यह अज्ञान रैना॥

मुक्तक-

साधना में शक्ति आयेगी तो गुरुवर आपसे।
भावना में भक्ति आयेगी तो गुरुवर आपसे॥
चल पड़े हैं साध पथ पर ले सहारा आपका।

साधना यदि सिद्धि पायेगी तो गुरुवर आपसे॥

कर्मों के फल से न बचोगे

कर्मों के फल से न बचोगे, चलना बहुत संभाल के।
अभी समय है अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥
    कोठी कार तिजोरी भर लो, चोरी और मिलावट करलो।
    खून खराबा लूट मचालो, जो जी चाहे सो सब करलो।
    आयेगी किस काम हथकड़ी, यम ने रखी सम्भाल के॥
एक काम बस तन चमकाना, तरह-तरह के वेश बनाना।

वैसे तो तू बड़ा सयाना, पर न स्वयं को ही पहचाना।
रोयेगा जब दर्शन होंगे, अपने ही कंकाल के॥
    कभी एक क्षण दया न आयी, निर्बल को पीड़ा पहुँचायी।
    पटरी लेकर नाप ऊँचाई, कितनी कर ली पाप कमाई।
    तड़पेगा जब खौलायेगा, काल कड़ाही डाल के॥
बुरे काम का बुरा नतीजा, एकादशी करे या तीजा,
शुभ कर्मों से जो मन भीजा, धन, वैभव, यश कभी न छीजा।
बोयेगा जो वह काटेगा, यही सुअक्षर भाल के॥
    रहना नहीं बुद्धि के धोखे–ईश्वर के कानून अनोखे।

देख रहा सब बैठ झरोखे, तखरी तौल बाँटता चोखे।
देख दूर तक दृष्टि डालकर–ढूँढ न सुख तत्काल के॥
अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है, चौराहे पर आज खड़ा है।
अब भी जीवन शेष पड़ा है, अहंकार में क्यों जकड़ा है।
परमेश्वर की राह पकड़ ले, मन से कपट निकाल के॥

मुक्तक–

कैसा बुद्धिमान है मानव, ईश्वर को धोखा देता है।
सज्जनता का वेश बनाकर, दुष्ट आचरण कर लेता है॥
किन्तु कर्मफल की गहराई–मूरख समझ नहीं पाता है।

अपने हाथों खाई खोदकर, खुद ही उसमें गिर जाता है॥
चेतो अरे! समय के रहते, उज्ज्वल जीवन नीति बना लो।
कालदण्ड से बचकर भाई, सुख, यश, वैभव, सद्गति पालो॥

कर लो माँ स्वीकार

कर लो माँ स्वीकार, हमारे पूजन को।
बाँटें विमल प्रसाद, तुम्हारा जन-जन को॥

काम क्रोध ने लोभ-मोह ने, खूब सताया दम्भ-द्रोह ने।
लूट लिये जीवन के मोती, क्यों लुटते सुबुद्धि जो होती॥

अब सुन लो माँ करूण–हमारे क्रन्दन को॥

निर्मल हृदय बने शुभ आसन, हो अवतरण तुम्हारा पावन॥
पाद्य, अर्घ्य प्रेमाश्रु बनें तब, पुष्प बनें सद्भाव मृदुल सब।
मन में उठा उछाह–तुम्हारे वन्दन को॥

चन्दन ज्यों सुविचार चढ़ायें, अक्षत शुभ संकल्प कहायें।
सद्कर्मों की धूप जलाएँ, जग हितार्थ यह यज्ञ रचायें॥
श्वाँस–श्वाँस अर्पित हो, तेरे अर्चन को॥

जो साधन जगहित लग जायें, वे ही शुभ नैवेद्य कहायें।
प्राणों में लौ लगे तुम्हारी, यही आरती बनें हमारी।

कर दो माँ यों सफल, हमारे जीवन को॥

काटना है अगर जिन्दगी

काटना है अगर जिन्दगी का सफर,
गुरु चरणों में आने का वादा करो।
जिस अदालत में बैठे हैं सद्गुरु स्वयं,
उस अदालत में आने का वादा करो।।
जन्म मानव का पाया है तूने अगर।
कर्म मानव का तूने किया ही नहीं।।

चाहता है अगर जिन्दगी को सफल।
तो मनुजता निभाने का वादा करो॥
तूने चन्दन को घिस-घिस के महका दिया।
इस काया को मल-मल के चमका दिया॥
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं।
मन को पावन बनाने का वादा करो॥
छुप के बैठे हृदय में दिखेंगे नहीं।
प्रेम बिन तुमको भगवन मिलेंगे नहीं॥
प्रेम करना है तो तुम गुरू से करो।

उनके सत्संग में आने का वादा करो।।
गुरु को समझो जरा उनकी मानो अरे।
तन नहीं, शुद्ध सिद्धान्त हैं वे खरे॥
उनको अपने हृदय में बसा लो सखे!।
दिल को मंदिर बनाने का वादा करो॥

मुक्तक-

बाहर से सुन्दर सभ्य बने, अन्दर से दीन मलीन अरे।
गुरु का अनुशासन अपनाओ, भीतर बाहर हो जाओ खरे॥

किये मंत्र जप माला फेरी

किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का।
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह जीवन किस काम का॥
हर पूनों हर पर्व नहाये, गंगाजी के नीर में।
पर मन डूब न पाया बिल्कुल, किसी दुःखी की पीर में।
करते रहे सफर हम निष्ठुर, मन से चारों धाम का॥
ईश्वर ने जो दिया, लगाया केवल अपने वास्ते।
स्वार्थ-पूर्ति हो जिनसे हमने, चुने वही सब रास्ते।
किया यत्न हर पल छिन हमने, अपने सुख आराम का॥

प्रगति देखकर औरों की, हम भरे द्वेष में लोभ में।
पूर्ण न हो पायी इच्छा तो, भरे तीव्र विक्षोभ में।
ध्यान रहा हर समय हमें तो, अपने ही धन धाम का॥
व्यर्थ ऐंठना अहंकार में, भरकर झूठी शान से।
किन्तु माँगते रहना, खुद के लिए सदा भगवान् से।
द्वार-द्वार दौड़ना व्यर्थ में, यहाँ सुबह और शाम का॥

मुक्तक-

ऐसा जीवन जिएँ हमारा जीवन ही पूजन बन जाए।
जन-हिताय जीवन जीना ही, जीवन का दर्शन बन जाए॥

अहं गलाकर स्वार्थ सिद्धि के सारे ताने–बाने छोड़ें।
जन सेवा ही लक्ष्य हमारा, जीवन का हर क्षण बन जाए॥

क्यों न गुरु को करें

आओ गुरु को करें हम नमन।
क्यों न गुरु को करें हम नमन॥
मुक्ति का द्वार है जिनकी पावन शरण–
दृष्टि जिनकी करे पातकों का शमन॥
कौन गुरु से बड़ी शक्ति है विश्व में,

कौन गुरु से बड़ी भक्ति है विश्व में।
विष्णु, शिव और ब्रह्मादि सबसे बड़ी,
कौन–सी और अभिव्यक्ति है विश्व में॥
इन सभी से बड़े गुरु चरण॥
वे ही भवसिन्धु की दिव्य पतवार हैं,
करते भवसिन्धु से वे ही उद्धार हैं।
प्राण का बिन्दु उनको समर्पित किया,
वे ही लहरा उठे प्राण के बिन्दु में॥
बस वही तो हैं करुणा करन॥

सूर्य बनकर हृदय का सघन तम हरें,
चन्द्र बनकर हृदय शान्ति से वे भरें।
टूट जाये मनोबल हमारा जहाँ,
वे वहीं प्यार से हाथ सिर पर धरें॥
और है कौन विपदा हरन॥

मु०-गुरु को हम सब नमन करें, गुरुवर की शक्ति अपार हैं।
गुरु करुणा के सिन्धु, कृपा का, ही अतुलित भण्डार हैं॥
कुछ भी नहीं असम्भव उसको, जिसने गुरु की शरण गही।
गुरु को किया समर्पण, जिनने उनका बेड़ा पार है॥

करें व्यक्ति निर्माण

करें व्यक्ति निर्माण—धरा को स्वर्ग बनाना है।
इन ईंटों पर ही नवयुग का—भवन उठाना है॥
छोड़ बड़प्पन का फूहड़पन—गुरुता वरण करें।
निष्ठुर नहीं बनें मानव हैं—सद्‌आचरण करें॥
रामराज्य का सपना पूरा—कर दिखलाना है॥
त्याग, तपस्या की भट्ठी में—व्यक्ति ढला करते।
स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन में ही—देव पला करते॥
विकृत मन को भस्मासुर सा—वर न दिलाना है॥

तप नरेन्द्र को ढाल विवेकानन्द बना देता।
और मूलशंकर तप से ही–दयानन्द होता॥
उसी पुरातन परम्परा को–प्रखर बनाना है॥
युगप्रज्ञा ने फिर दहकाई–लो तप की भट्ठी।
जहाँ देवता बन सकती है–मानव की मिट्टी॥
प्रज्ञायुग का भवन उठाने–ईंट पकाना है॥

मुक्तक–

नया युग आ रहा है, इन दिनों निर्माण के क्षण हैं।
जुटे निर्माण में सब ही, इसी आह्वान के क्षण हैं॥

तपाकर त्याग, तप की भट्ठियों में पात्र बन जायें।
तपी हों व्यक्ति की ईंटें, इसी पहचान के क्षण हैं॥

कसकर कमर खड़े हो

कसकर कमर खड़े हो जाओ, सद्विचार जग में फैलाओ।
ऋषि विचार जग में फैलाओ।
जन्मशताब्दी की यह बेला, सृजनशील अभियान चलाओ॥
शताब्दी वर्ष में परिजन बढ़ें, खुद ही लिखें इतिहास।
घरों में लेखनी पहुँचायें गुरु की, है सभी से आस॥

सृजन औ साधना बिन, रह न पाये गाँव औ कोना।
गुरु के त्याग,जप–तप की फसल, उगले यहाँ सोना॥
जन्मशताब्दी के पहले ही, सच्चे साधक तुम बन जाओ॥
मशालें थामकर बहनें, चलायें ज्ञान की आँधी।
शताब्दी नारियों की है, गढ़ें आजाद औ गाँधी॥
दिखा दो मूल्य गुरुवर का, सभी ने प्यार पाया है।
सृजन में बेधड़क बढ़ जाओ, गुरु का वरद् साया है॥
जन्मशताब्दी महापर्व में, भूमण्डल पर तुम छा जाओ॥
युवक औ युवतियाँ संकल्प लें, युग को बदलना है।

बदलने इस जमाने को, प्रथम खुद को बदलना है॥
हम बदलेंगे–युग बदलेगा, हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा।
उठो गुरुदेव की संतान, रगों में है उन्हीं का रक्त॥
युवाओं सिद्ध कर दो, हो तुम्हीं माँ भगवती के भक्त॥
जन्मशताब्दी महापर्व में, युवा शक्ति तुम आगे आओ।
ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाओ, भूमण्डल पर तुम छा जाओ॥

मुक्तक–

बज उठी आज है रणभेरी, महाक्रांति का अवसर आया।
जन्मशताब्दी की यह बेला, सभी जगह उल्लास समाया॥

कहाँ छुपा बैठा है!

कहाँ छुपा बैठा है अब तक वह सच्चा इन्सान।
खोजते जिसे स्वयं भगवान॥

जिसने जानी पीर पराई, परहित में निज देह तपाई।
जिसने लगन दीप की पाई, तिल–तिल जलकर ज्योति जलाई॥
उसकी आभा से ही होता, देवों का सम्मान।
खोजते जिसे स्वयं भगवान॥

जिसने रूखा सूखा खाया, पर न कहीं ईमान गँवाया।
उसने ही वह भोग लगाया, जिसे राम ने रुचि से खाया॥

स्वार्थ रहित सेवा ही जिसकी, मेवा सुधा समान।
खोजते जिसे स्वयं भगवान॥

जिसने गला दिया अपना तन, सींचा इस धरती का उपवन।
परहितमय है जिसका जीवन, वही महकता बनकर चन्दन॥
ईश्वर के मस्तक पर होगा, उसका ही गुणगान।
खोजते जिसे स्वयं भगवान॥

मुक्तक–

दुनियाँ याद करे नित तुमको।
कार्य जगत में वह कर जाओ॥

ऐसी भक्ति करो तुम प्रभु की।
चन्दन बन उपवन महकाओ॥

कौमी तिरंगे झण्डे

कौमी तिरंगे झण्डे–ऊंचे रहो जहां में।
हो तेरी सर बुलन्दी–ज्यों चाँद आसमां में॥
तू मान है हमारा–तू शान है हमारी।
तेरे मुरीद हैं हम–तू जान है हमारी॥
दिखती हमें शहीदों–की आन इस निशां में॥

आकाश औ जमीं पर–हो तेरा बोलबाला।
झुक जाये तेरे आगे–हर तख्तताज़ वाला॥
नफ़रत को भूल जायें–आ तेरे आशियां में॥
आजाद हिन्द सारा–खुश होके गा रहा है।
सर पर तिरंगा झण्डा–जलवा दिखा रहा है॥
इंसानियत की खुशबू–भर जाय इस फिजां में॥
इंसानियत का कर दे–तू हर चिराग रोशन।
ईमान प्यार फैले–सबको सिखा दे यह फ़न॥
खिल जायें फूल से मन–दुनियाँ के गुलशितां में॥

मुक्तक-

तिरंगा ध्वज, हमारी कौम की ही शान का झण्डा।
तिरंगा ध्वज, शहीदों के अमर बलिदान का झण्डा॥
तिरंगा ध्वज, अनय से जूझ जाने की कहानी है।
तिरंगा ध्वज, अहिंसा, सत्य, हिन्दुस्तान का झण्डा॥

गुरु तेरे कौन-कौन

गुरु तेरे कौन-कौन गुण गाऊँ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर सबके, कौशल तुममें पाऊँ॥

माँ धरती सी-धारण क्षमता, ममता शुचिता या उर्वरता।
तुम हर साधक पर बरसाते, साधक जीवन धन्य बनाते।
छोटे-बड़े व ऊँच-नीच का, भेद न तुममें पाऊँ॥

तुम ऊसर में वृक्ष उगाते, कीचड़ में प्रिय कमल खिलाते।
साधक दिव्य दृष्टि पा जाते, लोहे से सोना बन जाते।
मैं भी अपने अनगढ़ मन में, दिव्य भाव विकसाऊँ॥

तुम ब्रह्मा जैसे वरदानी, विष्णु सरीखे पालक ज्ञानी।
शिव जैसे प्रिय औघड़दानी, पुरुष रूप में माँ कल्याणी।
अपना सब कुछ सौंप तुम्हीं को, मैं भी धन्य कहाऊँ॥

यज्ञरूप तुम जग हितकारी, महाकाल के तुम अवतारी।
अशिव विनाशक प्रलयङ्कारी, युग निर्माणी टेक तुम्हारी।
जिऊँ तुम्हारे लिए इसी हित, मैं भी मर-खप जाऊँ॥

मुक्तक-

सब धरती कागज करूँ, कलम करूँ वन राय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

गुरुवर दया के सागर

गुरुवर दया के सागर, तेरा दर जगत् से न्यारा।

दुनियाँ का दर भँवर है, तेरा दर ही है किनारा।।
तेरी दृष्टि है निराली, दुविधा को हरने वाली।
अन्धों की आँख में भी, नव ज्योति भरने वाली।
अज्ञान के तिमिर से, हर भक्त को उबारा॥
तेरा है ज्ञान चोखा, विज्ञान है अनोखा।
अपनाया इसे जिसने, उसने न खाया धोखा।
जो जुड़ सका न तुझसे, वह लुट गया बेचारा॥
तेरे दर पे सब बराबर, कोई बड़ा न छोटा।
चोखा बनाया सबको, आया भले ही खोटा।

जो भी शरण में पहुँचा, सबको मिला सहारा॥

दुनियाँ का रस लुभाता, मझधार में डुबाता।
तेरा–रस पुनीत पावन, है इष्ट से मिलाता।
भक्तों को इसी रस ने, भव सिन्धु से उबारा॥

मुक्तक–

गुरु की महिमा का क्या कहना, न्यारा है दरबार गुरु का।
सबको प्यार लुटाता इतना, प्यारा है दरबार गुरु का॥
बचना है दुनियाँ के धोखेबाजों के गोरखधंधो से।
सबसे तुम्हें बचा सकता है, ऐसा है आधार गुरु का॥

गुरु तेरे चरणों में

गुरू तेरे चरणों में, स्वर्ग पा लिया है।
जमीं पर खड़े, आसमां पा लिया है॥
हमें जो न सूझा, सुझाया वो तुमने।
बना जो न हमसे, बनाया वो तुमने।
मरूस्थल में हमने, चमन पा लिया है॥
तुम्हीं सत्य हो प्रभु, सदाशिव तुम्हीं हो।
तुम्हीं प्रेरणा, भावना भी तुम्हीं हो।
तुम्हें पा के हमने, अमृत पा लिया है॥

अन्धेरा मिटाकर, प्रकाशित किया मन।
भ्रमों को भगाया, किया धन्य जीवन।
अमावश में भी, चन्द्रमा पा लिया है।।

विकट अड़चनों का, भय है न हमको।
नहीं तन की पीड़ा,न चिन्ता है मन को।
अमर प्यार का, आशियां पा लिया है।।

चरण में शरण दे, न अब छोड़ देना।
सदा के लिए, प्रेम से जोड़ देना।
बनें तृप्त जीवन, वो रस पा लिया है।।

मुक्तक-

गुरुचरणों का मिला सहारा, धन्य हो गये।
गुरुचरणों को पाकर, शिष्य अनन्य हो गये।।
गुरुचरणों में महाकाल ही, थिरक रहा है।
ऐसे गुरु के चरण ही, विश्ववरेण्य हो गये।।

गुरु बिन ज्ञान नहीं

गुरु बिन ज्ञान नहीं-नहीं रे।
अंधकार बस तब तक ही है, जब तक है दिनमान नहीं रे॥

मिले न गुरु का अगर सहारा, मिटे नहीं मन का अंधियारा।
लक्ष्य नहीं दिखलाई पड़ता, पग आगे रखते मन डरता।
हो पाता है पूरा कोई, भी अभियान नहीं, नहीं रे॥
जब तक रहती गुरु से दूरी, होती मन की प्यास न पूरी।
गुरु मन की पीड़ा हर लेते, दिव्य सरस जीवन कर देते।
गुरु बिन जीवन होता ऐसा, जैसे प्राण नहीं, नहीं रे॥
भटकावों की राहें छोड़ें, गुरु चरणों से मन को जोड़ें।
गुरु के निर्देशों को मानें, इनको सच्ची सम्पत्ति जानें।
धन, बल, साधन, बुद्धि, ज्ञान का, कर अभिमान नहीं नहीं रे॥

गुरु से जब अनुदान मिलेंगे, अति पावन परिणाम मिलेंगे।
टूटेंगे भवबन्धन सारे, खुल जायेंगे, प्रभु के द्वारे।
क्या से क्या तुम बन जाओगे, तुमको ध्यान नहीं, नहीं रे॥

मुक्तक-

गुरु ही ज्ञान ध्यान जप पूजा, गुरु विद्या विश्वास।
जो गुरु के गुण गौरव जाने, गोविन्द उनके पास॥

गुरुवर तुम्हीं बता दो

गुरुवर तुम्हीं बता दो, किसकी शरण में जायें।

जिसके चरण में गिरकर, मन की व्यथा सुनायें॥
अज्ञान के तिमिर ने, चारों तरफ से घेरा।
क्या रात है प्रलय की, होगा नहीं सवेरा।
पथ और प्रकाश दो तो, चलने की शक्ति पायें।
जीवन के देवता का, करते रहे निरादर।
कैसे करें समर्पित, जीवन की जीर्ण चादर।
यह पाप की गठरिया, क्या खोलकर दिखायें॥
दुष्वृत्तियों ने हमको, घेरा कदम–कदम पर।
कभी काम क्रोध बनकर, कभी मारा लोभ बनकर।

इन दानवों से कैसे, अपना गला छुड़ायें।
माना कपूत हैं हम, क्या रुष्ट रह सकोगे।
मुस्कान प्यार अमृत, क्या दे नहीं सकोगे।
दाता तुम्हारे दर से, जायें तो किधर जायें।

मुक्तक-

गुरुवर गुरुता दीजिए, हे पावन सुखधाम।
जन-जन के शुभकर्म हित, कभी न लें विश्राम।।

गुरु की छाया में

गुरु की छाया में, शरण जो पा गया।
उसके जीवन में, सुमंगल आ गया॥
गुरु कृपा तो, सबसे बड़ा उपहार है।
गुरु है खेवनहार, तो बेड़ा पार है।
प्रेम का पावन, उजाला छा गया॥
वो रचा है, आती-जाती श्वांस में।
वो बसा है, प्राण में विश्वास में।
शान्ति सुख अमृत, स्वयं बरसा गया॥

हमको क्या, उनको हमारा ध्यान है।
गुरु है अपने देवता, श्रीभगवान है।
प्राण का पंछी, बसेरा पा गया॥

गुरु नहीं है व्यक्ति,वह तो एक शक्ति है।
मानें यदि आज्ञा तो, सच्ची भक्ति है।
धन्य है जिसको, कि यह पथ भा गया॥

गुरु सनातन, ब्रह्म का ही रूप है।
उसकी करुण कृपा, अमित अनूप है।
किया समर्पण तो,शिष्य सब पा गया॥

मुक्तक–

गुरु संरक्षण पाया जिसने, अभय हो गया।
मंगलमय जीवन का उसके, उदय हो गया।।
जिसने सौंप दिया अपने को, गुरु चरणों में।
उस पर स्वर्गिक वैभव सारा, सदय हो गया।।

गुरुदेव आप ऐसी झंकार

गुरुदेव आप ऐसी, झंकार दे गये हैं।
देते हैं शान्ति मन को, वह स्वर नये–नये हैं॥

मद–मोह, काम–क्रोध की,अतिशय कठोर माया।
इन शत्रुओं ने मिलकर, जी भर हमें सताया।
षड्रिपु डरे हुए हैं, टंकार दे गये हैं॥

फैली हैं आज घर–घर, अगणित उपासनायें।
कुछ भी समझ न पाते, किसकी शरण में जाएँ।
ऐसे में आद्यशक्ति का, अधिकार दे गये हैं॥

संसार मोह–माया, मिथ्या गया बताया।
कर्तव्य किन्तु श्रेष्ठ है, यह आपने पढ़ाया।
हमको महानता के, संस्कार दे गये हैं॥

तन को सुखा–सुखाकर,जिसको न पा सके हम।
मन को दु:खा–दुखाकर,जिस तक न जा सके हम।
शिव–शक्ति जागरण का,आविष्कार दे गये हैं॥
साकार ब्रह्मदर्शन, मन था समझ न पाया।
प्रभु आपने उसे भी, साकार कर दिखाया।
फिर आप ही स्वयं क्यों, निराकार हो गये हैं॥

मुक्तक–

जब तक गंगा यमुना में जल, जब तक चाँद सितारे हैं।
जब तक मंदिर, मस्ज़िद, गिरजाघर हैं औ गुरुद्वारे हैं॥

अमर रहेगा नाम आपका, तब तक इस संसार में।
हे गुरूदेव! आपने सबको, जोड़ा ऐसे प्यार में।।

गुरु ही नैया गुरू खिवैया (अ)

गुरु ही नैया, गुरू खिवैया, गुरु ही पार लगावे।
अपने गुरु की बात न माने, उसको कौन उबारे।।
सुनो! शिष्यों गुरु की महिमा अपार।।
गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु ही हैं अवतार।
गुरु में ही ब्रह्माण्ड छिपा है, गुरु वेदों का सार।।

गुरु की आज्ञा सर माथे पर, यही गुरू की सीख।
सौंपे तन-मन गुरु आज्ञा पर, भले चढ़ा दें शीश।।
गुरु का अवलम्बन जो ले ले, भवसागर तर जावे।
हो जाओगे भवसागर से पार।।

गुरु नेत्रों में झाँको खुद को, सच सब मिल जायेगा।
कहाँ आज हो, क्या बनना है, क्षण में मिल जायेगा।।
अनगढ़ पत्थर सौंपो गुरु को, हीरे सा चमकोगे।
नक्षत्रों की बात नहीं है, सूरज सा दमकोगे।।
कौन है बछड़ा पान करे (जो)- गुरु पय की धार।।

पियो शिष्यों! ज्ञानामृत की धार॥

शिष्य कहाकर, अपने गुरु का दर्द समझ न पाते।
सूक्ष्म रूप में गुरु क्या कहते, गुरु को बूझ न पाते॥
जीवन प्राण गलाकर क्षण-क्षण, पीड़ा जो समझेगा।
कौन शिष्य जो बिना कहे ही, जीवन को बदलेगा॥
समय आज ऐसा आया है, युग का भार उठावें।
समझो शिष्यों! गुरु जीवन का सार॥

गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर, गुरुदक्षिणा चुकाएँ।
समयदान और अंशदान की, सुमनमाल पहनाएँ।

कहाँ विवेकानन्द आज हैं, रामकृष्ण कहते हैं।।
चन्द्रगुप्त को ढूँढ-ढूँढ, चाणक्य आज थकते हैं।
बनें स्वयं सत्पात्र आज–अनुदान सभी हैं पावें॥
अनुभव कर लो, गुरु ही हैं करतार।।

मुक्तक-

भवसागर संसार है, गुरु है खेवनहार।
गुरु की नाव मिले बैठन को, हो जावे भव पार।।

गुरु बिन कौन लगावे

गुरु बिन कौन लगावे पार।
गुरु के बिना तरी नहीं जाए, भव सागर की धार।।
गुरु का ज्ञान अमोल सम्पदा, लें जीवन में धार।
सब अज्ञान तिमिर मिट जाये, हो जाये उजियार।।
निशिदिन करें ज्ञान की चर्चा, है आनन्द अपार।
जितनी बाँटो उतनी बढ़ती, ठगे नहीं बटमार।
आओ गुरु चरणन में बैठें, पी चरणामृत धार।
लोक और परलोक सुधारें, ज्ञान भक्ति को सार।।

स्वयं ब्रह्म हैं गुरु हमारे, फिर कैसी तकरार।
कुछ भी बाहर नहीं गुरू से, निराकार साकार।।

मुक्तक-

गुरु माता, गुरु ही पिता, नैया खेवनहार।
दोष छुड़ा सद्‌गुण बढ़ा, कर दें भव से पार।

गायत्री यज्ञ हेतु आइए

गायत्री यज्ञ हेतु, आइए-आइए।
विश्व को विनाश से, बचाइए आइए।।

आइए पुरुष बनें, सुपात्र फिर, स्वार्थ रह सके न लेश मात्र फिर।
हो तनिक न आत्महीनता कहीं, हो न हृदय में मलीनता कहीं।
यज्ञ से सुपात्रता बढ़ाइए आइए,
विश्व को विनाश से बचाइये आइए॥
पुरुषमेध,पुरुषों का बन्ध है, यह युगानुकूल सुप्रबन्ध है।
फिर न श्रेष्ठ कर्म में प्रमाद हो, आचरण,विचार निर्विवाद हों।
हर सुषुप्त देवता, जगाइये आइए,
विश्व को विनाश से बचाइये आइए॥
सत्पुरुष जहाँ कहीं समीप हैं, ज्योतिमय वहीं असंख्य दीप हैं।

फिर न वहाँ शेष अन्धकार है, ज्योति की वहाँ अजस्त्र धार है।
अब वहीं समीपता, बनाइये आइए,
विश्व को विनाश से बचाइये आइए।।
आइए कि राष्ट्र फिर महान हो, व्यक्ति फिर हरेक प्राणवान हो।
विश्व में विवेक का मिलाप हो, फिर नहीं कुबुद्धि का प्रलाप हो।
श्रेष्ठता जहाँ मिले, मिलाइये आइए,
विश्व को विनाश से बचाइये आइए।।

गुरु ही नैया गरू खिवैया (ब)

गुरु ही नैया, गुरू खिवैया, कर देते भवसागर पार।
सद्गुरु सब, भवबन्धन काटें, भक्तों का करते उद्धार।।

गुरुसत्ता से जग संचालित, शोभित चाँद सितारे।
हृदयों में शुभ भक्ति जगाकर, गुरु भक्तों को तारे।।
गुरु ही हैं सौभाग्य हमारे, गुरुवर वेद शास्त्र का सार।।

सुख के सागर प्यारे सद्गुरु, गुरु ही प्रेम के आगर।
ज्ञानाञ्जन, गुरुदेव लगावैं, गागर में वे सागर।।
गुरुवर साधक के हितसाधक, ईश्वर से गुरु जोड़े तार।।

कामधेनु बन करके गुरुवर, शिष्यों का करते कल्याण।
गुरुसत्ता ही माता बनकर, शिष्यों का करती निर्माण॥
सद्गुरु ही वरदान हमारे, गुरु की महिमा अपरम्पार॥

गुरु हैं हितकारी सज्जन हित, दुष्टों के हित वही दण्ड हैं।
पापों का गुरु खण्डन करते, रुद्ररूप वे बल प्रचण्ड हैं॥
गुरुवर ही हों लक्ष्य हमारे, सद्गुरु हम सबके करतार॥

मुक्तक-

जीवन नौका सौंप दो, गुरु ही पार लगावे।
गुरु चरणों की शरण पा, धन्य-धन्य हो जाये॥

भवसागर संसार है, गुरु हैं खेवनहार।
गुरु की नाव में जो भी बैठे, हो जावे भव पार॥

गुरु ब्रह्मा हैं, विष्णु वही हैं

गुरु ब्रह्मा हैं, विष्णु वही हैं, रूद्र रूप गुरुदेव हैं।
सच तो यह है, सारे जग में, अति अनूप गुरुदेव हैं।।
ब्रह्मा बन तप की ऊष्मा में, हमको वही तपाते हैं।
संकीर्णता मिटाकर चिन्तन, प्रतिपल प्रखर बनाते हैं।।
वही विष्णु बन हर सद्गुण का, पोषण-संरक्षण करते।

रूद्र रूप में कुसंस्कार का, भी वह उन्मूलन करते।।
फसल पकाने सत्प्रवृत्ति की, विमल धूप गुरुदेव हैं॥
स्वतः समझते हैं बिन बोले, वह भावों की वाणी को।
छद्म वेश में छिपी असुरता, की हर कुटिल कहानी को।।
पर जो सहज ही निश्छल होकर, आते हैं गुरुद्वारे में।
रहते वही सदैव शान्ति-सुख, आशा के उजियारे में।
ममता प्यार लुटाने में तो, मातृ रूप गुरुदेव हैं।।
उनकी कृपा दूर कर देती, चिन्तन के अवरोधों को।
आत्मशक्ति जागृत हो जाती, करती नष्ट विरोधों को।।

दृष्टि स्वच्छ होने लगती है, दूर आवरण होते हैं।
सक्रिय हो जाता है मानस, संकल्पित प्रण होते हैं।।
सूखे मन को सरस बनाते, मेघरूप गुरुदेव हैं॥
वह समर्थ हैं श्रद्धावानों, की पीड़ा हर लेने में।
तूफानों में भी मानवता, की नौका को खेने में।।
उनसे जुड़कर साधक भीतर, तक अभिनव हो जाता है।
जीवन में पुरूषार्थ असंभव, भी संभव हो जाता है।।
हर शासक हर अधिपति से भी, श्रेष्ठभूप गुरुदेव हैं।।

मुक्तक–

गुरु कृपा का अमृत पीकर, शिष्य धन्य हो जाते हैं।
जिसे मिली पतवार गुरु की, भवसागर तर जाते हैं॥

गाये जा गाये जा

गाये जा,गाये जा,भगवान के गुण गाये जा।
सुबह शाम इस मन मन्दिर में, झाड़ू रोज लगाये जा।।
तरह-तरह के खेल हैं इसमें, दुनियाँ एकतमाशा है।
कहीं पे ग़म है कहीं खुशी है, आशा कहीं निराशा है।।
दाता सुख-दुख कुछ भी दे तू, अपना फर्ज़ निभाये जा।

कौन हमेशा रहा जगत में, किसका यहाँ ठिकाना है।
बाँध ले अपने बिस्तर बन्दे, यह तो देश बेग़ाना है।।
है यह जगत मुसाफ़िर खाना, पथिक यही समझाये जा।
चिन्ता और चिता इस जग में, दोनों एक कहाती है।
एक जिन्दे को एक मुर्दे को, दोनों सहज जलाती है।।
मालिक पर विश्वास अडिग रख, चिन्ता दूर भगाये जा।

मुक्तक-

कामी-क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई शूरमा, जाति,वर्ण,कुल खोय।।

श्वाँस-श्वाँस में नाम जप, वृथा श्वाँस मत खोय।
न जाने इस श्वाँस का आवन होय न होय।।

ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगति, ध्यान घटे चित्त विषय भरमाई।
तेज घटे पर नारि की संगति, बुद्धि घटे बहु भोजन खाई॥
प्रेम घटे कुछ ही नित माँगत, मान घटे नित पर गृह जाई।
'सुमन' कहे सुन रे मन मूरख, पाप घटे हरि के गुण गाई॥

गुरुवर ने सौंपी पीर

गुरुवर ने सौंपी पीर, कि जिसने रखा उन्हें अधीर।

हमें प्राणों से प्रिय वह पीर, जिसे हम भुला न पायेंगे॥
उनने जीवन भर ही की, युग पीड़ा की अनुभूति।
वह ही युग की पीर बन गई, उनकी एक विभूति॥
रखेंगे प्राणों बीच सम्भाल, ताकि संवेदन भरे उछाल।
दर्द से भरी कथाएँ सुना, किसे हम रुला न पायेंगे॥
उस विभूति को हम धारण कर, करें आत्म विस्तार।
ताकि हमारा संवेदन, पाए दुखिया संसार॥
यही संवदेन है आधार, इसी से होगा, हृदय उदार।
इसी पूँजी द्वारा, भावों का वैभव हम पा जायेंगे॥

दीनों के हम दुःख बटाएँ, तो हल्का हो भार।
सुख बाँटे हम सबको, सारी दुनियाँ है परिवार॥
करें सब ही आपस में प्रीति, यही है स्वर्ग सृजन की रीति।
ऐसे ही अपनी धरती पर, हम फिर स्वर्ग सजायेंगे॥

पर पीड़ा को क्या पहिचाने, जो होगा पाषाण।
हममें तो लहराते रहते, महाप्राण के प्राण॥
हरेंगे हम दुनियाँ की पीर, बँधाएँगे दीनों को धीर।
इसी संवेदन से दीनों के, दुःख और दर्द मिटाएँगे॥

मुक्तक-

गुरुवर ने मानवता की–पीड़ा सौंपी है।
संवेदन की पौध, मनो में रोपी है॥
दीनों दुखियों की पीड़ा नहीं बँटा पाए।
फिर गुरु निष्ठा की बात व्यर्थ है, थोथी है॥

गुरुवर हम शिष्य कहाते हैं

गुरुवर हम शिष्य कहाते हैं–पर फ़र्ज़ निभाना बाकी है।
तुमसे अगणित अनुदान मिले–वह क़र्ज़ चुकाना बाकी है॥
तुमने हमको सद्ज्ञान दिया–सद्भाव दिया सम्मान दिया।

यह है सब जग कल्याण हेतु–हमने रख कर अभिमान किया॥
जन–जन तक वह पहुँचाने का–अभियान चलाना बाकी है॥
तुमने गुरु बन कर हम सबके–पापों का बोझ उठाया है।
तप, प्राण, पुण्य देकर हमको–तुमने युगधर्म सिखाया है॥
जो तुम्हें समर्पित हो जाये–ईमान जगाना बाकी है॥
हे वेदमूर्ति तुमने जनहित–युगज्ञान ज्योति शुभ विकसाई।
हे तपोनिष्ठ निज कर्मों से–संजीवन विद्या सिखलाई॥
वह ज्योति और विद्या पावन–घर–घर पहुँचाना बाकी है॥
हे! विश्ववन्द्य, हे! विश्व रूप–तुमने नवयुग का बोध दिया।

बन महाकाल के युग प्रतिनिधि–उज्ज्वल भविष्य का घोष किया॥
उज्ज्वल भविष्य की जन–जन को–शुभ राह दिखाना बाकी है॥
हम अपने तन,मन,प्राणों को–प्रभु के चरणों पर धर देंगे।
उज्ज्वल भविष्य के सपनों को–साकार शीघ्र हम कर देंगे॥
बलिदानी वीर कहाने का–उत्साह हमें भी काफी है॥

मुक्तक–

झोलियाँ भर दीं हमारी आपने अनुदान से,
कर दिया हमको लबालब आपने वरदान से।
अब चुकाने की हमें सामर्थ्य भी तो दीजिये।

हम समर्पित हैं चुकाने के लिये जी जान से।।

गुरु का अमृत मिला जिसे

गुरु का अमृत मिला जिसे वह, भूल गया हर स्वाद को।
भुला न पाया लेकिन गुरु की, वंशी के स्वर-नाद को॥
जिसको वह आनन्द दे दिया, गुरु ने सोच-विचार के।
उसको लगने लगे निरर्थक,सारे सुख संसार के।।
बँध न सका सीमाओं में वह, अपने अचिर शरीर की।
अपनों से भी अधिक हुई, चिन्ता औरों की पीर की।।

पर दुःख के आगे वह भूला, अपने दुःख–अवसाद को।
ऐसा सबल मनोबल उसने, पाया निज गुरुद्वार से।
तेज बहावों में न बहा वह, डरा नहीं मझधार से।।
कभी निराशा से न भरा वह, विपदा में, तूफान में।
सुख, यश, अभिनन्दन पाकर भी, भरा नहीं अभिमान में।।
ऐसी मस्ती मिली कि भूला, नश्वर सुख आह्लाद को।
पाकर प्राण–प्रवाह भर गया, अंग–अंग विश्वास से।
पग–पग पर संकेत पा गया, धरती से, आकाश से।।
पवन झकोरे लगे बुलाने, सद्गुरु के आह्वान से।

संकट लगने लगे उसे फिर, तप के अनुसन्धान से।।

श्रद्धा ऐसी जगी,कि भूला,तर्क,वाद–प्रतिवाद को।

जीवन में आधुनिक–पुरातन, के हर पल टकराव हैं।

तन–मन तथा परिस्थितियों के, द्विविधाजनक प्रभाव हैं।।

गुरुवाणी करती निरस्त, हर असमञ्जस–विद्रोह को।

जगा '**करिष्ये वचनं तव**' का, भाव मिटाती मोह को।।

परिणत करती वही योग में, मन के गहन विषाद को।

गँवा दिया किसलिए बावरे

गँवा दिया किसलिए बावरे–यह जीवन अनमोल।
कुछ तो,बोल रे प्रवासी बोल–बोल रे प्रवासी बोल॥
धन, वैभव, पद, माल खजाना–साथ नहीं कुछ तेरे जाना।
हुआ कहाँ से तेरा आना–बता भला क्या पता ठिकाना॥
पार नहीं पा सकता बन्दे–यह दुनियाँ है गोल॥
इन्द्रिय द्वार झरोखे भारी–बना बना बैठे सुर क्यारी।
आवत देखहिं विषय बयारी–ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
लूट रही हैं सभी इन्द्रियाँ–पिला–पिला विष घोल॥

यह शरीर तो वाहन तेरा–इसे बना ले साँप सपेरा।
क्यों प्रमाद ने तुझको घेरा–प्राण पपीहे ने यों टेरा॥
यह शरीर तो अन्तरात्मा–का है केवल खोल॥
बैरागी गुरु अलख जगाया–एक नूर से जग उपजाया।
तू भी एक उसी की माया–उसे न यदि इस तन से पाया॥
कितना बोले मधुर–मधुर–पर रहा ढोल का ढोल॥
ज्ञान कमा ले भक्ति जगा ले–कुछ ऐसे कर कर्म बावले।
पतिव्रता की रीति निभा ले–परमेश्वर से प्रीति जगा ले॥
अंधकार में भटक–भटक कर–करकट नहीं टटोल॥

कठिन डगर है तू एकाकी–टूटा पाँव लिए बैशाखी।
पास न कोई वस्तु काम की–अभी दूर तक मंजिल बाकी॥
उगने लगा प्रकाश मूढ़मति–अब तो आँखे खोल॥

मुक्तक–

मनुज का जन्म है अनमोल, इसको व्यर्थ ना खोवें।
यही हीरा–यही चन्दन, समझकर भार मत ढोवें॥

गुरुदेव! इस अधम पर

गुरुदेव! इस अधम पर–इतनी तो कृपा करना।

‘पारस’ जिसे कहे जग, वह ज्ञान सदा भरना॥
वैसे तो जंग खाया–लोहा है यह अकिंचन।
लेकिन यह प्रार्थना है–इसको बनाओ कंचन॥
ज्ञानाग्नि में इसे प्रभु–अविराम तपा करना॥
सद्ज्ञान का अनूठा–‘अमृत’ इसे पिला दो।
निष्प्राण हो रहा है–निज प्राण छल छला दो।
करुणा भरे हृदय से, इसको न जुदा करना॥
वह ‘कल्पवृक्ष’ देना–मन चाही वस्तुएँ दे।
सद्ज्ञान के फलों को–चख दिव्य शक्तियाँ लें।

सन्तोष तृप्ति मन में–गुरुदेव सदा भरना॥
सद्ज्ञान रश्मियों से–कल्मष कषाय काटो।
इसके पतन पराभव–के गर्त नाथ! पाटो॥
जब हो रहा पतन हो–तब तो न छुपा करना॥
इतना किया अनुग्रह–अपना इसे लिया है।
इसको तराशने का–विश्वास भी दिया है॥
इसको अधम समझकर–दर से न विदा करना॥

मुक्तक–

हम तो हैं बस आपके, अनगढ़ या नादान।

जैसा चाहो बना लो, हे सर्वज्ञ सुजान॥

गुरु चरणों में आकर देखो

गुरु चरणों में आकर देखो–सब कलह क्लेश मिट जाते हैं।
अन्तर निर्मल हो जाता है–भवशूल कभी न सताते हैं॥
    जब प्राण दु:खी होते जग के–मर्मान्तक हाहाकारों से।
    जब बीच भँवर में नाव अलग–हो जाती है पतवारों से॥
    संसार सिन्धु से तब गुरु ही–कर गहकर पार लगाते हैं॥
जब पीर हृदय को मथती है–दु:ख छा जाते मानस तन पर।

दुनियाँ के झंझट सहन नहीं–कर पाते हम अपने बल पर॥
तब काट हमारे पापों को–गुरु शान्ति सुधा बरसाते हैं॥
जब भेद नहीं हम कर पाते, सच–झूठ भरे उलझाओं में।
जब मार्ग नहीं हम चुन पाते–आसक्तिपूर्ण भटकावों में॥
उस चक्रव्यूह से सद्‌गुरु ही–निर्णय कर हमें बचाते हैं॥
जग को, प्रभु को, और आत्मा को–केवल गुरु ने ही जाना है।
सन्तों ने इसीलिए गुरु को–प्रभु से भी ऊँचा माना है॥
हम गोविन्द से पहले गुरु के–चरणों में शीश झुकाते हैं॥

मुक्तक–

सद्गुरु का दरबार अनूठा–प्राण पिलाये जाते हैं।
दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों–ताप मिटाये जाते हैं॥
है श्रद्धा विश्वास न जिनमें–उन भटकों का क्या कहना।
वरना मझधारों वाले भी–पार लगाये जाते हैं॥

गुरु रुप की तु हारे

'गुरु रुप' की तुम्हारे अब कल्पना करेंगे।
लेकिन पिता! तुम्हें हम कैसे भुला सकेंगे॥
गुरु रूप में दिया जो, वह ज्ञान याद तो है।

जो भी सृजन किया वह हर ग्रंथ साथ तो है॥
उस ज्ञान का सहारा, हमको प्रकाश देगा।
गुरुवर! सृजन तुम्हारा उत्साह आश देगा॥
कहकर 'पिता' मगर हम किसको बुला सकेंगे॥
देता जिसे पिता ही, वह प्यार अब कहाँ है।
कन्धे कहाँ पिता के, आधार वह कहाँ है॥
वे हाथ अब कहाँ है, जो थपथपा रहे थे।
वे नयन अब कहाँ, जो ममता लुटा रहे थे॥
अब कौन पितृ ममता को छलछला सकेंगे॥

बोलो जहाँ कहीं हो, विश्वास तो हमें दो।
विस्मृत नहीं करोगे, आभास तो हमें दो॥
छाया बनी रहेगी, हम पर पिता सदा ही।
वात्सल्य भावना से होगी नहीं जुदाई॥
हम इस तरह दिलासा, दिल को दिला सकेंगे॥

कोई न कह सके यह, हम हैं बिना पिता के।
हो हौसले हमारे, इतने बुलन्द बाँके॥
बन भव्य भावनायें, मन में विहार करना।
हम भटकने न पायें, हर क्षण विचार करना॥

हैं साथ में पिता, यह जग को बता सकेंगे॥

मुक्तक-

मिला जो प्यार गुरुवर से, उसे कैसे भुलायेंगे।
पिता-माता, गुरू, भगवान, सब कुछ कहाँ पायेंगे॥
अगर संवेदना में छलछलाते रहें, वे प्रतिपल।
तो निश्चित ही सृजन पथ पर, उन्हें हम साथ पायेंगे॥

गायत्री माँ की उपासना

गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है।

देश, धर्म, संस्कृति की, रक्षा की यह मूलाधार है।।
इसी साधना के सम्बल से, सिद्ध समर्थ हुआ यह देश।
ऋतम्भरा-प्रज्ञा का पाया था, हमने वरदान विशेष।
अमृतमय जीवन हो जाता, इनमें इतना प्यार है।।
धर्म-अर्थ या काम मोक्ष, कोई भी इनसे दूर नहीं।
इनके ही प्रताप से रहती, सुख सुविधा भरपूर मही।
यह मानस की मणिमुक्ता है, यह सुमनों का हार है।।
गायत्री से विमुख हुआ जो, उसने खोया बुद्धि विवेक।
दिव्य ज्ञान का मर्म यही है, शुचिता की पावन अभिषेक।

मानवता के हित का केवल, गायत्री आधार है।।

मुक्तक-

गायत्री विश्वमाता हैं, सर्व समर्थ हैं।
उसकी शरण में जो गए, त्रितापमुक्त हैं।।
गायत्री की उपासना से, देव हम बनें।
उनकी कृपा बिना सभी, प्रयास व्यर्थ है।।

गढ़ फिर कोई दीप नया

गढ़ फिर कोई दीप नया तू, मिट्टी मेरे देश की॥

सरगम–सारे रेग, गम.... ॥

अन्धी हुई दिशायें सारी, यों अँधियारी छा रही।
किरण तोड़ती साँस रोशनी, जीने को छटपटा रही॥
ऐसा कुछ ठहराव आ गया, आज विश्व की राह में।
पथ भूले बंजारे जैसी, पीढ़ी चलती जा रही॥
कोई बाँह पकड़ ऐसे में, सही दिशा का ज्ञान दे–
सख्त जरूरत आज जगत् को, उस सच्चे दरवेश की॥

देवभूमि यह जन्म दिये, जिसने अनगिन अवतार को।
ज्योति शिखा बन हरती आई, यह जग के अँधियार को॥

हमको है विश्वास की धरती, बाँझ नहीं इस देश की॥
फिर से कोई नया मसीहा, देगी इस संसार को॥
इसकी मिट्टी उड़कर बैठी, सूरज के भी भाल पर–
नित उभरी आवाज यहाँ से, शान्ति, प्रेम सन्देश की॥

यद्यपि प्रलयंकारी घन से, घिरा हुआ आकाश है।
फिर भी मानव के भविष्य से, मेरा मन न निराश है॥
शायद इसी मोड़ के आगे, मानव का निज लक्ष्य हो।
इसी तिमिर के पीछे शायद, कोई नया प्रकाश हो॥
जब तक मेरा देश मनुजता, होना नहीं निराश तू–

निकट जन्म वेला है शायद, किसी नये अवधेश की॥
गढ़ फिर कोई.... ॥

मुक्तक–

तुम्हीं से देश मेरे विश्व, फिर आशा लगाए है॥
तेरा इतिहास गरिमामय, कथाओं को छुपाए है॥
मनुजता फिर दु:खी है, तिमिर चारों ओर छाया है॥
उगे फिर ज्ञान का सूरज, जगत आँखें बिछाए है॥

स्थाई के साथ–(यमन राग)

सा रे रे ग, ग म म प–, प–ध प म ग म प–

–प प ध प––प–ध प म ग म ध–,–ध ध नि ध–

प–ध प म ग म प–,प प ध प–प–ध प म ग म ध–

–ध ध नि ध–,नि ध ध प, प म म ग, ग रे रे सा, सा–सा–

अन्तरे में तीसरी पंक्ति के बाद–

ग म नि–ध–ध– नि–ध–ध–सां नि नि ध–ध–प–

ग म नि–ध–प –––, प –––––– ध प म ग म ––––––

म –––––– प म ग रे ग –––––– सा ––– ग ––– म ग रे ग प –––

ध प ग म ध ––– नि ध प ध सां —

गायत्रीमय आप हो गये

गायत्रीमय आप हो गये, चेतन बन कर छाये हो।
युग प्रज्ञा का किया अवतरण, भागीरथ बन आये हो॥
ज्ञान की गंगा लाये हो, तुम ही यहाँ समाये हो॥

प्रखर साधना पुञ्ज आप हैं, हम जप, तप पुरुषार्थ करेंगे।
सृजन साधना स्वयं करेंगे, अभिनव साधक जग को देंगे॥
सृजन साधना के तुम दीपक, सबके मन को भाये हो।
गायत्रीमय आप हो गये, चेतन बन कर छाये हो॥

महाक्रान्ति के दीप बनें हम, घृत पूरित तुम करते रहना।

स्नेह बाँटते रहें विश्व में, निष्ठा जागृत करते रहना॥
महाक्रान्ति के दीप जलाने, ज्योति अखण्ड जलाये हो।
गायत्रीमय आप हो गये, चेतन बन कर छाये हो॥

ब्रह्म बीज बाँटे हैं तुमने, सुरभित जग को हम कर देंगे।
जीवन विद्या की खुशबू से, विश्व सुवासित हम कर देंगे॥
जन्म शताब्दी हेतु शिष्य की, शपथ परखने आये हो।
गायत्रीमय आप हो गये, चेतन बन कर छाये हो॥

छोटे-बड़े सभी हम दीपक, हाथ उठा संकल्प ले रहे।
समय साधना की श्रद्धाञ्जलि, दे तुमको आश्वस्त कर रहे॥

प्रज्ञा–श्रद्धा जागृत करने, माँ भगवती! संग आये हो।
गायत्रीमय आप हो गये, चेतन बन कर छाये हो॥

मुक्तक–

चेतनमय स्वरूप आपका, सवितामय प्रभु आप हो गये।
सबके लिए सुलभ हो ऋषिवर, जग व्यापी विस्तार हो गये॥

गुरुसत्ता का मिला हमें

गुरुसत्ता का मिला हमें जो प्यार है। बँधा इसी से गायत्री परिवार है॥

कर्त्तव्यों का भाव नहीं हम त्यागेंगे। बच्चों जैसे नहीं खिलौने माँगेंगे॥
हममें से हर परिजन जिम्मेदार है। बँधा इसी से गायत्री परिवार है॥

हम अपने भीतर की ओर निहारेंगे। अपनी जीवन–शैली स्वयं सँवारेंगे॥
प्रथम स्वयं का करना हमें सुधार है। बँधा इसी से गायत्री परिवार है॥

अपने लिए कठोर सर्वदा होंगे हम। किन्तु दूसरों पर विनम्र होंगे हरदम॥
क्योंकि हमारा गुरु भी बहुत उदार है। बँधा इसी से गायत्री परिवार है॥

नहीं सिर्फ़ अपने घर दीप जलाएँगे। औरों का अँधियारा दूर भगाएँगे॥

कहीं न है सुख–शान्ति, विकल संसार है। बँधा इसी से गायत्री परिवार है॥

मुक्तक–

गायत्री परिवार अनूठा, हर जन जिसको प्यारा है।
स्नेह डोर में बँधे सभी हैं, सबसे बढ़कर न्यारा है॥

गुरु महिमा है अपार

गुरु महिमा है अपार, जगत में गुरु महिमा है अपार।
गुरु कृपा से जन्म सफल हो, भवसागर हों पार॥

गुरु हैं ब्रह्मा विष्णु कहाते, शिवशंकर बन अशिव मिटाते।

करें दिव्य संचार, जगत में गुरु महिमा है अपार॥
यह जीवन है दिव्य खजाना, इसको यूँ ही नहीं गँवाना।
करें दिव्य संचार, जगत में गुरु महिमा है अपार॥
गुरु जीवन के कोष कहाते, दोष हटाते गुण विकसाते।
करें दिव्य संचार, जगत में गुरु महिमा है अपार॥
भीतर अपने है परमात्मा, सद्गुरु रूपी अन्तरात्मा।
करें दिव्य संचार, जगत में गुरु महिमा है अपार॥
गुरु चरणों में भक्ति जगाओ, करो साधना शक्ति पाओ।
करें दिव्य संचार, जगत में गुरु महिमा है अपार॥

मुक्तक–

गुरु ब्रह्मा गुरुविष्णु है, गुरु ही शंकर रूप।
गहो शरण पा जाओगे, जीवनसिद्धि अनूप॥

ग्राम स्वावल बन अभियान

ग्रामतीर्थ विकसित करने का, शुरू करें अभियान।
जिससे सुखी रहे हर मानव, बनें सभी गुणवान॥

गाँवों में हो प्यार मोहब्बत, जाति–पाँति का भेद नहीं।
मिल जुलकर सब रहें एक संग, किसी बात का खेद नहीं।

ग्रामतीर्थ है जहाँ वहाँ हो हर मानव गुणखान॥
गाँवों की गलियाँ सुन्दर हों, सुन्दर हों घर द्वार।
घर आँगन में हो खुशहाली, सुखी रहें परिवार।
सामूहिक पुरुषार्थ करें हम, करें ग्राम उत्थान॥
गौमाता का दूध, दही, घी, जीवन स्वस्थ बनाता।
जिस घर में हो गाय वही घर, स्वच्छ पवित्र कहाता।
दूध, दही की नदी बहे तो , बढ़े देश की शान॥
हों कुटीर उद्योग गाँव में, मिले सभी को काम।
पढ़ना लिखना भी सीखें सब, साक्षर हों गुणधाम।

स्वावलम्बी हो गाँव हमारा, हो सबको यह ज्ञान॥
व्यसन मुक्त हो गाँव हमारा, स्वस्थ रहे इन्सान।
सद्वृत्ति अपनायें सब जन, बनें उदारसुजान।
प्रेम, प्यार, सहकार बढ़े हर, घर हो सुख की खान॥

गिरजा गिरे न मस्ज़िद

गिरजा गिरे न मस्जिद टूटे–वह मन्दिर निर्माण करें।
प्रतिमा करें प्रतिष्ठित जिसमें–मानवता के प्राण भरें॥
पिता हिमालय की गोदी से, गंगा चली लहर खाती।

सबने स्वागत किया जाह्नवी, जहाँ–जहाँ होकर जाती॥
हिन्दू,मुस्लिम, सिक्ख, पारसी, का न, भेद मन में लाती।
बालक हो अथवा नर नारी, बड़े प्रेम से नहलाती॥
हरिद्वार से कलकत्ता तक–गंगा जन कल्याण करे।
बिना किसी दैहिक विभेद के, सारे जग का त्राण करे॥

सूर्य देव उगते प्राची में, फिर आगे बढ़ते जाते।
भारत वर्ष यमन, इज़राइल, रूस चीन भी हैं जाते॥
अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्राँस में, भी प्रकाश वे फैलाते।
कोई भेद न भाव सूर्य, भगवान तभी तो कहलाते॥

प्यार करें हम भी रवि सा(जैसा)धरती में पावन प्राण भरें।
जहाँ दिखे दु:ख कष्ट प्राणियों के पीड़ा और त्राण हरें॥

दीपक एक जलाकर रख दो, गिरिजा या गुरुद्वारा हो।
वन हो या पर्वती गुफा हो, ऊसर या गलियारा हो॥
जल-जल ज्योति सदा फैलाता, जहाँ-जहाँ अँधियारा हो।
हम भी वैसे जलें कि जिससे-घर आँगन उजियारा हो॥
जीवन में निष्काम कर्म का-अब तो शिरस्त्राण हरें।
महापुरुष पथ चले उसी पर-जन-जन पुण्य प्रयाण करें॥

बहुत सताई गई मनुजता, उसने चोट बहुत खाई।

अब तो उसे पुनर्जागृत, करने की पुण्य घड़ी आई॥
युग निर्माण योजना वह, संदेश मनोरम है लाई।
मन्दिर है तैयार प्रतिष्ठा, की बेला भी बन आई॥
हो मंगल अभिषेक दूर–अब तो सारे विष बाण टरें।
यह प्रभु करुणा का सागर है–उसे नहीं पाषाण करें॥

गायत्री के महामंत्र से

दसों दिशाओं में युग–युग से गूँज रही जयकार।
गायत्री के महामंत्र की, महिमा अपरम्पार॥

गायत्री के महामंत्र से, जीवन के सब पाप हरो।
सुन्दर सुखी बनेगा जीवन, गायत्री का जाप करो॥

ये मंत्र है मंगलकारी, सद्‌बुद्धि बढ़ाने वाला।
हर साधक के जीवन में, नव ज्योति जगाने वाला।
सब कष्ट मिटाने वालाऽऽऽऽऽऽऽ।
करो साधना तन से, मन से, दूर सभी सन्ताप करो॥

वेदों ने इसको गाया, ऋषि-मुनियों ने अपनाया।
अवतारी पुरुषों ने भी, श्रद्धा से शीश झुकाया।
सबने वाँछित फल पाया ऽऽऽऽऽऽऽ।

कलयुग में भी इसे सुमिर कर, सब अपने अभिशाप हरो॥

युग ऋषि ने इसे जगाया, इसको सब तक पहुँचाया।
उज्ज्वल भविष्य रचने को, इसको आधार बनाया।
हम सबको धन्य बनाया, ऽऽऽऽऽऽऽऽ।
जिसे देखकर हो प्रसन्न माँ, ऐसे क्रिया कलाप करो॥

घर-घर में निराली ज्योति

घर–घर में निराली ज्योति जले।
घर–घर में निराली, सुख–शान्ति देने वाली ज्योति जले॥

ज्ञान यज्ञ हम ऐसा रचायें, पावन दीप अखण्ड जलायें।
नवयुग की, उषा की लाली, उषा की लाली फैल चले॥
घर–घर में निराली ज्योति जले॥

हों हम सब आचार परायण, घर–घर में प्रगटें दैवी गुण।
आधि–व्याधि, हर लेने वाली, हर लेने वाली प्रीति पले॥
घर–घर में निराली ज्योति जले॥

जन–मन के कल्मष धो डालें, स्वार्थ नहीं परमार्थ सम्हालें।
हो नन्दन, वन–सी हरियाली, वन–सी हरियाली,गगन तले॥

मानें सब जप-तप की गरिमा, जानें सब उस प्रभु की महिमा।

बन जिसकी, बगिया के माली, बगिया के माली, हम निकलें॥
घर-घर में निराली ज्योति जले॥

मुक्तक-

अगर चाहते हो बने स्वर्ग धरती तो, संकल्प तुमको उठाने पड़ेंगे।
असुरता की छाई सघन कालिमा में, तुम्हें प्राण तिल-तिल जलाने पड़ेंगे।
सुलगती है धरती उठो प्रज्ञापुत्रों, कहीं से सजल मेघ लाने पड़ेंगे।
दीपयज्ञ मनाने बढ़ो शिल्पियों अब, ज्ञान के दीप घर-घर जलाने पड़ेंगे।

घने अँधेरे में हम

घने अँधेरे में हम घिरे हैं। दिखाओ सत्पथ हे! वेदमाता॥
सिवा तुम्हारे न कोई सम्बल। दया करो हे! दयालु माता॥

न हममें तप है न पुण्य अर्चन, न कोई शक्ति न आत्म चिन्तन।
सफल बनाने मनुष्य जीवन, बढ़ें किस तरह न कोई साधन॥
बढ़ाओ आँचल सिखाओ चलना, न यह सुअवसर सदैव आता॥

है मोह-माया के बंध भारी, भटक रहे माँ तेरे पुजारी।
है चुक गई अपनी शक्ति सारी, माँ अब तो केवल है तेरी बारी॥
बिना तुम्हारी कृपा किरण के, न कोई भक्ति न ज्ञान पाता॥

जगा दो मानस में ज्ञान ज्योति, दिखा दो अंतः के दिव्य मोती।
तुम्हारी करुणा है दिव्य सागर, न रिक्त रह जाये छोटी गागर॥
करें असंभव भी कार्य संभव, जो तेरे पथ पर कदम बढ़ाता॥

मुक्तक-

शक्तिरूपा ज्योतिरूपा, माँ हमें वरदान दो।
सृजन पथ पर पग बढ़ायें, शक्ति दो सद्ज्ञान दो॥

घर-घर अलख जगायेंगे

घर-घर अलख जगायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना।

निश्चय हमारा, ध्रुव–सा अटल है।
काया की रग–रग में, निष्ठा का बल है॥
जागृति शंख बजायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना॥
बदली हैं हमने, अपनी दिशायें।
मंज़िल नयी तय, करके दिखायें॥
धरती को स्वर्ग बनायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना॥
श्रम से बनायेंगे, माटी को सोना।
जीवन बनेगा, उपवन सलोना॥
मंगल सुमन खिलायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना॥

पीड़ा पतन की, तोड़ेंगे कारा।
ममता की निर्मल, बहायेंगे धारा॥
समता का दीप जलायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना॥
माता गायत्री की, हम पर है छाया।
अनुभव हम करते हैं, गुरुवर का साया॥
शुभ संस्कार जगायेंगे, हम बदलेंगे ज़माना॥

मुक्तक–

ज्ञानज्योति लेकर गुरुवर की, द्वार–द्वार जायेंगे।
उनके चिन्तन की सुगन्ध हम, घर–घर फैलायेंगे॥

इसके लिए समय, श्रम, साधन, नियमित दिया करेंगे।
यूँ सूरज का काम रश्मियाँ, बनकर किया करेंगे॥

घर-घर नगर-नगर में

घर-घर नगर-नगर में, उल्लास है समाया।
सबकी प्रसन्नता का , यह दीप पर्व आया।।
फैला है दीपकों का, चारों तरफ उजाला।
दीपों ने संगठित हो, है मोर्चा संभाला।
दीपों की रोशनी से, संसार जगमगाया।।

है फुलझड़ी का मौसम, बम फट रहे अनोखे।
पकवान भी मधुर हैं, स्वादिष्ट और चोखे।
इस दीपमालिका ने, भावों को शुभ बनाया॥
श्रीराम लौट करके, वापस अवध को आये।
स्वागत में श्री भरत जी, पलकें रहे बिछाये।
जगमग हुई अयोध्या, घर-घर प्रकाश छाया।।
आओ पवित्रता के, इस पर्व को मनायें।
है रोम-रोम पुलकित, आनन्द सभी पायें।
जीना उसी का जिसने, ईश्वर का प्रेम पाया।।

मुक्तक-

दीपों के शुभ पर्व पर, जगत प्रकाशित होय।
ज्योति जगे भीतर अगर, जीवन जगमग होय॥

घड़ी संकट भरी यह अब

घड़ी संकट भरी यह अब, तुम्हीं पतवार बन जाओ।
सिसकती संस्कृति को अब, भँवर से पार कर लाओ।।
    कभी दिन वो भी थे सिरमौर, जग का था बना भारत।

दिखाया था हमीं ने विश्व को, सद्ज्ञान का सत्पथ।।
यहीं सत्यम्,शिवम्,और सुन्दरम्, का नाद फैला था।
यहीं ऋषियों ने परहित के लिए, दुःख कष्ट झेला था।।
वही दिन फिर धरा पर लायेंगे, संकल्प कर जाओ।।
बना मानव असुर है आज, भटका लक्ष्य से अपने।
बिछा छल-छद्म की चौपड़, सजाता स्वार्थ के सपने।।
जरूरत आ पड़ी है आज, ऐसे दानवीरों की।
दधीचि की तरह जो आहुति दें, निज शरीरों की।।
बनो दीपक की भाँति विश्व में, आलोक फैलाओ।।

स्वयं को हीन मत समझो, है तेजस् शौर्य का तुममें।
असुरता बस प्रबल दिखती, कहाँ है आत्मबल उसमें॥
न भूलो तुमको है सारे, जगत् में ज्ञान फैलाना।
दिशा भूली मनुजता को, तुम्हें है राह दिखलाना॥
स्वयं तुम शौर्य का पुरुषार्थ का, इतिहास लिख जाओ॥

मुक्तकः-

स्वार्थ में डूबा मनुज, अब भोगवादी हो गया है॥
असुरता छाई हुई है, वह प्रमादी हो गया है॥
त्यागवादी संस्कृति की, चेतना सोयी जगाएँ।

जब जगे हैं हम हमारा, वेग आँधी हो गया है॥

चन्दन सी इस देश की

चन्दन सी इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम हो।
हर नारी देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम हो॥
    जिसके सैनिक समर भूमि में, गाया करते थे गीता।
    यहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती थीं सीता॥
    जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का काम हो॥
यहाँ कर्म से भाग्य बदल देती श्रम-निष्ठा कल्याणी।

त्याग और तप की गाथाएँ , गाती थी कवि की वाणी॥
ज्ञान यहाँ का गंगा जल सा, निर्मल हो अभिराम हो॥
रही सदा मानवता वादी, इसकी संस्कृति की धारा।
मिलकर रहना सीखें मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा॥
मानवीय संस्कृति का फिर, सारे जग में गुणगान हो॥
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी हो।
क्षुद्र असुरता को ठुकरा दे, प्रभु का आज्ञाकारी हो॥
यहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम हो।

मुक्तक-

भूमि भारत की, शहीदों का वतन है,
रंग-बिरंगे फूल से, महका चमन है।
ऋषि, मनीषी, सन्त, शासक की धरा यह,
जो यहाँ पाया न जाए, कौन सा ऐसा रतन है।

चल चल चल ओ साथी

चल चल चल, ओ साथी चल॥
आज युग ने हमें है पुकारा-पीर रोते हुओं की मिटाने।
दुःख-भ्रम में भटकते हुओं को, रास्ता नेक सच्चा दिखाने॥

आसमानों पे उड़ती हवायें, तेरा स्वागत करेंगी ये राहें।
रुक गये हम अगर डर के मारे, दुःख की छायेंगी अनगिन घटायें।।
इसलिये जागकर चल दो प्रहरी, सोये वीरों को जग में जगाने।।
ये धरा वीर जननी रही है, दे रहे युगपुरुष ये गवाही।
पुत्र ही फाड़ते माँ का आँचल, आज कैसी मची है तबाही।।
बढ़ के आगे ये दुनियाँ से कह दो, आ गये माँ की इज्जत बचाने।।
यूँ पढ़ो शास्त्र या गीता गाओ, लेके क़ुरान हाथों में आओ।
ग्रंथ साहब नूँ मत्था टेकाओ, याके बाइबिल को दिल से लगाओ।।
बनके इन्सां ओ अल्लाह के बन्दो, बनके इन्सां ओ ईश्वर के भक्तों।

आओ खुशियों का गुलशन खिलाने।।

बौद्ध धर्म-

बुद्धं शरणम् गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघम् शरणं गच्छामि।

जैन धर्म-

णमो अरिहन्ताणम्, णमो सिद्धाणम्, णमो आयरियाणम्, णमो उवज्झायाणम्। णमो लोये सव्वसाहूणम्।

सिक्ख धर्म-

सदा सत् नाम बोलो, सदा सत् नाम।
सदा सत् नाम बोलो, राम-राम-राम बोलो।।

इस्लाम धर्म–

अल्लाहू अकबर ला इलाह इल्लील्लाह मोहम्मद रसूल्लील्लाह।

सनातन धर्म–

वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे–पीर पराई जाणे रे।।

गायत्री महामंत्र–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

प्रेरणा यह सभी मन्त्र देते, राह नेकी की सबको चलाने।
चल चल चल ओ साथी चल॥

मुक्तकः-

घृणा द्वेष की आग जल रही, स्नेह सलिल से उसे बुझाओ।
समता का संदेश सुनाकर, विश्व शान्ति का पाठ पढ़ाओ॥
भेद-भाव का भूत भगाकर, आपस में हम गले मिलें सब।
है वसुधा परिवार हमारा, यही मंत्र मिलजुल कर गाओ॥

चलो गुरुदेव के सपने

चलो गुरुदेव के सपने, सजाने की शपथ ले लें।
सुखी सुरधाम-सी वसुधा, बनाने की शपथ ले लें॥

उठाकर हाथ में माटी, कि जैसे दक्षिणेश्वर की।
शपथ ली देश भक्तों ने, न चिन्ता की कभी सिर की
यहाँ हम भी सृजन संकल्प लेते हैं, निभायेंगे।।
गहन दुष्वृत्तियाँ जग से, मिटाने की शपथ ले लें॥

जहाँ हों रूढ़ियाँ फैली, बहुत गहरा अँधेरा हो।
न जिनने आज तक देखा, कभी उज्ज्वल सवेरा हो॥
हृदय में स्नेह भरकर ज्योति लेकर, ज्ञान की स्वर्णिम।
स्वयं जलकर धरा को, जगमगाने की शपथ ले लें॥

पताका देवसंस्कृति की, स्वयं हर देश में लेकर।

दवा हर रोग की गुरु के, सहज सन्देश में लेकर॥
नगर औ गाँव में, घर में, डगर के बीच जायेंगे।
अलख गुरुदेव का घर–घर, जगाने की शपथ ले लें॥
भयंकर आग फैली है, जरा सी देर घातक है।
हवा बिल्कुल विषैली है, जरा सी देर घातक है॥
इसी से लोकसेवा में, लगायेंगे समय अपना।
पुनः इस विश्व वसुधा को, सजाने की शपथ ले लें॥
धरा का हर सुमन महके, यहाँ इतना समय देंगे।
सृजन की आग फिर भड़के, यहाँ इतना समय देंगे।

न दे पाये समय तो, लोकमंगल के लिए अपने।
स्वयं प्रतिभा व धन साधन, लगाने की शपथ ले लें॥

मुक्तक-

युगदृष्टा ने देखा सपना, हम उसको साकार करेंगे।
उनकी दिव्य प्रेरणाओं का, जन-जन में संचार करेंगे॥
इस वसुधा के आँगन में अब, टिक न सकेगा दुष्ट अँधेरा।
ज्ञानक्रान्ति के सूर्योदय से, आयेगा अब नया सवेरा॥

चार दिन की जिन्दगी

चार दिन की हमें जिन्दगी है मिली,
फूल खुशियों के इसमें खिलाते रहो।
प्यार ही प्यार बाँटो जगत में सखे,
खुद हँसो दूसरों को हँसाते रहो।।

ये सुखद रोशनी ये सुनहरे सपन
कुछ समय के लिए है तुम्हारे लिए।
श्रेष्ठता से भरी जिन्दगी पूज्य है,
ये धरा ये गगन हैं तुम्हारे लिए।।

पंचतत्वों का जीवन रहे संतुलित,
प्राण की चेतना को बढ़ाते रहो।
यह जगत प्रभु की मूरत मनोहर परम,
इसकी आराधना में लगे श्रम-समय।
ध्यान सविता का धरकर करो साधना,
तेज को सोखकर हो विसर्जन-विलय।
गुरु कृपा से ही मिलतीं परम सिद्धियाँ,
ज्योति से ज्योति को तुम जलाते रहो॥
प्यार सहकार से हो भरी जिन्दगी,

जग से पीड़ा-पतन को मिटाते रहें।
त्याग-बलिदान, करुणा-दया भाव ले,
ज्ञान की ज्योति जग में जलाते रहें।
कर सको साधना तो करो, प्रेम की,
नेह का नीर सबको पिलाते रहो॥
श्रेष्ठता, संगठन-शक्ति को साथ ले,
लोक पथ पर कदम हम बढ़ाते चलें।
अपनी प्रतिभा, पराक्रम, समयदान से,
स्वर्ग जैसी धरा को बनाते चलें।

सब तरफ हो खुशी, होंठों पर हो हँसी,
प्यार की धार ऐसी बहाते रहो।।

चलो करें स्वागत

चलो करें स्वागत आरती सजा लो–कि दीप जला लो।
कि नया युग चला आ रहा है॥
भरत–राम जैसा, भाई में प्यार होगा।
लखन–राम जैसा, भाई का साथ होगा।
राम–राज्य धरती पर, फिर से बसा लो, दुनियाँ को दिखा दो॥

बिन दहेज के यहाँ, बहनों का ब्याह होगा।
सुख-शान्ति होगी, अमन चैन होगा।
कदम से हमारे, कदम तो मिला लो, आवाज लगा लो॥
रूढ़ियाँ टूटेंगी, विवेक जाग जायेगा।
भेद मिट जायेगा, धर्म जाग जायेगा।
जाग उठो भैया, अपनों को जगा लो, सोतों को उठा लो॥
एक नेक इन्सां, हम सबको बना लेंगे।
एक नयी दुनियाँ, हम फिर से बसा लेंगे।
सब मिल कंधे से, कंधा तो मिला लो, मशाल उठा लो॥

चलो रे मन शान्तिकुञ्ज हरिद्वार

चलो रे मन शान्तिकुञ्ज हरिद्वार, जहाँ है जग-जननी का प्यार।
गुरु हैं औघड़दानी, सुधा सी जिनकी वाणी॥
शान्तिकुञ्ज जीवन्त तीर्थ अलबेला है।
वहाँ साधकों का लगता नित मेला है।
बरसती संवेदना फुहार, जहाँ है जग-जननी का प्यार।
ध्यान साधना कर, प्रणाम को जाएँगे।
फिर अपना जीवन यज्ञीय बनाएँगे॥
कि होगा प्राणों का संचार, जहाँ है जग-जननी का प्यार।

वहाँ शब्द,स्वर,पवन,सभी कुछ पावन है।
चिन्तन है उत्कृष्ट, भाव मन भावन है।।
साधना है जिसका आधार, जहाँ है जग-जननी का प्यार।
गुरु वाणी गुंजित है, वहाँ हवाओं में।
प्रखर प्रेरणा बनती, जो विपदाओं में।।
बहे आशा उमंग की धार, जहाँ है जग जननी का प्यार।
गुरु का करके काम, श्रेय हम पायेंगे।
महाकाल के सहयोगी कहलायेंगे।।
मिलेगा सच्चे सुख का सार, जहाँ है जग जननी का प्यार।

मुक्तक-

1 शान्तिकुञ्ज युग तीर्थ का, मर्म न जाने कोय।
हर पल क्षण गुरुदेव के, तप के दर्शन होय।।
2 शान्तिकुञ्ज युग तीर्थ है, गुरु का पावन धाम।
श्रद्धा, प्रज्ञा, शक्ति का, निर्झर आठों याम।।

चलो रे मन शान्तिकुञ्ज सुखधाम

चलो रे मन शान्तिकुञ्ज सुखधाम।
जहाँ गूँजती है गुरुवर की, वाणी आठों याम।।

ज्योति अखण्ड जहाँ जलती है, जहाँ अहंता खुद गलती है।
नित नूतन आशा जगती है, हवा बहुत अपनी लगती है।
सफल मनोरथ करती जिसकी, माटी ललित ललाम।।

जन सेवा का सार जहाँ है, देवोपम संसार जहाँ है।
हर दुःख का उपचार जहाँ है, जीवन का आधार जहाँ है।
प्रतिभायें रहती हैं तजकर,धन,साधन,पद,नाम।।

नवयुग का युगतीर्थ यही है, शान्ति न इतनी और कहीं है।
इसकी अति उर्वरा मही है, यहाँ तनिक आलस्य नहीं है।
तम डूबे जग ने देखी है, भोर यहीं अभिराम।।

सतयुग में विश्वास जहाँ है, बढ़ने का उल्लास जहाँ है।
कोई नहीं निराश जहाँ है, नहीं दैन्य का वास जहाँ है।
उस पावन धरती को कर लें, श्रद्धा सहित प्रणाम॥

जहाँ पहुँचकर हर साधक को, गुरु का संरक्षण मिल जाता।
माँ भगवती दुलार लुटातीं, हर साधक निहाल हो जाता।
सतत् मार्गदर्शन करते हैं, जहाँ स्वयं श्रीराम॥

मुक्तक-

शान्तिकुञ्ज युग तीर्थ हमारा, चलकर शीश झुकाएँ।
गुरु का ज्ञान प्यार माता का, सहज भाव से पाएँ॥

फिर घर-घर जाकर वह बाँटें, जो हमने है पाया।
शान्तिकुञ्ज के सन्देशों को, जन-जन तक पहुँचाएँ।।

चलेंगे हम जगत जननी

चलेंगे हम जगत जननी, तुम्हारे ही इशारों पर।
न है चिन्ता कि डूबें या, पहुँच जायें किनारों पर॥
भटकते ही रहे अब तक, अँधेरी वीथियों में हम।
रहे बस खोजते मोती, तटों की सीपियों में हम।
बड़े सौभाग्य से आये, यहाँ माँ के दुआरों पर॥

तुम्हारे शब्द में हमने सुनी, गुरुदेव की वाणी।
तुम्हारे स्नेह में देखी, गुरु की दृष्टि कल्याणी।
उसी से पार होंगे हम, समय की तेज धारों पर॥

हमारे कान में गुरु की, तुम्हीं ने बात दुहराई।
शिथिलता के पलों में माँ, तुम्हीं से प्रेरणा पाई।
हमारी हर प्रगति होगी, तुम्हारे ही सहारों पर॥

करें हम काम गुरुवर का, हमें वह शक्ति दे दो माँ।
दुःखी असहाय मानव में, हमें अनुरक्ति दे दो माँ।
करें हर सुख समर्पित माँ, हजारों बेसहारों पर॥

सुसंस्कृति की सुरक्षा को, विवेकानन्द हम होंगे।
कि बन्दा बैरागी से हम, जरा भी तो न कम होंगे।
ज़माना नाज़ कर लेगा, पुनः इन पंच प्यारों पर॥

मुक्तक–

माँ तुम्हारी याद आयी, नयन में भर गया पानी।
हम सुकृत्यों से करेंगे, पूर्ण ममता की कहानी॥

चरणों में तेरे जीना मरना

चरणों में तेरे जीना मरना, अब दूर यहाँ से जाना क्या।

एक बार जहाँ सिर झुक जाये, फिर सर को वहाँ से उठाना क्या॥
चरणों में तेरे बालक सारे–प्रभु शीश झुकाये बैठे हैं।
दो हुक्म हमें प्यारे सद्‌गुरु–हम पेश करें नज़राना क्या॥
मन भी तेरा हम भी तेरे–हर श्वाँस अमानत तेरी है।
जब नज़र कृपा की हो ही गई–फिर दिल का यूँ घबराना क्या॥
मन को भरमाने की ख़ातिर–हमें बहुत भुलावे आते हैं।
प्रभु प्यार का सिर पर हाथ रहे–फिर और के दर पर जाना क्या॥
किसी और गरज़ की ख़ातिर तो–ये हाथ जो अब उठते ही नहीं।
जब दिल में कोई ख़्वाहिश ही नहीं–तो दामन का फैलाना क्या॥

जो प्यार में तेरे मिल जायें–वो काँटे फूल से बेहतर हैं।
तेरा प्यार जो मेरे साथ रहे–तो गुलशन और वीराना क्या॥

मुक्तक–

यह तन विष की बेलरी–गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिलें–तो भी सस्ता जान॥
गुरु मूरत मुख चन्द्रमा–सेवक नयन चकोर।
अष्ट प्रहर निरखत रहूँ–श्री गुरु चरण की ओर॥

चाहते यदि बनाना जगत

चाहते यदि बनाना जगत को चमन।
तो समझ लो सखे! जिन्दगी है हवन॥
जिन्दगी है हवन बन्दगी है हवन।
तो समझ लो सखे जिन्दगी है हवन॥

यज्ञ का अर्थ है दूसरों का भला–
और को रोशनी दे दिया ज्यों जला।
सब खुशी से रहें और सहो तुम जलन॥
तो समझ लो........... ॥

यज्ञ का अर्थ है हो अँधेरा जहाँ–
मेटकर तम बिखेरो उजेरा वहाँ।
जब इसी हेतु खुद को बना लो किरन॥
तो समझ लो........... ॥

यज्ञ निष्फल नहीं लाभ मिलता तुरत–
यज्ञ से ही हुए राम–लक्ष्मण भरत।
और प्रिय शत्रुघन से जयी रिपुदमन॥
तो समझ लो........... ॥

यज्ञ की सभ्यता संस्कृति है यहाँ–

जन्म से मृत्यु तक यज्ञमय क्रम यहाँ।
जिन्दगी मोर सी यज्ञ है, श्याम घन॥
तो समझ लो........... ॥

मुक्तक-

यज्ञ रूप यह विश्व है-यज्ञ पुरुष भगवान।
जिसका जीवन यज्ञमय-वह सच्चा इन्सान॥

चाहता है यदि सफलता

चाहता है यदि सफलता, एक ही मंजिल बना तू!

माँगती कुर्बानियाँ, युग ज्वाल! तू आवाज सुन ले।
रात भर करना बसेरा, एक ही बस डाल चुन ले॥
दो कदम ही चल भले तू, छोड़ जा पदचिन्ह अपने।
हों भले सीमित मगर, साकार कर निर्माण सपने॥
सो सके सुख नींद मानव, एक ऐसा घर बसा तू!
हर डगर पर पाँव रखकर, लिख न पाया गीत कोई।
अनगिनत उद्देश्य जिसके, आयु उसने व्यर्थ खोई॥
देख मत, मेला लगा है, कौन रोता कौन गाता।
जिस दु:खी का हर सके दु:ख, जोड़ उसके साथ नाता॥

रोक धारायें सहस्त्रों, एक ही सागर बहा तू!
पार जाने को बहुत है, एक नौका का सहारा।
एक ही विश्वास का, सम्बल दिखा देगा किनारा॥
क्या करेगा तू महल की, रोशनी की क्रान्ति लेकर।
स्नेह का दीपक जला ले, दीप्त करले एक मन्दिर॥
एक निष्ठा को जनम दे, एक ही आस्था बना तू!
चाहता है यदि सफलता, एक ही मंजिल बना तू!!

जब-जब पीड़ित पाप-पतन

जब–जब पीड़ित पाप पतन से, यह धरती हो जाती।
तब–तब नये रूप धर–धरकर, ईश चेतना आती॥
करने हल्का भू का भार, आते धरती पर अवतार॥
    पीड़ित हुई आज मानवता, चिन्तन में विकृतियाँ आई।
    अन्धकार में भटका मानव, भीषण विपदायें गहराई॥
    करूणा से हो उठी द्रवित फिर, युग सृष्टा की छाती॥
बालक श्रीराम शर्मा में, वह विशेषता दी दिखलाई।
स्वयं हिमालय की ऋषि सत्ता, आत्म बोध कराने आई॥

गुरु रूप में रही उन्हें वह, चौबीस वर्ष तपाती॥
गायत्री को साध्य बनाकर, अविरल ज्योति अखण्ड जलाई।
युग का अन्धकार हरने की, उसने सतत प्रेरणा पाई॥
बन कर ज्योति अखण्ड रही वह, ज्ञान क्रान्ति चलवाती॥
युग निर्माण योजना द्वारा, परिवर्तन प्रक्रिया चलाई।
अन्धविश्वासों आडम्बर से, जन मानस को मुक्ति दिलाई।
उनकी ज्ञान मशाल विश्व को, नूतन पथ दिखलाती॥
जाति पाँति का भेद मिटाकर, गायत्री सब तक पहुँचाई।
ऊँच-नीच का भाव मिटाकर, यज्ञाहुति सबसे डलवाई॥

युग ऋषि के सन्मुख जन श्रद्धा, नत मस्तक हो जाती॥

जगत्वन्द्य माँ शक्ति दो

जगत्वन्द्य माँ, शक्ति दो साधना दो।
अचल अर्चना, दो अटल वन्दना दो॥
हमें भक्ति दो, सर्वदा प्रेम मण्डित।
हमें ज्योति दो वह, सदा जो अखण्डित।
न इच्छा रहे ना, बसे वासना माँ।
तुम्हीं में मगन मन, यही कामना दो॥1॥

न हो हर्ष में, शोक में क्षुब्ध यह मन।
सतावें न सुख-दुःख, कटें मोह बन्धन।
सभी यह तुम्हारा, तुम्हारे सभी हैं।
तुम्हीं सर्वमय हो, यही भावना दो॥

कभी काम की, कल्पना न कँपाये।
कभी क्रोध-प्रतिशोध, होकर न आये।
जले राग की, आग में मन न मेरा।
यही धारणा दो, यही भावना दो॥

विषय वासना, विष भरी है कटारी।

यही बुद्धि दे–दो, बनें सदाचारी।
मिले मान अपमान, पथ में तुम्हारे।
लगें सब परम प्रिय, यही धारणा दो॥

मुक्तक–

माँ गायत्री दीजिए, यह शाश्वत वरदान।
तीर बने मम साधना, सेवा, कर्म कमान॥

जप ले हरि का नाम

जप ले हरि का नाम बन्दे, जप ले हरि का नाम।

उसके सुमिरन से बन जाते, बिगड़े सारे काम।।
सूरज चाँद सितारे सारे, उगते ढलते रोज।
धरती से अम्बर तक फैला, उसका ही तो ओज।।
पलक उठाते दिन उगता है, पलक झपकते शाम।।
तन को सुन्दर स्वस्थ बनाता, मन को करे पवित्र।
वह रूठे तो दुनियाँ रूठे, रीझे तो सब मित्र।।
उसकी शरण गहे मिलता है, दुनियाँ को आराम।।
धरती के कण-कण में देखो, फैला उसका तेज।
उसके किये करिश्मे सारे, हैं हैरत अंगेज।।

वह सब में है उसमें सब हैं, फिर भी अलख अनाम॥
उसको पूजो उसकी मानों, जागेगा सौभाग्य।
उसके अनुशासन से डरकर, भागेगा दुर्भाग्य॥
उसे भूल जाने से होता, यह जीवन बदनाम॥

मुक्तक-

नाम लियो तिन सब कियो, सकल शास्त्र को भेद।
बिना नाम के नर गयो, पढ़-पढ़ चारों वेद॥
नाम ही तीरथ नाम व्रत, नाम से हो शुभ काम।
ऐसा अक्षर तत्त्व भर, जिह्वा जप श्रीराम॥

जो नहीं दे सका

जो नहीं दे सका, कोई भी आज तक,
पूज्य गुरुदेव! वह दे दिया आपने।
प्राण में प्रेरणा, भाव संवेदना,
बुद्धि को श्रेष्ठ चिन्तन, दिया आपने॥

अन्यथा प्राण रहते भी, निष्प्राण थे,
भाव संवेदना शून्य, पाषाण थे।
प्राण सद्भावना से, मचलने लगे,
पूज्यवर! यह, अनुग्रह किया आपने॥

आपने तप किया, पुण्य हमको दिया,
आपने दिव्य एहसान, हम पर किया।
कर तितिक्षा हमें, ज्ञान अमृत पिला,
शिव! हमारे लिये, विष पिया आपने॥
किन्तु अब दक्षिणा है, चुकानी हमें,
और गुरु वेदना है, बटानी हमें।
विश्व की वेदना से, विकल वे रहे,
तिलमिलाया उन्हें, विश्व सन्ताप ने॥
शिष्य हैं दर्द गुरु का, बँटायें चलो,

भार युग पीर का कुछ, उठायें चलो।
दें समय, लोक पीड़ा, शमन के लिए,
आज आवाज दी है, महाकाल ने॥

मुक्तक

तप किया अनुपम स्वयं, अनुदान जग को दे दिये।
अध्यात्म के सब सूत्र शुभ, विज्ञान सम्मत कर दिये॥
जो न हो धूमिल युगों तक, कर दिया ऐसा सृजन।
युग साधकों का देव-संस्कृति का तुम्हें शत्-शत् नमन॥

जागेगा इन्सान

जागेगा इन्सान, ज़माना देखेगा।
नवयुग का निर्माण, ज़माना देखेगा॥

देवता बनेंगे मेरे, धरती के प्यारे।
हम सुधरें तो, जग को सुधारें॥
चमकेगा देश हमारा, मेरे साथी रे।
आँखों में कल का, नज़ारा मेरे साथी रे॥
धरती पर भगवान्, ज़माना देखेगा ॥ १ ॥

मिल जुलकर होंगे सारे, खुशियों के मेले।

कोई ना रो पायेगा, दुःख में अकेले॥
जागेगा देश हमारा, मेरे साथी रे।
आँखों में कल का, नज़ारा मेरे साथी रे॥
कल का हिन्दुस्तान, ज़माना देखेगा॥ २॥

जुट जायें हम सब मिलकर के

जुट जायें हम सब मिलकर के, नवयुग के निर्माण में।
आओ हम खुशहाली बो दें, फिर से इसी जहान में॥
ये धरती है पूज्य हमारी, ये हम सब की माता।

हर किसान इसके वरदानों, से दाता कहलाता।
ये वरदान हमें मिलते हैं, खेतों में खलिहान में॥
सब बेटे मिल आज सँवारें, धरती माँ के रूप को।
सहते जाते हँसते–गाते, जाड़ा, पानी, धूप को।
बहे पसीना तन से श्रम का, माता के स्नान में॥
माँ को लहराती फसलों की, हरियाली हम दे जायें।
मस्ती में माँ की महिमा के, सब मिलकर के गुण गायें।
फूल झरायें हम पूजा के, माँ की हर मुस्कान में॥
जो प्रसाद हमको माता दे, खुद खायें सब को बाँटे।

माता के वरदानों से हम, जन–जन के सङ्कट काटें।
दर्शन करें अन्नदाता के, सब ही श्रेष्ठ किसान में ।।
    कहीं न ऐसा हो कि हमारे, रहते माँ बदनाम हो।
    रहते हुए अन्नदाता के, कहीं न भूखी शाम हो।
    व्रत लें दाग न लगने देंगे, माँ की पावन शान में।।

मुक्तक-

ध्वंस धरा पर उतरकर, आज क्रीड़ा कर रहा है।
और उसके साथ चलकर, मनुज पीड़ित हो रहा है।।
    मनुज जब संकल्प लेकर, तप सृजन के हित करेगा।

तो स्वयं अपवर्ग आकर, धरा को शोभित करेगा।।

ज्योतिपुञ्ज के द्वार साँझ

ज्योतिपुंज के द्वार साँझ, जाने कैसे घिर आयी है।
जाओ युग के सृजन साधकों, तुमको आज विदाई है।।
टूट गये पाथेय कि जिनके, लूट गयीं स्वर्णिम घड़ियाँ।
तुम्हें तोड़नी हैं जाकर फिर, उन हाथों की हथकड़ियाँ।।
अर्घ्य चढ़ाया करते हैं जो, देवों के दरबार में।
शक्ति नहीं रह गयी कि जिनकी, वाणी और पुकार में।।

उनमें फिर साहस भरना है, लानी फिर अरुणाई है।।
चमक धुल गयी जिन आँखों की, पावस से रोते-रोते।
घिरी अमावस जिनके आँगन, पूर्ण चन्द्र होते-होते।।
अमृत कलश जो बाँटा करते, वे विष के व्यापारी हैं।
देने वाले दान स्वयं ही, वे बन गये भिखारी हैं।।
उनके हृदय कपाट खोलने, की वेला फिर आयी है।।
दर्द हमारा पीड़ा बनकर, जागे अन्तर ज्वाल में।
अन्तर में सन्देश हमारे, तिलक तुम्हारे भाल में।।
इनको नहीं समझना आँसू, ये पावन गंगा जल हैं।

तपती हुई दोपहरी में जो, करते मन को शीतल हैं।।
यह सरिता का मिलन सिन्धु से, यह तप की तरुणाई है।।

मुक्तक-

निराशा की निशा में, आस का सूरज उगाना है।
हुए हैं दिग्भ्रमित जो भी, उन्हें सत्पथ दिखाना है।।
चमकना हर अँधेरे में, हमारी ही किरण बनकर।
तुम्हारे साथ चमकेंगे, बिछुड़ना तो बहाना है।।

जीवन बन तू फूल समान

जीवन बन तू फूल समान।
पर उपकार, सुगन्ध बिखेरें, करें सदा सुखदान॥
हृदय स्वच्छ हो खिल जा प्यारे-
पावन प्रेम हृदय में धारें।
सुखदाई हो सबको जग में-
पा सबसे सम्मान॥ जीवन बन....॥
कठिन कण्टकों के घेरे में-
दारुण दुखदायी फेरे में।

पड़कर विचलित कहीं न होना-
बनना नहीं अंजान।। जीवन बन....।।

शत्रु-मित्र दोनों का हित हो-
ऐसा पावन तेरा व्रत हो।
भेद-भाव तजकर सबको दें-
जीवन मधु का दान।। जीवन बन....।।

दे तू सुरभि टूटने पर भी-
पैरों तले कूटने पर भी।
इस विधि से प्रभु की माला में-

पावे प्रिय स्थान।। जीवन बन....।।

ज्योति से ज्योति

ज्योति से ज्योति जगाओ सद्गुरु,
अन्तर तिमिर मिटाओ सद्गुरु।
हे परमेश्वर! हे सर्वेश्वर!
निज किरणें दर्शाओ सद्गुरु॥
हे योगेश्वर! हे ज्ञानेश्वर!
अवगुण दूर भगाओ सद्गुरु॥

हम बालक तेरी शरण में आये।
दिव्य दरश दिखलाओ सद्‌गुरु॥
हाथ जोड़कर करें आरती।
प्रेम सुधा बरसाओ सद्‌गुरु॥
अन्तर में युग-युग से सोयी।
सोई शक्ति जगाओ सद्‌गुरु॥
साँची ज्योति जगे अन्तर में।
सोऽहं नाद जगाओ सद्‌गुरु॥
जीवन में श्रीराम अविनाशी।

चरण की शरण लगाओ सद्गुरु॥

मुक्तक-

सब जगह हमने भटककर, ली शरण अब आपकी।
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी॥

जय महाकाल

जय महाकाल, जय महाकाल, जय महाकाल, जय महाकाल॥
जो पाप ताप का हर्ता है, जो युग परिवर्तन कर्ता है।
माँ आदिशक्ति को साथ लिए, जो बदल रहा है सृष्टि चाल॥

जिसने सोतों को जगा दिया, जागों को जिसने चला दिया।
चलतों को जिसने दौड़ाया, निष्ठा को दी प्रेरक उछाल॥
अब द्वेष दम्भ को दूर करो, सत्कर्मों का उत्थान करो।
सब भेद विषमता नष्ट करो, हे दुष्ट विनाशक! महाज्वाल!॥
आओ देवत्व जगाने को, धरती को स्वर्ग बनाने को।
अपनत्व सभी में विकसा दो, हे सज्जन के मानस मराल॥
सद्भाव और सद्ज्ञान भरो, सत्कर्मों का उत्थान करो।
प्रज्ञा प्रकाश जग में भर दो, उज्जवल भविष्य की ले मशाल॥
तुम हो अनादि तुम हो अनन्त, तुमसे प्रेरित यह दिग्दिगन्त।

परिवर्तन के आधार तुम्हीं, तुमसे प्रेरित यह जग विशाल॥

मुक्तक-

महाकाल अवतरित हुए हैं, नूतन सृष्टि रचाने।
धरती पर से पाप-पतन का, भारी बोझ हटाने॥
महाकाल के वीरभद्र बन, हम भी आगे आएँ।
अंधकार का वक्ष चीरने, ज्ञान मशाल उठाने॥

जो अपना कर्त्तव्य

जो अपना कर्त्तव्य उसी पर, न्यौछावर हो जाना।

ये मनुष्य तेरे जीवन का, कुछ भी नहीं ठिकाना॥
बनो आलसी तो है जीना, कर्म करो तो जीना।
अकर्मण्य आलसी बनकर, क्या मुर्दे कहलाना॥
यौवन पाया धन-जन पाया, सभी वृथा है पाना।
अगर नहीं दुनियाँ के हित में, अपना हित पहचाना॥
क्या लाये थे क्या ले जाना, खाली आना जाना।
यहीं रहा सब यहीं रहेगा, क्यों फिर मोह लगाना॥
आयेगा जब काल तभी यह, सब कुछ छीना जाना।
क्यों न जगत के सेवक बनकर, धीर वीर कहलाना॥

खेलो खेल खिलाड़ी बनकर, छोड़ो बैर भजाना।
अपना-अपना खेल खेलकर, हँसकर छोड़ो बाना।।

मुक्तक:-

पंच तत्वों का खिलौना, कब न जाने टूट जाये।
प्राण का सम्बन्ध तन से, कब न जाने छूट जाये।।
क्षण भंगुर यह देह है, व्यर्थ रहा क्यों जोड़।
परमारथ पर ध्यान दे, स्वार्थ भावना छोड़।।
क्षण, क्षण, क्षण, क्षण बीतते, जीवन बीता जाय।
क्षण, क्षण का उपयोग कर, बीता क्षण न आय।।

जन्म लिया आँवलखेड़ा में

जन्म लिया आँवलखेड़ा में, सारा जगत् निहाल किया।
हे युगऋषि श्रीराम आपने, सचमुच बड़ा कमाल किया॥
बचपन से ही थे तेजस्वी, कर्म तुम्हारे सब ओजस्वी।
स्वतन्त्रता सैनिक बन धाये, मस्त रहे और मत्त कहाये॥
सैनिक, सन्त, तपस्वी, खुद को, हर साँचे में ढाल लिया॥
तुम दुनियाँ की पीर पी गये, युग के सच्चे पीर हो गये।
तपा दिया अपने जीवन को, जीवन कला सिखाई जग को॥
दीन दुःखी को गले लगाकर, जन-जन को खुशहाल किया॥

तुम्हें हिमालय अति प्यारा था, जीवन वैसा ही न्यारा था।
दुनियाँ भर की हर ऊँचाई, तुमने छोटी कर दिखलाई।।
छोटे से छोटे जीवन को, ऊँचा खूब उछाल दिया।।
दिव्य ज्ञान धरती पर लाये, युग के भगीरथ कहलाये।
मानव में देवत्व जगाने, इस धरती को स्वर्ग बनाने।।
मानवता को दिव्य सम्पदा, देकर मालामाल किया।।
तप से सूक्ष्म जगत् शोधित कर, नये सृजन की शक्ति जगाकर।
बदल गये दुनियाँ की धारा, दे उज्ज्वल भविष्य का नारा।।
महाकाल बन करके तुमने, अपने वश में काल किया।।

मुक्तकः-

महाकाल के अवतारी तुम, अजर-अमर वरदानी।
गहन तपश्चर्या से जिनने, नये सृजन की ठानी।।
कोटि-कोटि हृदयों तक पहुँची, जिनकी अमृतवाणी।
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने, लिख दी अमर कहानी।।

जीवन के देवता को

जीवन के देवता को, आओ तनिक सँवारे।
जीवन ही देवता है, क्यों और को पुकारें॥

है आत्म ज्ञान होता, अपने को जानने से।
जीवन महान बनता, अपने को साधने से।
अपना सुधार करके, देवत्व को निखारें॥
है यह शरीर मन्दिर, हो शुद्धता वहाँ पर।
विश्वास आस्था के, हों देवता जहाँ पर।
सद्भाव और सद्गुण, की आरती उतारें॥
जीवन के देवता से, अवतार भी प्रकट हों।
जीवन अगर सधे तो, भगवान भी निकट हों।
चिन्तन चरित्र में हम, यदि श्रेष्ठता उभारें॥

सबसे समीप है यह, जाना नहीं कहीं पर।
है शक्ति स्रोत अद्भुत, हैं तीर्थ सब यहीं पर।
होंगे विराट् दर्शन, निज रूप तो निहारें॥

मुक्तक-

दुर्लभ जन्म मिला है हमको, साधें तन-मन जीवन।
आत्मबोध से तत्वबोध से, जीवन बनायें दर्पण।।
जीवन के देवता को, हम यदि प्रसन्न करलें।
वरदान भी मिलेंगे, सजने लगेगा जीवन।।

जन्म दिन पर सभी हम

जन्म दिन पर सभी हम मिले हैं।
देखो खुशियों के गुलशन खिलें है।।
नव सुमन सा सुगन्धित रहो तुम।
मुस्कराते सदा ही रहो तुम।।
जैसे तारे गगन में खिले हैं।
ज्यों बहे पुण्य गंगा की धारा।
त्यों रहे श्रेष्ठ जीवन तुम्हारा।।
माँ की ममता में हम सब पलें हैं।।

सभी मिल करके देते बधाई।
सदा जीवन रहे हर्षदायी।।
दीप जीवन के जगमग जले हैं।।
दिव्य जीवन बने देवता सा।
स्वर्ग सा हो समय इस धरा का।।
सूत्र गुरु के हमें प्रिय मिले हैं।।

मुक्तक:-

मनुज जीवन ही प्रभू का, श्रेष्ठतम अनुदान है।
यह सधे तो व्यक्ति का, संसार का उत्थान है।।

जाग गईं नारियाँ सावधान

जाग गईं नारियाँ सावधान।
चल पड़ी हैं क्रान्तियाँ सावधान॥
    मुक्ति हम दिलायेंगी, समाज को कुरीति से।
    मूढ़ मान्यताओं से, कुप्रथा कुरूढ़ि से॥
    अब न इन्तजारियाँ सावधान॥
बोलियाँ नहीं लगेंगी, अब हमारे लाल की।
होलियाँ नहीं जलेंगी, अब पराये माल की॥
दहेज के भिखारियों सावधान॥

सास से, ननद से, अब बहू न ताने खायेगी।
लाड़ली बहू तो अब नहीं जलाई जायेंगी।।
अब बहू हैं बेटियाँ सावधान।।

धर्मतन्त्र, राजतन्त्र को दिशा दिखायेंगी।
दुष्टता व भ्रष्टताओं की जड़ें हिलायेंगी।।
आडम्बर वादियों सावधान।

सास, बहू, ननद सभी एक हो दिखायेंगी।
लाड़ली बहू घरों में प्यार मान पायेंगी।।
बहू हैं बेटियाँ समान सावधान।

मुक्तक-

एक टहनी एक दिन पतवार बनती है।
एक चिनगारी दहक अंगार बनती है।।
जो सदा रौंदी गई बेबस समझकर ।
वही मिट्‌टी एक दिन मीनार बनती है।।

जिस डाल में बनकर फूल

जिस डाल में बनकर फूल खिली, उस डाल से नाता टूट रहा।
पर यह न समझना अब हमसे, सम्बन्ध तुम्हारा छूट रहा।।

यह मिलने और बिछुड़ने का, क्रम तो जीवन भर चलता है।
जो मिलता प्रातःकाल गले, वह सायंकाल बिछुड़ता है।।
मिलता न ढूँढ़ने से भी जो, कल तकअमृत का घूँट रहा।।

तुमको गोदी में पाला था, चूमा था खेल खिलाया था।
तुम रूठी तो छाती से लगा, पुचकारा था दुलराया था।।
हम दूर नहीं होंगे तुमसे, विश्वास हमारा टूट रहा।।

जब साँझ द्वार पर आयेगी, तब तेरी याद रुलायेगी।
जब बादल बरसेंगे नभ से, तब आँखें झड़ी लगायेंगी।।
तुम दूर चली जाओगी अब, ममता का बन्धन टूट रहा।।

मन में पीड़ा का सागर ले, हम आज विदाई देते हैं।
भूलेंगे जीवन भर न तुम्हें, सौगन्ध तुम्हारी लेते हैं।।
वह छूट नहीं सकता जीवन भर, जो सम्बन्ध अटूट रहा।।

मुक्तकः-

माता पिता को छोड़कर, बिटिया जाये विदेश।
पत्थर से पत्थर हृदय, सह न सकें यह क्लेश।।
दो हृदय मिले दो सुमन खिले, दो सपनों ने श्रृंगार किया।
दो दूर देश के पथिकों ने, संग-संग चलना स्वीकार किया।।

जो देते लहू वतन को

जो देते लहू वतन को, जो महकाते उपवन को।
उन्हें शत्-शत् प्रणाम मेरे देश का,
सौ-सौ सलाम मेरे देश का॥

धरती को स्वर्ग बनाने, माटी का कर्ज चुकाने।
जो कदम बढ़ा करते हैं, रक्षा का बोझ उठाने।
जो मरकर भी जीते हैं, जो विष हरदम पीते हैं॥

जो धीर-वीर व्रतधारी, वे सच्चे देश पुजारी।
इतिहास वही रचते हैं, जिनका जीवन उपकारी।

जो दिल में रखें लगन को, वो पूरा करे सपन को।।
जो हाथ बने निर्माणी, है अमर वही बलिदानी।
जिनकी श्रम बूदें पावन, जैसे गंगा का पानी।
संकल्पी जिनका मन हो, आचरणी जिनका तन हो।।

मुक्तक-

त्याग बलिदान गाथाएँ, सृजन इतिहास करती है।
उमंगें जब उछलती हैं, मुखर मधुमास करती हैं।।
नमन है उन शहीदों को, लिखी बलिदान की गाथा।
पीढ़ियाँ प्रेरणा पाकर, समर्पित साँस करती हैं।।

जीवन बड़ा महान

जीवन बड़ा महान भाईयों, जीवन बड़ा महान।
इस काया में ही जन्में हैं, राम-कृष्ण भगवान्॥
किन जन्मों के पुण्य फले जो, मिली मनुज की काया।
इस काया में हमने-तुमने, कितना वैभव पाया॥
नहीं खोजकर निरखा-परखा, हीरा जन्म गँवाया।
जीवन के जौहरी जागते, पाते मूल्य सवाया॥
अपनी ही कीमत की हमको, अभी नहीं पहचान॥
चिन्तन और चरित्र आचरण, में परिवर्तन लाओ।

श्रेष्ठ शक्तियाँ सुप्त हैं अन्दर, उनको भी विकसाओ।।
समझदार ईमानदार, औ जिम्मेदार जवानों।
करो वक्त का मूल्य समझ से, अपने को पहचानों।।
तुम माटी ही नहीं तुम्हीं, सोने हीरे की खान।।
यही समय है सोना तपकर, कुन्दन बन जायेगा।
तुम बबूल समझे हो जिसको, चन्दन बन जायेगा।।
जन्म तुम्हारा तपकर दशरथ, नन्दन बन जायेगा।
गुरु कौशिक को सौंप प्राण, रघुनन्दन बन जायेगा।।
निश्चर हीन बनाने धरती, तुम भी लो प्रण ठान।।

कौन जानता हरिश्चन्द्र को, कौन जानता राम।
अगर न विश्वामित्र तपाकर, उनसे लेते काम।।
कौन जानता हनूमान को, वानर ही कहलाते।
मिलता क्यों सम्मान नहीं जो, राम काज कर पाते।।
सेवा-धर्म साधने वाले, पाते हैं वरदान।।

मुक्तक-

जिस काया को अवतारों ने, निज आधार बनाया है।
इसे अगर बदनाम किया तो, किसने कब क्या पाया है॥
करो उपेक्षा तो यह जीवन, दीन-हीन हो जाता है।

अगर सँभालो करो साधना, देवतुल्य बन जाता है॥

जोश न ठंडा होने पाये

जोश न ठंडा होने पाये, कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी, आज नहीं तो कल॥
    सबकी हिम्मत सबकी ताकत, सबकी मेहनत एक।
    सबकी इज्जत सबकी दौलत, सबकी किस्मत एक।
    शूल बिछे अगणित राहों में, राह बनाता चल॥
नूतन वेदी बलिदानों की, माँगे आज जवानी।

देनी होगी हमें देश हित, फिर से अब कुर्बानी।
बलिदानों का ढेर लगा, इतिहास बदलता चल॥

सबका मंदिर सबकी मस्जिद, गिरजाघर गुरुद्वारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, भारत सबको प्यारा।
एक–एक से मिलकर बनता, संघशक्ति का बल॥

मुक्तक:–

भारत माता सबकी माता, सभी प्रणाम करें।
भेदभाव का-ऊँच नीच का, काम तमाम करें।।
सब कुछ न्यौछावर करदें हम, माता की खातिर।

ह७म सपूत बनकर माता का, ऊँचा नाम करें॥

जीवन ईश्वरीय अनुक पा

जीवन ईश्वरीय अनुकम्पा का अनुपम अनुदान है।
इसको पाकर, शेष न रहता, फिर कोई वरदान है॥
जीवन है प्रत्यक्ष देवता, जिसने इसको साध लिया।
उसने अपने ही हाथों में, ऋद्धि-सिद्धि को बाँध लिया॥
यह जीवन ही पारसमणि है, सोने सा चमकाता है।
यह जीवन ही चन्दनवन है, जो इसको महकाता है॥

यह अमृत है, कल्पवृक्ष है, महिमा अरे महान् है॥
एक मूर्ख जिस पर बैठा था, काट रहा उस डाल को।
''विद्योत्तमा'' ब्याह दी उससे, धूर्तों ने चल चाल को॥
''कालिदास'' बुद्धि का हेटा, और कुरूप प्रसिद्ध है।
पर इतिहास साक्षी देता, सरस्वती का सिद्ध है॥
जीवन साधा और बन गया, अद्वितीय विद्वान है॥
सदन कसाई, सूरदास जी, वाल्मीकि तुलसी गणिका।
जीवन साध लिया जिन-जिनने, कायाकल्प हुआ उनका॥
जीवन है प्रत्यक्ष देवता, मन चाहा फल देता है।

विकसित जितनी हुई पात्रता, वह उतना ही लेता है॥
नर से नारायण बन जाता, जीवन वह भगवान् है॥

मुक्तक–

जिन्दगी भगवान का, वरदान है।
जिन्दगी भगवान की, पहचान है॥
तप सके जो, साधना में जिन्दगी।
जिन्दगी ही श्रेष्ठ, सुमधुर गान है॥

जिसकी साँसे और पसीना

जिसकी साँसें और पसीना, जनहित में लग जाये।
वही वीर मेरी राखी, बँधवाने हाथ बढ़ाये॥

जो युग की पीड़ा को समझे, और जरूरत जाने।
फिर उसके अनुरूप जगत को, गति देने की ठाने।
जिसका जीवन नवल सृजन की, यज्ञाहुति बन जाये॥

जो अपने कर्मों से मोड़े, विधि की लिखी लकीरें।
जो अपने साहस से तोड़े, अनीति की जंजीरें॥
जिसके पौरुष से बिखरा, भूगोल सिमटता जाये॥

जो चल सके संकटों पर, जो तूफानों से खेले।
औरों के हित जो हँस-हँसकर, कष्ट अनेकों झेले॥
जिसकी जीवन गाथा से, इतिहास धन्य हो जाये॥
निष्ठा के मोती से जिसकी, मानस सीप भरी हो।
जिसके आने से हर मन की, सूखी कली हरी हो॥
जिसका प्यार दुःखी दीनों को, नव-जीवन दे जाये॥

मुक्तक-

आमन्त्रण हमको देती है, भाई अब बहनों की राखी।
नारी का सम्मान बचाएँ, कहती है बहनों की राखी॥

जो नारी को मान 'कामिनी' उसकी गरिमा गिरा रहे हैं।
उनसे भिड़ने का आमन्त्रण–देती है बहनों की राखी॥

जीवन के बुझते दीपों में

जीवन के बुझते दीपों में, हम फिर नव ज्योति जगायेंगे॥
जिन नयनों के खारे आँसू, प्रतिपल भू–पर झर जाते हैं।
जिन प्राणों के अरमान सदा, निष्फल होकर मर जाते हैं॥
जिनके सपनों में सत्य नहीं–जिनके भावों में नश्वरता–
हम ऐसे दीन–दुःखी हृदयों को, नव–सन्देश सुनायेंगे॥

जो जगती के विस्तृत पथ पर, दो पग भी आगे बढ़ न सके।
जो मन में चिर उल्लास लिये, दुर्गम पर्वत पर चढ़ न सके॥
जो बैठ गये थोड़ा चलकर–जिनमें उठने की शक्ति नहीं–
हम उन मृतप्राय मानवों में–नव बल संचार करायेंगे॥

जिनके अन्तस्तल में दारुण, दुःख का सागर लहराता है।
जिनके सम्मुख आशाओं का, मरुस्थल सा बनता जाता है॥
जिनकी मन वीणा टूट गयी–जिनके गीतों में नीरसता–
हम उनके बिखरे तारों को–स्वर क्रम से आज सजायेंगे॥

रे उठो आज! रे चलो आज, संघर्षों का युग आया है।

बढ़ चलो वीर लेकर मशाल, जन-जन ने तुम्हें बुलाया है॥
तोड़ो बंदी कारा अपनी-तोड़ो बन्धन की जंजीरें-
हम रूप बदलकर इस जग का-फिर दुनियाँ, नई बसायेंगे॥

मुक्तक-

आसुरी आतंक से, सब लोग पीड़ा पा रहे हैं।
मानवी संवेदना के दीप बुझते जा रहे हैं॥
किन्तु उन ऋषियुग्म ने, सन्देश यह पावन दिया।
ज्योति, साहस, स्नेह के, अनुदान का वादा किया॥

जिन्दगी हवन करें

जिन्दगी हवन करें, चलो समाज के लिये।
बहुत दिनों मरे जिये हैं, तख्त ताज़ के लिये॥
    मिल गया मुनष्य तन, ज्ञान ज्योति मिल गयी।
    किन्तु मात्र स्वार्थ में ये, जिन्दगी निकल गयी॥
    मूल खो रहा मनुष्य, आज ब्याज के लिये॥
न्याय, नीति, प्रीति, रीति, दीन-हीन हो रही।
प्यार आग बुझ रही, प्रकाशहीन हो रही॥
जिन्दगी बनी हुई, मशीन आज के लिये॥

ज्ञान के विवेक के, प्राण हैं बिलख रहे।
दुष्ट जोश पा रहे, कि श्रेष्ठ जन सिसक रहे॥
शीलवान प्रण करें, विवेक लाज के लिये॥
घुट रही है जिन्दगी, लुट रहा है आदमी।
दब रही है चेतना, सिमट रहा है आदमी॥
बन सुधा संजीवनी, चलो इलाज के लिये॥
रूढ़ि में सड़ें नहीं, कुरीतियाँ गढ़ें नहीं।
बढ़े कदम प्रकाश के, विरोध में अड़ें नहीं॥
चलो चलें करें प्रयाण,आत्म राज्य के लिये॥

मुक्तक–

हो गया दूषित सभी वातावरण–
जिस तरफ देखो उधर ही है पतन।
इसलिये वातावरण की शुद्धि को–
जिन्दगी को ही बनायें हम हवन॥

जगद बे सविनय प्रणाम

जगदम्बे सविनय प्रणाम–सुमनों को अंगीकार करो।
अपने इन मानस पुत्रों की–श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करो॥

तुमने अपनी पलकों से–ममता के सिन्धु उड़ेले थे।
जिसकी पावन लहरों में–हम, सब हँस–हँसकर खेले थे॥
सद्‌गुण विकसे पर्वत–पर्वत, मैदानों–मैदानों में।
बादल बन–बनकर करुणा, बरसी थी रेगिस्तानों में॥
उठो शुष्क अन्तःकरणों में–स्नेह सुधा संचार करो॥

मानवता की बगिया सींची–अमृत के उपदेशों से।
दौड़–दौड़कर बालक आये–देशों और प्रदेशों से॥
शिवा सरीखे दिये सुवन–संस्कृति की रक्षा करने को।
शक्ति रूप बनकर उतरी थीं–जग की पीड़ा हरने को॥

बढ़ती जाती आज दनुजता–उठकर वज्र प्रहार करो॥
जीवन सागर मथकर जो–अनुभव के रत्न निकाले थे।
वे देवों के चौदह रत्नों–से भी अधिक निराले थे॥
परम पूज्य के साथ रहीं तुम–हर पल मैत्रेयी बनकर।
गायत्री माँ की अनुजा सी–मुस्कातीं बैठीं घर–घर॥
फिर होकर साकार हमें–पुचकारो और दुलार करो॥
शान्तिकुञ्ज के कण–कण का–मन डूबा, है दृग के जल में।
भावुकता विह्वलता बनकर–उमड़ रही है पल–पल में॥
संयम निग्रह समस्वरता की–शिक्षायें बेकार हुईं।

आज तुम्हारे बिन इनकी–परिभाषायें लाचार हुईं॥
तुम्हीं अधीरों को धीरज दो–और एक उपकार करो॥

तुमने जो पथ दिखलाया–हम उसे कदापि न छोड़ेंगे।
शपथ उठाते हैं कर्त्तव्यों से–न कभी मुँह मोड़ेंगे॥
सत्कर्मों की, सद्विचार की–भागीरथी बहायेंगे।
एक दिवस, देखना, स्वर्ग हम–इस धरती पर लायेंगे॥
दो हमको आशीर्वाद माँ–आत्मशक्ति संचार करो।

मुक्तक–

झरझर आँखे बरस रही हैं–सुनते हुए अन्तिम सन्देश।

मातु तुम्हारी हेतु तुम्हारे–कुछ न बचा रखेंगे शेष॥

जिसने जल-जलकर

जिसने जल–जलकर सारे, जगती तल में नव ज्योति जलाई।
धन्य हुई उसकी तरूणाई॥
छाई जब जग में अंधियारी, मिटने लगी मनुजता प्यारी।
अन्धी भौतिकता के पीछे, दौड़ पड़ी जब दुनियाँ सारी।
अमृत–कलश खोज लाने की, तब जिसने हिम्मत दिखलाई॥
अपने पौरुष से जो पाया, वह सारे जग को दे आया।

जिसकी करुणा के प्रताप से, हिंसा ने भी शीश झुकाया।
प्रेमामृत की धार बहाकर, प्यासे जग की प्यास बुझाई॥

जिसके लघु प्राणों की बाती, नवयुग की बन गई प्रभाती।
युग के सृजन स्वरों को सौंपी, जिसने निज जीवन की थाती।
अंगारों पर कदम बढ़ाकर, जिसने जग को दिशा दिखाई॥

जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं

जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं, की निर्मम जंजीर।
ओ निष्ठुर! पहचानो अब तो, मानवता की पीर॥

खून पसीना कर मुश्किल से, भरता कोई पेट ।
पालन पोषण में कन्या के, सहता सभी चपेट॥
लेकिन जब कन्या हो जाती, है विवाह के योग्य ।
बिन दहेज की कन्या को, ठहराते सभी अयोग्य ॥
तब दहेज की निर्मम माँगे, देतीं छाती चीर॥

असमय समय बने कोई भी,अगर मृत्यु का ग्रास।
तो उसके घर को कस लेता,मृतक भोज का पाश॥
एक ओर आँसू की धारा, सहती है आघात।
और दूसरी ओर बैठती, मृतक भोज की पाँत॥

गिद्ध जुटे हों मरी लाश पर, कौन बँधाए धीर॥

स्वार्थ–सिद्धि के लिए चढ़ाते, देवी को बलिदान ।
बेचारे पशु की बिसात क्या, चढ़ जाते इन्सान॥
यह कैसी विडम्बना कैसा, देवों का अपमान।
अगर नियन्ता एक, जीव सब, जग के एक समान॥
माँ की आँखों से तो बहते, आँसू छाती चीर॥

क्रूर प्रथा के दुष्परिणामों, पर कुछ करें विचार।
मानव ने अपने विवेक को, क्योंकर दिया विसार॥
कन्याओं, मृतकों, पशुओं की, पीड़ा रही पुकार।

महावीर का और बुद्ध का, याद करो प्रतिकार॥
युग प्रज्ञा करती गुहार अब, पीटो नहीं लकीर॥

मुक्तक–

सुनो! करुण क्रन्दन के स्वर, गूँजें हर तरफ हवाओं में।
बँधे हमारी चाल न अब, इन काली क्रूर प्रथाओं में॥

जब-जब, सौ-सौ बाँह पसारे

जब–जब सौ–सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच राह में–
तुम दीपक से जलते जाओ॥

उठते तूफानों को आखिर, एक दिन मिट जाना ही होगा।
बढ़े प्रलय तो उसे सहमकर, आखिर रुक जाना ही होगा॥
मंजिल दूर भले हो लेकिन, उर में दृढ़ विश्वास यही है।
दु:खी जगत् के इस आँगन में, सुख को फिर आना ही होगा॥
पग–पग से तुम डगर नापते, अंगारों पर चलते जाओ॥
ज्योति तुम्हारी बिखरे जो, भू–तल से अम्बर तक छा जाये।
और सिसकती मानवता फिर, हँसकर मंगल मोद मनाये॥
पाने को यह लक्ष्य तुम्हें नित, तिल–तिल करके जलना होगा।
हो सकता है क्रूर काल यह, तुमको ठोकर देता जाये॥

तुम गिरकर भी, फिर उठ–उठकर, सतत् लक्ष्य तक बढ़ते जाओ॥
जग में जीते वही, परिस्थितियों से, जो टकराया करते।
चट्टानों को तोड़ स्वयं ही, अपना मार्ग बनाया करते॥
उन फूलों की ही सुगन्धि तो, छायी है सारे उपवन में।
जो काँटो से विंधते लेकिन, म्लान न हो मुस्काया करते॥
सौरभ बरसाना चाहो तो, काँटों में भी पलते जाओ॥

मुक्तक–

उगो सूर्य की तरह गगन पर, बन प्रकाश छा जाओ।
और अन्धेरा इस जगती का, जलकर स्वयं मिटाओ॥

बन ऊषा की लाली, जन–जन के मन कमल खिलाओ।
शशि बन निशि में भी पथिकों के, हित प्रकाश फैलाओ॥

जिसके हों पद्‌चिह्न अमिट

जिसके हों पद्‌चिह्न अमिट, वह ही इतिहास सृजेता।
जिसने जीते हृदय वही, होता है विश्व विजेता॥
लिख देता जो काल पट्ट पर, अपनी जीवन गाथा।
सभी झुकाते आये उसके, सम्मुख अपना माथा॥
जिसने बाधाओं से टकराकर, भी मंजिल पायी।

उसको ही इस जगती ने भी, जयमाला पहनाई॥
जिसने इस दुनियाँ को केवल, रंगमंच ही माना।
और मात्र अभिनय अपने इस, जीवन क्रम को जाना।
वह न लिप्त होता बस रहता, है बनकर अभिनेता॥
वह स्वर क्या जो खो जाये, जग के हाहाकारों में।
चाँद वहीं होता जो अलग, दिखाई दे तारों में॥
जग के कोलाहल में भी जो, मस्ती से गाता है।
उसके स्वर को ही युग की, आवाज कहा जाता है॥
पीता है जो दर्द विश्व–मानव का मानव बनकर।

और दर्द से मुक्ति दिलाता, अमृत गीत रचकर॥
वह ही सच्चा युगगायक, सच्चा इतिहास प्रणेता॥

वह कैसा मानव जो केवल, स्वार्थ हेतु खप जाये।
वीर वही जो परहित में, कुछ कुर्बानी कर जाये॥
जिसके मन को सन्त, शहीदों का ही पथ है भाता।
जिया वही नर जिसे शान से, मरना भी है आता॥
जिसने जग का दर्द बँटाया, सुख उल्लास लुटाया।
उसने निश्चित ही अपने, जीवन को धन्य बनाया॥
वह सच्चा इतिहास पुरुष बन, नाम अमर कर लेता॥

मुक्तक-

जो औरों के लिए खिले मधुमास बन गये।
जो औरों के लिए जिए, इतिहास बन गये।
जिनने मानवता की पीर नहीं पहचानी।
वे पतझड़ ही रहे, और उपहास बन गये॥

जय गणेश गणपति

जय गणेश गणपति, गणनायक वन्दे।
सकल विघ्ननाशक, सुखदायक वन्दे॥

जग-जननी पार्वती, मातु हैं तुम्हारी।
शंकर-सुत की काया, जग से है न्यारी॥
छिपी वृहत्कर्णों में, ज्ञान की पिपासा।
अधिक ज्ञान अर्जन की, बढ़ती जिज्ञासा॥
बुद्धि के प्रदाता गुणगायक वन्दे॥
दीर्घ नासिका कहती गौरव की गाथा।
सत्कर्मी का ऊँचा रहता है माथा॥
धीर गहन सागर से, हो तुम लम्बोदर।
रखते हो दोष, भेद सभी को पचाकर॥

दुर्मति हित तीखे शरसायक वन्दे॥

सबका मन मुदित करे, कर मोदक धारी।
अंकुश से आती है, ऋद्धि-सिद्धि सारी॥
सुख साधन पूर्ण हर, समृद्धि हो हमारी।
किन्तु लोकहित रत सद्बुद्धि हो हमारी॥
विश्व में विभूति के, विधायक वन्दे॥

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, शुभकार्येषु सर्वदा॥

जन्म लिया फिर भागीरथ

जन्म लिया फिर भागीरथ ने ज्ञान गंग सरसाने।
देवतत्त्व सब आज जुटे हैं, ज्योति अखण्ड जलाने॥
    तेज दिया खुद सविता ने, तप विश्वमित्र से ऋषि ने।
    गायत्री ने प्राण पिलाया, शीतलता दी शशि ने॥
    धर्म हेतु वीरों की बलि–सा, प्रखर हौसला दिल में।
    मन में इतना स्नेह कि, क्या चिकनाहट होगी तिल में॥
    यह आया है व्यथित धरा की, अन्तर पीर मिटाने॥
हरिश्चन्द्र–सा सत्य कर्ण–सी, है उदारता मन में।

जनहित में लगने दधीचि की, लगी हड्डियाँ तन में॥
एक बना था चन्द्रगुप्त तब, इसने लाख बनाये।
आज करोड़ों व्यक्ति स्वार्थ तज, जन सेवा हित आये॥
वे अपने हो गये आज तक, थे जो जन-अनजाने॥

लिखा व्यास बन युग साहित्य, जिसे यह विश्व पढ़ेगा।
पढ़कर बदलेंगे विचार, जिससे यह युग बदलेगा॥
यह कबीर की साखी, इसमें गीता जैसा बल है।
परमहंस ने मानवता को, दिया नया सम्बल है॥
रचा नव्य प्रज्ञा पुराण, नवजीवन ज्योति जगाने॥

नवयुग के इस महायज्ञ में, बन शाकल्य जला है।
और हमें जीवन जीने की, दी अनमोल कला है॥
सारे ऋषियों की साधों को, नूतन प्राण मिला है।
शैल श्रृंखलाओं में चिन्मय, ब्राह्मी कमल खिला है॥
स्वर मुरली के बाण राम के, आज रहे न पुराने॥

मुक्तक-

हे वेदमूर्ति हे तपोनिष्ठ, हे युगदृष्टा हे युग त्राता।
गूँजेगी सदियों तक तेरे,जीवन की प्रज्ञामय गाथा॥
श्रीराम तुम्हारे चरणों में, शत्-शत् वन्दन, शत्-शत् वन्दन।

हो गया धन्य यह धरा धाम, पाकर पावन ये वरद चरण॥

जय अ बे जय जगद बे

जय अम्बे जय जगदम्बे, जय अम्बे जय जगदम्बे।
भक्तिदायिनी, शक्तिदायिनी, शान्तिदायिनी हे! अम्बे॥
सर्वश्रेष्ठ यह मानव जीवन, बने परम पद का यह साधन।
प्रभु को देखें घट-घट व्यापी, वह सेवक कैसे हो पापी॥
यही दृष्टि दो हे अम्बे॥१॥
ठगें नहीं खुद भी न ठगावें, दुर्मति तजें न दुर्गति पावें।

पाप काट दें, पुण्य बढ़ावें, जीवन मुक्ति सहज ही पावें॥
यही साधना दो अम्बे॥२॥

जो अनीति करते वो रोते, वही काटते जैसा बोते।
ममता समता शुचिता लायें, इस जीवन को धन्य बनायें॥
यही भावना दो अम्बे॥३॥

देवसंस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता गायत्री माता।
घर-घर सद्विचार फैलायें, जन-जन को सत्कर्म सिखायें॥
प्रखर कर्म दो अम्बे॥

जब तक करुणा पिघल

जब तक करुणा पिघल न जाये, चाव दरश के पलते रहना।
जब तक मिले न प्रभु का मन्दिर, दीपक तब तक जलते रहना।।
निकल पड़े तो मंजिल पाना, मानवत्व का स्वाभिमान है।
मन चाहा पा लेने में ही, इस जीवन की रही शान है।
जब तक मिले न लक्ष्य अनश्वर, राही! पथ पर चलते रहना।।
उस गागर की उमर बड़ी है, पनघट पर निशान जो छोड़े।
जलधारा भी वही श्रेष्ठ है, जो धरती अम्बर को जोड़े।
जब तक बुझे न प्यास सिन्धु की, हिमगिरि तुम नित गलते रहना।।

नहीं अँधेरा नियति हमारी, हम चिर ज्योति पुञ्ज के सुत हैं।
हमको सतत् प्रकाश चाहिए, मूल्य चुकाने हित प्रस्तुत हैं।
जब तक मिले न सविता भास्कर, मेरे प्राण पिघलते रहना।।

मुक्तक-

भावना हो प्रखर तो, संकल्प का सम्बल मिलेगा।
दृढ़ अगर संकल्प हो तो, साधना का फल मिलेगा।।
साधना के साथ उर में, भक्ति को लाना पड़ेगा।
भक्त के आह्वान पर, भगवान् को आना पड़ेगा।।

जब तक मिले न लक्ष्य

जब तक मिले न लक्ष्य बटोही, आगे बढ़ते जाओ।
खुला हुआ है द्वार प्रगति का, निर्भय कदम बढ़ाओ॥
भय से रुकना नहीं आँधियाँ, चाहे कितनी आयें।
रुकें नहीं पग पथ पर चाहे, टूट पड़ें विपदायें॥
संकल्पों में शक्ति न हो, सामर्थ्यहीन हो वाणी।
नहीं जमाने को बदले जो, वह क्या खाक जवानी॥
सिद्धि स्वयं दौड़ी आयेगी, अपनी भुजा उठाओ॥
हो निज पर विश्वास दृष्टि से, लक्ष्य नहीं ओझल हो।

मोड़ें जग की राह चाह में, इतनी शक्ति प्रबल हो॥
काँटों भरा देख मग तुमने, हिम्मत अगर न हारी।
चलते रहे विराम–रहित तो, होगी विजय तुम्हारी॥
नभ में उड़ो सुदूर गगन से, तोड़ सितारे लाओ॥
खोना मत उत्साह न नाता, मुस्कानों से टूटे।
डूब रही हो नाव भँवर में, फिर भी धैर्य न छूटे॥
जलते हुए अँगारे हों, या बर्फीली चट्टानें।
बढ़ते ही जाना, रुकना मत, अपना सीना ताने॥
कमर बाँधकर चले अगर तो, फिर मत पीठ दिखाओ॥

जिन गुरु में साकार हो

जिन गुरु में साकार हो गई, गुरुओं की गुरुताई।
उनको शत्–शत् नमन् जिन्होंने, ज्योति–अखण्ड जलाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

हिम नग की ऊँचाई जिनमें, गहराई सागर की।
नभ जैसी विशालता जिनमें, निर्मलता निर्झर–सी॥
और प्रखरता सविता जैसी, सरिता–सी सजलाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

दिव्य दृष्टि के स्वामी, वे उज्ज्वल भविष्य के दृष्टा।

तप के पुंज स्रोत करुणा के, नवल सृष्टि के सृष्टा॥
मचल रही जिनके चरणों में, मरुतों की तरुणाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

हिमनग के अभिषेक हेतु, हिमखण्डों–सा गलना है।
अर्घ्य चढ़ाने सागर को, जलधर बनकर फिरना है॥
जनहिताय गलने की गरिमा, गुरुवर ने बतलाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

ऐसी गुरुसत्ता को पाकर, सचमुच धन्य हुए हम।
सचमुच ही सौभाग्य हमारा, नहीं किसी से भी कम॥

राह न रोक सकेगा कोई, पर्वत खन्दक खाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

श्रद्धा और आस्थाओं की, धरती सूख रही है।
संवेदन बिन मानवीय, मन में उठ हूक रही है॥
गुरुवर ने संवेदित शिष्यों, से है आश लगाई॥
सुनो शिष्यों गुरुवर की गुरुताई॥

मुक्तक–

गुरु के रूप में हमने–आत्म विज्ञान पाया है।
योग, तप, भक्ति पाई है–श्रेष्ठतम ज्ञान पाया है॥

नहीं अब रह गई है–कामना कुछ और पाने की।
गुरु के रूप में हमने अरे! भगवान पाया है॥

जन्म दिन के शुभ समय

जन्म दिन के शुभ समय पर, आज अभिनन्दन तुम्हारा।
भाव भीनी सुमन माला, से मधुर वन्दन तुम्हारा।।
सौ बसन्तों की बहारें, आयु का उपवन सजायें।
शरद ऋतु के कमल सा, खिलता रहे तन-मन तुम्हारा।।
तुम सुखी हो स्वस्थ हो, कल्याण का दर्शन करो।

हो मनस्वी, हो यशस्वी, सफल हो जीवन तुम्हारा।।
देश और समाज तुम पर, गर्व का अनुभव करे।
प्रेरणा दें और को, कर्तव्य का पालन तुम्हारा।।
दे रहे आशीष गुरुवर, वन्दनीया मातेश्वरी।
हर समय उल्लास पूरित, हो मधुर जीवन तुम्हारा।।

जवानो! निरर्थक जवानी

जवानो! निरर्थक जवानी नहीं है,
रगों का गरम रक्त पानी नहीं है।

तुम्हें दृष्टि चारों तरफ फेंकना है,
तुम्हें देश की हर दशा देखना है।
तुम्हें दैन्य-दारिद्र्य को रोकना है,
तुम्हें हर अनैतिक कदम टोकना है।
जवानी कि पुरुषार्थ की दास्तां है,
निरे कायरों की कहानी नहीं है॥
रहो तुम! रहें राष्ट्र के नयन गीले!
किसी निर्धना के न हों हाथ पीले।
मनुज दासता के न हों बन्ध ढीले!

रहें क्रूर, घातक प्रभा के कबीले॥
जवानों! तो फिर व्यर्थ है यह जवानी,
यह ज़िन्दादिली की निशानी नहीं है।
लगी हैं तुम्हीं पर सभी की निगाहें,
बढ़ो थाम लो दीन-निर्बल की बाहें।
बनाना तुम्हें है नई आज राहें,
प्रगति के लिए चाहिए नव विधाएँ॥
तुम्हीं देवता, स्वर्ग के हो सृजेता,
कि कोई कहीं देव-दानी नहीं है॥

जलाओ नहीं भोग की भट्टियों को,
गलाओ नहीं वज्र सी हड्डियों को।
करो क्षय न, अनमोल इन शक्तियों को,
जुटाओ नहीं व्यर्थ सम्पत्तियों को।
जवानों कि अनमोल है यह जवानी,
इसे कौड़ियों में गँवानी नहीं है।
रगों में तुम्हारी अमृतरस भरा है,
तुम्हीं ने तो संजीवनी रस झरा है।
चमन जिन्दगी का इसी से हरा है,

जवानों! तुम्हारा पसीना खरा है॥
तुम्हारी जवानी, नहीं ज्वार से कम,
अकारथ रगों की रवानी नहीं है।

मुक्तक:-

सुनो जवानी शक्ति स्रोत है-
तुमको इसे सफल करना है।
देश और सारी दुनियाँ की-
कठिन समस्या हल करना है॥

जन्म शताब्दी वर्ष आ गया

जन्म शताब्दी वर्ष आ गया, हम सबके गुरुदेव का।
शिष्य साथियों दौड़ो, आया महापर्व गुरुदेव का॥
कहीं न कोई कोना छूटे, शहर गाँव का छोर हो।
गुरुवर को सब अपना समझें युग विचार चहुँ ओर हो॥
युग साहित्य सभी भाषा में, घर-घर हम पहुँचायेंगे।
हम सब सच्चे युग सैनिक हैं, गुरुवर को बतला देंगे॥
महाक्रान्ति हित खुला निमन्त्रण, है यह तो गुरुदेव का॥
रोज स्वयं की करें समीक्षा, लक्ष्य कहाँ तक हम पहुँचे?

सप्तक्रान्ति के प्रखर सूत्र हम, लेकर क्या घर–घर पहुँचे ?
साधक क्या बन पाया जन–जन, देश स्वस्थ बन पाया है ?
बना स्वावलम्बी क्या जन–जन, व्यसन मुक्त कहलाया है ?
जन जीवन को धन्य बनाने, आमन्त्रण गुरुदेव का॥

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में, युगऋषि की जयकार हो।
दीपयज्ञ से ज्ञानयज्ञ से, धर्मों में सहकार हो॥
गुरुवर की महिमा समझें सब, उनका ही गुणगान करें।
समय और साधन प्रतिभा दें, नवयुग का निर्माण करें।
नवल सृजन का स्वप्न सार्थक कर दें हम गुरुदेव का॥

लक्ष्य एक ही रहे हमारा, एक सूत्र में काम करें।
और न कोई इधर–उधर की, व्यर्थ जरा भी बात करें॥
महाकाल के जयघोषों से, गूँजे घर कोना–कोना।
जन–जन में उत्साह भरेंगे, नहीं करें रोना–धोना॥
महाक्रान्ति का यज्ञ रचाने, विमल पर्व गुरुदेव का॥

जन्म शताब्दी वर्ष आ गया

जन्म शताब्दी वर्ष आ गया, युगऋषि की सन्तानों।
गुरु के श्रेष्ठ शिष्य हो तुम, निज गुण–गरिमा पहचानों॥

काम न ऐसा करें, आत्मा जो हमको धिक्कारे।
ऐसा काम करें जनहित का, गुरुवर हमें दुलारें।
केवल वाणी नहीं आचरण से, अपने को तुम जानो॥
गुरु ने तप–ऊर्जा दी हमको, जो अमृत की धारा।
लेकिन है दायित्व स्वयं का, हमने आज बिसारा।
दो अपना सहयोग बुद्धि, बल, धन से प्रतिभावानों॥
आत्म–साधना प्रबल बनाकर, गुरुवर तक पहुँचा दें।
युवाशक्ति हो जाये संगठित, ऐसा भाव जगा दें।
स्वर्ग धरा पर, उतरेगा फिर, अटल सत्य यह मानो॥

घर–घर ज्ञान हमें पहुँचाना, हो संकल्प हमारा।
हम बदलेंगे – युग बदलेगा, यही हमारा नारा।
रहे दृष्टि केवल मंजिल पर, कुछ करने की ठानो॥

मुक्तकः–

जन्मशताब्दी वर्ष सामने, अनुपम समय विशेष है।
गुरुवर छाये जड़– चेतन में, गुरुवर ही सर्वेश हैं॥

जीवन खतम हुआ तो

जीवन खतम हुआ तो, जीने का ढंग आया।

जब शमाँ बुझ गई तो, महफिल में रंग आया॥

मन की मशीनरी ने, तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर एक, पुर्जे पे जंग आया॥

गाड़ी निकल गई तो, घर से चला मुसाफ़िर।
मायूस हाथ मलता, वापस बैरंग आया॥

फुरसत के वक़्त में ना, सुमिरन का वक़्त पाया।
उस वक़्त वक़्त माँगा, जब वक़्त तंग आया॥

आयु ने 'नत्थासिंह' जब, हथियार फेंक डाले।
यमराज फ़ौज़ लेकर, करने को जंग आया॥

मुक्तक–

क्षण क्षण क्षण क्षण बीतते, जीवन बीता जाय।
क्षण क्षण का उपयोग कर, बीता क्षण न आय॥
बीते क्षण तो चल दिये, आने वाले दूर।
यह क्षण आया सामने, कर प्रयोग भरपूर॥

दोहा–

मन विषयन में रमि रह्यो–हरिसों कियो न हेत।
अब पछताये होत क्या–जब चिड़ियाँ चुगि गईं खेत॥

जब कभी असहाय तुम

जब कभी असहाय तुम अनुभव करोगे।
तब हमारा स्नेह–ममता साथ होगा॥
आर्त स्वर में जब कभी कुछ भी कहोगे।
घाव पर मरहम लगाता हाथ होगा॥

कष्ट या कठिनाइयों से तुम न डरना।
धार या मझधार से संघर्ष करना॥
जीत होगी जिन्दगी की हर डगर में।
लोकहित में तुम नवल उत्साह भरना॥

पुत्र तुम "मैं हूँ अकेला" जब कहोगे।
माँ पिता का कवच भी तब साथ होगा॥
पुत्र तुम मजबूत कन्धे हो हमारे।
अंग अवयव हो तुम्हीं दो नयन तारे॥
भार तुम पर आज दोनों सौंपते हैं।
पूर्णतः निश्चिन्त तुम सबके सहारे॥
कार्य जब उत्साह से पूरा करोगे।
प्यार आशीर्वाद देता हाथ होगा॥
आखिरी निःश्वास तक रक्षा करेंगे।

खून की हर बूँद तक आशीष देंगे॥
यह मधुर सम्बन्ध जन्मों तक निभेगा।
सूक्ष्म में रहकर तुम्हें वरदान देंगे॥
आखिरी इच्छा है दो दर्शन कहोगे।
ब्रह्म का नव रूप साया साथ होगा॥

तु हारी शपथ हम

तुम्हारी शपथ हम निरन्तर तुम्हारे-
चरण चिन्ह की राह चलते रहेंगे।

करेंगे तुम्हारे हरेक स्वप्न पूरे–
उसी यत्न में पग मचलते रहेंगे॥
    वही युग–पुरुष आज जिसने गलाया–
    मनुज के लिए बीज सा ही स्वयं को।
    अन्धेरा मरण का भला क्या करेगा–
    कि जिसने मिटाया सघन घोर तम को॥
    तुम्हारी शपथ हम सभी अंकुरित हों–
    सदा सत्य बनकर निकलते रहेंगे॥
तुम्हारा लिये स्नेह अपने हृदय में–

कभी आँधियों में प्रकम्पित न होंगे।
तुम्हारी किरण बाँटते हम रहेंगे–
किसी कार्य में हम विलम्बित न होंगे॥
तुम्हारे जलाये दिये हम सभी हैं–
तुम्हारी शपथ रोज जलते रहेंगे॥

नगर गाँव घर–घर चले जायेंगे हम–
लिए चेतनापूर्ण चिन्तन तुम्हारा।
जहाँ पा सके प्रेरणामय सन्देशा–
हरेक राष्ट्र हर जाति जन–जन तुम्हारा॥

निमिष भर नहीं देर अब हम करेंगे–
न अब और संकल्प टलते रहेंगे॥

तुम्हारी बताई हुई राह पर ही–
अँधेरी निशा को किरण मिल सकेगी।
कि निष्प्राण होने लगी जो मनुजता–
तभी फूल जैसी पुनः खिल सकेगी॥
तुम्हारी शपथ हम इसी पर चलेंगे–
न अब हम दिशायें बदलते रहेंगे॥

मुक्तक–

तुम्हारी चेतना से, प्रेरणा पाते रहेंगे।
तुम्हारी प्रेरणा से, उछालें खाते रहेंगे॥
बताया लोक–मंगल पथ, चलेंगे हम निरन्तर।
शपथ को प्राण देकर भी, निभाते हम रहेंगे॥

तपः पूत यह कौन दमकता

तप:पूत यह कौन दमकता–जिसका मुख सूरज सा।
क्रान्तिदूत यह कौन महकता–जिसका यश मलयज सा॥
अन्धकार को चीर धधकती है मशाल यह कैसी।

उद्भिज से खिंचते हैं सब जल रही ज्वाल यह कैसी॥
यह कैसा संकेत मूल हर आत्मा अकुलाती है।
केन्द्र बिन्दु यह कौन जहाँ चेतना खिंची जाती है॥
मन:सरोवर में उगता–संकल्प नया पंकज सा॥
कोई दृष्टि नियन्त्रित करती पथ पर संग चलने को।
उमड़ा पड़ता स्नेह स्रोत बाती में मिल जाने को॥
किसके मौन निमन्त्रण ने मन आन्दोलित कर डाला।
ललक जगी आहुति बनने की लख युग यज्ञ निराला॥
परिचित सा है ऋत्विज लगता–है दधीचि वंशज सा॥

तु हारे पद्म चरणों में

तुम्हारे पद्म चरणों में, नमन सौ बार है गुरुवर।
कृपा की एक किरण दे दो, दुःखी संसार है गुरुवर॥
कृपा से आपकी नद भी, सुपावन नीर बन जाता।
कृपा पाकर मरूस्थल भी, कि गंगा तीर बन जाता।
मनुजता पर तुम्हारा तो, बहुत आभार है गुरुवर॥
तुम्हें छू लौह कण भी हो गये, अनमोल कञ्चन से।
निरर्थक वृक्ष भी सुरभित, हुए हर ओर चन्दन से।
सहज सानिध्य से सबका, किया उपकार है गुरुवर॥

तुम्हीं ने सूत्र सिखलाया, विचारों को बदलने का।
तिमिर में आचरण बल से, दिये की भाँति जलने का।
प्रखरता की मिली तुमसे, हमें पतवार है गुरुवर॥
समर्पित ज्यों शिवाजी का, गुरु के वास्ते प्रण था।
विवेकानन्द का गुरु के, लिए जैसा समर्पण था।
हमारे कर्म चिंतन पर, वही अधिकार है गुरुवर॥
तुम्हारी ज्ञान-गंगा की, सुधा सबको पिलाएँगें।
हृदय निष्प्राण हैं जिनके, सरस उनको बनायेंगे।
बनें जीवन्त वे जिनको, सृजन स्वीकार है गुरुवर॥

मुक्तक-

नमन हम कर रहे हैं, आपको स्वीकारिये गुरुवर।
दुःखी संसार है, उनके, दुःखों को टारिये गुरुवर।।
समर्पण भाव से हम, लोकमंगल में जुटें हैं सब।
थाम पतवार, इस संसार को , अब तारिये गरुवर।।

तू सत्चित आनन्दमयी

तू सत्चित् आनन्दमयी है-यह सबको बतलायें॥
ऐसी शक्ति हमें दो माता-हम तेरे गुण गायें॥

जग में जो कुछ सत्य–नित्य है, वह तेरी ही छाया।
उसको ही परिवर्तित करती–रहती तेरी माया॥
समझ सकें तेरे रहस्य सब–हम जग को समझायें॥
तेरा ही तप–तेज चमकता–सूरज की किरणों में।
मिलती प्राणों को चेतनता–तेरे ही चरणों में॥
स्वयं रहें गतिमान और सबको गतिमान बनायें॥
है आनन्द रूप तू जननी, जिसके हित अकुलाता।
उसे प्राप्त करने इन्सान, न क्या–क्या खेल रचाता॥
सबको दें आनन्द और, हम भी उस बीच समायें॥

तेरा यह स्वरूप प्रज्ञामय–हम सब समझ न पाते।
तुझसे दूर हुए हैं माता–इसीलिए दु:ख पाते॥
अपने को तुझमें लय कर दें–तुझे स्वयं हम पायें॥

तु हें प्यार से था बुलाया

तुम्हें प्यार से था बुलाया यहाँ पर।
उसी प्यार से, दे रहे हैं विदाई।।
मगर भूल जाना न, युग पीर को तुम।
हृदय चीरकर जो, तुम्हें है बताई।।

अंधेरा सभी ओर, तो छा रहा है।
सही रास्ता दिख, नहीं पा रहा है।।
घुटन बढ़ रही, दम घुटा जा रहा है।
मनुज है परेशान, घबरा रहा है।।
जहाँ भी रहो, दीप बन जगमगाना-
इसी वास्ते, ज्योति मन में जलाई।।
यहाँ पर तुम्हें, दिव्यता ने गढ़ा है।
सदाचार का रंग, तुम पर चढ़ा है।।
मगर सामने ढेर, अनगढ़ पड़ा है।

कि निर्माण का, प्रश्न टेढ़ा बड़ा है॥
सुगम सौम्य, व्यक्तित्व ऐसा बनाना-
मनुज देवता दे, सभी को दिखाई॥

व्यसन वासना में, अनेकों फँसे हैं।
बुरी आदतों के, शिकंजे कसे हैं॥
निचोड़े उन्हें, दे रहे ये नशे हैं।
वे अज्ञान की, बस्तियों में बसे हैं॥
उन्हें प्रेरणा दे, बचाना पतन से-
हमारी हृदय पीर, यदि जान पाई॥

परिजनों द्वारा स्वयं विदाई

लेने पर निम्न पंक्ति गायें–

हमें प्यार से था बुलाया यहाँ पर।
उसी भाव से ले रहे हैं विदाई॥
कभी भी न भूलेंगे युग पीर को हम।
हृदय चीरकर जो हमें है बताई॥

लिए पीर हम आपकी जा रहे हैं।
नहीं चैन लेंगे शपथ खा रहे हैं॥
हृदय प्राण में आप ही छा रहे हैं।

मनोबल उछलता हुआ पा रहे हैं।
उसे प्राण देकर भी बुझने न देंगे-
ज्ञान की मशालें जो हमको थमाईं।।

मुक्तक–

लहरें उठती हैं साथ–साथ, जीवन भर साथ नहीं रहतीं।
कलियाँ खिलती हैं साथ–साथ, जीवन भर साथ नहीं रहतीं॥
इस सहज नियम को अटल मान–यह दुःख बिछोह का सह लेना।
पर स्नेह पलेगा जीवन भर, तुम यह विश्वास नहीं खोना॥

तपकर ज्योति अखण्ड जलाई

तपकर ज्योति अखण्ड जलाई–मेरे हिन्दुस्तान ने।
प्राणमयी ऊर्जा सरसाई–मेरे.......... ॥

यहाँ तपे ऋषि मुनि औ ज्ञानी–लिखी वेद की हितकर वाणी।
तप औ त्याग की रीति चलायी–मेरे.... ॥

मानव जभी शान्ति पथ भूला–संशय असमंजस में झूला।
तभी ज्ञान की गीता गायी–मेरे...... ॥

पड़ी शक्ति की बड़ी जरूरत–देश गुलामी से था आहत।
तब पैदा की लक्ष्मीबाई–मेरे.... ॥

फूल अहिंसा के रंग वाले–सत्य न्याय के हम रखवाले।
विश्व शान्ति की दी पुरवाई–मेरे.... ॥

करुणा और क्षमा का बल है–हृदय ओस से भी कोमल है।
प्यार भरी गंगा सरसाई–मेरे.... ॥

जो जीवन का लक्ष्य सुनहरा–दिया भक्ति का सागर गहरा।
दिये सूर और मीराबाई–मेरे.... ॥

मुक्तक–

ऋषि अवतार दिये हैं अगणित–पग–पग तीरथ धाम है।
ओ भारत की माटी तुझको–शत् शत् कोटि प्रणाम है॥

तु हें आत्म मन्दिर

तुम्हें आत्म मन्दिर की प्रतिमा बनाकर।
चले युग समर में स्वयं को मिटाकर॥
स्वजन छोड़ जायें हम मिट क्यों न जायें।
मगर पूर्ण हो तेरी आकांक्षायें।
अँधेरा मिटायें हृदय निज जलाकर॥
नहीं सूखता जिनकी आँखों का पानी।
सुनायेंगे हम उनको तुम्हारी कहानी।
हँसी लायें होठों पर उदासी हटाकर॥

कि छाले भरे हैं हुए पाँव भारी।
घिरी आ रही मौत सी रात कारी।
उन्हें दें नई जिन्दगी जगमगाकर॥
तुम्हीं मेरे स्वामी गुरुवर तुम्हीं मेरे ईश्वर।
तुम्हीं एक सर्वस्व है पूज्य गुरुवर।
चरण धूलि माथे पर तेरी लगाकर॥
हुआ अवतरण गुरुवर, क्यों है तुम्हारा॥
वसंती पवन का यही है इशारा।
बने श्रेष्ठ शुचि भाव गंगा बहाकर॥

तरुणाई को ज़माना

तरुणाई को ज़माना आवाज़ दे रहा है।
रे! वक़्त का फ़साना आवाज़ दे रहा है॥
आजाद राष्ट्र जैसे, हालात तो नहीं हैं।
दिल औ दिमाग वैसे, दिखते नहीं कहीं हैं॥
तरुणों! शहीद–बाना आवाज़ दे रहा है॥
चिन्तन नहीं स्वदेशी, है आचरण कहीं भी।
अप संस्कृति के द्वारा, होता है अतिक्रमण भी।
बलिदान का तराना, आवाज़ दे रहा है॥

आजादी की अब नजरें, तुम पर टिकी हुई हैं।
गाथा तुम्हारे द्वारा, उसकी लिखी हुई है।
उस जोश का खज़ाना, आवाज़ दे रहा है॥

सुर संस्कृति को आशा, तुमसे बँधी हुई है।
क्योंकर तुम्हारे रहते ? भाषा रुँधी हुई है।
धड़कन का धड़धड़ाना, आवाज़ दे रहा है॥

अब कीमती आजादी, तुमको ही बचाना है।
दिग्विजय-देवसंस्कृति को, कदम बढ़ाना है।
महाकाल का निशाना, आवाज़ दे रहा है॥

मुक्तक-

जवानों ! यह ज़माना अब तुम्हें आवाज़ देता है।
सुनों ! वह त्यागवादी, संस्कृति का दर्द कहता है॥
सभी पर हो रही है, भोगवादी संस्कृति हावी।
तुम्हें क्या दर्द संस्कृति का, सुनाई नहीं देता है ?॥

तुझमें ॐ मुझमें ॐ

तुझमें ॐ मुझमें ॐ सबमें ॐ समाया।
सबसे करलो प्यार जगत में कोई नहीं पराया॥

जितने है संसार में प्राणी सबमें एक ही ज्योति।
एक बाग के फूल हैं सारे एक माला के मोती॥
फिर न जाने किस मूरख ने, लड़ना हमें सिखाया।
तुझमें ॐ मुझमें ॐ..........॥

एक पिता के बच्चे हैं हम एक हमारी माता।
दाना पानी देने वाला एक हमारा दाता॥
एक ही कारीगर ने हमको एक मिट्टी से बनाया।
तुझमें ॐ मुझमें ॐ..........॥

ऊँच-नीच की, भेद-भाव की, दीवारों को तोड़ो।

बदलो आप तो, बदले ज़माना, बुरी आदतें छोड़ो॥
जागो और जगाओ सबको समय सुहाना आया।
तुझमें ॐ मुझमें ॐ...........॥

मुक्तक-

ॐ जगत का सृजन करता, ॐ जगत का पालनहार।
ॐ शब्द में विश्व समाया, करे ॐ सबका उद्धार॥

तु हें जन्मदिन की बधाई

तुम्हें जन्मदिन की बधाई-बधाई।

यही बात इन दीपकों ने बताई।।

किया जो गया पंचतत्त्वों का पूजन।
इन्हीं पंचतत्त्वों के द्वारा बना तन।।
अरे! देव दुर्लभ मिला है ये जीवन।
नहीं भोग में ही खपे देह पावन।
यही बात इस माध्यम से बताई।।

हरेक वर्ष के दीप तुमने जलाये।
तुम्हारा यह जीवन यूँ ही जगमगाये।।
स्वयं यह प्रकाशित अँधेरा मिटाये।

भटकते हुओं को यह राहें दिखायें॥
यही बात इन दीपकों ने सुझाई॥
नहीं देह तुम हो अमर आत्मा हो।
नहीं स्वार्थी जीव विश्वात्मा हो॥
अधम हो नहीं दिव्य देवात्मा हो।
अगर साध लो तो परमात्मा हो॥
हो स्वामी अरे मत करो सेवकाई॥
सुमन-सा सुगन्धित रहो मुस्कराओ।
यह जीवन सुमन देवता को चढ़ाओ॥

जियो लोकहित और आशीष पाओ।
जीवेम् शरदः शतम् व्रत निभाओ॥
इसी वास्ते पुष्पाञ्जलि चढ़ाई॥

मुक्तक-

है जन्म दिन बधाइयाँ, सौ बार लीजिए।
गत वर्ष किस तरह जिये, विचार कीजिए॥
सद्कर्म किये हों तो, मुस्कुराइये जरा।
दुष्कर्म नहीं करने का, संकल्प लीजिए॥

थाम लो भारत माँ के लाल

थाम लो भारत माँ के लाल, क्रान्ति की जलती लाल मशाल॥
संस्कृति रोती है अविराम, कहाँ हैं राम और घनश्याम।
करे जो असुर तत्त्व का नाश, काट दें दानवता का पाश।
स्वयं जल मेटे तिमिर कराल॥ क्रान्ति की................॥
रूढ़ियों ने जकड़ा है आज, अन्धविश्वासी हुआ समाज।
बढ़ी है कुप्रथाओं की बेल, बना जीवन विषयों का खेल।
दूर आध्यात्मिकता दी डाल॥ क्रान्ति की................॥
मनुज में उदित करो देवत्व, लगाओ उसमें अपना सत्व।

उतारो इस धरती पर स्वर्ग, तुम्हीं से शोभित है यह सर्ग।
बदल दो युग की टेढ़ी चाल॥ क्रान्ति की................॥

मुक्तक-

आदमी जकड़ा हुआ है, दुर्गुणों के पाश में।
और आडम्बर घुसे हैं, आस्था विश्वास में॥
कुप्रथाओं, रुढ़ियों से है समाज ग्रसित हुआ।
क्रान्ति की जलती मशालें थाम लो अब हाथ में॥

देवसंस्कृति वेदना

देवसंस्कृति वेदना अनुभव करे जो,
वह तरुण पीढ़ी बुलाई जा रही है।
जो कि युगऋषि के करे संकल्प पूरे,
बस वही विद्या पढ़ाई जा रही है॥

कई शिक्षा संस्थाएँ चल रही हैं,
किन्तु पीढ़ी भोगवादी ढल रही है।
लक्ष्य जिनका मात्र अर्थोपार्जन है,
वासनाएँ कामनाएँ पल रही हैं॥

आचरण में अनैतिकता घुस गई है,
और नैतिकता भुलाई जा रही है॥
शिष्य आरुणि और नचिकेता कहाँ है,
विवेकानन्द राष्ट्र के चेता कहाँ हैं।
चन्द्रगुप्त, चाणक्य जैसे क्रान्तिदर्शी,
राष्ट्र निर्माता व उद्‌गाता कहाँ हैं॥
शील, संयम, शौर्य, सेवा, समर्पण की,
साधना क्यों कर भुलाई जा रही है॥
युवा अपने में करें देवत्व जागृत,

बनें बजरंग संस्कृति सीता बचाने।
आपने व्यक्तित्व अपना गढ़ लिया तो,
काम आएँ राष्ट्र को ऊँचा उठाने॥
भूमिका युग अग्रदूतों की निभाने,
फिर नई पीढ़ी बनाई जा रही है॥
ऊर्जा गुरुदेव के तप की यहाँ है,
युग सृजन संकल्प के व्रत की यहाँ है।
ईंट कच्ची रह गई व्यक्तित्व की यदि,
पकाने की और फिर भट्टी कहाँ है॥

नहीं कुछ भी असंभव, संकल्प बल से,
शिल्प की यह विधि बताई जा रही है॥

मुक्तक-

संस्कृति हित कुछ कर दिखलाओ, गुरुवर के सेनानी।
शुभ संस्कारों को फैलाओ, बनकर युग निर्माणी॥

दो हमें गुरुवर सहारा

दो हमें गुरुवर सहारा, धन्य हम हो जाएँगे।
प्राप्त कर अनुग्रह तुम्हारा, धन्य हम हो जाएँगे।।

वायु है विपरीत तय करनी बहुत लम्बी डगर।
आँधियों में साफ मंजिल भी नहीं आती नजर।।
भीड़ इतनी है भरा फिर भी अकेलापन यहाँ।
दूर तक लगता कि फैला एक निर्जन वन यहाँ।।
प्यार से तुमने दुलारा, धन्य हम हो जाएँगे।।
आपकी मृदु गन्ध से, चन्दन–पवन बन जाएँगे।
सूर्य के सान्निध्य से, झिलमिल गगन बन जाएँगे।।
महमहाएँगे कमल की, भाँति हम खिलकर यहाँ।
शुद्ध गंगाजल बनेंगें, आपसे मिलकर यहाँ।।

दिव्य वह होगा नज़ारा, धन्य हम हो जाएँगे।।

आपके दिनमान की, गुरुवर किरण हम बन सकें।
चेतना उल्लास की, अनुपम छुअन हम बन सकें।।
तुम समुन्दर हो बनालो, तुम सजल बादल हमें।
मरुथलों में स्नेह ममता, से भरा आँचल हमें।।
मिल सके हर पल इशारा, धन्य हम हो जाएँगे।।

है समय ऐसा कि जैसे, खौलती जलधार हो।
अन्धकारों में बहा, जाता विवश संसार हो।।
हम उन्हें गुरु ज्ञान की उज्ज्वल झलक दिखलाएँगे।

यूँ उन्हें गुरु के सबल जलयान, तक ले आएँगे॥
विश्व पायेगा किनारा, धन्य हम हो जाएँगे।।

मुक्तक-

भवसागर के तूफ़ानों में, मत समझो खुद को लाचार।
करुणासागर गुरु चरणों की, शरण गहो हो जाओ पार।।

दुनियाँ आगे बढ़ती जाये

दुनियाँ आगे बढ़ती जाये, रहे क्यों पीछे नारी रे।
रहे क्यों पीछे नारी रे, रहे क्यों पीछे नारी रे॥

नारियों को आगे आना, काम कुछ करके दिखलाना।
मार्ग उन्नति का अपनाना, न बाधाओं से घबराना॥
समझ लें मिल-जुलकर हम आज, हमारी जिम्मेदारी रे॥
करें आओ हम नव निर्माण, व्यक्ति का करें चलो उत्थान।
बनायें अपने को गुणवान, करे जग नारी का गुणगान॥
मिले हर नारी को सम्मान-करें इसकी तैयारी रे॥
अगर सारी बहनें जागें, हमारे सारे दुःख भागें।
नारियाँ आ जायें आगे, आज का युग यह ही माँगे॥
करें आओ हम युग निर्माण-इसी में शान हमारी रे॥

मुक्तक-

उठो देवियों प्रगतिशील युग, तुम्हें जगाने आया है।
तुममें रचना शक्ति अपरिमित, याद दिलाने आया है॥
हीन भावना छोड़ो, मन में, साहस का संचार करो।
खुद ही आगे बढ़ना सीखो, खुद अपना उद्धार करो॥

देख खुला है द्वार पुजारी

देख खुला है द्वार पुजारी।
बैठ गया क्यों फेंक धूल में, फूलों का यह हार पुजारी॥

स्वर्ण कमल से खिले हुए हैं, मन्दिर के वे कलश मनोहर।
मलयानिल के मृदु अञ्चल में, फहर रहा केतन पट सुन्दर।
दृग मींचे तू सोच रहा क्या, देख तनिक उस पार पुजारी।।
क्या सहलाता इन छालों को, तू पूजा का थाल उठा ले।
देख रहा तू क्या पथ पर ये, पर्वत ये नदियाँ ये नाले।
शीतल हो जायेंगे क्षण में, ये जलते अंगार पुजारी।।
पल में अरे समा जायेंगे, तम प्रवाह में ये सब सागर।
मिल जायेंगी नदियाँ तुझ में, डूबेंगे नभचुम्बी गिरिवर।
रुक न सकी है अब तक जग में, शुद्ध प्रेम की धार पुजारी।।

थाल सजाये आज जा रहा, तू जिसकी पूजा करने को।
आयेगा वह स्वयं दौड़कर, तुझ से पथ में ही मिलने को।
गूँथ हृदय के पुष्प तुझे वह, पहनायेगा हार पुजारी।।

मुक्तक–

कामना इन्सान को हैवान बना देती है।
साधना अभिशाप को वरदान बना देती है।।
पर दृढ़ रहा प्राणी यदि, उपासना पथ पर।
तो भावना पाषाण को भगवान बना देती है।।

दीप हैं जलते रहेंगे

दीप हैं जलते रहेंगे।
स्नेह के बल पर अंधेरे, से सतत् लड़ते रहेंगे॥
पार जायेंगे हमारा, मन कभी हारा नहीं है।
जो हमें पथ से डिगा दे, बनी वह धारा नहीं है॥
कौन रोकेगा स्वयं, तूफान थककर रुक गये हैं।
हर लहर से प्रेरणा ले, लक्ष्य तक बढ़ते रहेंगे॥
रोक पायीं कब शिलायें, उमड़ता गतिमान निर्झर।
प्रेम के हम दूत अपना, साथ देते सभी पथ पर॥

प्रबल वर्षा आँधियों से, भी हमें सहयोग मिलता।
बिजलियों की चमक से, निज मार्ग पर बढ़ते रहेंगे॥

हम अमर शिव के पुजारी, कर रहे विषपान हँसकर।
ज्योति के हम पुत्र रचते, ज्योतिमय अभियान घर-घर॥
बन स्वयं वरदान हमने, शाप को दे दी चुनौती।
बन प्रबल संकल्प अपना, मार्ग भी गढ़ते रहेंगे॥

मुक्तक-

चीरने तम दीप सा, जलते रहेंगे॥
सींचने हिमखण्ड सा गलते रहेंगे।।

हम बनेंगे रोशनी सद्पथ दिखाने॥
हम चमन में फूल बन खिलते रहेंगे॥

दे न पाओ यदि मुझे

दे न पाओ यदि मुझे, विश्वास का बल,
तो न दो विश्वासघाती, विष मुझे तुम।
चल न पाओ साथ में, पथ साधना का,
तो अकेले छोड़ दो, पथ पर मुझे तुम॥

लोक पथ पर छा रहा, भीषण अंधेरा,

चाहता मैं इस जगह, लाना सबेरा।
साथ मेरे ज्योति जैसा, जल न पाओ,
प्रातः होने तक अथक, यदि चल न पाओ।।
तो न काजल बन सखे!, घेरो मुझे तुम।
यों न दो विश्वासघाती विष मुझे तुम।।
लोक मानस में कलुष, छाया हुआ है,
कल्मषों का तिमिर, गहराया हुआ है।
क्रूर होती जा रहीं, दुर्भावनायें,
दे न पाओ यदि मनुज, संवेदनायें।।

तो कुरेदो घाव को मत, इस तरह तुम।।
यों न दो विश्वासघाती विष मुझे तुम।।

सूर्य के विश्वास को, विष दे किरण ही,
साध पथ पर छद्‌म, कर डालें चरण ही।
और किससे आश, यह दुनियाँ लगाये,
साधना का क्यों न, उर फिर छलछलाये।।
साथ में रहकर न मुझसे, छल करो तुम।
यों न दो विश्वासघाती विष मुझे तुम।।

मुक्तक-

काम किसी के आ न सकें, तो नहीं बिगाड़ें काम किसी का।
दे करके विश्वास न विष दें, हो न नाम बदनाम किसी का।।
आदर्शों को निभा न पायें, आदर्शों की दें न दुहाई।
ताकि भोगना पड़े न आदर्शों को, दुष्परिणाम किसी का।।

दरबार हजारो हैं

दरबार हजारों हैं, तुम सा दरबार कहाँ।
अब क्यों भूले-भटकें, जब सज़दा किया यहाँ॥
जो भाव सहित तेरे, दरबार में आते हैं।

अनुशासन मानें तो, जी भरकर पाते हैं।
जी चाहा मिल जाए, ऐसा भण्डार कहाँ॥
सब ही तो तेरे हैं, तू सबकी सुनता है।
हो सबका सदा भला, ऐसा ही करता है।
सबका हित जहाँ सधे, ऐसा आधार कहाँ॥
तेरी करुणा पाकर, मिट जाते भेद सभी।
अपनापन ऐसा है, हो जाते तृप्त सभी।
चर-अचर सभी अपने, ऐसा परिवार कहाँ॥
दुनियाँ चाहे भूले, तुमको सब प्यारे हैं।

सानी न कोई तेरा, करतब सब न्यारे हैं।
भवरोग सभी छूटें, ऐसा उपचार कहाँ॥

मुक्तक–

बहुत खोजा पर न पाया, इस भरे संसार में।
मिला सन्तोष वह गुरुवर, आपके दरबार में॥

देश के रणबाँकुरों

देश के रणबाँकुरों! रण का समय है।
देवसंस्कृति दिग्विजय प्रण का समय है॥

आक्रमण पशु शक्तियों का हो रहा है।
देश विकृतिजन्य पीड़ा ढो रहा है॥
हर अशिक्षित दुष्प्रथाओं से कसा है।
शिक्षितों पर भोग संस्कृति का नशा है॥
सोच लो गंभीर चिन्तन का समय है॥ देव... ॥

जूझना होगा अनय से प्राण–पण से।
और अब निर्लिप्त हो जीवन मरण से॥
दूध को पशुता चुनौती दे रही है।
पूत से कातर धरित्री कह रही है॥

प्राणपण से मातृ अर्चन का समय है॥ देव... ॥

देव संस्कृति का पुनः विस्तार करने।
मनुजता में प्राण का संचार करने॥
बात युगऋषि की अरे! अब मान भी लो।
और कुछ संकल्प मन में ठान ही लो॥
बढ़ चलो सर्वस्व अर्पण का समय है॥ देव... ॥

हैं किये जन मुक्ति हेतु प्रयास हमने।
क्रान्ति के अगणित रचे इतिहास हमने॥
राष्ट्र को फिर विश्वगुरु का मान देने।

विश्व को अध्यात्म का शुभ ज्ञान देने॥
आज प्रतिभा के समर्पण का समय है॥ देव... ॥

मुक्तक-

आज बज उठी रणभेरी, नवयुग के निर्माण की।
उठो साथियों लिखो कहानी, त्याग और बलिदान की॥

देवत्व को बचाने

देवत्व को बचाने, संघर्ष भी किये हैं।
हमने दधीचि बनकर, निज प्राण तक दिये हैं॥

अज्ञान के तिमिर में, जब जग भटक रहा था।
विज्ञान की प्रगति का पहिया अटक रहा था॥
तब ज्ञान के दिवाकर, हमने उगा दिये हैं॥
संस्कृति महान अपनी, थे विश्व के गुरू हम।
रुकता जहाँ जमाना, होते वहाँ शुरू हम॥
अपने लिये न केवल, जग के लिये जिए हैं॥
भूलें न आत्मगौरव, की उस परम्परा को।
बंजर नहीं बनायें रत्नों की उर्वरा को॥
भगवान आ गये तो, हनुमान भी दिये हैं॥

विकृत–विचार विष से, फिर जल रही मनुजता।
देवत्व डर रहा है, खुश हो रही दनुजता॥
विष से उसे बचाने, संकल्प शिव किये हैं॥
फिर से मनुज हृदय में, देवत्व हम भरेंगे।
फिर स्वर्ग इस धरा पर, हम अवतरित करेंगे॥
साहस नहीं मरेगा, संजीवनी पिये हैं॥

मुक्तक–

याद करें उन ऋषि–मुनियों को, जिनने निज अस्थियाँ गला दीं।
तन,मन, जीवन किया समर्पित, खुद घृत बनकर ज्योति जला दी॥

देवसंस्कृति दिग्विजय

देवसंस्कृति दिग्विजय को, चल पड़ी चतुरंगिणी।
धन्य होंगे जो कि, इस अभियान से जुड़ जायेंगे॥
नवसृजन अभियान युग की, शक्ति का प्रतिमान है।
देव ऋषियों–मानवों के, योग से गतिमान है॥
नवसृजन के यज्ञ से, जो भी जुड़ा इन्सान है।
ईश का मिलता उसे, करुणा भरा अनुदान है॥
जो समर्पण भाव से इस यज्ञ के होता हुए–
वे सभी साधन, सुसन्तति और सद्गति पायेंगे॥

है निहित इस यज्ञ में ही, राष्ट्र की अभ्यर्थना।
बलवती होती बहुत, राष्ट्रीयता की भावना॥
राष्ट्र हित पुरुषार्थ की, मिलती इसी से प्रेरणा।
और दैवी शक्तियों में, संगठन की चेतना॥
देवसंस्कृति विश्व को फिर, एक कर दिखलायेगी॥
विश्ववसुधा केसहज हम, नागरिक बन जायेंगे॥

श्रेष्ठतम इस यज्ञ से, भीषण उठा तूफान है।
दुष्टता के पाँव अब, जमना नहीं आसान है॥
अब यहाँ दुष्वृत्ति कोई, भी नहीं टिक पायेगी।

फिर धरा निर्मल बहुत, सुख शान्तिमय हो जायेगी॥
विश्व तब होगा सुवासित, वृक्ष-सुमनों से भरा-
वायु बनकर हर सुमन की, गन्ध हम फैलायेंगे॥

मुक्तक-

देवसंस्कृति की सीता को, असुर चुराकर पुनः ले गये।
युगऋषि उनको मुक्त कराने, का अनुपम अभियान रच गये॥
तप करके जो संस्कृति की, गरिमा को पुनः बढ़ायेंगे।
वे सब अपना अपने कुल का, यश, सौभाग्य बढ़ायेंगे॥

देव कलश आये

देव कलश आये, बड़े भाग्य हमारे।
तृप्त हुये नयन, किये दरस तुम्हारे॥
हमें वर्षों से दर्शन की,आस लगी थी।
देव पाने को प्यार,बड़ी प्यास लगी थी॥
पहुँच नहीं पाये, कभी द्वार तुम्हारे।।
दुष्ट पापों ने हमें, देव पकड़ लिया है।
और व्यसनों ने हमें, ख़ूब जकड़ लिया है।
निपटेंगे उनसे देव तेरे सहारे।।

देव हमने भी घर–घर में अलख जगाई।
और जन–जन को गुरुवर की राह दिखाई।
आप बिना इन्हें भला कौन उबारे॥

देव सबके ही मन में, सद्भाव जगा दो।
और यज्ञरूप जीवन के, कर्म बना दो।
तेरा ही ध्यान धरें साँझ सकारे॥

मुक्तक–

सभी शक्तियाँ कलश में, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
स्वागत-वन्दन कर रहा, जन-जन, देश-प्रदेश॥

देवियाँ देश की जाग जायें

देवियाँ देश की जाग जायें अगर,
युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।
शक्तियाँ जागरण गीत गायें अगर,
हर हृदय ही मचलता चला जायेगा॥

मूर्ति पुरुषार्थ में है सदाचार की,
पूर्ति श्रम से सहज साध्य अधिकार की।
पत्नियाँ सादगी साध पायें अगर,
पति स्वयं ही बदलता चला जायेगा॥

छोड़ दें नारियाँ यदि गलत रूढ़ियाँ,
तोड़ दें अन्धविश्वास की बेड़ियाँ।
नारियाँ दुष्प्रथायें मिटायें अगर,
दम्भ का दम निकलता चला जायेगा॥

धर्म का वास्तविक रूप हो सामने,
धर्म गिरते हुओं को लगे थामने।
भक्तियाँ भावना को सजा लें अगर,
ज्ञान का दीप जलता चला जायेगा॥

यह धरा स्वर्ग सी फिर सँवरने लगे,

स्वर्ग की रूप सज्जा उभरने लगे।
देवियाँ दिव्य चिन्तन जगायें अगर,
हर मनुज देव बनता चला जायेगा॥

मुक्तक-

त्राहि-त्राहि कर उठी सभ्यता, वो नारी कल्याणी।
भारतीय संस्कृति के नयनों का, मत खोओ पानी॥
सादा जीवन उच्च विचारों, की महिमा को जानो।
आदर की तुम पात्र हो बहिनों,अपने को पहचानो॥

दीपयज्ञ का पर्व आया

दीपक जलाने प्यार बढ़ाने, दीपयज्ञ का पर्व आया है।
आओ जीवन को धन्य बना लो रे, आओ सुख सौभाग्य जगा लो रे।।

पावन हिमालय से ऋषि-मुनि आये, ईश्वर का संदेशा लाये।
अनुदान अनमोल पा लो रे।। आओ.......।।

देव शक्तियाँ उमड़ रही हैं, असुर शक्तियाँ भाग रही हैं।।
धरती को स्वर्ग बनालो रे।। आओ.......।।

आदिशक्ति वेदमाता आईं, सद्विचार, सद्भाव हैं लाईं।।
निर्मल बुद्धि बना लो रे।। आओ.......।।

यज्ञदेव प्रभु! स्वयं पधारे, ले आये सौभाग्य हमारे।
तन-मन स्वच्छ बना लो रे।। आओ.......।।

लहर उठी है शान्तिकुञ्ज से, जुड़ जाओ सब शक्तिपुंज से।
उज्ज्वल भविष्य बना लो रे ।। आओ.......।।

मुक्तक-

घर–घर में पहुँचे ज्ञान ज्योति, अज्ञान अंधेरा मिट जाये।
प्रकटें विचार आचरण श्रेष्ठ, तो युग परिवर्तन हो जाए॥

देवताओं की सामूहिक विदाई

किन शब्दों में देव! आपकी स्तुति जय-जयकार करें।
आप हो रहे विदा प्रभु जी, पदवन्दन स्वीकार करें॥
इतनी नम्र प्रार्थना सुरगण! कृपया अंगीकार करें।
बार-बार आयें हम जब-जब, सादर करुण पुकार करें॥

दीप देवता

आप प्रतिनिधि हैं, सूर्याग्नि के दीप वर।
आप जलते रहे यज्ञ में, बन प्रखर॥
लोक पथ को प्रकाशित बनाओ प्रभु।

आपको भावभीनी विदा दे रहे॥

कलश देवता

महायज्ञ के कलश देवता, जिस दिन आप यहाँ आये।
धन्य हुई यह धरती इस पर, मंगल मोद, मेघ छाये॥
देश हमारा बने शिरोमणि, प्रभु इतना उपकार करें।
भाव भरी हम विदा दे रहे, पदवन्दन स्वीकार करें॥

गणपति देवता

श्रेष्ठ देवों में द्वादश विनायक प्रभो।
बुद्धि दाता सभी विघ्न-नाशक प्रभो॥

राष्ट्र को आप सद्बुद्धि समृद्धि दें।
आपको भावभीनी विदा दे रहे॥

पंच तत्व

हे पृथ्वी, हे वरुण अनल हे, मरुत व्योम हे क्षिति पावन।
आप पंच देवों ने आकर, किया नगर यह मन भावन॥
जीवन हो गतिशील प्रखर, नभ सा विराट्-विस्तार करें।
भरे कंठ से विदा दे रहे, पदवन्दन स्वीकार करें॥

वास्तु देव

वास्तु-पति! शेष बन, भूमि धारण किये।

आप दिग्पाल बन हैं सुरक्षा किये।।
दिग्विजय हेतु दें, शक्ति हमको प्रभो।
आपको भावभीनी, विदा दे रहे।।

नवग्रह

नवग्रहों आकर इस मख में, हम सबपर उपकार किया।
भवसागर में भटक रहे जो, उन सबका उद्धार किया।।
बने समुन्नत देश हमारा, इस पर अधिक विचार करें।
आप हो रहे विदा प्रभु जी, पदवन्दन स्वीकार करें।।

चौंसठ योगिनी

चण्डिका की प्रखर, चौसठों योगिनी।
आप काली, कपाली, असुर मोचनी॥
रिपु दमन कर सकें, शक्ति देना हमें।
आपको भावभीनी, विदा दे रहे॥

षोडश मातृका

शक्ति श्रोत षोडश माताओं, तुमने मधुर दुलार दिया।
भूल न पायेंगे जीवन भर, हमको इतना प्यार दिया॥
हम सब बनें समर्थ हे! माता, भवसागर से पार करें।
मातु विदा हम तुम्हें दे रहे, पदवन्दन स्वीकार करें॥

पंचोंकार

पंच देवों! सदा आप रक्षा करें।
आप सद्‌बुद्धि, यज्ञादि से दुःख हरें॥
आप पाँचों कृपादृष्टि रखना सदा।
आपको भावभीनी विदा दे रहे॥

सप्तर्षिदेव

हे संस्कृति के निर्माताओं, हे वेदों के चिर गायक।
हम पर कृपा लुटाने वाले, आत्मज्ञान के उन्नायक॥
हे ऋषियों हम सबके मन में, करुणा का संचार करें।

आप हो रहे विदा प्रभुजी, पदवन्दन स्वीकार करें।।

त्रिदेव गायत्री

विश्व माँ, देव माँ, वेद माँ आप हैं।
दूर दुर्बुद्धि कर, मेटती ताप हैं।।
देवता हम सभी को बना दीजिए।
आपको भावभीनी विदा दे रहे।।

यज्ञदेव

यज्ञ प्रभु आप ही, विष्णु अवतार हैं।
महायज्ञादि में, शक्ति संचार हैं।।

राष्ट्र को शौर्य, समृद्धि सुख दीजिये।
आपको भावभीनी विदा दे रहे।।

सर्वतोभद्र

भद्रपीठ आसीन आपने, जगती का कल्याण किया।
सोये हुए देश भारत को, तुमने नूतन प्राण दिया।।
कोटि-कोटि हे देव! सभी में, पावन शुभ संस्कार भरें।
भरे कंठ से विदा दे रहे, पदवन्दन स्वीकार करें।।

ज्योतिपुरुष

आप प्रत्यक्ष ही तो, महाकाल हैं।

ज्योति के पुँज हैं, यज्ञ की ज्वाल हैं।।
ओज दें, तेज दें, आप गुरुवर हमें।
आपको आपके सुत नमन कर रहे।।

धन्य है जिन्दगी यह हमारी

धन्य है जिन्दगी यह हमारी, नाथ पाकर सहारा तुम्हारा।
हे प्रभो! द्वार पर हम खड़े हैं, शेष जीवन है सारा तुम्हारा।।
हर तरफ था भयंकर समुन्दर, जीर्ण थी नाथ जीवन की नैया।
क्या पता यह कहाँ डूब जाती, जो न मिलता किनारा तुम्हारा।।

कामना है तुम्हें जिन्दगी में, सुन सकें जागते और सोते।
हर निमिष बाँसुरी के सुरों सा, पा सकें हम इशारा तुम्हारा॥
तेज तूफान में आँधियों में, पाँव ये जब कभी डगमगायें।
थाम ले हाथ बढ़कर हमारा, हाथ भगवन् दुबारा तुम्हारा॥
पुत्र सा प्यार पाते रहें हम, पाँव निर्भय बढ़ाते रहें हम।
जन्म-जन्मान्तरों तक रहे ये, नाथ रिश्ता हमारा तुम्हारा॥
हर तरफ जब अँधेरा घिरा हो, और कोई नहीं आसरा हो।
रास्ता तब दिखाये गगन से, ध्रुव सरीखा सितारा तुम्हारा॥
बुद्धि वह दो कि जो भी मिला है, लोक हित में उसे हम लगायें।

ताकि भगवन् हमारे लिये ही, फिर खुला हो दुआरा तुम्हारा।।

मुक्तक-

दूर तुमसे जो हुए, वे तो भ्रमों में खो गये।
जो तुम्हें पकड़े रहे, वे पार भव से हो गये।।

धरा पर अँधेरा बहुत

धरा पर अँधेरा बहुत छा रहा है-
दिये से दिये को जलाना पड़ेगा॥
घना हो गया अब घरों में अँधेरा।

बढ़ा जा रहा मन्दिरों में अँधेरा॥
नहीं हाथ को हाथ अब सूझ पाता–
हमें पंथ को जगमगाना, पड़ेगा॥
करें कुछ जतन स्वच्छ दीखें दिशायें।
भ्रमित फिर किसी को करें ना निशायें॥
अँधेरा निरकुंश हुआ जा रहा है–
हमें दम्भ उसका मिटाना पड़ेगा॥
विषम विषधरों–सी बढ़ी रूढ़ियाँ हैं।
जकड़ अब गयीं मानवी पीढ़ियाँ हैं॥

खुमारी बहुत छा रही है नयन में-
नये रक्त को अब जगाना पड़ेगा॥
प्रगति रोकतीं खोखली मान्यताएँ।
जटिल अन्धविश्वास की दुष्प्रथाएँ॥
यही विघ्न-काँटे हमें छल चुके हैं-
हमें इन सबों को हटाना पड़ेगा॥
हमें लोभ है इस क़दर आज घेरे।
विवाहों में हम बन गए हैं लुटेरे॥
प्रलोभन यहाँ अब बहुत बढ़ गए हैं।

हमें उनमें अंकुश लगाना पड़ेगा॥

मुक्तक-

लक्ष्य पाने के लिए, सबको सतत् जलना पड़ेगा।
मेटने घन तिमिर रवि की, गोद में पलना पड़ेगा॥
राह में तूफान आये, बिजलियाँ हमको डरायें।
दीप बनकर विकट, झंझावात में जलना पड़ेगा॥

धर्म ध्वजा फहरे

धर्म ध्वजा फहरे, गगन में केसरिया लहरे॥

जीवन जगती, मातृभूमि के, लिए बनें बलिदानी।
जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के, रहें सदा अभिमानी॥
त्याग, तपस्या के बल पर हम, आगे बढ़ते जायें।
सागर, अवनि, शिखर, अम्बर तक, ऊँचे चढ़ते जायें॥
रुकें न बढ़ते कदम गगन में, तड़ित भले घहरे॥
हम बलवान बनें यह हमको, केसरिया बतलाये।
तन-मन से हों बली देश में, सम्मति, सुमति सुहाये॥
चाहे शत्रु, पुरन्दर बनकर, क्यों न हमें ललकारे।
प्राण चले जायें पर अपने, पैर न पीछे डारें॥

सुनकर यह हुंकार दनुजता, बीच राह ठहरे॥
लेकिन कभी भूलकर भी, निर्बल पर हाथ न डारें।
इतने बनें विनीत सत्य के, शिशु से भी हम हारें॥
आशावान भले ही हों, पर तुच्छ न हो अभिलाषा।
आस्था बदले नहीं भले ही, जीवन पलटे पासा॥
बने विनीत शीश पर देवों, की छाया छहरे॥
भक्ति हमारी दृढ़ हो प्रभु को, क्षणभर कभी न भूलें।
इतने ऊँचे उठें कि उनके, ज्योति कलश को छू लें॥
लेकिन मानव की पीड़ा से, टूटे कभी न नाता।

यह केसरिया केतु हमें है, बार–बार सिखलाता॥
हो अभिनव आवर्तन उतरें, हम इतना गहरे॥

नमो वेदमाता नमो देवमाता

नमो वेदमाता, नमो देवमाता
नमो आदिशक्ति, नमो विश्वमाता।।
शुभ यज्ञमय हो, जीवन हमारा।
बढ़ें हम स्वयं औरों को दें सहारा।
रहे हर मनुज शान्ति, सन्तोष पाता।।

मनों में रहे माँ यही भाव छाया।
न कुछ साथ जाता न कुछ साथ आया।
करें लोकहित वह, तुम्हें जो सुहाता।।
सविता तुम्हारी महाभर्ग शक्ति।
वरण हम तुम्हारी करें श्रेष्ठ भक्ति।
हमें ले चलें, श्रेष्ठ पथ से विधाता।।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ।
जागूँ स्वयं और को भी जगाऊँ।
घर-घर फिरूँ, ज्योति तेरी जगाता।।

वह योग्यता दो सत्कर्म कर लें।
अपने हृदय में सद्भाव भर लें।
मानस रहे, ज्ञान से जगमगाता।।
हे मातु अब तो ऐसी दया हो।
जीवन सफल सार्थक हो खरा हो।
कि तन त्याग दूँ, बस यही गीत गाता।।

नमामि मातु भगवतीम्

(लयः- नमामि भक्त वत्सलम्, कृपालुशील कोमलम्)

नमामि मातु भगवतीं, नमामि देवि भगवतीम्॥
सुमति–सुगति प्रदायिनीं, कृपालु–मोक्ष–दायिनीम्।
प्रयच्छ मे स्वपदरतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥
त्रिताप–दु:ख हारिणीं, प्रगति–पुनीतकारिणीम्।
प्रयच्छ में विमलमतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥
श्रद्धा सजल–स्वरूपिणीं, विद्या विवेक–रूपिणीम्।
प्रयच्छ आत्मजागृतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥
सुकृत सुसिद्ध–सेवितां, युगावतार– वल्लभाम्।
प्रयच्छ मातु दृढमतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥

कुवृत्ति–हेतुकालिकां, सुवृत्तिदीप–मालिकाम्।
प्रयच्छ मे परागतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥
विमल–हृदय–विहारिणीं, सुपुष्टि–तुष्टि–कारिणीम्।
प्रयच्छ मुक्ति–सद्गतिं, नमामि मातु भगवतीम्॥

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
गोविन्दा, गोविन्दा, गोविन्दाऽऽ॥
करो नाम जप रोज प्रेम से। मन को धोओ नित्य नेम से॥

निर्मल मन प्रभु को पसन्द है। मत कर मन को गन्दा॥
भटके बहुत नहीं कुछ पाया। सत्य मार्ग तो समझ न आया॥
अब तो मत ठोकर खा पगले। बन जा प्रभु का बन्दा॥

प्रभु का नाम जपा बस मुख से। प्यार रहा स्वारथ से सुख से॥
सच्चा प्रेम बढ़ा ले प्रभु से। ज्यों चकोर और चन्दा॥
सद्विवेक अब तो अपना ले। कुछ तो सद्कर्त्तव्य निभा ले॥
भवबन्धन का, लोभ,मोह का। कट जायेगा फन्दा॥

मुक्तक

जब तलक है जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से।

कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो श्याम से।।

नये जगत की नयी कल्पना

नये जगत की नयी कल्पना, को आओ साकार बनायें।
चलो नया संसार बसायें॥
हृदय–हृदय में दीप जलें जो, अन्तर का अज्ञान मिटा दें।
नयन–नयन में निर्माणों के, सुन्दर मनहर स्वप्न सजा दें॥
सबको दें विश्वास लक्ष्य का, और सतत् चलने का साहस।
ज्योति भरें ऐसी जीवन में, कभी न आये गहन अमावस॥

फूट पड़े आत्मा का झरना, गंगा जल की धार बहायें॥
मानव शान्ति पा सके ऐसी, नई धरा हो नया गगन हो।
साँस ले सके सुख की मानव, ऐसी शीतल मन्द पवन हो॥
बढ़े चलो पथ पर प्रकाश के, ऐसी प्राणमयी हो आशा।
स्वार्थ रहित कर्त्तव्य भावना, हो इस जीवन की परिभाषा॥
आओ हर घर, हर आँगन में, आज खुशी के फूल खिलायें॥
जिसमें पनपे नैतिकता वह, नया भवन निर्माण करेंगे।
साहस, बल, पुरुषार्थ जुटा, तन, की ईंटों से नींव भरेंगे॥
रच डालेंगे चिर नूतन इतिहास, क्रिया का सम्बल लेकर।

एक नया संघर्ष सृजन का, होगा अब प्राणों में प्रतिपल॥
मिटते-मिटते भी अपने, कर्मों से नव गीता लिख जायें॥

नहीं स्वयं को अबला समझो

नहीं स्वयं को अबला समझो-यह भ्रम है नादानी है।
नारी जीवन प्रभु की रचना,यह लासानी है, प्रत्यक्ष भवानी है-२॥
नारी तन तो आदिशक्ति का-प्रकट रूप कहलाता है॥
(यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः)
भूल गई क्यों अपना गौरव-जो इतिहास बताता है।

प्रकृति रूप में वही शक्ति तो–जीवन रस विकसाती है।
एक भ्रूण को जीवन रस दे–प्राणी नया बनाती है॥
किसी योनि में हो जीवन की–निश्चित यही कहानी है॥
नारी तन दुर्बल मत समझो–नई सृष्टि यह कर्त्ता है।
या देवि–सर्व भूतेषु............ ॥
नर तन में सारी विशेषता–यह तन ही तो भरता है॥
नर पर मादा कहीं न आश्रित–पशु पक्षी कोई देखो।
नारी पुरुष पर क्यों आश्रित है–अरे जरा समझो देखो॥
बनो पुरुष की पूरक रक्षक–यही वेद की वाणी है॥

नये सृजन उज्ज्वल भविष्य हित–स्रष्टा की है तैयारी।
नारियाँ रच दें उज्ज्वल चरित्र जो–तो आना होगा उज्ज्वल भविष्य को।
नारी बिना नहीं यह सम्भव–समझ रही दुनिया सारी॥
जीवन का हर सृजन मोर्चा–तेरे बिना अधूरा है।
जागो नारी बनो अग्रणी–देखो अवसर पूरा है॥
कर दिखलाओ पूरी रचना–जो स्रष्टा ने ठानी है॥

मुक्तक–

नारी में है शक्ति अपरिमित–फिर से उसे जगाना है।
उठो नारियों नये सृजनहित–तुमको आगे आना है॥

न सोचो अकेली-किरण क्या

न सोचो अकेली–किरण क्या करेगी।
तिमिर में अकेली–किरण ही बहुत है॥
कठिन हो कि जब–एक पग भी बढ़ाना।
कठिन हो कोई गीत–जब गुनगुनाना॥
थकावट भरे–उन व्यथा के क्षणों में।
बरसता हुआ एक घन ही बहुत है॥
समय भूमि की–पात्रता बिन विचारे।
निरर्थक गिरे मेघ–जल बिन्दु सारे॥

समय पर अगर सीप में गिर सके तो।
अकेला मृदुल स्वातिकण ही बहुत है॥
अनेकों जगह तीरथों में नहाया।
मगर आत्मसन्तोष–कुछ मिल न पाया॥
हृदय भावना से भरा हो अगर तो।
विमल वारि का आचमन ही बहुत है॥
न अब है समय– अब न सोचो निमिष भर।
चलो चल पड़ो–आत्मसंकल्प लेकर
खड़ा ध्वंस के आखिरी छोर पर जो।

सृजन के लिए एक क्षण ही बहुत है ॥

मुक्तक–

न हो साथ कोई–अकेले चलो तुम–सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम–प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥
अगर बन सको तो पंछी बनो तुम–प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।
अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम–अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

नौजवानों उन्हें याद

नौजवानों उन्हें याद कर लो जरा।

जो शहीद हो गये इस वतन के लिए॥
जल रही है उन्हीं के लहू से शमां।
दे रही रोशनी जो चमन के लिए॥

नौजवानों वतन से तुम्हें प्यार है।
तो सुनो शूरवीरों की ये दास्तां॥
राणा, सांगा, शिवाजी, सरीखे बनो।
जुट पड़ो दुश्मनों के दमन के लिए॥

रानी पद्‍मावती और दुर्गावती।
रजिया सुल्ताना, झांसी की रानी बनो॥

गुड़िया फैशन की या तितलियाँ मत बनो।
ये सबक हर किसी माँ–बहन के लिए॥

चन्द्रशेखर, भगतसिंह, बिस्मिल बनो।
वीर अशफाक, अब्दुल, हमीदों जगो॥
जो चुनौती मिले तुम उसे तोड़ दो।
कुछ भी मुश्किल नहीं, बाँकपन के लिए॥

सोच लो है जवानी–अरे! किस लिए।
मुफ्त व्यसनों में इसको गँवाओ नहीं॥
वीर हो तुम सम्भालो नये मोर्चे।

छोड़ दो कायरों को पतन के लिए॥
भोग का भ्रम भगा दो–तपस्वी बनो।
त्याग की प्यार की–फिर चला दो हवा॥
विश्वगुरु बन दिशा दो जगत को तुम्हीं।
तुम तो विख्यात हो, ऐसे फ़न के लिए॥

मुक्तक–

त्याग तपस्या की धरती पर, वीरों फिर हुंकार भरो।
अमर शहीदों की गाथा को, फिर से तुम साकार करो॥

नन्हे बच्चों आने वाले

नन्हे बच्चों आने वाले कल, की तुम तस्वीर हो।
नाज़ करेगी दुनियाँ तुम पर, दुनियाँ की तकदीर हो॥

तुम हो जिस कुटिया के दीपक,जग में उजाला कर दोगे।
भोली भाली मुस्कानों से, सबकी झोली भर दोगे।
बिगड़ी जो तकदीर बदल दे, ऐसी तुम तस्वीर हो॥

नाम न लेना रोने का, रोतों को हँसाने आये हो।
नहीं रूठना किसी से तुम, रूठों को मनाने आये हो।
हँसते चलो जमाने में तुम, चलता हुआ एक तीर हो।।

एक दिन होंगे जमीं आसमाँ, चाँद सितारे हाथों में।
एक दिन होगी बागडोर, इस जग की तुम्हारे हाथों में।
तोड़ सके ना दुश्मन जिसको, ऐसी तुम जंजीर हो॥

मुक्तक-

बच्चों तुम भविष्य भारत के, कीमत अपनी पहचानो।
अपना कर निर्माण राष्ट्रहित में, कुछ करने की ठानो॥

नौजवान देश के

नौजवान देश के, शक्तिमान देश के।

प्राणवान देश के, कीर्तिमान देश के॥

तुम अतीत के शिखर, वर्तमान हो प्रखर।
और तुम भविष्य के, शिल्पकार हो सुघढ़।
रामकाज के लिए, हनूमान देश के॥

ऋषियों के ब्रह्मानन्द, दयानन्द, विवेकानन्द।
मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, घोषा के मधुर छन्द।
तुम शिवा, भगतसिंह, शान हो देश के॥

फिर क्यों माता हो निराश, क्योंकि तुम हो उदास।
विकृतियों विघटन ने, खड़ा कर दिया विनाश

पहिचानों अपने को, महाप्राण देश के॥
साधना सुसंगठन, सृजन शक्ति का वरण।
अर्जुन सा–दिव्य लक्ष्य, भेदने बनो सुरक्ष।
चलो संगठित करें, नौजवान देश के॥
'जगत्गुरू' हम कहलाएँ, इतिहास को फिर दोहराएँ।
'सोने की चिड़िया' हो, वैभव फिर से बढ़िया हो।
जाग जायें हर जवान, प्रिय किसान देश के॥

मुक्तक–

ऋषियों जैसी आस्था, वीरों जैसा काम।

लेकर तरुणाई चले, उन्नति हो अविराम॥

नारी तेरी साध सुगढ़

नारी तेरी साध, सुगढ़ परिवार बनाती थी।
रत्न प्रसविनी! तू देवों को गोद खिलाती थी।।
तेरी दिनचर्या में ही कुछ, ऐसा जादू था।
जिस जादू से बनते लव-कुश, बनता दादू था।।
दूध पिलाते हुए, शौर्य की, सुधा पिलाती थी।
तेरा जीवन वह सांचा था, जो चाहा ढाला।

शुचिता, ममता, स्नेह और, समता का व्रत पाला।
भाव भरे जीवन के सभी, अभाव मिटाती थी।।
तेरा घर थोड़े साधन में, था गरिमा वाला।
सादा जीवन, उच्च विचारों, की प्रयोग शाला।
छोटी सी बगिया भी, नन्दन वन कहलाती थी।।
चली कौन सी हवा विषैली, उपवन झुलसाया।
पड़ी कौन सी छाया तुझ पर, परिवर्तन आया।
दुश्चिन्तन की हवा न तुझको, छू तक पाती थी।।
झुलस रही है कलह क्लेश से, घर की फुलवारी।

खो विवेक, दुर्भाव ग्रसित हो, बैठी है नारी।
श्रद्धा और आस्था पावन, पोषण पाती थी।।

नया युग क्यों न आयेगा?

नया युग क्यों न आयेगा? जगतहित में मरेंगे हम।
न कैसे आयेगी गंगा? भगीरथ श्रम करेंगे हम॥
बहुत प्यासी हुई धरती, चुका है प्यार का पानी।
न दिखते अब कहीं गौतम, विचरते कंस अभिमानी॥
बढ़ा है ताप छल का द्वेष का, कटुता विषमता का।

उड़ा मानव हृदय से नाम भी, करुणा व ममता का॥
मगर घन क्यों न छायेंगे? सजल ऊष्मा भरेंगे हम॥

बहुत फैला हुआ है भूमि पर, अज्ञान निशि का तम।
बढ़ी हैं रूढ़ियाँ औ अन्धतायें, ज्ञान दिखता कम॥
मनुष्यों को लिया है बाँध इनने, बन कठिन बेड़ी।
बदलनी हैं समाजों की, निरकुंश नीतियाँ टेढ़ीं॥
क्यों न तम मिटेगा रवि बन, किरण निशि को हरेंगे हम॥

अशिव को मेटकर शिव, नीतिमय दुनियाँ बसाना है।
मनुज की सो गई है जो, वही आस्था जगाना है॥

चले विज्ञान अब अध्यात्म का, कर थामकर जग में।
चलेंगे रौंदते कण्टक चुभेंगे, जो सुदृढ़ पग में॥
विजय श्री क्यों न पायेंगे, कर्म पथ को वरेंगे हम।
जलाकर धर्म दीप को, मनुज मन में धरेंगे हम॥

मुक्तक-

सब कुछ संभव हो जाता है, जब पुरुषार्थ किये जाते हैं।
काम अधूरा कभी न रहता, जिसमें हाथ दिये जाते हैं॥
स्त्रष्टा ने संकल्प किया है, नवयुग का क्यों सृजन न होगा?।
स्वर्ग उतर आता धरती पर, जब संकल्प लिए जाते हैं॥

नशे आदमी को कर

नशे आदमी को कर देते, हैं बिल्कुल बेहाल।
दो कौड़ी का उन्हें कर दिया, जो थे मालामाल।।
जाने अनजाने में जो भी, पड़ा नशे के फेर।
तन, मन, धन तीनों को, चौपट होते लगी न देर।।
अनचाहे चक्कर में फँसते, ऐसी चलता चाल।
बीड़ी, तम्बाकू, गाँजा, भाँग, चरस और कोकीन।
आम लोग होते जाते हैं, गुटखा के शौकीन।।
दो कौड़ी की चीज माँगते, होता नहीं मलाल।।

और शराब नशा ऐसा है, मिट जाते परिवार।
बच्चे मारे मारे फिरते, बिक जाते घर द्वार॥
मँडराती रहती है सिर पर, हर क्षण मौत अकाल॥
कोई नशा नहीं अच्छा है, बनो न अरे! गुलाम।
जेब काटते रहते हैं ये, करते हैं बदनाम॥
बुनो नहीं अपने ही हाथों, अरे! मृत्यु का जाल॥
युगसृष्टा ने शान्तिकुन्ज से, छेड़ा है अभियान।
देवदक्षिणा में माँगा है, दुर्व्यसनों का दान॥
नशे छोड़कर, मानव जीवन, कर लें चलो निहाल॥

मुक्तक:-

नशा बरबाद करता है, हमारा तन हमारा धन।
नशा विकृत बना देता, हमारा मानवी चिन्तन।।
नशा कोई भी हो अच्छा, नहीं होता समझिएगा।
न कर दें नशों के ही हवाले, यह देव दुर्लभ तन।।

नौजवानों उठो वक्त

नौजवानों उठो वक्त यह कह रहा,
खुद को बदलो जमाना बदल जायेगा।।

शक्तियों को लगाओ सही कार्य में,
देश का विश्व का भाग्य खुल जायेगा।।

देश अपना वही है जगत का गुरू,
आज अज्ञान में यह भटक क्यों रहा।।
पार जिसने करोड़ों अरे कर दिये,
रास्ते में अरे फिर अटक क्यों रहा।।
भाव दैवी जगालो हृदय में अगर,
स्वर्ग भू पर उतरता चला जायेगा।।

अपना प्यारा वतन देश ऋषियों का था,

शान इसकी नहीं घटने देना कभी।।
इस चमन को सजाया शहीदों ने था,
इसको बरबाद होने न देना कभी।।
देवसंस्कृति को अपनाओ वीरों पुनः,
देश फिर से जगत् गुरु कहा जायेगा।।
भावना से मलिन आचरण से कुटिल,
उनसे कह दो कि खुद को बदल लें अभी।।
चल पड़ा चक्र है अब महाकाल का,
रोकने से रुकेगा, नहीं यह कभी।।

जो न बदलेगा खुद को समय पर अरे,
वक्त उसको उलटता चला जायेगा।।
ले चला सन्त बन जानकी को असुर,
तो जटायु ने रोका अमर हो गया।।
वह तो था मात्र पक्षी ही इस देश का,
जानकी के लिए देखो खुद मिट गया।।
यदि महाकाल की शक्ति ले चल पड़ो,
राक्षसी सृष्टि का दुर्ग जल जायेगा।।

मुक्तक-

जवानी हवा का झोंका है, जवानी कागज की नौका है।
उठो जागो संभलो जवानों, जवानी ही सुधरने का मौका है।
नये सृजन के लिए सपूतों, भारत तुम्हें पुकार रहा है।
छोड़ो तन्द्रा बिगुल बजा दो, समय तुम्हें ललकार रहा है॥

नर से नारायण बन जायें

नर से नारायण बन जायें, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥
दुखियों के दुःख हम दूर करें, श्रम से कष्टों से नहीं डरें।
उर में सबके प्रति प्यार भरें, जल बनकर मरुथल में बिखरें।

बाधाओं से टकरा जायें, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥

आलस में दिवस न कटें कभी, सेवा के भाव न मिटें कभी।
पथ से ये चरण न हटें कभी, जनहित के कार्य न छुटें कभी।
दैवी क्षमताएँ विकसायें, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥

यह विश्व हमारा ही घर हो, उर में स्नेह का निर्झर हो।
मानव के बीच न अन्तर हो, बिखरा समता का मृदु स्वर हो।
पूरब की लाली बन छायें, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥

नौजवानों जरा याल रखना

नौजवानों जरा ख्याल रखना, देश में कोई दुश्मन न आये।
जान जाये भले ही हमारी, शान भारत की जाने न पाये॥

देश प्यारा है भारत हमारा, हिन्द की जय लगाओ ये नारा।
जागते ही रहो नौजवानो, आबरू फिर वतन की न जाये॥

देश सन्तों, शहीदों का है ये, देश बलिदानी वीरों का है ये।
ध्यान रखना सपूतों कि उनका, नाम बदनाम होने न पाये॥

सूरमा देश प्रेमी थे कैसे, वीर बिस्मिल, भगतसिंह जैसे।
है हजारों में ऐसों की गिनती, मर गये, पर अमर वे कहाये॥

ऐ जवानों उठो जाग जाओ, भ्रष्टता-दुष्टता को मिटाओ।
उन सपोलों का सिर तुम कुचल दो, माँ को डसने को सिर जो उठाये॥
देश अपना जगद्गुरु रहा है, विश्व परिवार हमने रचा है।
फिर से देवत्व अपना जगाओ, स्वर्ग सी यह धरा जगमगाये॥

मुक्तक-

पूछो मेरे दिल से, मैं पैगाम लिखता हूँ,
बात गुजरी हुई सारी, मैं तमाम लिखता हूँ।
अरे मैं पागल हुआ तो क्या हुआ,पागल हो जाती ये कलम।
जिस कलम से मैं वीर सपूतों का नाम लिखता हूँ॥

सुनो जवानों राष्ट्रभूमि का, गौरव तुम्हें बढ़ाना है।
बलिदानी वीरों के जैसे, जीवन को अपनाना है॥

नई शक्ति दूँगा

नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा।
कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा॥
जगा देश सारा मिटी कालिमा है गगन में छिटकने लगी लालिमा है।
निशानाथ सोये, जगा अंशुमाली, पथिक ने नये लक्ष्य की राह पाली॥
प्रगति पन्थ पर वेग से बढ़ चले जो, करोड़ों पगों को नयी शक्ति दूँगा।

नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा............ ॥

न होगा कभी दृष्टि से लक्ष्य ओझल, मनोबल हमारा बनेगा सुसम्बल।
अथक शक्ति ले पग हुये आज गतिमय, झुकेगा किसी दिन इन्हीं पर हिमालय॥
धरा पर नया स्वर्ग बसकर रहेगा, मनुज को विवशताओं से मुक्ति दूँगा।
नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा............ ॥

मनुजता न रुकती कभी आँधियों से, मनुजता सहमती न बर्बादियों से ।
मनुजता ने चाहा वही करके छोड़ा, दनुजता से डरकर कभी मुँह न मोड़ा॥
शपथ ले उठी है, जवानी हमारी, नये देश को त्याग अनुरक्ति दूँगा।

नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा............ ॥

अभी कल्पना हो सकी है न पूरी, अभी साधना रह गयी है अधूरी।
अभी तो प्रगति का खुला द्वार केवल, अभी लक्ष्य में शेष है और दूरी॥
बिना लक्ष्य की प्राप्ति के जो न लौटे, उन्हें मैं प्रखर शक्ति के व्यक्ति दूँगा।
नये देश को मैं नयी शक्ति दूँगा............ ॥

नारी युग जल्दी ही आयेगा

नारी को देवी मान उसे घर-घर में पूजा जायेगा।
वह युग जल्दी ही आयेगा॥

नारी की स्नेह सुधा पीकर, ही तो सारा जग पलता है।
शिशु बन करके मानव का मन, गोदी में पड़ा मचलता है॥
निज रक्त पिला पोषण करती, भरती है अपना मधुर प्राण।
जग के दु:ख तापों से हँस-हँस, देती है सबको वही त्राण॥
नारी के इन अनुदानों का, प्रतिदान चुकाया जायेगा।
वह युग जल्दी ही आयेगा।
बस उसकी एक दृष्टि से ही, जीवन अध्याय बदलते है।
नारी की महिमा गरिमा से, हम गौरव अनुभव करते हैं॥
जब थक कर हारा सा मनुष्य, पथ बीच कभी रुक जाता है।

तब साहस भरती है नारी, प्रेरणा प्राणमय पाता है॥
सम्मान नारियों का करना, सबको सिखलाया जायेगा॥
वह युग जल्दी ही आयेगा॥

वह स्वयं कष्ट सह लेती है, देती है सबको सुविधायें।
यदि आँचल की छाया हो तो, तृण बन जाती हैं बाधायें॥
देती है शक्ति अपरिमित माँ, की प्यार भरी मीठी वाणी।
यह बनी पूर्णता जीवन की, है सदा सर्वदा कल्याणी॥
सब समझें नारी की महिमा, वह ज्ञान जगाया जायेगा।
वह युग जल्दी ही आयेगा॥

निष्ठा लगन परिश्रम से

निष्ठा लगन परिश्रम से जो, करता अपना काम है।
वाणी में भगवती विराजे, अन्तर में श्रीराम हैं॥
आत्ममनोबल जिसका साथी, अंगद सा दृढ़ पाँव है।
भक्ति, शक्ति का अलख जगाता, गली-गली हर ठाँव है।
करता जो उपकार सभी का, आजीवन निष्काम है॥
उसका ही जीवन इस जग में, धन्य-धन्य अभिराम है॥
वाणी में भगवती................॥
नहीं रूढ़ियों का पोषक जो , शोषक नहीं गरीब का।

अपना दर्द समझता है जो, दुनियाँ के हर जीव का॥
मंजिल पर चलते जाना ही, जिसका लक्ष्य महान है।
मानवता का मान बढ़ाने, हो जाता बलिदान है॥
वाणी में भगवती................ ॥

हँस-हँस कर जो लोहा लेता, आँधी से तूफान से।
जान हथेली पर रखकर जो, भिड़ जाता शैतान से॥
जन सेवा ही व्रत है जिसका, सारी वसुधा धाम है।
उसका ही जीवन इस जग में, धन्य-धन्य अभिराम है॥
वाणी में भगवती................ ॥

जीवन तप संचित थाती से, जो लेता अनुदान है।
काँटे और फूल दोनों ही, जिसको एक समान है॥
धर्म–कर्म का मर्म समझता, करता जग कल्याण है।
खोल–खोल कर गाँठे मन की, जो हरता अज्ञान है।
वाणी में भगवती................ ॥

परिवर्तन के बिना न होता

परिवर्तन के बिना न होता विभीषिका का नाश।
मूर्धन्यों जागो औरों से, रही न कोई आश॥

मानव के चिन्तन चरित्र में, आज असुरता छाई।
पाप पतन में रस लेने की, वृत्ति सभी में आई॥
है अभाव से दुःखी राष्ट्र, जनसंख्या बढ़ती जाती।
अणु युद्धों की होड़ लग रही, मानवता अकुलाती॥
प्रकृति क्षुब्ध हो उठी आज फिर, सहा न जाता त्रास॥
ऋतु बसन्त आने से पहले, पतझर हो जाती है।
नव शिशु को पाने से पहले, माँ पीड़ा पाती है॥
नये भवन के लिए पुराने, खण्डहर ढाये जाते।
ढाये खण्डहर की छाती पर, नये उठाये जाते ॥

चन्द्रगुप्त चाणक्य बदलते, इसी तरह इतिहास॥
अवतारों की परम्परा है, परिवर्तन लाने को।
दिव्य चेतना धारण करती, इस मानव बाने को॥
परिवर्तन हो गया जरूरी, युग की पीड़ा हरने।
प्रज्ञा का अवतार हो रहा, नयी चेतना भरने॥
हम भी शिवा समर्थ सरीखा, भरें नया विश्वास॥
जन मानस के दृष्टिकोण को, फिर बदला जाना है।
परशुराम का और बुद्ध का, क्रम फिर दुहराना है॥
मानव में देवत्व उदय कर, धरती स्वर्ग बनाना।

मानवता को पाप पतन से, अब है मुक्त कराना॥

मुक्तक-

परिवर्तन आवाहन करता प्रतिभाओं का आज।
पाप–पतन से ग्रसित हुआ है, सारा मनुज समाज॥
नए भवन के लिए बनें हम, तपी तपाई ईंट।
जिससे सुदृढ़ नींव बन सके, नए भवन के काज॥

पवन सुगंधित जैसे मन को

पवन सुगन्धित जैसे मन को, नन्दनवन कर देता।

वैसे ही गुरुदेव का दर्शन, मानव दुःख हर लेता।
बोलो जय गायत्री माँ–बोलो जय गायत्री माँ॥

इस धरती पर दुःख का कारण, अंतःकल्मष को बतलाकर।
भ्रम में फँसकर, पंक में धुसकर, मुक्त हो जिसका सम्बल पाकर।
सरल मंत्र गायत्री का जो, जपा करे वह चेता॥ वैसे ही... ॥

युग निर्मात्री मोक्ष है देती, मानव में देवत्व जगाकर।
शुचि शीतलता, पाप है हरती, धार सुधा की नित्य बहाकर।
इस नवयुग में राज करेगा, जो हो आत्मविजेता॥ वैसे ही... ॥

शान्तिकुञ्ज से शक्ति पुञ्ज ले, जन–जन को सन्देश सुनाती।

सजल-श्रद्धा, देती प्रज्ञा, सत्कर्मों की ओर बढ़ाती।
जैसे नाविक तूफानों में, नाव धैर्य से खेता॥ वैसे ही... ॥
बोलो जय गायत्री माँ-बोलो जय गायत्री माँ॥

मुक्तक-

दु:ख के कारण दोष हैं, समझो इतनी बात।
गुरु कर देंगे दूर सब, दो तुम उनका साथ॥

पाकर जन्म पिता के घर

पाकर जन्म पिता के घर में देनी पड़ी विदाई।

हाय! विधाता फिर क्यों तूने नारी देह बनाई॥
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

करुणा की मृदुमूर्ति बिटिया–ममता की मणिमाला।
आँगन की साकार स्वर्ग तुम–तुम्हें गोद में पाला॥
बाबुल का घर छोड़ आज तुम–होने चली पराई।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

बहनों के संग हँसीं और–तुम बहनों के संग खेली।
माँ के लिए सहारा थी तुम–माँ के लिए सहेली॥
डोली तेरी उस माँ ने ही– अपने हाथ सजाई।

ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥
घर की कोई वस्तु न जिसको–तुमने कभी छुआ हो।
कोई ऐसा काम न तुझसे–पूछे बिना हुआ हो॥
आज बिना पूछे ही तुमको–दी जा रही विदाई।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥
तुम जाओगी चली, बिलखता रह जाता सूना घर।
देख वस्तुएँ तेरी–उमड़ेगा यादों का सागर॥
कौन बँधायेगा धीरज–यह पीड़ा अति दुःखदाई।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

जिस घर रहो कुबेर वहाँ पर–तेरा भवन बुहारें।
सूर्य–चन्द्र आकर प्रतिदिन–तेरी आरती उतारें॥
सुख, समृद्धि, सौजन्य तुम्हारे–रहें सदा अनुयायी।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

हमको तो बस याद तुम्हारी, जीवन भर करना है।
आँसू पी–पीकर प्राणों की–पीड़ा को हरना है॥
तुम पर कृपा किन्तु ईश्वर की–रहे सदा ही छाई।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

जाओ मेरे प्राण, कभी फिर आँसू नहीं बहाना।

जिस घर में जीवन कटना है–उसको ही अपनाना॥
अमर रहे अहिवात तुम्हारा–युग–युग जिए सगाई।
ओऽऽऽ तुमको आज विदाई॥

मुक्तक–

जब तक अम्बर में सूर्य, चन्द्र–जब तक गंगा की धार बहे।
तब तक इस नवदम्पति का जग में, अजर अमर शुभ प्यार रहे॥
कर चली पिता का घर सूना–माता की कर गोदी खाली।
तू बेटी अब ससुराल चली–हम किसे कहेंगे अब लाली॥

मात पिता को छोड़कर–बिटिया जाये परदेश।
पत्थर से पत्थर हृदय–सह न सकें यह खेद॥

पाप पतन से आज मनुज

पाप पतन से आज मनुज, को अगर बचाना है।
संस्कारों की परम्परा, को पुनः चलाना है॥
मनुज देह ले जो भी प्राणी, भू पर आता है।
साथ कई जन्मों के, संस्कारों को लाता है॥
पशुता से प्रेरित वे होते, सहज निम्नगामी।

पेट और प्रजनन के क्रम में, भटके अज्ञानी।।
संस्कारों से श्रेष्ठ मनुज, द्विज उन्हें बनाना है।।
ऋषियों ने सोलह संस्कारों का निर्माण किया।
गर्भ काल से पूर्व साधना का सुविधान किया।।
गर्भ स्थित शिशु संस्कार को पहला चरण किया।
शिशु निर्माण शिल्प का कौशल माँ को सौंप दिया।।
यदि अभिमन्यु सी सन्तानें भू पर लाना है॥
नामकरण फिर अन्नप्राशन, तब मुण्डन के द्वारा।
जीवन के कोमल मोड़ों पर, शिल्प किया सारा।।

हो बौद्धिक-आत्मिक विकास तो विद्यारम्भ किया।
और उपनयन द्वारा दायित्वों का बोध दिया।।
गुरुदीक्षा से तपोनिष्ठ गुरु सम्बल पाना है॥
संस्कारों से फिर आँगन में लव-कुश खेलेंगे।
संस्कार संस्कारित व्यक्तित्वों में बोलेंगे।।
अभिमन्यु, प्रद्युम्न जन्म लेंगे फिर धरती पर।
शिवा, विनोबा गाँधी फिर से होंगे इस भू पर।।
संस्कार विहीन पीढ़ी से देश बचाना है॥

मुक्तक-

हैं व्यक्ति और परिवार श्रेष्ठ, बनते हैं जिसके धारण से।
उस संस्कार की परम्परा को, भुला दिया किस कारण से॥

पितु मातु सहायक

पितु मातु सहायक स्वामि सखा,
तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनको कुछ और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो।
प्रतिपालक हो सारे जग के,

अतिशय करुणा उर धारे हो।।
भूले हैं हम तुमको-तुम तो,
हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज! महा महिमा तुम्हरी,
समझे बिरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्तिनिकेतन प्रेमनिधे,
मनमन्दिर के उजियारे हो।।

इस जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुमसे प्रभु की नर पाय झलक,
केहि के अब और सहारे हवो।।

पर्यावरण बचाओ! धरती

पर्यावरण बचाओ! धरती चिल्ला रही हमारी।
क्या विनाश की कर ही डाली, है तुमने तैयारी॥
जल–जीवन में निर्मलता का, नामोंनिशां न बाकी।

साँसों में अब जहर घोलती, प्राणवायु वसुधा की।
मिट्टी की सोंधी सुगन्ध भी, रसायनों की मारी॥
कटते वृक्ष चीखते जाते, अरे मूर्ख इन्सानों।
क्या विकास है क्या विनाश है, इतना तो पहचानों।
सूखा बाढ़ अकाल सभी, करनी का फल है भारी॥
बेदर्दी से शोषण करते आये, सदा प्रकृति का।
भूल गये अंजाम बुरा ही, होता आया अति का।
आज प्रकृति भी कुपित रूप ले, खेले अपनी पारी॥
धरती के हर जड़ चेतन में, तालमेल कर चलना।

सृष्टि संतुलित की संरचना, का ना रूप बदलना।
जड़-चेतन हित प्राणिमात्र हित, सृष्टि सन्तुलित सारी॥
'स्वर्गादपि गरीयसी' फिर से, हो यह धरा हमारी॥

मुक्तक-

पर्यावरण हमारी धरती की सुन्दरतम् थाती है।
इसे बचायें हम सब मिलकर, यही दीप की बाती है॥

पूज्य गुरुवर ! शक्ति दे दो

पूज्य गुरुवर ! शक्ति दे दो, साधना अपनी बढ़ायें।
श्रेष्ठ चिन्तन, आचरण से, आपकी गरिमा बढ़ायें।।
अंग-अवयव हैं तुम्हारे, शिष्य भी हैं नयन तारे।
आप सविता रूप हैं प्रभु, आपके ही हम सहारे॥
आपकी सामर्थ्य अनुपम, आपको हम क्या चढ़ायें।
श्रेष्ठ चिन्तन, आचरण से, आपकी गरिमा बढ़ायें।।
"प्यार" ही है मन्त्र भगवन्, स्नेह-ममता के उपासक।
आप जीवन तम मिटाते, आप हैं जीवन प्रकाशक॥

प्रखरता से हम उठें प्रभु, ‘‘सजल’’ औरों को उठायें।
श्रेष्ठ चिंतन, आचरण से, आपकी गरिमा बढ़ायें।।
आपका संकल्प है प्रभु, स्वर्ग धरती पर उतारें।
पद–दलित पीड़ित जनों को,प्यार ममता से दुलारें॥
आप हैं सर्वस्व भगवन्, भाव हम अपना जगायें।
श्रेष्ठ चिंतन, आचरण से, आपकी गरिमा बढ़ायें॥
आज हम संकल्प करते, प्राण में साहस भरेंगे।
भूल पायेंगे न गुरुवर, शीश चरणों में धरेंगे॥
ज्ञान की लेकर मशालें, ज्योति हम जग में जलायें।

श्रेष्ठ चिंतन, आचरण से, आपकी गरिमा बढ़ायें॥

परम पिता से प्यार नहीं

परम पिता से प्यार नहीं, रहे शुद्ध व्यवहार नहीं।
इसीलिये तो आज देख लो, कोई सुखी परिवार नहीं॥
आम फूल फल मेवा हमको, समय-समय पर देता है।
लेकिन है इतना उदार, बदले में कुछ नहीं लेता है॥
देने में इंकार नहीं, भेदभाव तकरार नहीं।
ऐसे दानी का तू बन्दे, माने क्यों उपकार नहीं॥

मानव के चोले में जाने, कितने यन्त्र लगाये हैं।
कीमत कोई पा न सके, इतने अनमोल बनाये हैं।।
पा सकता कोई पार नहीं, कोई अंग बेकार नहीं।
ऐसे कारीगर का बन्दे, करता जरा विचार नहीं।।

वो धरती जलवायु अग्नि का, लेता नहीं किराया है।
सर्दी, गर्मी, वर्षा का अति, सुन्दर चक्र बनाया है।।
लगा कोई दरबार नहीं, कोई सिपहसालार नहीं।
कर्मों का फल मिले सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं।।

जाने कहाँ चाँद सूरज का, है बिजली घर बना हुआ।

पल भर को भी फेल न होता, कहाँ कनेक्शन जुड़ा हुआ।।
खम्भा या कोई तार नहीं, कोई खड़ी दीवार नहीं।
जगत पिता की हस्ती को तू, करता क्यों स्वीकार नहीं।।

मुक्तक:-

जिस दिल में प्रभु की याद नहीं, शमशान उसे हम कहते हैं।
भूला है जो उस मालिक को, हैवान उसे हम कहते हैं।।
वैसे तो करोड़ों, अरबों के मालिक, धनवान हैं दुनियाँ में।
हरि नाम का जिसके पास हो धन, धनवान उसे हम कहते हैं।।

प्रभु के सुन्दर हैं सब नाम

प्रभु के सुन्दर हैं सब नाम–सारा जग है उसका धाम।
जप लो राम राम राम–भज लो श्याम श्याम श्याम॥
अहुरमज़्द वह, वही राम है–वही परम प्रभु वही श्याम है।
वही रुद्र है खुदा वही है–वही बुद्ध घनश्याम॥
कोई नाम रूप अपना लो–पर उसका अनुशासन पा लो।
राम रहीम पुकारो कुछ भी–करो नहीं बदनाम॥
उसने सुन्दर बाग सजाया–मानव को माली ठहराया।
सब मानव उसके बेटे हैं–करें उसी का काम॥

वह है स्वयं प्रेम का सागर–क्या पाओगे द्वेष बढ़ाकर।
चाहे सिज़दा करो उसे तुम–चाहे करो प्रणाम॥

मुक्तक–

कबिरा कुँआ एक है–पनिहारिनीं अनेक।
बरतन न्यारे–न्यारे हैं, पर पानी सबमें एक॥

पुकारती नयी धरा

पुकारती नयी धरा–पुकारता नया गगन।
नये मनुष्य के लिए –नवीन प्राण चाहिए॥

दिशाएँ विश्व की सभी, अनीतिपूर्ण आज हैं।
कि भावना सिमट रही, बिखर रहा समाज है॥
मिटा कुरीतियाँ सभी, हटा हरेक गन्दगी।
विनाश पाप का करो, कि मुस्कुराये जिन्दगी॥
पुकारती मनुष्यता–निहारते सजल नयन।
भविष्य को सँवारने–नया उफान चाहिए॥
धधक रही मशाल क्रान्ति की, सम्हाल लो सखे!।
चला कफ़न पहन के, कारवाँ उठो चलो सखे!॥
स्नेह झोंकते रहो, कि ज्योति यह बुझे नहीं।

जोश उमड़ता रहे कि, कारवाँ रुके नहीं॥
पुकारती हृदय तपन–पुकारता नया हवन।
शहीद सी लगन लिए–स्व–आत्मदान चाहिए॥
रचो नवीन सूर्य अब, नये विहान के लिए।
रचो नवीन तान तुम, नवीन गान के लिए॥
रचो मनुष्य भी नया, कि ईश्वरत्त्व भी नया।
रचो सुनीतियाँ नयी, कि विश्व भी नया–नया॥
पुकारती नयी लगन–पुकारता नया सृजन।
नये भविष्य के लिए –सतत् प्रयास चाहिए॥

मुक्तक:-

उठो तुमको धरित्री का नया श्रृंगार करना है।
उठो तुमको विमल कर्त्तव्य का-भण्डार भरना है॥
उठो तुमको नये संकल्प-की भेरी बजाना है।
उठो तुमको नये निर्माण के-जौहर दिखाना है॥

प्रगति पन्थ पर एक साथ

प्रगति पन्थ पर एक साथ सब, मिलकर कदम बढ़ाओ।
जियो और जीने दो का स्वर, घर-घर में पहुँचाओ॥

परवशता का अन्त हो चला, वैभव का युग बीता।
अब न छलेगा कोई रावण, सदाचार की सीता॥
दलित नहीं रह सकता कोई, साहस जाग रहा है।
समता का अधिकार सृष्टि का, कण-कण माँग रहा है।
लेने भर की बात न सोचो, कुछ देकर भी जाओ॥

तोड़ रहे सारे मनुष्य हैं, भेदभाव के धागे।
कन्धे से कन्धा पग से पग, मिला बढ़ रहे आगे॥
आज परिश्रम वेद बन गया, और कर्म ही गीता।
जन-जन शक्ति-पुराण बन गया, निर्बल का बल जीता॥

तुम भी कुछ आगे बढ़ने की, अब हिम्मत दिखलाओ॥
जाग उठा सोया जड़ चेतन, जाग उठी तरुणाई।
अन्धकार मिट चला गगन में, स्वर्ण लालिमा छाई॥
निर्माणों का सूर्य अँधेरी, रात चीरता आता।
जागो! जगती के निवासियों! नवयुग तुम्हें बुलाता॥
द्वार दया के खोलो, करुणा की सौगात लुटाओ॥

पाप ताप हर लेती सबके

पाप ताप हर लेती सबके, गंगा की जल धार है।

सन्मति पा जाता गायत्री, गंगा से संसार है॥
हर–हर गंगे, जय माँ गायत्री... ॥

सगर सुतों को जीवन देने, गंगा भू–पर आई थी।
सुरपुर से आकर स्वर्गंगा, शंकर जटा समायी थी॥
आशुतोष की कृपा भगीरथ ने, तप से ही पायी थी।
तब शिव शीश वासिनी गंगा, धरती पर लहरायी थी॥
पतित पावनी गंगा ने कर दिये, दूर संताप सभी॥
मूर्छित मानव के जीवन का, यह सच्चा आधार है॥

सृष्टि देख निष्प्राण प्रजापति, ब्रह्मा भी अकुलाये थे।

गायत्री से ही वह उसको, प्राणवान कर पाये थे॥
गायत्री कर सिद्ध विश्वरथ, ऋषिवर विश्वामित्र हुए।
बला–अतिबला विद्या से, सम्पन्न राम–सौमित्र हुए॥
गायत्री सत्पथ विधायिनी, विद्या है, वरदान है।
मनुज देवता दोनों की, संरक्षक है सुखसार है॥

गंगा गायत्री स्वरूप है, दो दैवी वरदान मिले।
इन्हें वरण करके सुर मानव, को अनगिन अनुदान मिले॥
दोनों ही गतिमय जीवन का, पावन भाव जगाती हैं।
अणु से विभु, लघु से महान, जीवन को यहाँ बनाती हैं॥

नाम भिन्न हैं, पर अभिन्न हैं, दोनों भाव स्वभाव से।
एक स्नान से, एक ध्यान से, कर देती उद्धार हैं॥
जब देखी बह रही विश्व में, विष से भरी हवाएँ हैं।
विश्वामित्र, भगीरथ दोनों, एक रूप हो आये हैं॥
है दैवी संकल्प मनुज में ही, देवत्व जगाने का।
करुणा की गंगा लहराकर, धरती स्वर्ग बनाने का॥
पहुँचायी संस्कृति की भागीरथी, समूचे विश्व में।
दुश्चिन्तन पर आज विश्व में, होता प्रबल प्रहार है॥

मुक्तक–

‘गंगा’ है पतित पावनी, गोते लगाइये।
‘गायत्री’ ज्ञान गंगा, जी भर नहाइये॥
मानव हो मुक्त पाप–पतन से अज्ञान से।
जीवन में यूँ ही ज्ञान की गंगा बहाइये॥
पतित पावनी गायत्री माँ, हे! गुरुवर हे! गंगा माता।
तारो अब तो भक्तों को माँ, तुम ही हो सबकी सुखदाता॥

प्रभाती कोई दूर पर

प्रभाती कोई दूर पर गा रहा है।
बढ़ो, सामने युग नया आ रहा है॥
    नयी रूप-रेखा बनी जिन्दगी की।
    नयी चाँदनी अब खिलेगी खुशी की॥
    हृदय प्यार से मानवों का भरेगा।
    नमन शत धरा को गगन अब करेगा॥
नया चन्द्रमा शान्ति बरसा रहा है।
नया ज्ञान का सूर्य मुस्का रहा है॥

पगों में सभी के अतुल शक्ति होगी।
मनों में सभी के नवल भक्ति होगी॥
खुला प्यार का स्रोत जी भर नहालो।
नई रागिनी पर नये गीत गालो।
सुधा धार में वेग सा आ रहा है।
तृषित–सा मनुज शान्ति कुछ पा रहा है॥
जगेगी नवल चेतना मानवों की।
मिटेगी असद् कल्पना दानवों की॥
धरा पर नया स्वर्ग बस कर रहेगा।

तुम्हारी कथा विश्व मानव कहेगा॥
कि, इतिहास नूतन रचा जा रहा है।
मनुज देवता अब बना जा रहा है॥

पाओगे जीवन का सार

पाओगे जीवन का सार, आओ गुरु चरणों में।
प्रभु चरणों में, सद्गुरु चरणों में॥
गुरुब्रह्मा, विष्णु, रुद्र परब्रह्म रूप हैं।
परब्रह्म रूप उनके करतब अनूप हैं॥

कर देंगे वे उद्धार॥ आओ.......... ॥

गुरु के श्री चरणों में, स्वार्थ रहित प्यार है।
निर्मल है प्यार विमल, गंगा की धार है॥
मिलता है माँ का दुलार॥ आओ............ ॥

होते हैं दोष दूर, जगते हैं सद्विचार।
जगते हैं सद्विचार, मिलते हैं संस्कार॥
होता है जीवन सुधार॥ आओ......... ॥

भव बाधा दूर होये, मन में उल्लास छाय।
मन में उल्लास और, साहस अपार आय॥

नव बल का होता संचार॥ आओ........॥

फिर से संस्कार परिपाटी

फिर से संस्कार परिपाटी, घर घर जाये मनाई।
युग ऋषि ने उज्ज्वल भविष्य की,ज्योति अखण्ड जलाई॥
 यह वह परम्परा है जिसने, घर घर दिये जलाये।
 सोलह संस्कारों के द्वारा, वीर रत्न उपजाये॥
 ध्रुव, प्रह्लाद, राम लक्ष्मण–सब, इसी ज्योति के जाये।
 भरत–शत्रुघन और वीर अभिमन्यु इसी से पाये॥

नवनिहाल बच्चों की फिर से, इस विधि करो गढ़ाई।
क्यों जन्मे कैसे दुनियाँ में, यह मनुष्य तन पाया।
माता–पिता बान्धवों तक ने, कुछ भी नहीं बताया॥
ऋषियों ने था पहले से ही, ऐसा चक्र चलाया।
जन्म–मरण मरणोत्तर जीवन, का रहस्य समझाया॥
नामकरण, यज्ञोपवीत तक, सबकी विधि बतलाई।
मुण्डन, विद्यारम्भ, अन्नप्राशन जो हैं करवाते।
उनके बालक महानता के, पथ पर बढ़ते जाते॥
क्यों विवाह में आखिर जुड़ते, इतने रिश्ते–नाते।

यह संस्कार भाँवरों तक का, भेद सभी बतलाते॥
उसको समझा नहीं गृहस्थी, नाहक मूढ़ बसाई।
यह मनुष्य तन है अमूल्य, मत समझो इसको माटी।
जिसने समझा नहीं उसे तो, निपट मौत की घाटी॥
ज्ञानी सोच-समझकर काटे, मूरख रो-रो काटी।
संस्कार हँस-हँसकर जीवन, जीने की परिपाटी॥
परम्परा यह अति महान है-जाये नहीं भुलाई।

मुक्तक-

संस्कारों की गरिमा समझो, और इसे सब अपनाओ।

देवसंस्कृति को धारण कर, फिर से जग वन्दित हो जाओ॥

फिर अपने गाँवों को

फिर अपने गाँवों को–हम स्वर्ग बनायेंगे।
अपने अन्दर सोया–देवत्व जगायेंगे॥
गाँवों की गलियाँ क्यों, गन्दी रहने देंगे।
गन्दगी नरक जैसी, अब क्यों सहने देंगे॥
सहयोग और श्रम से, यह नरक हटायेंगे॥
रहने देंगे बाकी, अब मन का मैल नहीं।

अब भेदभाव का हम, खेलेंगे खेल नहीं॥
सब भाई-भाई हैं, सब मिलकर गायेंगे॥
देवों जैसा होगा, चिन्तन व्यवहार चलन।
सद्भाव भरे होंगे, सबके ही निर्मल मन॥
फिर तो सबके सुख-दुःख, सबमें बँट जायेंगे॥
शोषण उत्पीड़न का, फिर नाम नहीं होगा।
फिर पीड़ा और पतन का, काम नहीं होगा॥
सोने की चिड़ियाँ हम, फिर से कहलायेंगे॥

मुक्तक-

स्वर्ग लोक के गीत नहीं अब–इस धरती पर गाना है।
हमको तो बस अपनी ही–धरती को स्वर्ग बनाना है॥
आलस और नींद में अब तो–व्यर्थ न समय गँवाना है।
त्याग और सेवा संयम के–पथ पर कदम बढ़ाना है॥

बदला जाये दृष्टिकोण

बदला जाये दृष्टिकोण यदि, तो इन्सान बदल सकता है।
दृष्टिकोण के परिवर्तन से, अरे! जहान बदल सकता है॥
कुछ भी नहीं असम्भव होता, जब संकल्प किये जाते हैं।

संकल्पों को जब साहस के, गतिमय चरण दिये जाते हैं॥
बाधाओं की क्या बिसात फिर, रुख़ तूफ़ान बदल सकता है॥
आसमान किसको क्या कहता, धरती किसको टोका करती।
मंजिल दूर भगाती किसको, गति कब किसको रोका करती॥
सबको ही प्रकाश देने से, क्या दिनमान बदल सकता है॥
लेकिन हम ही नहीं बदलते, घिसा–पिटा जीवन जीते हैं।
ताना–बाना बुना न जाता, फटी हुई चादर सीते हैं॥
मन चाहे ही परिधानों को, चाहे प्राण बदल सकता है॥
युग परिवर्तन की बेला में, आओ दृष्टिकोण हम बदलें।

गंगा के प्रवाह सा बहने–जीवन की धारायें बदलें॥
शापित जनमानस का फिर तो, भाग्य विधान बदल सकता है॥
अगर ज्ञान का सूर्य उदय हो,नवल विहान बदल सकता है॥

मुक्तक–

धरती वही पुरानी, आकाश भी वही है।
वे ही हैं चाँद सूरज, बदलाव कुछ नहीं है॥
है सिन्धु तो वही पर, लहरें बदल गयी हैं।
हैं तो वही नज़ारे, नज़रें बदल गयी हैं॥
नज़रें तेरी बदलीं तो, नज़ारे बदल गये।

क़िश्ती ने मोड़ा रुख़ तो क़िनारे बदल गये॥

बदल दो जमाना

बदल दो जमाना धरा जगमगाओ।
पसीना बहा, धूल सोना बनाओ॥
घृणा को घृणा से, कठिन जीत पाना।
कठिन बैर को, बैर से जीत पाना॥
कठिन है बहुत राह, इस जिन्दगी की।
बनाओ इसे तुम, सुकोमल बनाओ॥

बहुत ही सरल है, उठे को गिराना।
बहुत ही सरल है, बने को मिटाना॥
सरल है नहीं, किन्तु निर्माण करना।
अगर कर सको तो इसे कर दिखाओ॥
खड़े मौन क्यों? शक्ति अपनी दिखाओ।
न नाचो स्वयं, विश्व को तुम नचाओ॥
कि संसार को है, तुम्हारी जरुरत।
हटो तुम न पीछे, नहीं मुँह छिपाओ॥
बदल जायेगा युग, इशारा बहुत है।

समय को तुम्हारा, सहारा बहुत है॥
कि यों बाहुओं को, समेटो नहीं तुम।
बढ़ाओ उन्हें, भार जग का उठाओ॥

चले सोचकर, यह जवानी नहीं है।
कभी सोचती, आग पानी नहीं है॥
जवानी कभी, सिर झुकाती नहीं है।
इसे याद रक्खो, नहीं भूल जाओ॥

बदलो अपनी चाल

बदलो अपनी चाल, नया युग आने वाला है।
हुई दिशायें लाल, अँधेरा जाने वाला है॥

अब तक था घनघोर अँधेरा, छाया इस धरती पर।
था आलस्य प्रमाद भरा, कण-कण इस जगती पर॥
कटा तिमिर का जाल, उजाला छाने वाला है।॥

दसों दिशायें जाग रही हैं, लेकर के अँगड़ाई।
मुर्गे बोले नव प्रभात की, बेला है अब आई॥
पक्षी दल जग पड़ा, प्रभाती गाने वाला है॥

जागें और जगायें अब भी, सोना है नादानी।
चलो करें नूतन प्रकाश के, युग की हम अगवानी॥
जिसने भरी उछाल, सफलता पाने वाला है॥
जिनने कृष्ण, बुद्ध, गाँधी को, जाना और पहचाना।
वे चल पड़े साथ में उनको, पड़ा नहीं पछताना॥
फिर वे हुए निहाल, कौन झुठलाने वाला है॥

मुक्तक-

समय को देख जो बदला नहीं, वह रह न पायेगा।
कभी दो शब्द आदर के, जमाना कह न पायेगा॥

अगर जकड़े रहीं, आलस्य की ही बेड़ियाँ उसको।
नदी के दूसरे तट तक, कभी वह जा न पायेगा।।

बिगुल बज गया महाक्रान्ति

बिगुल बज गया महाक्रान्ति का, वीरों शौर्य दिखाना है।
असमंजस में समय गँवाकर, कायर नहीं कहाना है॥
जाने कितने शुभकर्मों ने, यह सुयोग दिलवाया है।
महाकाल से कदम मिला, चलने का अवसर आया है।
हम सच्चे साथी हैं प्रभु के, यह विश्वास बढ़ाना है॥

जिनने पहचाना है युग को, क्षण भर नहीं गँवाते हैं।
समय चूक जाने वाले तो, अन्त समय पछताते हैं।
पछतावे का मौका मत दो, सुख सौभाग्य बढ़ाना है॥
शौर्य शहीदों जैसा अपनी, नस–नस में भरना होगा।
प्रभु के निर्देशों पर चलकर, प्रखर कर्म करना होगा।
बाधाओं को चीर–चीरकर, अपना मार्ग बनाना है॥
कवच हमारा गुरु अनुशासन, शस्त्र अनूठे श्रम प्रतिभा।
सैनिक हैं हम महाकाल के, अस्त्र सबल श्रद्धा निष्ठा।
बलिदानी संकल्प जगाकर, आगे बढ़ते जाना है॥

मुक्तक-

सुनो प्रभाती बिगुल बज रहा, कर्मभूमि में कदम बढ़ा लो।
जागो-जागो रे युग सैनिक, उठकर अपने अस्त्र सँभालो॥
वासंती वर्दी सैनिक की, धारण कर संगीन उठा लो।
शक्ति स्रोत से जुड़े हुए तुम, उठो उछलकर हिम्मत वालों॥

बहुत सो चुकी अब तो जागो

बहुत सो चुकी अब तो जागो, ओ नारी कल्याणी।
परिवर्तन के स्वर में भर दो, निज गौरव की वाणी॥

बन कौशल्या आज देश को, फिर से राम महान् दो।
और सुनयना बनकर फिर से, सीता सी सन्तान दो॥
वीर जननि हो तुम सन्तानें, अर्जुन, भीम समान दो।
भारत माता माँग रही है, वापस उसकी शान दो॥
केवल तुम ही बन सकती हो, नूतन युग निर्माणी॥
मार्ग भ्रमित जितने तुलसी हैं, सबको दो ललकार।
रत्नावली तुम्हारा गौरव, तुमको रहा पुकार॥
कालिदास सम सोई प्रतिभा, सकती तुम्हीं निखार।
महानता की देवी तुमको, जगती रही निहार॥

बनो प्रेरणा राह देखता, जग का प्राणी-प्राणी॥
जीजाबाई बनो देश को, वीर शिवा की है फिर चाह।
सिवा तुम्हारे कौन बताये, बलिदानी वीरों को राह॥
अगर न अब भी निद्रा त्यागी, होगी यह जगती गुमराह।
वह जौहर दिखलाओ फिर से, जग के मुँह से निकले वाह॥
रच दो अपनी गौरव गरिमा, की फिर नयी कहानी॥
बनो अहिल्याबाई अपनी, आत्मशक्ति फिर दिखलाओ।
लक्ष्मीबाई बन अनीति का, गर्व चूरकर बतलाओ॥
दुर्गावती बनो शासन की, डोर थामने आ जाओ।

सावित्री बन आज सत्य को, यम से पुनः छुड़ा लाओ।।
नयी सदीं की नींव तुम्हीं को, अब तो है रखवानी।।

मुक्तक:-

उठो-उठो हे मातृशक्ति अब, समय प्रभाती सुना रहा है।
ओ देवी दुर्गे तुम्हीं हो नारी, तुम्हारा गौरव बुला रहा है।।

बड़े भाग्य से ये मनुज

बड़े भाग्य से, ये मनुज तन मिला था।
गँवाते-गँवाते, उमर पार कर दी॥

खाने कमाने में, आयु गँवाई।
यूँ ही जिन्दगी, हमने बेकार कर दी॥
अभी चेत जा, वक्त जो भी बचा है।
अरे काल मुख से, न कोई बचा है।।
जरा सोच लें, साथ ले जायेंगे क्या।
यूँ ही जिन्दगी, हमने है भार कर दी।।
है संसार सागर में, जीवन की नैया।
है पतवार सत्कर्म, सद्गुरु खिवैया॥
माया के चक्कर में, फँसकर के हमने।

जीवन की नैया, है मझधार कर दी॥

अगर चाहता, अपना कल्याण प्राणी।
तो ले मान सच्चे, सद्गुरु की वाणी।।
लगे अपना जीवन, सत्कर्म में अब।
अभी तक तो यह, उम्र बेकार कर दी।।

मुक्तक-

साँस-साँस में भरा ख़ज़ाना-अरे! इसे पहचानो रे।
सदुपयोग कर लाभ उठाओ-सीख सनातन मानो रे।।

बिलख रहे होते सारे प्राणी

बिलख रहे होते सारे प्राणी—कहीं न कोई भी चैन पाता।
न प्यार होता न प्रीति होती—अगर कहीं तुम न होती माता॥

तुम्हीं से धरती ने प्यार पाया—
तुम्हारी करुणा से जग नहाया।
तुम्हीं ने आँचल से पय पिलाकर—
मनुज को इतना बड़ा बनाया॥
भटक रही होती तम में दुनियाँ—
कहीं उजाला नज़र न आता॥ अगर कहीं तुम... ॥

दृगों से तेरे ही नीर झरकर–
है बन गया दूरतम समन्दर।
हवाओं में गूँजता सदा ही–
तुम्हारी करुणा का दिव्य निर्झर॥
कभी न बदले में कुछ भी माँगा–
पवित्र कितना है तेरा नाता॥ अगर कहीं तुम... ॥

मलिन हृदय में न भाव किञ्चित–
तथापि चरणों में हम समर्पित।
बड़ी अधूरी है मेरी पूजा–

जो कुछ भी है माँ तुम्हें समर्पित॥
गिरे हुओं को उठा लो जननी–
न कोई तुम सा है और त्राता॥ अगर कहीं तुम... ॥

मुक्तक–

भावों के अतिरिक्त हे माता, और करें क्या तुमको अर्पित।
माता के चरणों में हम सब, करते श्रद्धा सुमन समर्पित॥

बसायें एक नया संसार

बसायें एक नया संसार–कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

शोषक शोषित हो न जहाँ पर–सबकी सम्पत्ति एक।
हो तन मन में सुमन एक सा–जिसमें प्रेम विवेक॥
हो सबमें सहयोग परस्पर–एक बने घर द्वार॥
कि जिसमें छलक.........॥

जाति, पाँति के बन्धन टूटें–राष्ट्र–राष्ट्र सब एक।
धर्मों में हो सत्य समन्वय–रहे न झूठी टेक॥
मिटें अन्धविश्वास जगत के–हों विज्ञान विचार॥
कि जिसमें छलक.........॥

मानव–मानव की भाषा हो–सबकी एक समान।

मिलें हृदय से हृदय परस्पर–हो सच्ची पहचान॥
करें वचन से तन, मन, धन से–सब सबका उपकार॥
कि जिसमें छलक......... ॥
करें अहिंसा का पालन सब–बने सत्य का राज।
सत्य, अहिंसा भक्त सभी हों– जग हो सत्य समाज॥
घर–घर स्वर्ग नचे आँगन में–मोक्ष धरे अवतार॥
कि जिसमें छलक......... ॥

मुक्तक–

बिगड़ती जा रही दुनियाँ–नई दुनियाँ बसाना है।

स्नेह, सहयोग, श्रम की सुरसरि–फिर से बहाना है॥
जगा देवत्व मानव का–बनायें देव मानव को।
मनुज की इस धरा को–स्वर्ग जैसा ही बनाना है॥

बढ़े चलो बढ़े चलो

बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
ज्ञान की मशाल को, लिये हुए बढ़े चलो॥
नौजवान प्रगति पन्थ, सीढ़ियाँ चढ़े चलो॥
घोर अन्धकार है, विवेक पर प्रहार है।

आदमी भटक रहा, किये बिन विचार है।।
ज्ञान की मशाल ले, तिमिर को दले चलो।।
भोग-रोग का प्रभाव, बढ़ा बे हिसाब है।
साधनों का ढेर किन्तु, बढ़ रहा तनाव है।।
जूझने कुचक्र से, तुम अथक लड़े चलो।।
रूढ़ियाँ-कुरीतियाँ, अनय व अनीतियाँ।
मुँह लगे हैं दुर्व्यसन, दे रहे चुनौतियाँ।।
नौजवान मुक्ति के, मन्त्र अब पढ़े चलो।।
नौजवान हो खड़े, अब अनीति से लड़ें।

कंटकों को राह के, रौंदते हुए बढ़ें।।
महाकाल वीरभद्र, क्रान्तियाँ करे चलो।।
राष्ट्र चेतना सुसुप्त, संस्कृति विकल हुई।
आत्मबोध को बिसार मनुजता विफल हुई।।
प्राण फूँक राष्ट्र में, राष्ट्र को गढ़े चलो॥

मुक्तक-

अँधेरा घना, चाहे जितना मगर,
सूर्य उगते ही वह तो चला जायेगा।
नौजवानों उठो! क्रान्ति की ज्वाल ले,

तुम जो बदलो, जमाना बदल जायेगा॥

भारत वर्ष हमारा प्यारा

भारत वर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्व से न्यारा।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन् देश हमारा॥
    हों ब्राह्मण विद्वान राष्ट्र में, ब्रह्मतेज व्रतधारी।
    महारथी हों शूर धनुर्धर, क्षत्रिय लक्ष्य प्रहारी॥
    गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की, रहें बहाती धारा॥
महिलायें हों सती सुन्दरी, सद्गुणवती सयानी।

रथारूढ़ भारत वीरों की, करें विजय अगवानी।।
जिनकी गुणगाथा से गुञ्जित, दिग्दिगन्त हो सारा।।

यज्ञ निरत भारत के सुत हों, शूर, सुकृत अवतारी।
सभ्य, सुशिक्षित कर्मशील हों, सौम्य, सरल, सुविचारी।।
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र के, भावी सुदृढ़ सहारा।।

आवश्यक जितना हो उतना, रस बादल बरसायें।
अन्नौषध में लगें प्रचुर फल, और स्वयं पक जायें।।
योग हमारा क्षेम हमारा, स्वतः सिद्ध हो सारा।।

मुक्तक-

भारत वर्ष हमारा सारी, दुनियाँ का सरताज था।
है इतिहास प्रसिद्ध इसी का, श्रेष्ठ राम का काज था॥
आज पुनः अपने भारत पर, जग की आशा टिकी हुई।
क्योंकि यहीं से विश्वशान्ति का,पढ़ा विश्व ने पाठ था॥

भागीरथ तो गये किन्तु

भागीरथ तो गये किन्तु, गंगा उनके गुण गाती है।
आज स्वयं गायत्री माता, गुरुवर तुम्हें बुलाती हैं॥
यह सच है गंगा ने आकर, लाखों का उपकार किया।

द्रवित हुई जब भागीरथ ने, तप करना स्वीकार किया॥
गंगा इसलिए तो जग में, भागीरथी कहाती है॥
गहन तपस्या से गुरुवर ने, गायत्री को प्राप्त किया।
फिर सारी धरती में उनको, पूजित कर संव्याप्त किया॥
हे गायत्री माता! गुरू की, महिमा कही न जाती है॥
माँ के जन्म दिवस पर, उनके जाने का दिन आया था।
निश्चित ही माता ने हँसकर, उनको गले लगाया था॥
पुत्रों को तो याद पिता की, बारम्बार सताती है॥
अब श्रद्धा विश्वास हमारा, एक मात्र दृढ़ सम्बल है।

सूक्ष्म और कारण सत्ता का, संरक्षण ही प्रतिफल है॥
फिर भी बिछुड़न की व्याकुलता, हमसे सही न जाती है॥

हाथ पकड़कर दोनों ने, जिस पथ पर हमें चलाया है।
हम विश्वास दिलाते हैं, उस पथ को नहीं भुलाया है॥
जन–पीड़ा से पीड़ित छाती, अब करूणा छलकाती है॥

संकल्पों को पूर्ण करेंगे, गुरुवर! सदा–प्राण पण से ।
पीछे नहीं हटेंगे गुरूवर! संघर्षों वाले रण से॥
लाख–लाख पुत्रों की श्रद्धा, यह विश्वास दिलाती है॥
मनुजों में देवत्व जगाकर, स्वर्ग धरा पर लायेंगे।

हम अज्ञान अभावों से, मानव को मुक्त करायेंगे॥
ज्ञान–गंग प्रज्ञापुत्रों द्वारा, अब घर–घर जाती है॥

मुक्तक–

आद्यशक्ति को भू–पर लाकर, तुम भागीरथ स्वयं बन गये।
प्यासी मनोभूमि सिंचितकर, सारे जग को तृप्त कर गये॥

भक्ति की झंकार

भक्ति की झंकार उर के, तारों में कर्तार भर दो॥
लौट जाये स्वार्थ, कटुता, द्वेष, दम्भ निराश होकर।

शून्य मेरे मन भवन में, देव इतना प्यार भर दो॥
बात जो कह दूँ हृदय में, वो उतर जाये सभी के।
इस निरस मेरी गिरा में, वह प्रभाव अपार भर दो॥
कृष्ण के सदृश सुदामा, प्रेमियों के पाँव धोने।
नयन में मेरे तरंगित, अश्रु पारावार भर दो॥
पीड़ितों को दूँ सहारा, और गिरतों को उठा लूँ।
बाहुओं में शक्ति ऐसी, ईश सर्वाधार भर दो॥
रंग झूठे सब जगत के, ये प्रकाश विचार देखा।
क्षुद्र जीवन में सुघड़ निज, रंग परमोदार भर दो॥

भ्रम के भटकावे छोड़ो

सुनो-सुनो ये बहिन भाइयों, एक बड़े पते की बात।
नये सृजन का समय आ गया, उठो बँटाओ हाथ॥
यों तो करने वाले करते, भारी पूजा पाठ।
लेकिन प्रभु का काम न करते, करते कोरी बात।
बात ही बात न देते साथ॥

भ्रम के भटकावे छोड़ो, कुछ काम प्रभु का कर लो रे।
लुटा रहा युग पुरुष सिद्धियाँ, चाहे झोली भर लो रे॥

सुनो-सुनो युग दूत बुलाता, मत उसको झुठलाओ।

भीतर से सद्भाव जगाता, उस पर ध्यान लगाओ।।
अलग-अलग मत भटको भाई, मिलकर कदम बढ़ाओ।
युग विचार युग ऋषि से मिलकर, जन-जन तक पहुँचाओ।।
अवसर अनमोल पकड़ लो रे, अपना प्रयास तो कर लो रे।।
थोड़ी हिम्मत तो कर लो रे।।

जप तप का बस नाम करो ना, सुनते हो कुछ काम करो ना।
मन की मनमानी छोड़ो, प्रज्ञा की राह पकड़ लो रे।

मत डरना यदि असुर शक्तियाँ, दिखे भयानक भारी।
युग के एक थपेड़े से, ढह जाते अत्याचारी।।

समय-समय पर युग दूतों ने, बिगड़ी बात सँवारी।
प्रज्ञा पुत्रों आगे आओ, आज तुम्हारी बारी॥
मन को मत छोटा होने दो, साहस मत ओछा होने दो।
प्रभु की मर्जी भी होने दो,
    प्रभु की लीला याद करो रे, गिद्ध-ग्वाल-सा शौर्य भरो रे॥
    कल की कायरता छोड़ो, बासन्ती चोला रंग लो रे॥
पढ़ते हैं इतिहास तो कहते, काश कि हम भी होते।
हम भी कुछ करके दिखलाते, कभी न अवसर खोते॥
हम ना अवसर खोते भैया, सबसे आगे होते।

उनने केवल गीत न गाये।।

मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे---------।

उनने केवल गीत न गाये, जौहर दिखा शहीद कहाये।
वे गोली पर भी डटे रहे, तुम गाली से डर रहे अरे।।
कैसी गलती कर रहे अरे ।

अपनी गरिमा याद करो ना, काम करो बकवास करो ना।
ढिलमुल ढकोसले छोड़ो, वीरों की राह पकड़ लो रे।।

प्रज्ञायुग आने वाला है, युग ने ली अँगड़ाई।
युग निर्माण योजना लेकर, नया सन्देशा लाई।।

हर मन में देवत्व जगाना, भू पर स्वर्ग बनाना है।
अपना कर सुधार इस जग को, फिर से श्रेष्ठ बनाना है।।
युग ऋषि का सन्देश हृदय में, सबके हमें बिठाना है।
अंशदान कर समयदान कर, घर-घर अलख जगाना है।।
युग वेला है चूक न जाना, शंका में मत समय गँवाना।
शंका डायन को छोड़ो, उल्लास हृदय में भर लो रे।
प्रज्ञा-पुत्र कहाने वालों, जीवन धन्य बना लो।
जागृत आत्मा बनकर भाई, सोया भाग्य जगा लो।।
साझेदारी प्रभु से कर लो, जो चाहो सो पालो।

ऐसा समय न फिर-फिर आता, आओ लाभ उठालो।।
समझदार कहलाने वालों, नासमझी से हाथ हटा लो।
अपना ओछापन छोड़ो, प्रभु की विशालता वर लो रे।।
नाव बाँधकर इस बेड़े से, खुद भवसागर तर लो रे।।

भारती पुकारती संस्कृति

भारती पुकारती, संस्कृति गुहारती।
जाग! नौजवान जाग, राह पथ निहारती।।
जाग और जग-जगा, जागरण के गीत गा।

देख तो सही उधर, सूर्य सुबह का उगा।।
किल-किला उठी किरण, तिमिर को बुहारती।।
आज भारती उदास, क्योंकि सामने विनाश।
और देश का तरुण, कर नहीं रहा प्रयास।।
संस्कृति की व्यथा, तरुण को पुकारती।।
जाग देश के जवान, जाग शौर्य स्वाभिमान।
राष्ट्र, संस्कृति, समाज, जाग भाग्य के विधान।।
जागी तरुणाई ही, राष्ट्र को सँवारती।।
परिवर्तन काल है, हवा में उछाल है।

जो चला प्रवाह संग, हो गया निहाल है॥
महाकाल की तरंग, प्रखरता निखारती॥

मुक्तक-

जवानों समय, चूकने का नहीं है।
समय की चुनौती, उछलकर उठाओ॥

भारत है देश सबकी

भारत है देश सबकी, शुभकामना जहाँ है।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, की प्रार्थना यहाँ है॥

ऋषियों ने विश्व मानव को, दृष्टि में रखा था।
सब प्राणियों में उनको, निज रूप ही दिखा था।।
माँगा सदा प्रकृति से, सबके लिए ही उनने।
वसुधा कुटुम्ब ही है, शुचि भावना यहाँ है।।
पीड़ित नहीं हो कोई, अज्ञान अभावों से।
निर्बल नहीं हो कोई, दुःख क्लेश कुभावों से।।
सुख बाँट, दुःख बँटाने, की प्रेरणा मिली है।
पर पीर से द्रवित हो, संवेदना यहाँ है।।
सद्ज्ञान के सहारे, भारत जगतगुरू था।

सोने की चिड़िया बनने, पुरुषार्थ कल्पतरु था।।
थाा शक्तिशाली इतना, थे देवता बुलाते।
अध्यात्म संग भौतिक, संयोजना यहाँ है।।
अब क्रान्ति विचारों की, अनिवार्य हो गई है।
विधि सप्तक्रान्तियों की, स्वीकार्य हो गयी है।।
हो देश मुक्त व्यसनों, आडम्बरों छलों से।
उज्ज्वल भविष्य वाली, वह सर्जना कहाँ है।।

मुक्तक:-

हे देवभूमि!, हे कर्मभूमि!, हे भारत तेरी जय हो।

बनें समुन्नत सुखी सभी जन, तेरी सदा विजय हो॥

माँ तेरे चरणों में

माँ तेरे चरणों में हम, शीश झुकाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर माँ, दो अश्रु चढ़ाते हैं॥
झंकार करो ऐसी माँ, सद्भाव उभर आयें।
हुंकार भरो ऐसी माँ, दुर्भाव उखड़ जायें॥
सन्मार्ग न छोड़ेगें माँ, हम शपथ उठाते हैं॥
यदि स्वार्थ हेतु माँगे माँ, दुत्कार भले देना।

जनहित हम याचक हैं माँ, सुविचार हमें देना॥
सब राह चलें तेरी माँ, तेरे जो कहाते हैं॥
वह हास हमें दो हे माँ, सारा जग मुस्काये।
जीवन भर ज्योति जले माँ, पर स्नेह न चुक पाये॥
अभिमान न हो उसका माँ, जो कुछ कर पाते हैं॥
विश्वास करो हे! माता, हम पूत तुम्हारे हैं।
बलिदान क्षेत्र के हे! माँ, हम दूत तुम्हारे हैं॥
कुछ त्याग नहीं अपना माँ, बस कर्ज चुकाते हैं॥

मुक्तक-

माता के चरणों में आओ, हम सब शीश झुकायें।
हीन, तुच्छ, संकीर्ण वृत्ति को, हम सब दूर भगायें।।
लोभ, मोह, अभिमान भाव को, आओ दूर करें हम।
हैं सपूत माता को हम सब, यह विश्वास दिलायें।।

माता तेरे चरणों में

माता तेरे चरणों में , स्थान जो मिल जाये।
यह जीवन धन्य बने, वरदान जो मिल जाये॥
सुनते हैं कृपा तेरी, दिन–रात बरसती है।

श्रद्धालु ही पाते हैं, दुनियाँ तो तरसती है॥
एक बूँद हमें दो माँ, किस्मत ही बदल जाये॥

ये मन बड़ा चंचल है, पूजन में नहीं लगता।
यह इतना भोला है, संसार इसे ठगता॥
समझायें इसे जितना, उतना ही मचल जाये॥
माँ के चरणों में तू, नित ध्यान लगाया कर।
पाना है मोक्ष अगर, उसमें खो जाया कर॥
मन में वह प्यार जगा, माँ में ही समा जाये॥

देवत्व के फूलों से, माता झोली भर दो।

सब दोष हटा दो माँ, बस निर्मल मन कर दो॥
जीवन भी सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाये॥

मुक्तक-

माता के चरणों में, शत्-शत् बार नमन है।
माता का दुलार पाये बिन, क्या जीवन है॥
माता हमें प्यार देना, सद्गुण भी देना।
माता के चरणों में, भाव भरा वन्दन है॥

माँ गायत्री प्रज्ञा माता

माँ गायत्री प्रज्ञा माता, दे दो हमें सहारा।
बेड़ा पार कीजिए, हमको तार दीजिए॥

दूर करो अज्ञान हे मैया, हंसारूढ़ भवानी।
वन-उपवन में फूल खिलाओ, मंगलमय कल्याणी॥
शरण गहें जो भक्त तुम्हारे, मिलता उन्हें सहारा॥

प्राण-प्राण वरदान विधाता, पावन शुचिता ओ सुखदाता।
सारे जग की तू है माता, अभयप्रदा, सुखदा, वरदाता॥
तेरे दर पे जो भी आता, पीता अमृत धारा॥

युग परिवर्तन की वेला है, कलुष कालिमा का खेला है।
अन्धकार, अज्ञान पला है, काम, क्रोध से मनुज जला है।।
ऐसा प्यार बहा दे मैया, स्वर्ग बने संसारा।।

मुक्तक-

दीजिए हमको सहारा, बेसहारा हो गये।
हैं विकारों से ग्रसित, अज्ञान तम में खो गये।।
आप हैं सद्बुद्धिदाता, माँ हमें सद्बुद्धि दो।
डूबतों को आपके, कर ही किनारा हो गये।।

माँ! जैसे भी हैं हम

माँ! जैसे भी हैं हम, पर पूत तुम्हारे हैं।
करुणा की मूर्ति मिलीं, सौभाग्य हमारे हैं॥
जब कोई न था अपना, तब तुमने दुलराया।
जब सबने ठुकराया, तुमसे दुलार पाया॥
विश्वास हुआ हमको, हम माँ के प्यारे हैं॥
हम थे अज्ञान ग्रसित, तुमने सद्ज्ञान दिया।
सद्भावों का अमृत, माँ हमने पान किया॥
तुमने संवेदन दे, गुण, कर्म सँवारे हैं॥

करुणा की मूर्ति! हमें, करुणामय कर देना।
माता भगवती हमें! भावों से भर देना॥
संवेदन बिना दु:खी, तो हिम्मत हारे हैं॥
हैं आप विश्वमाता, देवों की माता हैं।
हैं आप वेदमाता, दुखियों की त्राता हैं॥
हो द्रवित आपने ही, हर बार उबारे हैं॥
माँ गोद तुम्हारी तज, अब और कहाँ जायें।
माँ की गोदी जैसा, सुख और कहाँ पायें॥
माँ! तेरी ममता के, सुख तो बस न्यारे हैं॥

मुक्तक-

जब यह दुनियाँ ठुकरा दे, तो माँ ही आश्रय देती है।
हों पूत कपूत भले लेकिन, माँ तो बस माँ ही होती है।।
माँ तेरे चरणों की, हम आस लगाये हैं।
अरमान बड़े लेकर, तेरे दर पे आये हैं।।

माँ भगवती परमेश्वरी

माँ भगवती परमेश्वरी, शरणागतों को प्यार दो।
आदर्श पथ पर चल सकें, वह शक्ति और विचार दो।।

श्रद्धा सुमन स्वीकार लो माँ, आज पावन पर्व में।
सद्भाव हृदयों में भरो माँ, पुण्य जीवन सर्ग में।
तन-मन समर्पित कर सकें, माता यही उपहार दो।।
तेरे बिना माता हमारे, पाँव डगमग हो रहे।
जीवन समर में, लोकपथ पर, पुत्र धीरज खो रहे।
धैर्य दो माँ, शौर्य दो, अपने सुतों को तार दो।।
छोड़कर माँ पुत्र को तुम, हो कहाँ आभास दो।
थी साथ में हो साथ में माँ, फिर यही विश्वास दो।
आँसू भरे हैं नयन में माँ, पुत्र को माँ प्यार दो।।

मुक्तक-

हे माँ भगवती, हे कल्याणी, हे परमेश्वरी, तारिणी माँ।
जग उद्धारिणी स्नेह प्रदायिनी, निर्मल हृदय विहारिणी माँ।।

मनुज देवता बनें

मनुज देवता बने, बने यह, धरती स्वर्ग समान।
यही संकल्प हमारा।।
विचार क्रान्ति अभियान, इसी को कहते युग निर्माण।
यही संकल्प हमारा।।

द्वेष, दम्भ, छल मिटे यहाँ पर, न कोई भ्रष्टाचारी हो।
सभी सुखी हों सबका हित हो, जन-जन पर उपकारी हो।।
मिल जुलकर सब रहें प्रेम से, दें सबको सम्मान।।
यही संकल्प हमारा।।

भेदभाव हो दूर सिक्ख, हिन्दू, मुस्लिम ईसाई का।
परम पिता के पुत्र सभी का, नाता भाई-भाई का।।
सब ही एक समान सभी, जगदीश्वर की सन्तान।।
यही संकल्प हमारा।।

सदाचार अपनायें सब जन, प्रभु के साझेदार बनें।

अनाचार से नाता तोड़ें, नैतिक बनें उदार बनें।।
सादा जीवन बने सभी का, फैले फिर सद्ज्ञान।।
यही संकल्प हमारा।।

मुक्तक:-

मनुज देवता बने, यहाँ की धरती स्वर्ग समान बने।
श्रीराम सुखधाम देश की, फिर से ऊँची शान बने।।
डूबती मनु पीढ़ियों को, दे सहारा ज्ञान का।
स्वर्ग धरती पर उतारें, लक्ष्य युग निर्माण का।।

मिल न पाये सद्गुरु

मिल न पाये सद्गुरू यदि, मनुज तन पाने के बाद।
कौन दिखलायेगा पथ, गुरु बिन भटक जाने के बाद।।
    मातृवत देते हैं सद्गुरु, प्यार अपने शिष्य को।
    मार्गदर्शन पितृवत, उज्ज्वल बनाये भविष्य को।।
    शिष्य को निर्भय बनाते, शरण में आने के बाद।।
तप, तितिक्षा की कठिन, कुछ अंश हमको दे दिया।
और इतना ही नहीं, गुरु वंश हमको दे दिया।।
हो गये हैं धन्य, उनके वंश कहलाने के बाद।।

ज्ञान की गंगा बहाकर, पतित पावन कर दिया।
परिष्कृत चिन्तन-चरित कर, जन-लुभावन कर दिया।।
ऋणी जन्मों तक रहेंगे, ऋण चुका जाने के बाद।।

है परम सौभाग्य हमको, मिल गए ऐसे गुरू।
पा जिन्हें हम हो गए हैं, ब्रह्म के ही रूबरू।।
और फिर क्या शेष रहता, ब्रह्म को पाने के बाद।।

लोकमंगल के लिए ही, अंशदानी हम बनें।
लोकसेवा के लिये ही, समयदानी हम बनें।।
धन्य होंगे श्रेय-सुख, सम्मान को पाने के बाद।।

मानव जीवन इस जगती का

मानव जीवन इस जगती का, सर्वोत्तम उपहार।
जीवन के सब दोष हटाकर, लो तुम इसे सँवार॥
पथ चौरासी लाख बदलकर, राजपन्थ यह पाया।
पर मानव मन लक्ष्य भूल कर, सपनों में भरमाया॥
भूल गया आकर्षक मग में, मुझे कहाँ जाना है।
कहाँ हमारी मंजिल है, उसको कैसे पाना है॥
कर बैठा इन्सान राह के, प्रलोभनों से प्यार॥ जीवन...॥
मनुज देह यह शक्ति स्रोत, है जानो और पहचानो।

और चेतना शक्ति केन्द्र, विकसित करने की ठानो।।
पाँच आवरण ओढ़ सखे! जो सोया, उसे जगा लो।
अखिल विश्व की सब विभूतियाँ, घर बैठे ही पालो।।
आत्मदेवता का कर लो, साथी अभिनव संस्कार।। जीवन...।।

बन मनुष्य जिसने न मूल्य, इस जीवन का पहचाना।
उसे अन्त में मलकर हाथ, पड़ेगा ही पछताना।।
अन्तिम लक्ष्य समाप्त वहीं हो, जाती जहाँ डगर है।
यह अन्तिम पड़ाव यात्रा का, आगे प्रभु का घर है।।
आत्मज्ञान के बिना भला, होगा कैसे उद्धार।। जीवन...।।

मुक्तक-

दुर्लभ मनुष्य जीवन, यों ही निकल न जाये।
यह पुञ्ज शक्तियों का, देखो विफल न जाये॥
नर देह मिल गई है, कुछ अब तो कर दिखायें।
रत्नों की खान पाकर, कंगाल रह न जायें॥

महायज्ञ पर्व है

महायज्ञ पर्व है, यजन करो यजन करो।
यज्ञ योग्य भाव बुद्धि, कर्म का सृजन करो॥

विश्व का भविष्य हीन, अन्धकार ग्रस्त देख।
बुद्धि को विवेकशून्य, और अस्त व्यस्त देख।।
युगऋषि ने महायज्ञ का, विधान रच दिया।
सूक्ष्म जगत् पुनः दिव्य, मेधा से भर दिया।।
कामना पवित्र नयी, दृष्टि का सृजन करो।।
शक्ति है असीम किन्तु, ध्वंस में लगी हुई।
जीत रही क्रूरता, प्रीति है ठगी हुई।।
रचना की ओर पुनः, शक्ति आज मोड़ दो।
उसे दीन-हीनों की, रक्षा से जोड़ दो।।

अब पवित्र यज्ञ योग्य, शौर्य जागरण करो।।

धन का उपयोग आज, व्यसनों में होता है।
श्रमिक वर्ग जीवन भर, बस अभाव ढोता है।।
लक्ष्मी का प्यार सभी, बच्चों को पाने दो।
धन को युगधर्म हेतु, अब तो लग जाने दो।।
शोषण को छोड़, देववृत्ति का चयन करो।।

मानव की बुद्धि हीन, विद्या में व्यस्त है।
रचती रहती कुचक्र, लोभ-मोह ग्रस्त है।।
ज्ञानयज्ञ हेतु, बुद्धि फिर से तैयार हो।

जीवन में सद्विवेक, का फिर संचार हो॥
छोड़कर कुबुद्धि, दिव्यभाव का वरण करो॥

मुक्तकः-

विकृत चिन्तन भटक रहा है, अन्धकार अज्ञान में।
शक्ति और साधन खपते हैं, केवल ध्वंस विधान में॥
करने दूर विचार प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण को।
फिर से हम यज्ञीय चेतना, को फैलायें जहान में॥

माँ तू हम सबको वर दे

माँ तू हम सबको वर दे।
भटक रहे थे हम निज भ्रम में, भौतिकता की चमक दमक में।
भूले भटके डगर-डगर में, अब आये माँ तेरी शरण में।।
माँ तू पार हमें कर दे।।
महिमा तेरी ऋषि मुनि गायें, प्रभु भी तेरा ध्यान लगायें।
जो भी साधक तुझको ध्यायें, दीपक बनकर राह दिखायें।।
माँ तू जग,जगमग कर दे।।
ज्योतित पावन नाम तुम्हारा, कण-कण में है वास तुम्हारा।

जब-जब संकट भू पर छाया, तब-तब आकर इसे मिटाया।।
माँ तू सबको वर्चस् दे।।
युग परिवर्तन के इस क्षण में, दिव्य शक्ति के संरक्षण में।
करें प्रतिज्ञा हम सब मिलकर, स्वर्ग उतारें इस धरती पर।।
माँ तू वह साहस भर दे।।

मुक्तक-

जन्म दिया माता ने हमको, वह ही मुक्ति दिला पाएगी।
यदि अच्छे संकल्प करेंगे, तब वह शक्ति लगा पाएगी॥

महाकाल की चली सवारी

महाकाल की चली सवारी, चलो! साथ हो जायें।
यह परिवर्तन की वेला है, युग परिवर्तन लायें॥
    महाकाल के चरण थिरकते, हैं देखो! द्रुतगति से।
    महाकाल की चाल सम्भाले, सम्भल रही न प्रगति से॥
    विकृतियों की छाती पर, हो रहा कि ताण्डव नर्तन।
    अब अनीति, अत्याचारों का, होगा निश्चित मर्दन॥
    महाकाल के गण जैसे ही, हम भी कदम बढ़ायें॥
गूँज रहे धरती नभ में, जय महाकाल के नारे।

महाकाल के तेवर के, देखो तो तनिक इशारे॥
पाप पतन के डेरों में, अब हाहाकार मचा है।
महाकाल की कुपित दृष्टि से, कोई नहीं बचा है॥
पाप वृत्तियों को जन-मन से, आओ मार भगायें॥

दुष्प्रवृत्तियों दुश्चिन्तन को, छोड़ सकेंगे जो भी।
हो जायेंगे महाकाल के, संगी-साथी वो ही॥
काम-क्रोध के, लोभ-मोह के, आओ बन्धन तोड़ें।
महाकाल की सत्प्रवृत्तियों से, अब नाता जोड़ें॥
महाकाल के गण बनने की, हिम्मत चलो जुटायें॥

महाकाल संकल्पित है, नवयुग प्रज्ञायुग होगा।
अशिव भाव अब टिक न सकेंगे, जन-जीवन शुभ होगा॥
परिवर्तन का चक्र चल रहा, सभी बदल जायेंगे।
जो न बदल पायेंगे, अपने आप कुचल जायेंगे॥
गूँज उठे हैं डमरू के स्वर, जागें और जगायें॥

मुक्तक-

महाकाल का शंख बज गया, समय बदलने वाला है।
मत संशय में समय गँवाओ, यह कब रुकने वाला है॥
बड़ा कीमती है यह क्षण-क्षण, अरे समय क्यों हो खोते।

फिर मत कहना हमें समय पर, सावधान तो कर देते।।

माँ इतनी कृपा कर दे

माँ इतनी कृपा कर दे, बस इतनी दया कर दे।
इन्सान का दिया तन, इन्सानियत भी भर दे॥
माँ अगणित विभूतियाँ दे, तूने हमें बनाया।
सब कुछ तो याद रखा, हमने तुझे भुलाया।
सब ओर तुझे देखें, बस ऐसी नजर कर दे॥
माँ तेरे दर से हटकर, भटके हैं बहुत हम भी।

थक भी बहुत गये हैं, भोगे हैं बहुत गम भी।
अब नेक रास्ते पर, चलने की शक्ति भर दे॥
माँ दुःख दर्द को पतन को, धरती से मिटा देंगे।
सपनों को तेरे माता, सच करके दिखा देंगे।
बलिदानियों सी हिम्मत, दिल में हमारे भर दे॥

मुक्तक-

तुझसे मानव तन पाकर माँ, माँग रहे हम यह वरदान।
देश, धर्म, संस्कृति के खातिर, हो जायें हँस-हँस बलिदान॥

माँ उमड़ती जब हृदय में

माँ उमड़ती जब हृदय में, सजल सलिला स्नेहधारा।
और भी संकल्प दृढ़, होता चला जाता हमारा॥
हम हृदय भारी लिए, जब भी गये द्वारे तुम्हारे।
या अनेकों परिचितों के, बीच बनकर बे सहारे॥
दु:ख अकेलापन हृदय का, सब भुलाकर लौट आये॥
यूँ तुम्हारे स्नेह की, शीतल फुहारों में नहाये॥
मातृ ममता के मलय, भीगे पवन का पा सहारा॥
पूज्य गुरुवर का सहज, संकेत अब आदेश होगा।

अब तितिक्षा–त्याग–तप, वाला बसन्ती वेश होगा॥
अब इसी सद्‌वेश में हर, द्वार–घर तक जायेंगे हम॥
ज्ञानगंगा में समूचे, विश्व को नहलायेंगे हम॥
मातृ–भू ने देवसंस्कृति, के लिए है कर पसारा॥

है समय थोड़ा मगर, उतने अधिक श्रम से बढ़ेंगे।
माँ! उमंगों से भरेंगे, किन्तु संयम से बढ़ेंगे॥
रोक पायेंगी नहीं, शीतल सघन अमराइयाँ भी॥
टोक पायेंगी न, पथरीली डगर या खाइयाँ भी॥
क्योंकि हर भटकाव से, हमको बचाता पथ तुम्हारा॥

अब गुलाबी रंग प्राची में, क्षितिज पर छा रहा है।
हर थका पग लक्ष्य पाने, को पुनः अकुला रहा है॥
अब धरा, नभ में न तम की, कष्टप्रद कारा रहेगी।
चेतना, उल्लास, आशा, की सतत् धारा बहेगी।
आज प्राणों की समर्पित, सतत् अपनी वसोधारा॥

माँ की ममता पीकर गुरुवर

माँ की ममता पीकर गुरुवर, हमने कर ली है तैयारी।
महाक्रान्ति हित हम जूझेंगे, कार्य करेगी शक्ति तुम्हारी॥

पुत्र तुम्हारे हैं इस नाते, प्यार अनुग्रह जी भर पाया।
लेकिन अब मन तड़प रहा है, दर्द आपका नहीं बँटाया॥
तुम तो अपना काम कर गये, आयी आज हमारी बारी॥
वेदमूर्ति तुम बने महाप्रभु!, वेददूत हम बन जायेंगे।
ज्ञान ज्योति जागृत की तुमने, उसको घर-घर पहुँचायेंगे॥
रामबाण यह औषधि पीकर, रोग मुक्त हो दुनियाँ सारी॥
तपोनिष्ठ तुम बने तपोनिधि, तपकर हम भी पूत बनेंगे।
संस्कृति की सीता की खातिर, पवनपुत्र से दूत बनेंगे॥
पर धन पत्थर जैसा मानें!, माता सम जाने हर नारी॥

तुम उज्ज्वल भविष्य रचते हो, हम उज्जवल चरित्र रच पायें।
श्रद्धा-प्रज्ञा रूप तुम्हारा, प्रतिपल हम मन में रख पायें॥
प्राण होम युग धर्म निभायें, बन जायें ऐसे व्रतधारी॥

मानवता का पतन देखकर

मानवता का पतन देखकर, आज धरा अकुलाई है।
देव शक्तियों ने मिल जुलकर, दुर्गा शक्ति जगाई है॥
जब-जब डगमग हुई धर्म की, नाव भँवर में ज्वारों में।
विविध रूप में तब भगवन! तुम, प्रकट हुए अवतारों में॥

रघुनायक बन अत्याचारी, रावण यहाँ पछाड़ा था।
ईश्वर निष्ठा के अभाव में, दम्भ कंस का मारा था॥
शाश्वत यही, कहानी प्रभु ने, हर युग में दुहराई है॥
मानवता को त्राण मिला था, गौतम के सन्देशों में।
धर्म चेतना का विस्तार हुआ था, देश विदेशों में ॥
संस्कार से रहित मनुजता, पुनः लक्ष्य पथ भूली है।
पलभर का कुछ पता नहीं, पर भौतिकता में फूली है॥
इस युग में भी, प्रज्ञावतार बन, ईश चेतना आई है॥
वानर रीछ गिलहरी बनकर, जो भी कदम बढ़ायेगा।

सेतु राम बाँधेंगे निश्चित, पुण्य वही पा जायेगा॥
उठना है गोवर्धन लेकिन, लाठी जरा लगा लो तुम।
प्रभु के सहयोगी बनने का, श्रेय सहज ही पा लो तुम॥
उठो तुम्हारे, इम्तहान की, आज घड़ी यह आई है॥
नवयुग का मत्स्यावतार यह, पल-पल बढ़ता जाता है।
शत सहस्र से कोटि-कोटि बन, अपना ओज दिखाता है॥
विश्वरूप होगा यह कल को, ऋषि ने हमें बताया है।
इसीलिए यह महायज्ञ का, अनुष्ठान करवाया है॥
मिलना ही है, श्रेय उन्हीं को, जिनने की अगुवाई है॥

कल का समय नहाया होगा, स्वर्णिम सुखद उजालों में।
अँधियारे का नाम न होगा, अनगिन जली मशालों में॥
धार बहेगी मानवता की, मरुथल में मैदानों में।
आदर्शों के फूल खिलेंगे, चिन्तन के उद्यानों में॥
अपनायेंगे, वही राह जो, युगऋषि ने दिखलाई है॥

मुक्तक-

धरती फिर तिलमिला उठी है, पाप पतन के भार से।
आश लगाई मानवता ने, कोई युग अवतार से॥
फिर प्रज्ञावतार हुआ है, मानवता की मुक्ति को।

देवसंस्कृति निकल पड़ी है, जगती के उद्धार को॥

मेरे घटवासी राम

मेरे घटवासी राम–मेरे घटवासी राम
श्वाँस न कोई खाली जाए, परहित में जीवन लग जाये।
भूल न जाऊँतेरा नाम, मेरे घटवासी राम॥
    मन में निर्मल रहे भावना–रुके न क्षण भर कर्म साधना।
    फल में सदा रहूँ निष्काम ....मेरे घटवासी राम॥
दु:ख में जलूँ न, सुख में फूलूँ–अपना शुभ कर्त्तव्य न भूलूँ।

लक्ष्य पूर्ति कर लूँ विश्राम ....मेरे घटवासी राम॥

मुक्तक-

कस्तूरी कुण्डल बसे-मृग ढूँढ़े वन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं-दुनियाँ देखे नाहिं॥

मंगल कलश सजाकर

मंगल कलश सजाकर निकलीं, ये भारत की नारियाँ।
घर-घर यज्ञ रचाने की अब, करती हैं तैयारियाँ।।
भारत माता की ये बेटी, गायत्री माँ की प्यारी।

ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने, निकली हैं मिलकर सारी।।
हर प्राणी के जीवन में, भर देती हैं उजियारियाँ।।
कदम न इनके रूकने पायें, ऐसी शक्ति इन्हें दो माँ।
भेदभाव को दूर करें यह, ऐसी भक्ति इन्हें दो माँ।।
हर मानव के जीवन की यह, मिलकर सींचें क्यारियाँ।।
इस धरती पर जन्म लिया, जिस धरती पर माँ अनुसुइया।
जिस धरती की रक्षा करती, रहती हैं गंगा मइया।।
कलयुग में सतयुग लाने की, करती हैं तैयारियाँ।।
मातु भगवती की ये बेटीं, गायत्री माँ की शक्ति।

सीता माँ के पद्चिन्हों की, मीराबाई की भक्ति।।
यज्ञ पिता-गायत्री माता की, हैं राजदुलारियाँ।।

मुक्तक-

सजाकर कलश जो निकलीं, यही हैं क्रान्ति की ज्वाला।
बनीं दुर्गा, यही काली, असुरता को मिटा डाला॥
पुनः देवत्व को धरती पे, लाने आज ये निकलीं।
शक्तियाँ साथ हैं इनके, हाथ सिर पर कृपा वाला॥

मिले गुरु से अनुदान उदार

मिले गुरु से अनुदान उदार, पिया जी भर कर माँ का प्यार।
कि जीवन भर-2 इस एहसान को, हम भुला न पायेंगे।।

सहकर कष्ट अनेक देव ने, हममें किया सुधार।
धोए दोष प्रेम से माँ ने, सब को दिया दुलार।।
उठ रहे मन में यह उद्‌गार, रचेंगे नया देव परिवार।
कि इस भू पर-2 फिर से, स्वर्गधाम का गौरव लायेंगे।।

ज्योति बने हैं प्राण हमारे, माँ की ममता तेल।
यश पाते लघु प्राण दीप हम, धन्य प्रभु का खेल।।

जलेंगे मन में ले उल्लास, भले ही जग कर ले उपहास।
कि हम घर-घर-2 जाकर, प्रज्ञा का आलोक जगायेंगे।।
सोया पौरुष जाग उठा, जब तुमने दी ललकार।
बिखरा था सद्भाव हमारा, माँ ने दिया सँवार।।
रहा है युग देवता पुकार, बढ़ेंगे चीर मोह की धार।
कि, इस युग को-2 ही हम, सतयुग का आधार बनायेंगे।।
पीड़ा पतन मिटा देने की, तुमने शपथ उठाई।
छूकर दर्द तुम्हारा हमको, राह तुम्हारी भाई।।
रचेंगे हम नूतन अभियान, भले ही हो जावें बलिदान।

कि, बलि होकर-2 भी हम कर्ज़, तुम्हारा चुका न पायेंगे।।

मुक्तक-

तेरे दरबार में गुरुवर, निराली शान यह देखी।
तुम्हारे प्यार की हमने, अनोखी बानगी देखी।।
पसारा जिसने कर अपना, तेरे दरबार में आकर।
तुझे देते नहीं देखा, मगर झोली भरी द९खी।।

मातृभूमि की माटी लेकर

मातृभूमि की माटी लेकर-बढ़ो सृजन सेनानी।

भारत माँ के गौरव की फिर–रच दो नयी कहानी॥
भूमि का कर्ज चुकाने चलो–नया सौभाग्य जगाने चलो।
दिग्विजय का आया है पर्व–उठो अब अवसर मत चूको॥
देवसंस्कृति घर–घर में, अब स्थापित करना है।
लगे प्राण की बाजी फिर भी, हमें नहीं डरना है॥
हे! भारत के वीर सपूतों, अब तुम आगे आओ।
संस्कृति की दिग्विजय हेतु तुम, जौहर फिर दिखलाओ॥
संस्कृति के इस महासमर के, बन जाओ बलिदानी॥
महाकाल ने महाक्रान्ति की, है आवाज लगाई।

हमने उसको सफल बनाने, की है शपथ उठायी॥
बिगुल बजाकर गाँव-गाँव, घर-घर इसको पहुँचाओ।
ले लो श्रेय देव बन जाओ, अब न तनिक सकुचाओ॥
वसुन्धरा पर गूँज उठे, प्रज्ञावतार की वाणी॥

लाल मशाल हाथ में लेकर, जागृति शंख बजाओ।
भारत माँ का खोया गौरव फिर से वापस लाओ॥
अत्याचार, अनीति, पाप का, कर दो पूर्ण सफाया।
बढ़ो निडर कह दो दुनियाँ से, देवदूत है आया॥
बिना रूके पहुँचो मंजिल तक, सच्चे युग निर्माणी॥

महाकाल का है आवाहन, पीछे मत हट जाना।
समय चूकने पर तो होगा, बस पीछे पछताना॥
चाहो तो संकल्प जगाकर, कुछ भी कर सकते हो।
थोड़े श्रम से इस जीवन को, धन्य बना सकते हो॥
उठो पार्थ फिर याद करो, तुम गीता वाली वाणी॥

मुक्तक–

है अधीर मानवता देखो–उसको धैर्य बँधाना है।
स्वार्थ भरी आपा–धापी से–जग को आज बचाना है॥
सुनो दिग्विजय हेतु–देवसंस्कृति ने शंख बजाया है।

सृजन सैनिकों आगे आओ–युद्ध निमन्त्रण आया है ॥

मातेश्वरी वर दे हमें

मातेश्वरी वर दे हमें, तेरे चरण का प्यार दे।
भवबन्ध के तूफान से, हे वेदमाता तार दे।।
हंसासिनी पद्मासिनी, पावन कमण्डल धारिणी।
शुभ वस्त्र, कर में वेद पावन, सद्गुणों का हार दे।।
माँ काट दे अज्ञान को, उर में तेरा ही प्रकाश हो।
हर हृदय में ध्यान तेरा, मान दे सम्मान दे।।

प्रज्ञेश्वरी माँ तेरे बालक, विनती करें कर जोड़ के।
दीजै हमें सद्बुद्धि माता, आज अपने द्वार से।।

मुक्तक-

हंस वाहिनी वेदमाता, हंस-सा निर्मल हृदय हो।
काटने अज्ञान तम को, ज्ञान का सूरज उदय हो।।
आपका माँ प्यार पायें, बालकों की यह विनय है।
आपके चरणारविन्दों, में हमें कोई न भय हो।।

महाकाल को नये सृजन का

महाकाल को नये सृजन का, नव अभियान रचाना है।
नारी को फिर विश्व मंच पर, करतब नये दिखाना है॥

कीर्तिमान नारी के अगणित, उनका कौन करे लेखा।
इसकी सृजन शक्ति के आगे, देवों को झुकते देखा॥
अनुसुइया बनकर मन्दाकिनि को, धरती पर ले आयी।
सावित्री बन सत्यवान को, यम से सहज छुड़ा लायी॥
कहाँ खो गई वह गरिमा? अब, उसको पुनः जगाना है॥

राम बिना सीता लवकुश को, संस्कार दे सकती है।

कुन्ती बिना पाण्डु के भी, निज पुत्रों को गढ़ सकती है॥
शकुन्तला अपने बलबूते, भरत ढाल दिखलाती है।
मदालसा चारों पुत्रों को, जीवन मुक्त बनाती है॥
मातृशक्ति के बिना सृजन का, दिखता नहीं ठिकाना है॥

तर्क छिड़ा मण्डन–शंकर में, न्यायाधीश भारती थी।
युद्ध छिड़ा जब कृष्ण–पार्थ में, कृष्णा बनी सारथी थी॥
कहीं भामती मौन साधना से, सद्ग्रंथ लिखाती है।
कभी अहिल्याबाई बनकर, शासन तंत्र चलाती है॥
निज प्रतिभा से नये सृजन का, नव दायित्व निभाना है॥

भावशून्यता ने दुनियाँ को, नर्क बनाने की ठानी।
हृदयहीनता को आगे कर, ध्वंस कर रहा मनमानी ॥
महाकाल ने सृजन साधना का, अब शंख बजाया है।
इसीलिए सद्भाव मूर्ति, नारी को पुनः जगाया है॥
मातृशक्ति को नये सृजन में, प्रभु का हाथ बँटाना है॥

मुक्तक-

महाकाल ने नूतन युग को "नारी युग" का नाम दिया।
क्योंकि पुरुष के अहंकार ने, दंभ, द्वेष का काम किया॥
फिर से अनुसुइया, मदालसा, सीता, सावित्री चेतें।

क्योंकि पुरुष के पाप–पतन ने कलियुग को बदनाम किया॥

मोर्चे जब जवानी स भाले

मोर्चे जब जवानी सम्भाले, हर समस्या समाधान पाती।
कोई मंजिल असंभव न रहती, जब जवानी कदम को बढ़ाती।
पृष्ठ इतिहास के देखिए तो, दास्तां पर नजर फेंकिए तो।
बस जवानी का जौहर दिखेगा, हर मुसीबत को ठोकर लगाती।।
आँधियाँ रुख़ बदलती दिखेंगी, व्याधियाँ हाथ मलती दिखेंगी।
रौंदते देखिए कण्टकों को, देखिएगा उसे मुस्कुराती।।

राष्ट्र घातक विधाएँ मिटाओ, राष्ट्र निर्माण का प्रण उठाओ!
क्यों नहीं ज्ञान की ले मशालें, राष्ट्र की चेतना जगमगाती।।
चोट फिर राष्ट्रीय भाव पर है, राष्ट्र की अस्मिता दाँव पर है।
राष्ट्र की वेदना छटपटाकर, ऐ! जवानी तुझे है बुलाती।।

मुक्तक-

जवानी आँधियों तूफान से ही, बात करती है।
जवानी मौत भी हो सामने, दो हाथ करती है।।
जवानी जब करे संकल्प, तो नूतन सृजन होता।
मनुज में देव भू-पर स्वर्ग, का श्रृंगार करती है।।

मुसीबत कितनी ही आये

मुसीबत कितनी ही आये, नाम मत रुकने का लेना।
हृदय में रखना दृढ़-विश्वास, ज्योति कुछ दुनियाँ को देना॥
पंथ है माना पथरीला, हजारों बीहड़ बाधायें।
पड़ेंगे दुर्गम नदी पहाड़, और तूफानी झंझायें॥
बिजलियाँ तुम्हें डरायेंगी, कड़क कर शोर मचायेंगी।
प्रलय घन सी छा जायेंगी, हजारों तुम पर विपदायें॥
पाँव में छाले पड़ जायें, नाम मत झुकने का लेना।
न मन में होना कभी-निराश, ज्योति कुछ दुनियाँ को देना॥

छोड़कर पीछे, निकल गये, तुम्हारे साथी सब आगे।
रहे तुम अब तक सोये पड़े, नींद से सखे! न क्यों जागे॥
अगर अब भी रह जाओगे, बहुत पीछे पछताओगे।
तीव्र गति से मंजिल की ओर, अभी भी अगर नहीं भागे॥
तुम्हें कितना ही ललचायें, नाम मत रुकने का लेना।
रहे उज्ज्वल भविष्य की आश, ज्योति कुछ दुनियाँ को देना॥
जिन्दगी एक कठिन संग्राम, विजय इसमें उसने पाई।
रहा जिसको ''आराम–हराम'' बिना श्रम नींद नहीं आई॥
उठो, कुण्ठाओं को छोड़ो, समय के साथ चलो दौड़ो।

अगर पग ढीला छोड़ दिया, रोक देगी कोई खाई॥
पड़े कितनी ही विपदायें, हार का नाम नहीं लेना।
बने तब अजर–अमर इतिहास, ज्योति कुछ दुनियाँ को देना।

महकना फूल सी बनकर

महकना फूल सी बनकर, कँटीली डाल पर खिल तुम।
निभाना लाज मर्यादा, सदा बहना पिता की तुम॥
ससुर हैं अब पिता तेरे, समझना सास को जननी।
जेठानी, देवरानी को, समझना पूज्य लघु भगिनी॥

पिता सम जेठ–देवर को, समझना प्रीति का धन तुम॥
ननद यदि रूठ भी जाये, मनाना तुम उसे हँसकर।
सदा रखना हृदय निर्मल, सभी से प्रेम निश्छल कर॥
रहें अनुचर सदा वश में, न करना क्रोध उन पर तुम॥
बड़ों की कर सदा सेवा, जताना प्यार छोटों पर।
हृदय देकर के तू पति का, निभाना साथ जीवन भर॥
बनाकर देवता उनको, दिखाना पन्थ उत्तम तुम॥
न सुख में फूल अति जाना, न दुःख में व्यग्र हो जाना।
सदा सन्तुष्ट रह करके, विजय के गीत नित गाना॥

बना करके सरस जीवन, मधुर रसधार भरना तुम॥
बढ़े सौभाग्य, कुलकीर्ति, ये शुभ हो कामना तेरी।
अमंगल दूर हों सारे, सफल हो साधना तेरी॥
बढ़े विश्वास, श्रद्धा, भक्ति का श्रृंगार करना तुम॥
न तजना संस्कृति अपनी, न तजना सभ्यता प्यारी।
जहाँ जाओ सुखी रहना, फलो-फूलो सुता प्यारी॥
अलंकृत सद्गुणों से रह, बिताना दिव्य जीवन तुम॥

मन्दिर समझो-मस्ज़िद समझो

मन्दिर समझो, मस्ज़िद समझो, गिरजा समझो या गुरुद्वारा।
यह युग निर्माण का मन्दिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सब एक डोर से बँधे यहाँ।
यहाँ ऊँच-नीच का भेद नहीं, सबका है बराबर मान यहाँ॥
यह विश्व प्रेम का मन्दिर है, हर जन है यहाँ सबको प्यारा॥

साधन आराधन अर्चन में, जो मिलकर हाथ बँटाते हैं।
वे धर्म, अर्थ और काम, मोक्ष का, लाभ सहज ही पाते हैं॥
यहाँ भक्ति-प्रेम के संगम की, बहती है सदा निर्मल धारा॥

निष्काम भाव से जो आकर, चरणों में शीश झुकाते हैं।
समझो कि बिना कुछ माँगे ही, पल में सब कुछ पा जाते हैं।
पावन चरणों में लोट रहा, जल, थल, नभ का वैभव सारा॥
यहाँ वेद पुराण कुरान, बाइबिल पर चर्चाएँ होती है।
हर देश–प्रदेश कि भाषायें, इस मंच से मुखरित होती है॥
यह सर्वधर्म का महामंच, हर धर्म यहाँ सबको प्यारा॥
यहाँ रामचरित और गीता की, अमृत–सी वर्षा होती है।
माँ गायत्री के मन्त्रों की, पावन ध्वनि गुँजित होती है॥
नित राग, रंग, रस निर्झर की, बहती उन्मुक्त विमल धारा॥

मुक्तक–

इधर मन्दिर उधर मस्ज़िद, ये गुरुद्वारा वहाँ गिरजा।
ये चारों घर प्रभु के हैं, जिधर चाहे उधर को जा॥
मजहब नहीं सिखाता–आपस में बैर रखना।
इन्सान को जहाँ में–इन्सान बन के रहना॥

मन रे बन जा कुशल

मन रे बन जा कुशल किसान।
मानव जीवन खेत है उर्वर–अवसर को पहचान॥

भूमि बहुत बढ़िया दी प्रभु ने–इसको खेत बना ले।
फसल समय पर बोये काटे–जो चाहे सो पा ले॥
इस सुविधा का लाभ उठा ले–मत बन तू नादान ॥
आदिशक्ति के अनुशासन से–घेरा बन्दी कर ले।
इससे फसल सुरक्षित होगी–श्रद्धा भीतर भर ले॥
यम भी इसको तोड़ न पाते–कहते सभी सुजान ॥
गुरु ने जो उपदेश दिये हैं–उनको बीज बना ले।
अपने खेत में बोकर उनको–फसल श्रेष्ठ उपजाले॥
इसमें उपजें ऋद्धि,सिद्धियाँ–ज्ञान और विज्ञान॥

खेत भले हो सबसे अच्छा–बीज श्रेष्ठ हो भाई।
खर–पतवार उगेगा निश्चित–करते रहो निदाई॥
अगर निराई से चूका तो–भोगेगा नुकसान॥
नर तन रूपी खेत न हरदम–तेरे पास रहेगा।
आज नहीं तो कल दाता ही–वापस यह ले लेगा॥
लगन लगाकर फसल उगा ले–बात हमारी मान॥

मुक्तकः–

फसल उगाई बहुत मनुज ने–फिर भी रहा विपन्न।
यदि जीवन की फसल उगायें–तो हो जायें धन्य॥

मनुजता विकल है

मनुजता विकल है लुटी जा रही है,
पतन की कहानी यहीं रोक दो माँ॥
किसे हम पुकारें, किसे हम निहारें,
हमारे लिये बस तुम्हीं एक हो माँ॥

तुम्हीं से मिली जिन्दगी इस मनुज को,
भटकते न जाने कहाँ घूमते हैं।
सभी कुछ इन्हें याद रहता जगत में,
हुआ क्या इन्हें जो तुम्हें भूलते हैं॥

करी है कपूती सो दुःख पा रहे हैं,
मगर आप थामो इन्हें राह दो माँ॥
मिली बुद्धि तुमसे इन्हें माँ अनोखी,
उसी से स्वयं को ठगे जा रहे हैं।
मिली शक्ति भारी तुम्हीं से इन्हें जो,
उसी से स्वयं पर कहर ढा रहे हैं॥
अरे कौन समझाए इन पागलों को,
इन्हें तो पकड़कर तुम्हीं सीख दो माँ॥
करोगी तुम्हीं पर हमें साथ ले लो,

सृजन मोरचे पर चरण रोप देंगे।
तुम्हारा दिया कुछ हमें भी मिला है,
सृजन यज्ञ में हम उसे झोंक देंगे॥
जियें या मरें माँ तुम्हारे ही बनकर,
हमें एक ऐसी अडिग चाह दो माँ॥

माँ बस यह वरदान

माँ बस यह वरदान चाहिए, अपनेपन का भान चाहिए।
जीवन पथ जो कण्टकमय हो, विपदाओं का घोर वलय हो।

किन्तु कामना एक यही बस, प्रतिपल पग गतिमान चाहिए॥
माँ बस यह.......... ॥

हास मिले या त्रास मिले, विश्वास मिले या फाँस मिले।
गरजे क्यों न काल ही सन्मुख, जीवन का अभिमान चाहिए॥
माँ बस यह.......... ॥

जीवन के इन संघर्षों में, दुःख कष्ट के दावानल में।
तिल-तिलकर तन जले न क्यों फिर, होठों पर मुस्कान चाहिए॥
माँ बस यह.......... ॥

कण्टक पथ पर गिरना चढ़ना, स्वाभाविक है हार जीतना।

उठ-उठकर हम गिरें, उठें फिर, पर गुरुता का ज्ञान चाहिए॥
माँ बस यह.......... ॥

स्वार्थ भाव का क्षण-क्षण क्षय हो, निज पीड़ा का कभी न भय हो।
जल-जल कर जीवन दूँ जग को, बस इतना सम्मान चाहिए॥
माँ बस यह.......... ॥

मुक्तक-

माँ श्रेष्ठ आचरण हों, वह भक्ति हमें दे दो।
हम स्वाभिमान से जिएँ, वह शक्ति हमें दे दो॥
बाधाओं व व्यवधानों से, घबराएँ हम नहीं माँ।

आदर्श, आस्थाओं में, अनुरक्ति हमें दे दो॥

माँ शारदे वर दे हमें

माँ शारदे वर दे हमें, तेरे चरण का प्यार दे।
भवबन्ध के तूफान से, माता तू हमको तार दे॥
हंसासिनी, पद्मासिनी, हे वीणावादिनि शारदे।
शुभ वस्त्र धारिणि माँ हमें, वरदान दे माँ शारदे॥
माँ काट दे अज्ञान को, उर में तेरा ही प्रकाश हो।
हर हृदय में ध्यान तेरा, मान दे सम्मान दे॥

हे सरस्वती माँ तेरे बालक, विनति करें कर जोड़ के।
दीजे हमें सद्बुद्धि माता, आज अपने द्वार से॥

मुक्तक–

आओ सरस्वती माँ के, चरणों में नमन करें।
हंसवाहिनी के वाहन के, गुण को वरण करें॥
मन को निर्मल बना, बनाएँ मन्दिर माता का।
करें श्रेष्ठ चिन्तन, जीवन में सद् आचरण करें॥

यह राह नहीं है फूलों की

यह राह नहीं है फूलों की, काँटे ही इस पर मिलते हैं।
लेकर के दर्द जमाने का, बस हिम्मत वाले चलते हैं॥

कब किसने कहा था ईसा से, तुम सूली के सोपान चढ़ो।
किसने सुकरात को समझाया, विष के प्याले की ओर बढ़ो॥
जिसने असली आवाज सुनी, उसने यह मंजिल खुद ही चुनी।
युग-प्रहरी के उर के स्वर ही, बनकर तूफान मचलते हैं॥
लेकर के दर्द जमाने ...॥

थी कौन कमी उस गौतम को, जिसने वह वैभव छोड़ा था।

मंसूर ने बनकर दीवाना, किस हुश्न से नाता जोड़ा था।।
थी रात अँधेरी फिर भी चले, आघात सहे, पथ से न टले।
इन दर्द भरे पद चिन्हों पर, पूजा के सरसिज खिलते हैं।।
लेकर के दर्द जमाने...।।

आज़ाद, भगतसिंह, बिस्मिल ने, भी राह यही अपनाई थी।
इसमें ही गाँधी बापू ने, सीने पे गोली खाई थी।।
कुछ और भले ही मत मानो, पर कीमत अपनी पहचानो।
बलिदान के साँचे में सच्चे, इन्सान के सिक्के ढलते हैं।।
लेकर के दर्द जमाने ...।।

जीने को जिया करते हैं यहाँ, पशु, पक्षी, कीट, पतंग सभी।
इतिहास के गुलशन में लेकिन, आता बासन्ती रंग तभी।।
जब ऐसा माली आता है, जो जीते जी गल जाता है।
बरसों तपती है जो माटी, उसमें से रत्न निकलते है।।
लेकर के दर्द जमाने ...।।

मुक्तक-

काटों के पथ पर चलना है, जन सेवा कोई खेल नहीं।
जनहित में मरने वालों का, फूलों से कोई मेल नहीं।।
कायर ही क्षण-क्षण मरते हैं, बलिदानी मरते एक बार।

भोगों से मुक्ति अरे पाओ, मानव जीवन है जेल नहीं॥

याद हमको आ रहे हो

याद हमको आ रहे हो, बन्द दोनों ही नयन में।
कष्ट में, दुःख की घड़ी में, हे प्रभो! रखना शरण में॥
जब हमें पीड़ा सताती, हम तुम्हें हैं याद करते।
जगत से जब हार जाते, तब तुम्हारा ध्यान धरते॥
भूल जाएँ हम भले ही, आप रखना प्रभु! चरण में॥
आज मेरा हृदय व्याकुल, दर्दमय अंतःकरण है।

आप हैं सर्वस्व गुरुवर, आपका करते वरण हैं।।
आप का ही ध्यान करते, भगवती के अवतरण में।।

अवतरण का पर्व गुरुवर, आपको सर्वस्व अर्पित।
शिष्य हम संकल्प लेते, चरण में हम हैं समर्पित।।
आप ही बसते हमारे, नयन में अंतःकरण में।।

मुक्तक-

हे मेरे गुरुदेव! भगवन, तुमको आज नमन है।
गायत्री स्वरूप हे गुरुवर, चरणों में वन्दन है।।

यदि तुम अपना मन धो लो

यदि तुम अपना मन धो लो, यह जग निर्मल हो जाये।
जो स्वयं बहुत निर्बल है, औरों को क्या बल देगा।
गिर पड़े स्वयं, कैसे वह, गिरतों को थाम सकेगा॥
औरों को पार लगाये, हो अगर प्रबल अभिलाषा।
जब स्वयं तैरना सीखो, तो पूर्ण हो सके आशा॥
नव गतिविधियाँ अपना लो, तो नवल सृजन हो जाये॥
तुम सबको अपनालो तो, सब तुमको अपनायेंगे।
तुम नहीं डरो बाधा से, सब निर्भय हो जायेंगे॥

इच्छा हो–सभी सुखी हों, तो गीत खुशी के गाओ।
यदि करना है दीवाली, आगे बढ़ दीप जलाओ॥
तुम आगे चलो अगर तो, पीछे सारा जग आये॥

यदि विश्वक्रान्ति वांछित हो, तो स्वयं प्रथम आहुति दो।
पहले निज चरण बढ़ाओ, कुण्ठाओं को जागृति दो॥
पहले विकार मेटो तो, जग के विकार का क्षय हो।
पलटो विचार की धारा, मानव की विश्वविजय हो॥
निर्माण स्वयं का कर लो, तो युग निर्मित हो जाये॥

युग-युग पूजित गायत्री माँ

युग–युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
जन–जन के प्रति विमल भावना।
सबके हित की रहे कामना।
यह जीवन ही बने साधना।
मेरे मन में कर्त्तव्यों के, प्रति अनुराग भरो॥
पूरब की लाली बन जाओ,
कलरव के स्वर में नित गाओ।

ज्योतित पावन पन्थ बनाओ।
अन्धकार में बनकर मंगल, किरण देवि बिखरो॥
मातृभूमि से प्यार हमें दो,
निर्मल हृदय उदार हमें दो।
अपना मृदुल दुलार हमें दो।
लक्ष्य दीप बन करके मेरे, मानस में निखरो॥

मुक्तक–

विश्वमाता! मनुज पर कृपा कीजिए॥
देव माँ 'देव' उसको बना दीजिए॥

दे विमल भावना और सद्ज्ञान को॥
वेदमाता सुपथ पर चला दीजिए॥

युग-युग तक जग याद

युग युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
जहाँ कहीं हो ताप वहाँ पर, सावन बन बरसो।
मरुथल मधुबन बने जहाँ पर, दिन दो चार बसो।
जिससे मिल लो एक बार तुम, कभी नहीं बिसरो॥

पथिकों के गति भ्रमितों के तुम, बनकर दीप रहो।
सगर सुतों हित बनकर पावन, सुरसरि धार बहो।
जग-उपवन में मलयज की, शीतलता ले विचरो।।
मानव हो तुम मानवता के, शुचि श्रृंगार बनो।
श्वाँसों के सागर में मन के, कर्णाधार बनो।
तपःपूत तापों में तुम, नव कंचन बन निखरो।।

मुक्तक-

कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हँसे हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसें जग रोये।।

युगऋषि ने युग का तम हरने

युगऋषि ने युग का तम हरने–क्रान्ति मशाल जलाई।
दृढ़ता की परिचायक इसको–थामे सबल कलाई॥
    एक बार भर दिया प्राण रस–इसमें ऋषि ने अपना।
    रहे प्रकाशित यह सदैव–देखा है ऐसा सपना॥
    यह युग व्यापी अन्धकार तब–ही तो मिट पायेगा।
    गौरव वह प्रकाश का फिर से–जग में जग जायेगा॥
    तुम्हीं इसे प्रज्वलित रखोगे–ऐसी आश लगाई॥
याद रहे युग–युग तक इसका–स्नेह न चुकने पाये।

भले हमारे रक्त कोष की–बूँद–बूँद चुक जाये॥
हृदय न हो संकीर्ण–अंश अपना देते रहने में।
प्राण न सकुचाये जग में–अपना प्रकाश भरने में॥
युगों–युगों तक यह जगती में–फैलाये अरुणाई॥

संकल्पों की निष्ठा इसको–थामे सदा रहेगी।
तम का अन्तिम संस्कार कर–जय की कथा कहेगी॥
ऊँचा सदा रहेगा हाथ न–नीचे कभी झुकेगा।
लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व न सृजन–कारवां कभी रुकेगा॥
ज्योति रहे जगमग जगती पर–अरुण लालिमा छाई॥

मुक्तक-

मशालें क्रान्ति की तप, त्याग से ऋषि ने जलाई हैं।
बड़े अरमान लेकर सृजन सेना को थमाई हैं॥
जलाये रखें श्रम, साधन, समय, प्रतिभा लगाकर हम।
नये युग आगमन की यह, विधि ऋषि ने बताई है॥

युग की यही पुकार

युग की यही पुकार, बसन्ती चोला रंग डालो।
त्याग-तितिक्षा का रंग है यह, सुनो जगत वालों॥

–बसन्ती चोला रंग डालो॥

इस चोले को पहन भगतसिंह, झूला फाँसी पर।
इस चोले का रंग खिला था, रानी झाँसी पर।
त्याग और बलिदान न भूलो, ऊँचे पद वालों॥

बासन्ती चोले को, भामाशाह ने अपनाया।
नरसिंह का चोला तो सबसे, अद्भुत रंग लाया।
इस चोले से बढ़े द्रव्य की, शोभा धन वालों॥

इसे पहनकर हरिश्चन्द्र ने, सत्य नहीं छोड़ा।
चली अग्नि पथ पर तारा ने, पहना यह चोला।

मानवीय गरिमा न भुलाओ, भटके मन वालों॥
परमहंस के इस चोले को जिसने, अपनाया।
संस्कृति के झण्डे को जिसने, नभ तक फहराया।
अपने गौरव को पहचानो, युवा शक्ति वालों॥
भूल गये हम अपना पौरुष, गये अनय से हार।
हुए संकुचित हृदय हमारे, बन बैठे अनुदार।
लेकिन अब तो दिशा बदलकर, बढ़ो लगन वालों॥

मुक्तक-

बलिदानी! वीरों को, युग आवाज लगाता है।

आओ ! फिर से बासन्ती, इतिहास बुलाता है ॥
फिर से भारत के गौरव का, मान बढ़ाना है ।
बासन्ती चोला हम सबको, शपथ दिलाता है ॥

युगतीर्थ में जब साधक आते

युगतीर्थ में जब साधक आते, तो हृदय सुमन खिल जाते हैं ।
पर समय विदाई का आता, तो हृदय नयन भर आते हैं ।।
इसमें युगऋषि का प्राण भरा, माँ की ममता की छाया है ।
जिस भाव से जो साधक पहुँचा, उसने वह सचमुच पाया है ।।

सोते-जगते साधक मन में, शुभ दिव्य भाव भर जाते हैं॥
हो सुविधाएँ कम भले यहाँ, पर प्रखर साधना शक्ति यहाँ।
जीवन को धन्य बना दे जो, वह दिव्य भावना भक्ति यहाँ॥
जीवन सुख-आत्मशान्ति दोनों, साधक इसमें पा जाते हैं॥
मत दीन-हीन बनकर रहना, या अहंकार में मत बहना।
जो दिव्य सम्पदा पाई है, जन-जन को वह देते रहना॥
जिनको रस आया देने में, वे देव स्वयं बन जाते हैं॥
आये थे यहाँ शक्ति पाने, कर्त्तव्य निभाने अब जाओ।
बिछुड़न की पीड़ा में भरकर, अनुदान दिव्य लेते जाओ॥

जितनी गहरी होती पीड़ा, उतने ही यह भर जाते हैं।।

मुक्तक:-

जन्म-जन्म के सद्कर्मों ने, यह संयोग जुटाया है।
गुरुवर के इस दिव्य धाम में, जीवन सफल बनाया है।।
आना-जाना तो जीवन की, यह रीति सदा से बनी रही।
आत्मा के सम्बन्ध अमर हैं, यह वेदों ने बतलाया है।।

युग धर्म निभाने को

युग धर्म निभाने को, जो भी अकुलाता है।

उस जागृत आत्मा को, महाकाल बुलाता है॥

जो युग पीड़ा पहचाने, युग ऋषि को अपना माने।
खुद स्वार्थ मोह से उबरे, निज दिव्य रूप पहचाने॥
उन भावनाशीलों को, महाकाल बुलाता है।

दुनियाँ की आपा धापी, जिसको न डिगाने पाये।
जो अडिग लक्ष्य तक पहुँचे, विघ्नों में अटक न पाये॥
उन धीर साधकों को, महाकाल बुलाता है।

ओ वीर भूमि के वीरों, तुम अपने को पहचानों।
युग ऋषि आमंत्रण देता, कुछ कर जाने की ठानों।

उन वीर सपूतों को, महाकाल बुलाता है।
राणा का शौर्य उभारो भामाशाहों जग जाओ।
मीरा बाई के स्वर में, युग संदेशा फैलाओ॥
हर प्रतिभाशाली को, महाकाल बुलाता है।
दानवी दम्भ को छोड़ो, दैवी साकार जगाओ।
कुछ नये सृजन की ठानों, ऋषि अनुदानों को पालो॥
युग साझेदारी को, महाकाल बुलाता है।
यदि दृष्टिकोण ना बदला, तो ख़तरा ही ख़तरा है।
चिन्तन, चरित्र ना सम्भला, वह पतन के गर्त गिरा है॥

फिर हमसे मत कहना, यमराज बुलाता है।।
गाँधी का भाव जगाओ, फिर लौहपुरुष विकसाओ।
ले जलाराम की झोली, दुःखियों के दुःख मिटाओ॥
वो देवभूमि के देवों, महाकाल बुलाता है।

मुक्तक-

साथ चले जो महाकाल के, वे झोली भर पाएँगे।
जो चूकेंगे दुःख पाएँगे, जन्म-जन्म पछताएँगे॥

युवा ! चेतना तू हिमालय

युवा ! चेतना तू हिमालय शिखर है,
युवा ! चेतना सिन्धु की तू लहर है।।
गंगा यमुना-सा गतिशील पानी।
बिस्मिल, भगतसिंह, झाँसी की रानी।।
फिरंगी को जिनने, फिरकनी बनाया।
युवा ! चेतना ऐसा, ढाती कहर है।।
सरदार, वल्लभ, दयानन्द, गाँधी।
युवा ! चेतना ऐसी लाती है आँधी।।

चौहान, राणा, शिवा के करिश्मे।
युवा चेतना की कहानी अमर है॥
युवा! चेतना फिर नई क्रान्ति कर दो।
युवा! हैं वे मदहोश यह भ्रान्ति हर दो॥
बढ़ो राष्ट्र में फिर नया जोश भर दो।
ज़माने की देखो तुम्हीं पर नज़र है॥
ओ! नौजवानों उठो! नींद त्यागो।
तुम राष्ट्र गौरव, फिर से जगा दो॥
कि संकल्प जिनके, इतिहास गढ़ते।

उछलती हुई चेतना तू प्रखर है।।

मुक्तक-

युवा वे हैं जिन्होंने, क्रान्ति के इतिहास रच डाले।
युवा वे हैं जिन्होंने, शत्रु के छक्के छुड़ा डाले।।

युग-युग से हम खोज

युग–युग से हम खोज रहे हैं–सुरपुर के भगवान को।
किन्तु न खोजा अब तक हमने–धरती के इन्सान को॥

चर्चा ब्रह्मज्ञान की करते–किन्तु पाप से तनिक न डरते।

राम नाम जपते हैं दुःख में–साथी हैं रावण के सुख में॥
लकड़ी पूजी, लोहा पूजा–पूजा है पाषाण को॥
शबरी, केवट के गुण गाये–खूब रीझकर अश्रु बहाये।
पर जब हरि को भोग लगाया–तब सबको दुत्कार भगाया॥
तिलक लगाकर अपने उर में–पाला है शैतान को॥
खोजे मन्दिर मस्ज़िद गिरजे–अनगिनते परमेश्वर सिरजे।
किन्तु कभी ईमान न खोजा–कभी खेत खलिहान न खोजा॥
दुनियाँ के मेले में देखा–नित्य नये सामान को॥
खोजा हमने जिसे भजन में–छिपा रहा वह तो क्रन्दन में।

हमने निशिदिन धर्म बखाना–लेकिन कर्म नहीं पहचाना॥
पैसा पाया, प्रतिभा पाई–पाया है विज्ञान को॥

मुक्तक–

कोई कहता है यहाँ–अरमान अपना खो गया।
जो भी दिल का था वही–सामान अपना खो गया॥
खो गई पहचान तो–हमको न ग़म कुछ भी रहा।
पर यही ग़म है कि अब–इन्सान अपना खो गया॥

ये हमारा वतन है

ये हमारा वतन ये हमारा वतन।
है हमें जान से भी ये प्यारा वतन॥
इसके हर फूल में ताज़गी देख लो।
इसके हर पात में ज़िन्दगी देख लो॥
इसकी कलियों में जीवन का संगीत है।
इसकी हर शाख़ पे चाँदनी देख लो॥
ये हमारा चमन है हमारा चमन।
हर तरह के गुलों से सँवारा चमन॥

इसके पूरब में टैगोर का बंग है।
इसके पश्चिम में मेवाड़ का रंग है॥
इसके उत्तर में कश्मीर की वादियाँ।
इसके दक्षिण में मद्रास का ढंग है॥
बह रहे जिसके दामन में गंगा, जमुन।
जिसकी लहरों से भीगे सभी का बदन॥

है ये सन्तों की धरती शहीदों का घर।
है ये गाँधी की बस्ती अमन का नगर॥
और बहादुर से इसके कई लाल हैं।

यह भगतसिंह जैसे सपूतों का दर॥
दुर्गा, लक्ष्मी व सीता का है ये सपन।
इसकी आज़ाद नदियाँ हैं आज़ाद वन॥
कृष्ण ने कर्म का गीत गाया जहाँ।
राम की जिसमें मर्यादा का है निशाँ॥
जिसके कण–कण में गौतम की तासीर है।
ख़ल्क़ में जिसको कहते है हिन्दोस्ताँ॥
जिसकी माटी को करते हैं हम सब नमन।
जन्म लें फिर इसी में सभी का है मन॥

ईद, होली, दिवाली, मनाता है जो।
गीत पोंगल, वैशाखी के गाता है जो॥
जिसके क्रिसमस में हो बूढ़े, बच्चे जवाँ।
मिल के रहना सिखाता है आलम को जो॥
एक होने की जिसमें सभी को लगन।
अपने–अपने त्यौहारों में हैं जो मगन॥
दोस्तों के लिए जो मददगार है।
दुश्मनों के लिए तेज तलवार है॥
यह तो मज़लूमों दुखियों का है पासबां।

सरहदों पे हमेशा यह होशियार है।
हर सिपाही जवाँ मर्द जिसका है धन।
खुद हो कुर्बां जो लाता है चैनो अमन॥

मुक्तक-

हमारा देश है, जिसको धरा का स्वर्ग कहते हैं।
जहाँ अवतार, संत, शहीद, अक्सर जन्म लेते हैं॥
यहाँ के रक्त में तासीर ही कुछ इस तरह की है।
वतन के वास्ते हँसते हुए बलिदान देते हैं॥

युवा शक्ति को झकझोरें

युवा शक्ति को झकझोरें हम, जागें और जगायें।
युगनायक की जन्म शताब्दी हम इस तरह मनायें॥
शक्ति, तेज, साहस, प्रतिभा के पुञ्ज युवा होते हैं।
किन्तु दिग्भ्रमित होकर अपना होश वही खोते हैं॥
राजनीति में उनका होता रहा निरन्तर शोषण।
मिलता नहीं कहीं पर उनकी प्रतिभाओं को पोषण॥
सृजन मार्ग में उनकी प्रतिभा, क्षमता पुनः लगाएँ॥
स्वस्थ युवा ही किसी राष्ट्र को अपराजेय बनाते।

जिनके हों शालीन युवा, वह राष्ट्र श्रेष्ठता पाते॥
उन्हें स्वावलम्बन का समुचित अर्थ बताना होगा।
सेवा से सुख कैसे मिलता, यह समझाना होगा॥
सबल श्रेष्ठ (हों) सम्पन्न सुखी (हों) हम ऐसा राष्ट्र बनाएँ॥

शिक्षा में हर ओर अविद्या पग-पग पर फैली है।
शिक्षित जन की दृष्टि अर्थ केन्द्रित है मटमैली है॥
उनकी आध्यात्मिक क्षमताओं का विकास जब होगा।
उनके दुःख, अवसाद, तनावों का विनाश तब होगा॥
नए रक्त में अब विद्या का हम संचार कराएँ॥

युवा वर्ग को ज्योतिपुञ्ज की एक झलक दिखलाएँ।
ऋषि के सौंपे सुधा–कोष से परिचित उन्हें कराएँ॥
उस अमृत का स्वाद युवा जब एक बार पाएँगे।
फिसलन, भटकावों के पथ पर पुनः न वे जाएँगे॥
बहुत जरूरी है युवकों तक गुरुवाणी पहुँचायें॥

ये हैं भारत की महिलायें

ये हैं भारत की महिलायें, धरती को स्वर्ग बना देंगी।
ये देवभूमि की ललनायें, जग के दुःख दर्द मिटा देंगी॥

ये वो हैं जिनके बच्चों के, बन जाते सिंह खिलौने हैं।
जो शरशैय्या पर यों सोते, मानो मखमली बिछौने हैं॥
है सिन्धु लांघना खेल जिन्हें, सुरसरि भू-पर ले आते हैं।
रखकर खड़ाऊँ सिंहासन पर, जो नृप कर्त्तव्य निभाते हैं॥
यह लाजवाब-यह बेमिसाल, जिनका जीवन जलती मशाल।
युग क्रान्ति करें बच्चे इनके, यह ऐसा पाठ पढ़ा देंगी॥
इनने चाहा तो प्रभु खुद ही, गोदी में आकर खेले हैं।
पति छुड़ा लिया यम से इनने, हँस-हँस कर संकट झेले हैं॥
शिव आकर भी स्वीकार करें, ऐसा तप करने वाली हैं।

इनसे करना खिलवाड़ नहीं, खोना इनका विश्वास नहीं॥
शुभ ज्योतिमान, शुभ कीर्तिमान, इनने बदले विधि के विधान।
युग को है इनसे आशा जो, पूरा करके दिखला देंगी॥
जिसने कुदृष्टि डाली इन पर, वे इस दुनियाँ में रह न सके।
रावण हो या हो दुर्योधन, इनके शापों को सह न सके॥
जब–जब इनने हुंकार भरी, असुरों का साहस हिला दिया।
हो रक्तबीज या महिषासुर, हो मधुकैटभ या भस्मासुर॥
जब मिटे भ्रान्ति–तब मिले शान्ति, लानी है अब तो नयी क्रान्ति।
अब कमर कसी तम हरने को, घर–घर में ज्योति जला देंगी॥

रोम-रोम पुलकित हो उठता

रोम-रोम पुलकित हो उठता, जिनके पावन नाम से।
गायत्री की महिमा भारी, बढ़कर चारों धाम से।।
प्राणदायिनी-चिर कल्याणी, देती जीवनदान हैं।
जिनकी वाणी की वीणा से, झरता अमृत ज्ञान है।।
टूटे उर के तार जोड़ती, सेवा व्रत निष्काम से।।
दयामयी करुणा की प्रतिमा, प्रतिभा की आगार हैं।
पाप-ताप,अभिशाप, शमन कर, करती सुख संचार हैं।।
कर्मठता को जोड़ रही हैं, युग सृष्टा के काम से।।

भव-भय बन्धन कटते सारे, जिनकी शीतल छाँव में।
भर देतीं आनन्द अलौकिक, कुण्ठित मन के गाँव में।।
वे प्रसन्न हो जातीं केवल, श्रद्धा युक्त प्रणाम से।।
जिसके आत्मतेज से गलता, अन्धकार अज्ञान है।
खुल जाते हैं द्वार ज्ञान के, देतीं नव अनुदान हैं।।
दिव्य ज्योति भर रही भुवन में, सतत् इन्हीं के धाम से।।
भावभरी श्रद्धा की बेला, आ पहुँची अनमोल है।
दिव्य चेतना जागी अभिनव, बदल रहा भूगोल है।।
समय कठिन हो कितना ही, जीवन कटता आराम से।।

मुक्तक-

प्यार माँ का मिला तो, हृदय खिल गया।
यह लगा स्त्रोत, आनन्द का खुल गया॥
क्या मिला प्यार, गायत्री माँ का हमें।
सिद्धियाँ मिल गई, स्वर्ग भी मिल गया॥

राम और श्रीराम एक हैं

राम और श्रीराम एक हैं, दुनियाँ जान न पाई।
दोनों ने ही एक तरह की, रामायण दुहराई॥

सुनो रे सन्तों दोनों की प्रभुताई॥
राम अयोध्या में जन्में थे, ऋषिकेश तप साधा।
बला अतिबला विद्या पाई, चीर अनेकों बाधा।
खरदूषण, त्रिशिरा, बलि वधकर, ठकुराई दिखलाई॥
आँवलखेड़ा में जन्में, तप किया हिमालय जाकर।
किया जागरण कुण्डलिनी का, जौ की रोटी खाकर।
ब्रिटिश हुकूमत मार भगाने, की थी कठिन लड़ाई॥
शिव का तोड़ पिनाक राम ने, सीताजी को ब्याहा।
बन्धन तोड़ सनाढ्य, गौड़ का, इनने शौर्य निबाहा।

असुर नाश की भुजा उठा, दोनों ने शपथ उठाई॥
अपने प्रण के लिए राम थे, जंगल–जंगल घूमे।
पत्थर पानी में तैराने, की थी शक्ति प्रभु में।
रीछ–वानरों से ही लंका, पल में गई ढहाई॥
दोनों पुरुष विराट्, संगठनकर्ता भी दोनों हैं।
सन्त और योद्धा दोनों हैं, दुःख हर्ता दोनों हैं।
मर्यादा पुरुषोत्तम दोनों, विमल हृदय सुखदाई॥
युग परिवर्तन का कठोर, व्रत लेकर दुनियाँ छानी।
पश्चिम तक के लोगों ने, उनकी महिमा पहचानी।

ध्वजा देवसंस्कृति की, सारी दुनियाँ में फहराई॥
श्रीराम जन्में कलियुग में, धर्म–कर्म सब भूले।
वह साहित्य लिखा जो, नास्तिक के मन को भी छू ले।
वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की, ज्योति अखण्ड जलाई॥
उत्तरकाण्ड महान् ज्ञान का, सेतु सभी को भाया।
धर्म और संस्कृति का सबको, पावन पाठ पढ़ाया।
उनकी पराशक्ति की महिमा, कवि से जाये न गाई॥
ऊँच–नीच और जाति–पाँति का, बन्धन उनने तोड़ा।
सबको गले लगाया उनने, दलित न कोई छोड़ा।

रामराज्य की कठिन कल्पना, कर साकार दिखाई॥
किये राम ने अश्वमेध सौ, उन्नत राष्ट्र बनाया।
अपना देश वीर्यवानों का, देश तभी कहलाया।
वही श्रृंखला श्रीराम ने, फिर से आज चलाई॥
शक्ति सिया की, काम राम ने, पिछली बार दिखाया।
अब की बार शक्ति दी प्रभु ने, माँ ने मार्ग दिखाया।
नारी शक्ति महान जगत को, यह अनुभूति कराई॥

मुक्तक-

अवतारी नर तन धारण कर, प्रभु धरती पर आते हैं।

इनकी करुणा का पौरुष का, लाभ सभी जन पाते हैं॥
होती इनकी शक्ति अपरिमित, कोई समझ नहीं पाता है।
जो श्रद्धा का मूल्य चुकाते, वे ही लाभ उठाते हैं॥

रे मन जीवन धन्य

रे मन जीवन धन्य बना ले॥
युग तीरथ में आ के-गुरूवर को शीश झुका के।
माँ को निज व्यथा सुना के-श्रद्धा के सुमन चढ़ा ले॥
हमें सजल श्रद्धा दो माता-तेरे पूत कहायें।

गुरुवर हमें प्रखर प्रज्ञा दो–सद्कर्तव्य निभायें॥
जीवन भर निःस्वार्थ रहें हम–जी भरकर परमार्थ करें हम॥
प्रज्ञा ज्योति जगा ले॥
जन–जन में देवत्व जगायें–ऐसी कला सिखा दो।
सबको दें अपनत्व हृदय में–इतना प्यार जगा दो॥
इस जीवन को सफल बना लें–ऋषियों जैसा पथ अपना लें॥
शुभ संकल्प जगा ले॥
दुष्प्रवृत्तियों का अन्धियारा–जग से दूर हटा दें।
सद्प्रवृत्तियों के प्रकाश से–दुनियाँ को चमका दें॥

ऐसी शुभ सामर्थ्य जगा लें–मन का सब अभिमान गला दें॥
वह प्रतिभा विकसा ले॥
गुरु की ज्योति करें हम धारण–स्वयं दीप बन जायें।
समय और प्रतिभा, धन, साधन–प्रभु को भेंट चढ़ायें॥
यह जीवन प्रभु में घुल जाये–अपना शेष न कुछ रह जायें॥
निर्मल भक्ति जगा ले॥

मुक्तक–

गुरु चरण में लग गया मन–धन्य तू हो जायेगा।
देव दुर्लभ देह पाने का–अरे फल पायेगा॥

सध गया तू! सब सधेगा–बचा रहेगा कुछ नहीं ॥
सिद्धियाँ पीछे फिरेंगी–सिद्ध तू हो जायेगा॥

राहें नई दिखा जाता जो

राहें नई दिखा जाता जो, दुःख से भरे जहान को।
ढूँढ़ रही है कब से दुनियाँ, उस सच्चे इन्सान को॥
अँगारों पर चलने वाला, दीप शिखा सा जलने वाला।
जिसने पिया जहर का प्याला, पर बाँटा जग को उजियाला॥
आँच नहीं आने दी जिसने, संकट में भी आन को॥

जिसने औरों को अपनाया, मानवता का मान बढ़ाया।
हँसकर कण्टक पथ अपनाया, स्वेद बहा सागर भर आया॥
यश की बात न भाई जिसको, जीत लिया अभिमान को॥
    जिसने सुख की बात न जानी, तूफानों से हार न मानी।
    अंगद सा निश्छल अभिमानी, निर्धन किन्तु कर्ण सा दानी॥
    तैराकर जिसने दिखलाया, जल में भी पाषाण को॥
जीवन जो कर्मों में बीता, नहीं प्यार का पनघट रीता।
जिसका जीवन तप की गीता, लोभ मोह को जिसने जीता॥
कर साकार दिखाया जिसने, तन में ही भगवान को।

रामायण पर्याप्त न पढ़ना

रामायण पर्याप्त न पढ़ना, उस साँचे में ढलना होगा।
चलें राम के पद्चिन्हों पर, अब इतिहास बदलना होगा॥
रूप अनेकों बना ताड़का, ऋषि–मुनियों को सता रही हैं।
जाने कितनी सूर्पनखाएँ, अपना नाटक दिखा रही हैं॥
कई मन्थरायें कुबुद्धि से, घर का नाश किया करती हैं।
भ्रमित हुई कितनी कैकेयी, पति के प्राण लिया करती हैं॥
हमें कहीं पथ–भ्रष्ट न कर दे, इनसे प्रथम निपटना होगा॥
जाने कितनी सीताओं का, अब भी यहाँ हरण होता है।

कितने परहित रत गिद्धों का, यूँ ही यहाँ मरण होता है॥
जाने कितने कालनेमि, सुन्दर बाने में छिपे हुए हैं॥
पर नारी को छलने कितने, रावण योगी बने हुए हैं॥
जो समाज के शोषक उनको, कर संकल्प कुचलना होगा॥

कितने बालि भाइयों के हक, प्रतिदिन ही छीना करते हैं।
कितने ही रावण भाई को, लातों से पीटा करते हैं॥
विजयादशमी पर भारत में, हम नाटक खेला करते हैं।
सचमुच के रावण जिन्दा हैं, कागज के रावण जलते हैं॥
ऋषियों का आदर्श ग्रहण कर, अब हम सबको चलना होगा॥

रंग बसन्ती प्रभा केशरी

रंग बसन्ती, प्रभा केशरी, शान्तिकुञ्ज के कण–कण में।
आते ही भर जाती है यह, लहर रंग की हर मन में॥

जीवन लगा तपश्चर्या में–पूज्यपाद श्री गुरुवर का।
मिशन बनाया ऐसा सारे–जग को रूप दिया घर का॥
व्यक्ति मात्र को बना दिया, पारंगत जीवन के रण में॥

जीवन जीने की शुचि कला–सन्त ऋषियों ने विकसायी।
और बुलाकर पास करोड़ों–को वह विद्या सिखलाई॥
कहा बन्धु! अध्यात्म श्रेष्ठ है–रहो न लिप्त सिर्फ धन में॥

रंग बसन्ती है कि ग्रहण हम–करें सद्‌गुणों की आभा।
सासें ममता के नभ में लें–तजें कुटिलता की दावा॥
लोकहितों का रंग बसन्ती–जागे फिर से जन–गण में॥
चोला था बासन्ती रंग का–भगत सिंह की फाँसी का।
नाम लिखा इस रंग ने ही–लक्ष्मीबाई औ झाँसी का॥
आज बसन्ती वस्त्र पहन सब–लगे नव्य युग सर्जन में॥
जल उपवास, अस्वाद व्रतों की–आभा बासन्ती रंग में।
बन प्रकाश स्वर्णिम फूटी थीं–इस योगी के अंग–अंग में॥
यह पावनता ही बिखरी है–शान्तिकुञ्ज के आँगन में॥

मुक्तक-

वह उपचार किया गुरुवर ने, जीवन का सब मैल धुल गया।
तन, मन, जीवन रँगा अलौकिक, बासन्ती उल्लास खिल गया॥

रंग लाने लगा त्याग

रंग लाने लगा त्याग ऋषि युग्म का,
साधकों में उछलने लगी भावना।
प्यार इतना लुटाया ऋषि युग्म ने,
चल पड़ी लोकहित के लिए साधना॥

साधना की कली मुस्कुराने लगी,
साध में सिद्धि की गन्ध आने लगी।
खिल उठे साधकों के सहज ब्रह्मकमल,
प्राण में है महाप्राण की प्रेरणा॥
आओ मिलकर करें......... ॥

साधना गन्ध का है समीरण चला,
साधकों का भ्रमर–दल मचलने लगा।
मन्त्र के मौन निर्झर उछलने लगे,
झर रही देव सविता जनित ज्योत्सना॥

आओ मिलकर करें......... ॥

आज युग तीर्थ में साधना हो रही,
और उज्ज्वल भविष्य प्रार्थना हो रही।
साधना से युग तीर्थ शान्तिकुञ्ज है,
सिद्धि का स्रोत शान्तिकुञ्ज की साधना॥
आओ मिलकर करें......... ॥

ध्यान दो विश्व माता बुलाती हमें,
साधना की सुधा है पिलाती हमें।
रह न जाएँ कि वंचित सुधा पान से,

है सभी के लिये श्रेयकर साधना॥
आओ मिलकर करें......... ॥

मुक्तक–

साधकों का मन कोई उकसा रहा है।
साधना करने निमन्त्रण आ रहा है॥
साधना से विश्व का कल्याण होगा।
राष्ट्र–रक्षा कवच बनने जा रहा है॥

रोज खोया गँवाया है

रोज खोया गँवाया है दिन आपने, ध्यान आया नहीं॥
ध्यान आया नहीं॥

ठीक है प्राण ये पेट भर कर जिये!
एक क्षण क्या जिये दूसरों के लिये?
नित्य खोया वृथा प्राणधन आपने॥ ध्यान आया नहीं?

जिन्दगी क्या सुमन गन्ध बनकर रही?
श्वाँस गति क्या कभी द्वन्द बनकर रही?
नाद से क्या जगाया है क्षण आपने॥ ध्यान आया नहीं?

पाँखुरी पाँखुरी से मिली क्या कभी,
बन सकी आँख, गंगाजली क्या कभी।
एक भी क्या खिलाया सुमन आपने॥ ध्यान आया नहीं?
प्राण अनुदान कितना मिला है तुम्हें।
देव वरदान कितना मिला है तुम्हें॥
एक कण भी चुकाया है ऋण आपने॥ ध्यान आया नहीं?

राष्ट्र के जागरण का समय

राष्ट्र के जागरण का समय आ गया।

अब युवाओं सृजन का समय आ गया॥
अब न बिखरे रहें, आत्मबल के धनी।
आज बनना तुम्हें, विश्व में अग्रणी॥
सुप्त देवत्व को है, जगाना तुम्हें।
है इसी भूमि पर, स्वर्ग लाना तुम्हें॥
स्वर्ग के अवतरण का समय आ गया॥
डगमगायें न हम, डगमगाने न दें।
पाँव पीछे किसी को, हटाने न दें॥
जो पिछड़ने लगें हम, उन्हें थाम लें।

कण्टकों में बहुत, धैर्य से काम लें॥
चाल के सन्तुलन का, समय आ गया॥
धार को जिन्दगी की, जरा मोड़ दें।
स्वार्थ-संकीर्णता, क्षुद्रता छोड़ दें॥
अब कहीं काम इनसे, न चलना यहाँ।
है जरूरी स्वयं को, बदलना यहाँ॥
दिव्यता के वरण का समय आ गया॥
धर्म-भाषाजनित, भिन्नता भूलकर।
आज हो राष्ट्र का, संगठित एक स्वर॥

एक हो जायें सब, भावना से भरे।
स्नेह–संवेदना, प्रेरणा से भरे॥
श्रेष्ठ के संगठन का, समय आ गया॥

मुक्तक

यह समय है आत्मबल के जागरण का।
और मिल जुलकर नये युग के सृजन का॥
स्वार्थ से उबरें, उबारें चिन्तकों को।
जवानों! यह समय है संगठन का॥

लागी रे लगन ओ माँ

लागी रे लगन ओ माँ, एक तेरे नाम की॥
भवसागर में भटकी-भटकी, थकी जीव आत्मा।
ज्ञान का दीप जला दो, मिले परमात्मा॥ हे माँ!..
पाई रे शरण तेरी, कृपा श्रीराम की॥
गीत तेरा गाये बिना, भक्ति नहीं जागती।
दिल में बसाये बिना, शक्ति नहीं जागती॥ हे माँ!..
भगवती कहूँ की अम्बा, जुदाई है नाम की॥
मन का सारा मैल धोकर, निर्मल मन कीजिए।

निर्मल बनाकर मन को, सद्बुद्धि दीजिए॥ हे माँ !..
अब न सताये हे माँ, चिन्ता धन धाम की॥
एक तेरे दर्शन खातिर, एक तेरे प्यार में।
ढूँढते फिरे हम तुझको, सारे संसार में॥ हे माँ !..
तुझे नहीं पाया तो यह, दुनियाँ किस काम की॥
ले चल हमें तू हे माँ, जहाँ तेरा वास हो।
सब कुछ दिखाई दे माँ, इतना प्रकाश हो॥ हे माँ !..
अन्तिम अभिलाषा है माँ, पूर्ण विराम की॥
समझ नहीं आती हे माँ, कहाँ तेरा वास है।

जिससे भी पूँछूँ हे माँ, करे परिहास है॥ हे माँ!..
अब तो है आशा केवल, शान्तिकुञ्ज धाम की॥

मुक्तक-

मानव भटक गया है पथ से, लोभ-मोह में भूला है।
कोई पद में, कोई धन में, कोई मद में फूला है॥
हमको माँ तेरे चरणों में, देती मुक्ति दिखाई है।
जिसने सच्चा किया समर्पण, उसने सद्गति पाई है॥

लाँघ चला सारी सीमाएँ

लाँघ चला सारी सीमाएँ—तोड़ चला जंजीर रे।
सारे बन्धन तोड़ हुआ, यह मनवा मस्त फकीर रे॥
हमने घर परिवार न छोड़ा—स्वजनों का भी प्यार न छोड़ा।
जिसका ऋण है जनम—जनम का—वह सारा संसार न छोड़ा॥
अपनी जैसी लगी हमें तो—सबके मन की पीर रे॥
क्षुद्र स्वार्थ से नाता तोड़ा—रिश्ता सारे जग से जोड़ा।
श्रेष्ठ लोकमंगल के पथ पर—हमने हर चिन्तन है मोड़ा॥
जनहित के कारण अब तो—बस साधन हुआ शरीर रे॥

आडम्बर न सुहाता हमको–नहीं प्रदर्शन भाता हमको।
धरतीपुत्रों के पद रज कण–हैं पावन सुखदाता हमको॥
चन्दन सी इस मातृभूमि की–माटी बनी अबीर रे॥

सज्जनता को–नमन करेंगे–दुश्चिन्तन का दमन करेंगे।
जीवन भर जन सेवा में हम–गुरुवर का अनुगमन करेंगे॥
संस्कृति की रक्षा को आये–बन सच्चे युगवीर रे॥

मन में संवेदना भरेंगे–मुख से शीतल वचन झरेंगे।
जप–तप तीरथ भले न हों पर–हम सेवा साधना करेंगे॥
हर दुखियारे का आँसू है–पावन गंगा नीर रे॥

मुक्तक–

जब तक सुविधा में रस देखा–जीता था मजबूरी में।
जब मन ने पर पीर बँटायी–रहता मस्त फकीरी में॥

लिया पाथेय भी पूरा

लिया पाथेय भी पूरा कि, आगे ही लगा बढ़ने।
चला बिन साधना के वीर, तू जीवन समर लड़ने॥
कहीं आकर निराशा घेर ले, ऐसा न हो साथी।
अतः ले दीप आशा का, जला विश्वास की बाती॥

डिगे आस्था न तेरी इसलिए, निष्ठा जरूरी है।
पराजय और जय के बीच में, ज्यादा न दूरी है॥
न हो ऐसा सुमन उत्साह के, असमय लगें झड़ने॥
कहीं मग में भ्रमायेंगे, विविध रस रूप आकर्षण।
करूँ हर वस्तु को करगत, कहेगा लालसायुत मन॥
जरूरत है वहाँ संयम, सुबुद्धि, विवेक की हर दम।
बढ़ा इनको अत: और वासना के, बोझ कर ले कम।
न काँटे लालसा के तीव्र, पैरों में लगें गड़ने॥
लगन का दीप बुझ न जाये, स्वारथ की बयारों से।

अतः कर ओट जीवन ज्योति, जिससे पथ नया पायें॥
न टूटे लोक मंगल की, मधुरता मूर्ति मानस में।
मनोबल इसलिए दृढ़कर, निभा परमार्थ की रस्में॥
बढ़ा ले आत्मबल अपना, लगे यह मुक्ति गिरि चढ़ने॥

मुक्तक–

जहाजों को डूबा दे जो, उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टकराये, उसे इन्सान कहते हैं॥

लाखों घर बरबाद हो गये

लाखों घर बरबाद हो गये, इस दहेज की बोली में।
अर्थी चढ़ीं हजारों कन्या, बैठ न पायीं डोली में॥

कितनों ने अपनी कन्या के, पीले हाथ कराने में।
कहाँ-कहाँ तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में॥
जिस पर बीती वही जानता, बात नहीं है कहने की।
जीवन भर को कर्ज लद गये, सीमा टूटी सहने की॥
गहने, खेत, मकान बिक गये, सिर्फ माँग की रोली में॥

टूट रहे परिवार रोज ही, फूट रही हैं तकदीरें।

लोभी फिर भी खोज रहे हैं, नित शोषण की तदबीरें॥
नौजवान गुणवान युवक क्यों, बनता अरे! भिखारी है।
खून कलेजों का पी जाती, यह कैसी बीमारी है॥
ऐसी क्रूर प्रथा को आओ, आज झोंक दें होली में॥

पति-पत्नी के बीच खाइयाँ, खोदी इस शैतान ने।
सास-बहू को शत्रु बनाया, देखो इस हैवान ने॥
बेमतलब की बातों पर भी, रार मचायी जाती है।
क्रूर कर्म कर कहीं-कहीं तो, बहू जलायी जाती है॥
दानवता आ घुसी कहाँ से, मानवता की खोली में॥

सहन मत करो क्रूर प्रथा यह, इसे सदा को दूर करो।
दानवता के अहंकार को, संकल्पों से चूर करो॥
बहुत हो चुका नाच अशिव का, अब सज्जनता अपनाओ।
छोड़ रूढ़ियाँ सद्विवेक का, निर्णय ले आगे आओ॥
पापों का मत भरो खज़ाना, अब तो अपनी झोली में॥

मुक्तक-

नयीं दुल्हन का कलेजा दुष्ट, प्रतिदिन खा रहा है।
और हर परिवार पर यह, कहर हर दिन ढा रहा है॥
यह हमें दारिद्र दे, ईमान को झुठला रहा है।

किन्तु फिर भी शादियों की, शान यह कहला रहा है।।

लाल ये मशाल

लाल ये मशाल पूज्य गुरुजी को प्यारा है।
जिसकी जग-मग ज्योति से, ये सारा जग उजियारा है॥
    कौन बड़ा है, कौन है छोटा, ऊँच-नीच क्या होता है।
    धर्म के अन्दर वैसा काटे, जो कोई जैसा बोता है।
    माँ की ममता एक समान, जग उसका दुलारा है॥
मिथ्या माया-मोह के चक्कर, में डूबा है ये इन्सान।

सद्बुद्धि दें सद्विचार दें, सबको सन्मति दें भगवान।
नर और नारी एक समान, यही गुरु का नारा है॥
दूर हुआ अँधियारा मन का, ऐसा दीप जलाया है।
धर्म–अधर्म और पाप–पुण्य का, स्वर्ग–नरक समझाया है।
कोई नहीं है ग़ैर यहाँ पर, सभी प्रभु को प्यारा है॥
दुष्प्रवृत्तियों के घेरे को, ध्वंस करें इस ज्ञान से।
रहें सदैव सत्य के राही, जीवन बीते शान से।
सीधा–सच्चा जीवन ही बस, परमेश्वर को प्यारा है॥

विवाह दिन पर सभी हम

विवाह दिन पर सभी हम मिले हैं।
आज खुशियों के गुलशन खिले हैं॥
    नवसुमन से सुगन्धित रहो तुम।
    मुस्कुराते सदा ही रहो तुम॥
    जैसे तारे गगन में खिले हैं॥
भूल चूकों को मन से हटाना।
प्रेम-विश्वास को नित बढ़ाना॥
भाव सुन्दर हृदय में खिले हैं॥

एक दूजे का गौरव बढ़ायें।
श्रेष्ठ सहकार का क्रम निभायें॥
देखो निष्ठा के दीपक जले हैं॥

जन्म-जन्मान्तरों का है नाता।
धन्य है वह इसे जो निभाता॥
यह विमल प्रेम के सिलसिले हैं॥

ऋषि युगल का सुभग प्यार पाओ।
पात्रता दिव्य अपनी बढ़ाओ॥
देव आशीष देने खड़े हैं॥

इस दिवस पर करें आज चिन्तन।
दिव्य बन जाये दोनों का जीवन॥
श्रेष्ठ पथ पर सदा जो चले हैं॥

मुक्तक-

दाम्पत्य है साधना, लौकिक आध्यात्मिक विमल।
संस्कार वह धन्य है, जो रचता दम्पति युगल॥
अपने श्री --------का है विवाह दिन आज।
गुरु, गायत्री, गणपति, पूर्ण करें शुभ काज॥

वरण आचार्य करने की

वरण आचार्य करने की तुम्हें, आशा लगाये हैं।
प्रभो! चरणों में झुककर, प्रार्थना यह लेके आये हैं॥
सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा, पधारें शक्ति-शिव बनकर।
तुम्हारे अंश नन्हें दीप, हम पलकेंबिछाये हैं॥
प्रभो! आचार्य आसन पर विराजें, कर कृपा हम पर।
प्रणेता और संरक्षक, न दूजा ढूँढ पाये हैं॥
हमारी प्रार्थना विश्वास है, स्वीकार कर ली है।
सफलता के लिये आश्वस्त हो, मस्तक झुकाये हैं॥

वह सच्चाई आँखिन देखी

वह सच्चाई आँखिन देखी, कानों सुनी सुनाई।
गुरुदेव हमारे शिवशंकर वरदाई॥

उनका कोई आदि न देखा, अन्त न देखा।
उनके जैसा वीर योद्धा, सन्त न देखा।
उनकी जैसी ऋद्धि सिद्धियाँ, देती नहीं दिखाई॥

वे ज्ञानी थे, सरल हृदय थे, अभिमानी थे।
आत्म तत्त्ववेत्ता भी थे, वे विज्ञानी थे।
नापी नहीं जा सकी अब तक, तो उनकी गहराई॥

जनमानस की वे सकते थे, देख न पीड़ा।
असुर नाश का उनने स्वयं, उठाया बीड़ा।
विषम वेदना जग की पीकर, उनने स्वयं पचाई॥
वे गृहस्थ थे ऐसे तो, वे संन्यासी थे।
वे मगहर थे, पुष्कर भी थे, शिवकाशी थे।
स्वर्ग लोक की गंगा भू-पर, लाये और बहाई॥
गुणातीत, साकार और, वे निर्विकार थे।
वे प्राकृत थे, दिव्य ज्योति थे, निराकार थे।
महाकाल बन कालकूट पी, सबको सुधा पिलाई॥

भूत भविष्यत् वर्तमान, सबके ज्ञाता थे।
पिता समान कठोर, कलेवर में माता थे।
जगत नियन्ता बनकर, सारे जग को राह दिखाई।।

मुक्तक-

सागर सी गंभीरता, गगन सदृश विस्तार।
हिमगिरि सी महिमा अटल, दाता परम उदार।।
कोटि-कोटि के प्राण तुम, गुरु पितु मातु समान।
कोटि-कोटि शत् नमन प्रभो! युगऋषि सन्त महान।।

विधाता तू हमारा है

विधाता तू हमारा है, तू ही विज्ञान दाता है।
बिना तेरी दया कोई, नहीं आनन्द पाता है॥
तितिक्षा की कसौटी से, जिसे तू जाँच लेता है।
उसी विद्याधिकारी को, अविद्या से छुड़ाता है॥
सताता जो न औरों को, न धोखा आप खाता है।
वही सद्भक्त है तेरा, सदाचारी कहाता है॥
सदा जो न्याय का प्यारा, प्रजा को दान देता है।
महाराजा! उसी को तू, बड़ा राजा बनाता है॥

तजे जो धर्म को, धारा कुकर्मों की बहाता है।
न ऐसे नीच पापी को, कभी ऊँचा चढ़ाता है॥
स्वयंभू शंकरानन्दी, तुझे जो जान लेता है।
वही कैवल्य सत्ता की, महत्ता में समाता है॥

वेदमाता देवमाता विश्वमाता को नमन

वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता को नमन्।
आस्था हम खो चुके, अज्ञान से लाचार हैं।
ज्योति पाने को नई, आये तुम्हारे द्वार हैं।

ज्ञान दो सद्भाव दो, सत्कर्म का दो आचरण।।
चाहते तो हैं बहुत पर, मनोबल से दीन हैं।
सध नही संकल्प पाते, साधना से हीन हैं।
प्रेरणा की स्त्रोत हो तुम, शक्ति की सागर गहन॥
आज पीड़ा ग्रस्त है यह, विश्व सुन्दर आपका।
बन गया मानव स्वयं, कारण पतन सन्ताप का।
हो तुम्हीं युगशक्ति अम्बे, रोक दो पीड़ा पतन।।
हम तुम्हारे पूत बनकर, साधना में ढल सकें।
और बन युग दूत तेरे, मार्ग पर भी चल सकें।

शौर्य दो वैराग्य दो माँ, पाप का कर दो दहन॥

मुक्तक

मंगल करनी दुर्मति हरनी, गायत्री सुख धाम।
सद्बुद्धि की दाता माता, जपें तिहारो नाम॥

विदाई ले रहे सबसे

विदाई ले रहे सबसे, हमें अब दूर जाना है।
मिलेंगे फिर कभी सबसे, ये अवसर फिर से आना है॥
हम आये आपके दर पर, सजाये थाल में दीपक।

किया स्वागत हमारा आप, सबने खूब मिल-जुलकर।।
बिछुड़ने और मिलने का, ये जीवन का तराना है।।
बहाई ज्ञान की गंगा, दिया गुरुवर ने जो हमको।
लुटाया प्यार का सागर, जो माँ ने था दिया हमको।।
हृदय को थाम कर रखना, मिला जो भी खज़ाना है॥
मशालें थामकर कर में, जलाकर ज्योति जीवन की।
करें जनपथ प्रकाशित, दूर होवें भ्रान्ति जन-मन की।।
चलाया हमको जिस पथ पर, वही सबको दिखाना है।।
सभी की याद आयेगी, तो आँखे डब-डबायेंगी।

बहेगी अश्रु की धारा, जब यह साँझ आयेगी।।
बनाये धैर्य को रखना, न उसको डगमगाना है।।

मुक्तक

मिलन के क्षण भुलायें भी, भुलाए तो नहीं जाते।
मगर यह तो प्रकृति क्रम है, जो मिलते हैं बिछुड़ जाते।।
मिलन में स्नेह रस बरसा, हुई गुरु ज्ञान की चर्चा।
उसे बाँटा अगर जाये, वही क्षण लौट फिर आते।।

विश्वासों के दीप जलाकर (अ)

विश्वासों के दीप जलाकर, युग ने तुम्हें पुकारा।
सूर्य-चन्द्र सा इस जगती में, चमके भाल तुम्हारा॥
सदियाँ बीत गईं कितनी ही, छाया घोर अँधेरा।
पल-पल बढ़ता ही जाता है, महानाश का घेरा॥
जगो शंकराचार्य सनातन, संस्कृति को जीवन दो।
जगो विवेकानन्द विवेकी, भारत का हर जन हो॥
जागो बुद्ध तोड़ दो जग के, भव-बन्धन की कारा॥
अनाचार का शीश काटने, परशुराम अब जागो।

जागो भामाशाह राष्ट्र के, हित में सब कुछ त्यागो॥
हरिश्चन्द्र जागो असत्य की, छल की रोको आँधी।
राजनीति का छद्म छुड़ाने, जागो मेरे गाँधी॥
टूटी है पतवार आज, नौका के बनो सहारा॥
राणासाँगा जगो शत्रु से, रण में शौर्य दिखाओ।
पवनपुत्र जग पड़ो लोभ–लंका को आग लगाओ॥
जागो मेरे चिर अतीत की, निष्ठाओं सब जागो।
दो जग को प्रकाश का नूतन, दान नींद अब त्यागो॥
जग में शान्ति प्रेम बरसाओ, बन सुरसरि की धारा॥

विश्वासों के दीप जलाकर (ब)

विश्वासों के दीप जलाकर, युग ने तुम्हें पुकारा।
सूर्य–चन्द्र सा इस जगती में, चमके भाल तुम्हारा॥
उलटी हुई दिशायें मानव, सुख सपनों में खोया।
अन्धकार में भटक रहा, अज्ञान निशा में सोया॥
नालन्दा के ज्ञान कहाँ हो, आज लौटकर आओ।
हल्दीघाटी जगो देश में, देशभक्ति भर जाओ॥
शोषण, अत्याचार, दम्भ से, मुक्त बने जग सारा॥
जाग उठो चित्तौड़ देश में, जौहर ज्वाला जागे।

कुरुक्षेत्र जागो कुण्ठाओं का, कौरव दल भागे॥
माँ मदालसे जागो तुम बिन, बच्चे भटक रहे हैं।
उठो पद्मिनी आज शील से, खिलजी अटक रहे हैं॥
तुम जागो तो जाग उठें, मन्दिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा॥
सावित्री इस सत्यवान को, यम से उठो छुड़ाओ।
लक्ष्मी बाई जगो, फिरंगी संस्कृति से टकराओ॥
निद्रा त्याग जागता जग जब, उगता सूर्य अकेला।
जागो नव–विभूतियों फिर से, आज जागरण वेला॥
राह दिखाओ इस भटके, जग को बनकर ध्रुवतारा।

सूर्य-चन्द्र सा इस जगती, में चमके भाल तुम्हारा॥

विश्व हमारा धरती अपनी

विश्व हमारा धरती अपनी, विश्वपिता के लाल।
नया संसार बसायेंगे, नया इन्सान बनायेंगे॥
सौ-सौ स्वर्ग उतर आयेंगे, सूरज सोना बरसायेंगे।
खुशहाली के लिये पहनकर, जीवन की जयमाल॥
नया त्यौहार मनायेंगे॥ नया इन्सान बनायेंगे॥
एक करेंगे मानवता को, सींचेंगे ममता-समता को।

श्रेय साधना की असि लेकर, नैतिकता की ढाल॥
भूमि का भार मिटायेंगे॥ नया इन्सान बनायेंगे॥

धारण करके मन्त्र सुमति का, अपनायेंगे मार्ग प्रगति का।
प्रेमभाव विस्तार करेंगे, सबको सदा निहाल॥
नया विश्वास जगायेंगे॥ नया इन्सान बनायेंगे॥

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के स्वर, गूँजेंगे आदर्श धरा पर।
यह ऋषियों का देश हमारा, जिसकी नहीं मिसाल॥
नया परिवार बनायेंगे॥ नया इन्सान बनायेंगे॥

परमपिता की छाया होगी, दूर अविद्या माया होगी।

ले संस्कृति की विजय पताका, मानव धर्म मशाल।।
तिमिर को मार भगायेंगे।। नया इन्सान बनायेंगे।।

मुक्तकः-

खूब बढ़ा विज्ञान किन्तु क्यों, भ्रातृ भावना सिकुड़ गयी।
भू खण्डों में बँट जाने से, शक्ति हमारी बिखर गयी।।
भारत माँ के पुत्रों जागो, आज हमारी बारी है।
पुनः विश्व परिवार बनाने, की करनी तैयारी है।।

वह शक्ति हमें दो

वह शक्ति हमें दो दया निधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें॥
हम दीन–दुःखी निबलों–विकलों, के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हों भूले, भटके, बिछुड़े, उनको तारें खुद तर जावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे.... ॥

छल, द्वेष, दम्भ, पाखण्ड, झूठ, अन्याय से निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध, सरल अपना, शुचि प्रेम सुधारस बरसावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे.... ॥

निज आन–मान, मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश, जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें॥
वह शक्ति हमें दो दयानिधे.... ॥

सद्गुरु बिना किसी को

सद्गुरु बिना किसी को, सद्ज्ञान कब मिला है।
गुरु से ही शिष्य मन का, श्रद्धा सुमन खिला है॥
गुरु कल्पवृक्ष भी है, अमृत भी और पारस।
शुभ शक्ति स्रोत गुरु है, गुरु ही परम सुधा रस।

गुरु से ही इस जगत को, अध्यात्म बल मिला है॥
गुरु पारब्रह्म ईश्वर, गुरु ही परम पिता है।
गुरु ही परम हितैषी, जगवन्द्य अर्चिता है।
इस भक्ति-भाव का पथ, गुरु से हमें मिला है॥
उपकार यह प्रभु का, गुरु बन समीप आये।
अपनी शरण लगाया, तन-मन में हैं समाये।
गुरु के स्वरूप में बस, भगवान ही मिला है॥
सद्ग्रन्थ हर गुरु के, गरिमा के गीत गाते।
शिष्यों के उर में श्रद्धा, विश्वास हैं जगाते।

गुरु से ही साधना का, संकल्प बल मिला है।।

मुक्तक-

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु है, गुरु शिव रूप उदार।
परब्रह्म साक्षात गुरु, नमन उन्हें शत बार।।

सद्गुरु तु हारे प्यार ने

सद्गुरु तुम्हारे प्यारे ने, जीना सीखा दिया।।
हमको तुम्हारे साथ ने, इन्सां बना दिया।।
रहते हैं जलवे आपके, नजरों में हर घड़ी।

प्रेमाश्रुओं की आँख से, लग जाती है झड़ी।
मस्ती का जाम आपने, ऐसा पिला दिया॥
भूला हुआ था रास्ता, भटका हुआ था मैं।
दुनियाँ के लोभ-मोह में, अटका हुआ था मैं।
उँगली पकड़ के आपने, चलना सिखा दियाा॥
अपना बना लिया मुझे, जिस दिन से आपने।
तब से न ललचाया मुझे, दुनियाँ की आश ने।
दोनों जहां को दास ने, कब का भुला दिया॥
सज़दा किसी को आज तक, जिसने किया नहीं।

झुककर किसी के सामने, माँगी दुआ नहीं।
कदमों में मैने आपके, यह सर झुका दिया।।

मुक्तक-

दूर हुए गुरुदेव से तो, ठग लिया संसार ने।
पास पहुँचे तो दिया, सब कुछ तुम्हारे प्यार ने॥

साथ दे जाओ जरा

साथ दे जाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ।
भार उठवाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ।।

देख मानवता सिसकती, आँख अपनी भर गयी थी।
मनुज की चीत्कार उर में, घाव गहरा कर गयी थी॥
चीख सुन जाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ॥

और तब से एक क्षण भी, चैन से कब बैठ पाया।
मेटने यह ताप खुद को, सूर्य के व्रत सा तपाया॥
रोशनी लाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ॥

ले लिया संकल्प अब तो, युग बदलने का बड़ा है।
हर कदम पर राह में, लेकिन सखे पत्थर अड़ा है॥
यह सरकवाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ॥

शत्रु है सबसे बड़ा, अज्ञान उसको मारना है।
डूबते जीवन कलश को, डोर थाम उबारना है।।
डोर खिंचवाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ।।

है बड़ा दायित्व सब-कल्मष, कषाय निकालना है।
और करनी सत्य, शिव, सौन्दर्य की प्रस्थापना है।।
प्रिय बदल जाओ जरा, आवाज तुमको दे रहा हूँ।।

मुक्तक:-

नवसृष्टा ने हम सबको आवाज लगाई है।
अरे! मनुजता बिलख रही है, विपदा आई है॥

चलो! अभावों, अज्ञानों से हिम्मत से जूझें।
अनुदानों के प्रतिदानों की वेला आई है॥

सबसे पहले स्वयं बदलने

सबसे पहले स्वयं बदलने, पर दें अपना ध्यान।
किन्तु स्वयं से लड़ते रहना, काम नहीं आसान॥
दोष और गुण दोनों का, हममें होता है वास।
दोषों को कर दूर गुणों का, करते रहें विकास॥
देने होंगे आत्म-प्रगति के, खुद को प्रबल प्रमाण॥

छुपने और छुपाने देती, अब अन्दर की आँख।
अपना सब कुछ देखा करती, वह अन्दर ही झाँख।।
धोखे की टटिया को इसमें, तनिक नहीं स्थान।।

अपने ऊपर अपने हाथों, करनी होती चोट।
बन कठोर खुद ही निकालनी, पड़ती अपनी खोट।।
अपने अन्दर ही असुरों को, मारे जाते बाण।

किन्तु व्यक्ति निर्माण सभी, निर्माणों का आधार।
क्योंकि व्यक्तियों से ही बनता, है समाज परिवार।।
व्यक्ति-व्यक्ति की उन्नति से, होता समाज उ७त्थान।।

सुनो युगऋषि के जीवन की

सुनो युगऋषि के जीवन की पुण्य कहानी।
जहाँ बहती है श्रद्धा की धार सुहानी॥
सुनो गुरुवर श्रीराम की कहानी॥

वे थे शरीरधारी-ऋषि रूप थे अवतारी।
करतब किये अनोखे-हर बात में थे चोखे॥
सबके पिता कहाये-युग देवता कहाये।
बने अवतारी तन्त्र की अनमोल निशानी॥
सुनो युग के अवतार की कहानी॥

वे ज्ञान के सागर थे-या प्यार की गागर थे।
वे सत्य सनातन थे-नूतन थे पुरातन थे॥
वे तेज पुञ्ज भी थे-वे शान्तिकुञ्ज भी थे।
उन्हें आती थी जीवन की ज्योति जलानी॥
आओ सुन लो श्रीराम की कहानी॥

वे विश्वमित्र भी थे-वे विश्ववन्द्य भी थे।
जो भी समीप आया-सबको गले लगाया॥
दे पितृवत् सहारा-माँ की तरह दुलारा।
उन्हें आती थी प्रीति की शुभ रीति निभानी॥

सुनो प्रियवर श्रीराम की कहानी॥
ऋषि चेतना अनोखी-ऐसी सुनी न देखी।
नारद, वशिष्ठ जैसी, युग व्यास, भगीरथ सी॥
तप धार थी बहाई-ऋषि भूमिका निभाई।
उन्हें संस्कृति की फिर से थी नींव जमानी॥
सुनो युगऋषि श्रीराम की कहानी॥
दुर्भावना हटाकर-सद्भावना जगाकर।
सुविचार को जगाया-शुभकर्म पथ दिखाया॥
करने चरित्र निर्मल-देने भविष्य उज्ज्वल।

थे सविता से पावक थे वायु से दानी।
सुनो तपोनिष्ठ राम की कहानी॥

युगशक्ति को उतारा-था यज्ञ को सँवारा।
युग साधना सिखा दी-धर्मान्धता मिटा दी॥
सेवा का व्रत लिया था-सबका भला किया था।
उनके जीवन में सिद्ध हुई वेद की वाणी॥
सुनो वेद्मूर्ति, नाम की कहानी॥

हम शिष्य हैं उन्हीं के-हम पुत्र हैं उन्हीं के।
ऐसा दिखायें जी के-प्रिय पात्र हों सभी के॥

साधन, समय लगायें-युगधर्म को निभायें।
हमें अपने सम्बन्ध की है लाज बचानी।।
सुनो साधक श्रीराम की कहानी।।

मुक्तक:-

आओ तुम्हें सुनायें सुन्दर, युग ऋषि की जीवन गाथा।।
जिनके कारण भारत माँ का, होता है ऊँचा माथा।।
उनकी गाथा सुनकर मन में, दिव्य प्रेरणा भर पायें।।
उनके पदचिन्हों पर चलकर, जीवन धन्य बना जायें।।

समयदान और अंशदान

समयदान और अंशदान, मानव को श्रेष्ठ बनाता है।
जो इनको अपनाता है, वह धन्य-धन्य हो जाता है।
वो कृत्य-कृत्य हो जाता है॥

रीछ, वानरों, ग्वाल बाल ने, समय का दान किया था।
और सुदामा ने तन्दुल दे, कृष्ण को जीत लिया था।
समयदान और अंशदान, सोये का भाग्य जगाता है॥

राम-लक्ष्मण से ऋषियों ने, समयदान माँगा था।
हरिश्चन्द्र से उनके गुरु ने, अंशदान चाहा था।

समयदान और अंशदान दे, नर महान बन जाता है।।

ऋषियों, सन्त, शहीदों ने दे, समय अलौकिक गति पाई।
अंशदानियों कर्ण आदि की, कीर्ति पताका फहराई।
समयदान और अंशदान ही, अजर-अमर कर जाता है।।

प्रज्ञा-पुत्रों सृजन शिल्पियों, सैनिक सदाबहार बनो।
समयदान दे अंशदान दे, ऋषि के साझेदार बनो।
समयदान से अंशदान से, गुरु का सच्चा नाता है।।

मुक्तक-

यदि ईश्वर से साझेदारी, चाहो सुखद पवित्र।

क्रम अपनालो समयदान का, अंशदान का मित्र॥

समय आ गया नये सृजन का

समय आ गया नये सृजन का, महाकाल सन्देश है।
करें साधना गायत्री की, युग ऋषि का निर्देश है॥
महामन्त्र गायत्री, जपें हम गायत्री, गुरुवर गायत्री, माता गायत्री॥
सच्चे साधक के हम बेटे, नहीं दिखावा तनिक करें।
डूबें गुरु में गायत्री में, अपना काया कल्प करें।
निर्मल पावन हो निज तन-मन, यह माँ का सन्देश है॥

साधें तन-मन जीवन अपना, अभिनव कुछ संकल्प करें।
नहीं पढ़ा हो यदि गुरु को तो, अब तो उनको नित्य पढ़े।
हर क्षण डूबें अपने गुरु में, हिमगिरि का सन्देश है॥

बन न सके यदि सच्चे साधक, डुबकी से कुछ नहीं मिलेगा।
मात्र आचमन, गंगाजल से, निर्मल जीवन नहीं बनेगा।
बेहतर जीवन बने रोज यह, गुरुवर का उपदेश है॥

प्रज्ञा प्रखर बने हम सबकी, श्रद्धा सजल हमारी हो।
बाधाओं को चीर बढ़ें हम, निष्ठा अपनी न्यारी हो।
गुरु कारज में जीवन होमें, जब तक जीवन शेष है॥

दीप अखण्ड जलेगा उर में, तन से दूर भले ही हों।
शुभ सहयोग बढ़ेगा सब में, हम सब दूर भले ही हों।
गुरु ही प्रेरक, गुरु ही रक्षक, गुरुवर ही सर्वेश हैं॥

मुक्तक-

युगऋषि का संकेत समझ लो, सृजन साधना में जुट जाओ।
महामन्त्र गायत्री जपकर, जीवन धन्य बना जाओ॥

सदा सुखी स पन्न ये जोड़ी

(विवाह आशीर्वाद)

सदा सुखी सम्पन्न ये जोड़ी, अजर अमर।
बने प्रेम का धाम, स्वर्ग सा इनका घर॥

माता के राज दुलारे, और पूज्य पिता की आशा।
सेवा कर उन दोनों की, पढ़ें शुद्ध प्रेम की भाषा॥
करें निज ऊँचा सर, रहे प्रेम का धाम॥

फूलों जैसा मुस्काओ, मुख में हो मिश्री घोली।
आपस में निशिदिन बोले, कोयल सी मीठी बोली॥
मधुर हो प्यारा स्वर, बने प्रेम का धाम॥

प्रण किए विवाह में जो भी, निष्ठा से उनको पालें।

दुखियों के बनें सहारे, दीनों को भी अपना लें।।
चलें सेवक बनकर, बने प्रेम का धाम।।
पत्नी अपने स्वामी को, कर दे सर्वस्व निछावर।
पति मान करे पत्नी का, समझे प्राणों से बढ़कर।।
रहें निर्भीक निडर, रहे प्रेम का धाम।।
दुर्गुण हों जो भी उनके, दें हटा पूर्ण निज बल से।
सब कार्य सिद्ध हों सीधे, रहें दूर कपट और छल से।।
अभी तो शुरू सफ़र, बने प्रेम का धाम।।

सपूतों भारती के माँ तु हें

सपूतों भारती के माँ तुम्हें-आवाज देती है।
युवाओं! राष्ट्र के संस्कृति, हृदय की पीर कहती है।।
विखण्डित हो रही है, राष्ट्र की आदर्श समरसता।
उपेक्षित हो रही है, देव संस्कृति की सुगढ़ क्षमता।
वतन की अस्मिता हर ओर से, आघात सहती है।।
असुरता स्वार्थ बन छाई हुई है, राष्ट्र चिन्तन पर।
कसे हैं भोग संस्कृति क्रूर बन्धन, मनुज तन-मन पर।
विकलता देवसंस्कृति की, कलेजा चीर देती है।।

तुम्हें संवेदना की सुधा, युग ऋषि ने पिलाई है।
बनो तुम सृजन सैनिक श्रेष्ठ, यह आशा लगाई है।
इसी में है तुम्हारा यश, मनुजता की भलाई है॥
उठो! झकझोर कर इस राष्ट्र का, गौरव जगा दो तुम।
इसी अभियान में निज शक्ति साधन, प्रिय लगा दो तुम।
युवा ऊर्जा समय की चाल को भी, मोड़ देती है॥

मुक्तक-

समस्या से ग्रसित है राष्ट्र, आशा है जवानी से।
समस्याएँ सुलझती है, जवानी की रवानी से॥

जवानी ! धर्म-संस्कृति ने, निमन्त्रण है दिया तुमको।
असुरता को कुचलना है, अरे ! जीवट भवानी से।।

स्वयं भगवान हमारे गुरु

स्वयं भगवान् हमारे गुरु, परम सौभाग्य हमारा है।
स्वयं नारायण नर तन धरे, हमारे बीच पधारा है॥
गुरु तो आते-जाते पर, नारायण कभी-कभी आते।
तभी अवतार हुआ करते, पाप धरती पर बढ़ जाते।
ब्रह्म ने स्वयं अवतरित हो, धरा का भार उतारा है॥

आज भी पापाचारों ने, धरा पर भार बढ़ाया है।
मनुजता फिर अकुलाई है, दनुज दल फिर इतराया है।
देवसंस्कृति ने देवों को, विकल हो पुनः पुकारा है॥
　　दे सकें तो दें जीवनदान, अन्यथा समयदान तो करें।
　　न बन पायें यदि भामाशाह, अपेक्षित अंशदान तो करें।
　　समर्पित करें उन्हें प्रतिभा, उन्हीं ने जिसे सँवारा है॥
आरुणी और विवेकानन्द, समर्पण की विधि बतलाते।
स्वयं गुरु अपने जीवन से, शिष्य की गरिमा समझाते।
शिष्य ने किया सममर्ण तो, गुरू ने उसे निखारा है॥

हमारे गुरु प्रज्ञावतार, चलो प्रज्ञा को धारण करें।
दुष्ट चिन्तन को करें निरस्त, मनुज का कष्ट निवारण करें।
करें सद्चिन्तन शरसन्धान, ज्ञान से ही तम हारा है॥

गुरू के आवाहन पर आज, हम सभी कुछ तो अर्पित करें।
बाँटने जन-जन में गुरुज्ञान, स्वयं को हम संकल्पित करें।
शिष्य हैं तो सोचें कितना, गुरू का कर्ज़ उतारा है॥

मुक्तक-

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु ही शिव कहाते हैं।
युगों-युगों से कल्पना कर, शिष्य गुरु के गान गाते हैं॥

स्वयं श्रीराम ही गुरु है, परम सौभाग्य है युग का।
युगों के बाद गुरु बनकर, अरे भगवान आते हैं॥

संस्कृति रही कराह

संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।
अगर मनुजता को सँवारना, मुझे निखारो रे॥

ऋषियों को सादा जीवन ही, जीना था भाया।
विश्ववन्द्य ऊँचे विचार से, भारत कहलाया॥
मन अपना प्रत्यक्ष देवता, उसे निखारो रे॥

ऋषि दधीचि ने जीवन देकर, इसकी शान रखी।
उसे बचाने बिके हरिशचन्द्र, शैव्या साथ बिकी॥
भोगवाद के चक्कर में मत, उसे बिसारो रे॥

इसे सँवारा अनुसुइया ने, कुन्ती मीरा ने।
शंकर, ज्ञानेश्वर, नानक, चैतन्य, कबीरा ने॥
भेदभाव से ऊँच-नीच से, इसे उबारो रे॥

युगधारा को चला बदलने, कोई युग शिल्पी।
उसे सांस्कृतिक परिधानों की, देने शोभा भी॥
देवोपम संस्कृति से युग का, रूप निखारो रे॥

संस्कृति बची अगर तो, मानवता बच जायेगी।
यदि न बची तो मानव में, पशुता आ जायेगी।
क्या पशुता स्वीकार विश्व को, तनिक विचारो रे॥

स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन

स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन अपना, सभ्य समाज बनायेंगे।
नया सवेरा नया उजाला, इस धरती पर लायेंगे॥
बेला आई नये सृजन की, नयी उमंगें ले जीवन की।
सोने वाले पछतायेंगे, बढ़ने वाले यश पायेंगे।

युग साधक बन तन, मन, धन से, हम युग धर्म निभायेंगे।।
यह शरीर मन्दिर है प्रभु का, यह अणु में प्रमाण है विभु का।
इसे असंयम सता न पाये, संयम स्वस्थ बलिष्ठ बनाये।
नवयुग के अनुरूप श्रेष्ठ हम, निज अभ्यास बनायेंगे।।
मन ही शत्रु, मित्र भी मन है, इस पर आधारित जीवन है।
भव-बन्धन मन का विकार है, मुक्ति इसी का संस्कार है।
मन ही सच्चा आसन प्रभु का, इसको स्वच्छ बनायेंगे।।
नवयुग श्रेष्ठ समाज रचेगा, प्रेम, क्षेम, सहकार बढ़ेगा।
मूढ़ रूढ़ियाँ हम तोड़ेंगे, संस्कृति सूत्रों को जोड़ेंगे।

सतयुग जैसे शुभ समाज को, फिर साकार बनायेंगे।।

मुक्तक-

चहक रहे धरती के पंछी, महक रहा आकाश है।
आयेगा अब नया उजाला, यह हमको विश्वास है।।
बीत गयी पतझड़ की रजनी, द्वार खड़ा मधुमास है।
जहाँ सुमति है वहीं प्रगति है, वहीं सिद्धि का वास है।।

सजे दीपक के थाल

सजे दीपक के थाल, नया उल्लास समाया है।

नवयुग के अभिनन्दन का, यह अवसर आया है॥
गाँव-गाँव में नगर-नगर में, बन्दनवार बँधे।
मंगल कलश सजे हैं देखो, जगमग दीप जले॥
नवयुग के अभिनन्दन की ही, यह तैयारी है।
युग-युग से हो रही प्रतीक्षा, जिसकी भारी है॥
चिर आशा ने, पलक-पाँवड़ा, आज बिछाया है।
वह नवयुग जो सद्भावों को, लेकर आएगा।
वह नवयुग जो सदाचार की, गीता गायेगा॥
श्रम, सहयोग, स्नेह, समता सब, उसके संग होंगे।

त्याग–तितिक्षा, तप–सेवा के, अद्भुत रंग होंगे॥
करुणा भरे हृदय का वैभव, उसने पाया है।
उच्च आस्था, विश्वासों का, होगा बल उसमें।
सादा जीवन–उच्च विचारों, का सम्बल उसमें॥
नवयुग का अभिनन्दन करने, हम आगे आयें।
एक दीप अपना भी संग में, स्वागत को लायें॥
यह न कहे इतिहास कि कुछ भी, नहीं चढ़ाया है।

मुक्तक–

नयायुग आ रहा है, दीप स्वागत के जलायें हम।

नवयुग के अनुरूप, स्वयं को भी बनायें हम॥
नया युग स्नेह, समता का, हमें सन्देश देता है।
नये निर्माण को कन्धे से कन्धे, को मिलायें हम॥

सीख नहीं पाये चादर

सीख नहीं पाये चादर, ओढ़ने का ढंग रे।
मैली चादर पर कैसे, चढ़ पाये रंग रे॥
हमें मिली चादर उजली, मैली कर डाली।
जिधर गये हमने, उतनी कालिमा लगा ली।

मैला अब अंतरंग है, मैला बहिरंग रे॥
आओ, हर कल्मष मन का, सेवा से धो लें।
सबको अपना लें मन से, हम सबके हो लें।
सेवा है सच्ची पूजा, सेवा सत्संग रे॥
सबका दुःख दर्द बटायें, अपना सुख बाँटें।
हृदय-हृदय की खाई को, हँसकर हम पाटें।
किये नहीं तीरथ चाहे, गये नहीं गंग रे॥
परहित में अपने साधन, समय हम लगायें।
मन का हर मैल धुले फिर, पुण्य हम कमायें।

हर कोना हो फिर उजला, उजला हर अंग रे॥
निर्मल आचरण बनेगा, चमकेगा चिन्तन।
बहुत-बहुत चौड़ा होगा, भावों का आँगन।
नहीं कभी होगी मन की, गली कहीं तंग रे॥
जीवन में शेष रहेगी, फिर नहीं निराशा।
पलभर आलस्य न होगा, फिर कहीं जरा सा।
होगा उत्साह अनोखा, नित नयी उमंग रे॥

मुक्तक-

1 पंच तत्व की रूई अनोखी, बड़े यतन से धुनी गयी।

प्राण मिलाकर, धागे बँटकर, बड़े प्रेम से बुनी गयी॥
रंग सुनहरा इस पर चढ़ता, तो सौभाग्य निखर आता।
लेकिन रंग चढ़ेगा कैसे, कोई समझ नहीं पाता॥

2 जीवन की चादर को प्रायः, सब ही मैली कर लेते हैं।
मन मन्दिर में पड़े विकार का, कूड़ा करकट भर लेते हैं॥
जन सेवा के गंगा जल से, जीवन की चादर धो पायें।
तो पावन उजली चादर से, देवों का मन हर लेते हैं॥

सत्संग की गंगा बहती है

सत्संग की गंगा बहती है, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
फल मिलता है सब तीरथ का, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में॥
    हम जनम-जनम भरमाये हैं, तब शरण तुम्हारी आये हैं।
    हम भूले भटके जीवों का, कल्याण तुम्हारे चरणों में॥
दुखियों के दुःख मिटाते हो, तुम ऋषि देव कहलाते हो।
सब आवागमन मिटाते हो, है मोक्ष तुम्हारे चरणों में॥
    एक बार जो दर्शन पाता है, वह तेरा ही हो जाता है।
    क्या गुप्त तुम्हारी माया है, हे नाथ! तुम्हारे चरणों में॥

मुक्तक-

मैली चादर धोयेंगे जब, तभी रंग चढ़ पायेगा।
हृदय शुद्ध हो जायेगा, प्रभु प्यार तभी मिल पायेगा॥

सावधान हो जाओ

सावधान हो जाओ नवयुग आता है।
स्वागत थाल सजाओ नवयुग आता है।।
होवे कितना ही भारी, पाप अँधेरा।
भागेगा वह होते ही, पुण्य सबेरा॥

होना है दूर, अँधेरा मेरे भाई रे।
आना है शीघ्र, सबेरा मेरे भाई रे॥
सुनो जरा युग दूत, प्रभाती गाता है॥
दुष्टता भ्रष्ट स्वार्थ ये, रह न सकेंगे।
चोट यह महाकाल की, सह न सकेंगे।
होगा न इनका, गुज़ारा मेरे भाई रे।
देखो तो दैवी, इशारा मेरे भाई रे॥
जो भी हो विपरीत, सभी गल जाता है
शौर्य सद्भाव बढ़ेगा, सबके मनों में।

विश्व–बन्धुत्व पलेगा, जन–जीवन में॥
आयेगा स्वर्ग, जमीं पर मेरे भाई रे।
बनना है देव, हमीं को मेरे भाई रे॥
दैवी साँचे में ये, सब ढल जाता है॥
पाण्डवों जैसा प्रभु से, नेह लगा लो।
गिद्ध–ग्वालों जैसा ही, शौर्य जगा लो॥
जागेगा भाग्य, हमारा मेरे भाई रे।
आँखों में कल का, नज़ारा मेरे भाई रे॥
साहस करने वाला, धन्य कहाता है॥

मुक्तक–

नया युग आ रहा है, पात्रता विकसित करें अपनी।
उसी अनुरूप जीवन विधि, चलो निर्मित करें अपनी॥
स्नेह, सद्भाव, समता और ममता को सँजोकर हम।
नये युग को कि स्वागत अञ्जलि अर्पित करें अपनी॥

सत्संग है ज्ञान सरोवर

सत्संग है ज्ञान सरोवर, सुख की खान है बन्दे।
सत्संग से ही मिलते सचमुच, भगवान हैं बन्दे॥

सत्संग से होकर जाता है, मंजिल का रास्ता।
इस मंजिल के राही को, प्रभु से ही वास्ता।
सत्संग की बहती गंगा, कर स्नान हे! बन्दे॥

सत्संग ही सच्चा सौदा है, सच्चा व्यापार है।
परमारथ के प्रेमी जन का, सत्संग आधार है।
सत्संग ही करता सबका, रे कल्याण हे! बन्दे॥

सत्संग ही काबा काशी है, सत्संग कैलाश है।
सत्संगी के मन में ही, प्रभु जी का वास है।
सत्संग सुरीली मुरली, की वह तान है बन्दे॥

मुक्तक:-

भटकना छोड़ दे दर-दर, तोड़ दे अहं का घेरा।
भूल जा जगत का वैभव, जगत है दुःखों का डेरा॥

सावधान होशियार

सावधान होशियार नौजवान।
हाथ में उठा मशाल युग रहा तुम्हें पुकार॥ सावधान॥
    एक युद्ध जीतकर हम स्वतन्त्र हो गये।
    किन्तु हाय! स्वप्न लोक में तुरन्त खो गये॥

भूल गये प्रीति–रीति–नीति भरा रास्ता।
द्वेष–भेद, द्रोह आदि–में प्रवीण हो गये॥
पकड़ लिया है कौन मार्ग–कौन मार्ग है सही।
छोड़कर प्रमाद आज–क्रान्ति युक्त कर विचार॥ सावधान॥
आँख खोल देख चोर घुस पड़े हैं गेह में।
हीन भाव मानस में–आलस बन देह में॥
मानव के गौरव को–चाट गई क्षुद्रता।
वृद्धि हुई कटुता में–कमी हुई नेह में॥
पहुँचा दे संस्कार जन–जन में घर–घर में।

एक सबल ठोकर से—दूर कर सभी विकार॥ सावधान॥

आज इस समाज को—खा रही कुरीतियाँ।
नीति पक्ष दुर्बल है—बढ़ रही अनीतियाँ॥
जाति—पाँति ऊँच—नीच—भेदभाव बढ़ रहे।
जाने क्यों रूठ गईं—प्यार भरी रीतियाँ॥
वक्त आ गया निकट—हम सभी सचेत हों।
दानवता मानव की आबरु न ले उतार॥ सावधान॥

प्रज्ञा आह्वान करो—छूट जाये मूढ़ता।
उमड़े यज्ञीय भाव—भाग जाये क्षुद्रता॥

ऋषियों की थाती फिर पहुँचा दे जन–जन तक।
आदर्शों से हो फिर–मानव की मित्रता॥
समयदान–अंशदान–की बना परम्परा॥
नवयुग का सूत्रधार–बन सपूत होनहार॥ सावधान

मुक्तक–

समय है यह भयंकर–राह इसमें ही बनानी है।
न दुहरानी हमें फिर से–पराजय की कहानी है॥
ढलानें, फिसलनें हैं–हर तरफ छाया अँधेरा है।
इसी से हर निमिष रखनी–बहुत ही सावधानी है॥

सद्गुरु हमको सहारा

सद्गुरु हमको सहारा दीजिए।
हम शरण आये हैं कृपा कीजिए॥
आप तो प्रभु! स्वयं ईश्वर रूप हैं।
बेसहारों को सहारा दीजिए॥
मार्ग है कण्टक भरा संसार का।
हम न भटकें मार्गदर्शन दीजिए॥
विमल श्रद्धा-भक्ति जागृत हो प्रभो!
दीप अन्तर का जला अब दीजिए॥

साधना पथ पर सतत् बढ़तें रहें।
सद्गुरू ऐसी कृपा कर दीजिए॥

मुक्तक-

कृपा सिन्धु गुरु आप हैं, अगम सिन्धु संसार।
कृपादृष्टि प्रभु कीजिए, हों भवसागर पार॥

सुनो-सुनो भारत माता के

सुनो-सुनो भारत माता के, मन की करुण कराह।
सहा न जाता है अब उससे, नारी का दुःख दाह।।

तुमने धरती पर आने से, कन्या को है रोका।
अरे! किया प्रारम्भ इस तरह, अपनी विपदाओं का ।।
भ्रूण नष्ट कर, उसकी हत्या का अपराध किया है।
प्रभु की दण्ड व्यवस्था को यूँ, तुमने बाध्य किया है।।
तुम्हें न ईश्वर के अनुशासन, की भी है परवाह।।
नारी नहीं रहेगी तो, माता भी नहीं रहेगी।
क्षमाशीलता,समता, ममता, करुणा नहीं रहेगी।।
धरती जैसी सहनशीलता, पुरुष कहाँ पायेंगे।
वे संवेदन बिना मरुस्थल, जैसे बन जायेंगे।।

कहाँ मिलेगी फिर ममता की, उनको शीतल छाँह।।

नारी बिना कौन बाँधेगा, राखी के दो धागे।
कौन भला दुःख में दौड़ेगा, सबसे आगे-आगे।।
गीली मिट्टी को साँचे में, कौन यहाँ ढालेगा।
खुद गीले में रहकर, सुत को कौन अरे पालेगा।।
पुरुषों! नापो तो नारी के, मन की गहरी आह।।

नारी बिना समाज रहेगा, आधा और अधूरा।
कोई भी संकल्प प्रेरणा, बिना न होगा पूरा।।
यह समाज नारी बिन धीरे-धीरे मिट जायेगा।

मानव का अस्तित्व एक दिन, कहीं न रह पायेगा।।
पुरुषों बनो विवेकी, छोड़ो केवल सुत की चाह।।
गुरुसत्ता ने कहा कि सम हैं, दोनों नर औ नारी।
फिर दोनों के लिए भिन्न क्यों, दिखती दृष्टि तुम्हारी।।
पुत्र और पुत्री दोनों के, प्रति कर्त्तव्य निभाओ।
मत दहेज के भय से निर्मम, हत्यारे बन जाओ।।
चलो राज पथ पर गुरुवर के, छोड़ नरक की राह।।

सद्गुरु के ही चरणों में

सद्गुरु के ही चरणों में है, पगले चारों धाम।
सदा रहें हम गुरु चरण में, भक्ति करें निष्काम।।
    सद्गुरु अरे ज्ञान की गंगा, रोज करो स्नान।
    मल-मल मन का मैल निकालो, हो जाये कल्याण।
    लोभ-मोह का काम-क्रोध का, जीवन में क्या काम।।
गुरु वचनों में सभी शास्त्र हैं, सुन बन जाओ बुद्ध।
जीवन में गुरु वचन उतारो, करो आचरण शुद्ध।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश गुरू हैं, गुरु कृष्ण और राम।।

गुरु का ज्ञान सभी को बाँटो, सबका हो कल्याण।
ज्ञान दान से बढ़कर जग में, नहीं है कोई दान।
सबकी सेवा करो जन्म भर, हो करके निष्काम।।

मुक्तक–

चरणों में सद्गुरू के, चारों पदार्थ मिलते।
वचनों में सद्गुरू के, सद्ज्ञान दीप जलते॥
अब छोड़कर भटकना, सदगुरुशरण में आयें।
दर्शन से सद्गुरू के, हैं ज्ञान नेत्र खुलते॥

साथियों ! यदि हमें सिद्धियाँ

साथियों ! यदि हमें सिद्धियाँ चाहिये।
साधना हम करें आइये, आइये॥
साधना के क्षणों में न अलसाइये।
अन्यथा लाभ कुछ भी नहीं पाइये॥

साधना से हुआ है सृजन सृष्टि का।
साधना से जगा आत्मबल व्यष्टि का॥
सूर्य की साधना रोशनी बन गई।
चन्द्र की साध से चाँदनी छन गई॥

आप इस तथ्य को भी समझ लीजिए।
साधना कीजिए सम्पदा पाइये॥

साधना से बनी वज्र–सी अस्थियाँ।
पा गये थे दधीचि अमित शक्तियाँ॥
साधना में भगीरथ निरत हो गया।
साधना से हिमालय द्रवित हो गया॥
आप भी व्यर्थ जीवन गँवायें नहीं।
साधना कीजिए सिद्ध हो जाइये॥

दिव्य अनुपम महाप्राण की साधना।

सिद्धियाँ चाहतीं सिद्धियाँ माँगना॥
साधना से महाकाल वे बन गये।
काल के चक्र को मोड़ने तन गये॥
आप भी पात्रता को प्रमाणित करें।
अनुसरण कीजिए शिष्य कहलाइये॥

साधना की जरूरत पड़ी विश्व को।
टालनी है प्रलय की घड़ी विश्व को॥
वेदना से धरा छटपटाने लगी।
अश्रु पीड़ित मनुजता बहाने लगी॥

भाव संवेदनाएँ जगा आप भी।
साधना में समाधान है पाइये॥
विश्वमाता बनी साधना के लिये।
शान्तिकुञ्ज स्थली साधना के लिये॥
देव देगी बना विश्वमाता हमें।
शान्तिकुञ्ज शान्ति का है प्रदाता हमें॥
साधना कीजिए आप युगतीर्थ में।
लाभ गायत्री तीर्थ का पाइये॥

मुक्तक–

साधना से सिद्धियाँ मिलना सुनिश्चित।
साधना से देवता बनना सुनिश्चित॥
साधना करने कमर कसकर खड़े हों।
स्वर्ग का भू–पर उतर आना सुनिश्चित॥

सही रूप उभरेगा उस दिन

सही रूप उभरेगा उस दिन, मानव के उत्थान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का।।

परम्पराओं की तुलना में, तब विवेक ही वन्दित होगा।
रूढ़िवाद की रात्रि मिटेगी, नव प्रभात अभिनन्दित होगा।
गूँजेगा सहगान मानवी, शक्ति और सद्ज्ञान का॥
रंग वर्ण जातीय भेद की, टूटेंगी, ओछी दीवारें।
नहीं साम्य का हनन करेंगी, सम्प्रदाय की विषम कगारें।
जागेगा देवत्व देहधर, तोड़ कवच पाषाण का॥
दिशाहीन उन्मत्त न होगी, भौतिकता की सिद्धि अधूरी।
तय कर लेगा विकसित जीवन, आध्यात्मिक मंजिल की दूरी।
होगा सदुपयोग मंगलमय, हर विभूति अनुदान का॥

स्वार्थ नहीं परमार्थ बनेगा, चरम लक्ष्य जग में जन-जन का।
ईर्ष्या, द्वेष, कलह, हिंसा से, कलुषित क्षेत्र न होगा मन का।
परिमार्जन पुरुषार्थ करेगा, बिगड़े भाग्य विधान का॥
स्वस्थ सृजन का प्रेरक होगा, श्रद्धा और तर्क का संगम।
बुद्धि हृदय मिलकर छेड़ेंगे, वाणी की सुन्दरतम् सरगम।
निखरेगा हर एक कला में, रूप नये इन्सान का॥

मुक्तक-

हम अगर विज्ञान से, कल्याण के स्वर चाहते हैं।

और मानव धर्म की, गरिमा बढ़ाना चाहते हैं।।
तो हमें इनको परस्पर पास लाना ही पड़ेगा।
धर्म को विज्ञान का पूरक बनाना ही पड़ेगा।।

संग्राम ज़िन्दगी है

संग्राम ज़िन्दगी है, लड़ना उसे पड़ेगा।
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा॥
इतिहास कुछ नहीं है–संघर्ष की कहानी।
राणा, शिवा, भगतसिंह–झाँसी की वीर रानी॥

कोई भी कायरों का, इतिहास क्यों पढ़ेगा?
आओ! लड़ें स्वयं से, कलुषों से कल्मषों से।
भोगों से वासना से, रोगों के राक्षसों से॥
कुन्दन वही बनेगा, जो आग पर चढ़ेगा॥
घेरा समाज को है, कुण्ठा कुरीतियों ने।
व्यसनों ने रूढ़ियों ने, निर्मम अनीतियों ने॥
इनकी चुनौतियों से, है कौन जो भिड़ेगा॥
चिन्तन, चरित्र में अब, विकृति बढ़ी हुई है।
चहुँ ओर कौरवों की, सेना, खड़ी हुई है॥

क्या पार्थ इन क्षणों भी, व्यामोह में पड़ेगा॥

मुक्तक–

जिन्दगी माना कठिन संग्राम है–पर हमें साहस न खोना चाहिये।
हाथ असफलता लगे पहले अगर–तो निराशा में न रोना चाहिये॥
कल खिलेंगे फूल इस उत्साह में–बीज श्रम के आज बोना चाहिये।
कुछ नहीं हैं कष्ट या कठिनाइयाँ–स्वयं की पहचान होना चाहिये॥

सविता का ध्यान

सविता का ध्यान धरते–धरते, महामन्त्र गायत्री जप लो।

मिट जाये अज्ञान सबका, हो जाये कल्याण॥
प्राणों को अद्‌भुत शक्ति मिले, ऊर्जा का अनुपम श्रोत खुले।
हो जाये जीवन में प्रकाश, अन्तर में ज्ञान प्रदीप जले।
तन्मय होकर नित जपते–जपते, महामन्त्र गायत्री जपलो॥
जीवन का हो फिर परिष्कार, निष्कासित हों मन के विकार।
सद्‌बुद्धि का होवे विकास, सत्कर्मों का होवे प्रसार।
शुभ कर्मों को नित करते–करते, महामन्त्र गायत्री जपलो॥
माता नवयुग निर्माण करे, जन–मानस में सद्‌भाव भरे।
परिवार बनायें दुनियाँ को, माँ घृणा–द्वेष विष शमन करे।

जन–मानस शोधन करते–करते, महामन्त्र गायत्री जपलो॥
माँ का जप चिन्तन प्रखर करे, देवत्व मनुज में निखर सके।
दुर्भावों का होता विनाश–दुश्चिन्तन से मन उबर सके।
सद्भावों से मन भरते–भरते, महामन्त्र गायत्री जपलो॥

मुक्तक–

गायत्री है महामन्त्र, यह वेदों ने बतलाया है।
गायत्री माँ की महिमा को, ऋषि-मुनियों ने गाया है॥
गायत्री ही समाधान है, आज विश्व समस्या का।
युगसृष्टा ने, इसी मन्त्र को, सृजन हेतु अपनाया है॥

सुप्त युग जाग्रत करो

सुप्त युग जाग्रत करो, आवाज देकर।
गूँज जायेगी गिरा सन्देश बनकर॥

हर दिशा से रुदन की आवाज आती।
जर्जरित अवसाद से प्रत्येक छाती॥
कामनाओं की पिपासा है सताती।
यह दशा दयनीय मानव की रुलाती॥
तुम बनाओ पथ सुखद–नव जिन्दगी का।
शान्ति पा जाए मनुज उस राह चलकर॥

है प्रथम कर्त्तव्य पीड़ा को मिटाना।
और घावों पर स्वयं मरहम चढ़ाना॥
राह भूले हैं–दिशा उनको बताना॥
हर दु:खी जन को कलेजे से लगाना॥
आज जीने की कला सबको सिखादो।
पीड़ितों के तुम बनो प्रिय प्राण सहचर॥

बीज नव–निर्माण का श्रम से उगाओ।
नींव के पत्थर बनो खुद को मिटाओ॥
जल उठे दीपक बुझे–वह गान गाओ॥

विश्व का नव कल्प कर दो–जूझ जाओ॥
कल तुम्हारा मूल्य आँका जाएगा–पर।
आज तो सब कुछ लुटा दो मोह तजकर॥

सौन्दर्य से तु हारे

सौन्दर्य से तुम्हारे, सुन्दर जहान सारा।
हर रूप में तुम्हारा, सौन्दर्य प्राण प्यारा॥
तुम राग रश्मि छवि में, मुस्कान में रमें हो।
वीरान बाग वन में, सुनसान में रमें हो॥

नदियों में निर्झरों में, कलगान है तुम्हारा॥
रवि शशि गगन सितारे, सब रूप हैं तुम्हारे।
अणु रूप है तुम्हारा, विभु रूप है तुम्हारा॥
तुमने अरूप रहकर, हर रूप को सँवारा॥
तुम व्याप्त वेदना में, दु:ख यातना में तुम हो।
हर अंश की व्यथा में, हर पूर्णता में तुम हो॥
विषपान भी करेंगे, ले आसरा तुम्हारा॥
हे देव! तव दया से, हो निर्विकार जीवन।
हँसते सुमन-सुमन से, विकसे खिले तपोवन॥

करुणा कृपा निकेतन, हे नाथ! दो सहारा॥

मुक्तक–

सृष्टि का सौन्दर्य, स्रष्टा की कहानी कह रहा है।
गिरि, शिखर, निर्झर, उदधि का अतल पानी कह रहा है॥
उसी की सामर्थ्य है संव्याप्त जड़ में चेतना में।
उसी का यश जगत का हर एक प्राणी कह रहा है॥

समय रहते जगो साथी

समय रहते जगो साथी, न किञ्चित देर हो जाये।

सजाते ही रहो तुम दीप–तब तक भोर हो जाये॥
अमृत बरसा, मगर तब, जब, शवों से भर गया मरघट।
रहा उपयोग क्या पतवार का? आ ही गया जब तट॥
तड़पते ही रहे यदि प्राण, अंकुर–मिट गयी आशा।
सम्भालो जिन्दगी का क्रम, पलट जाये न परिभाषा॥
बढ़ा लो तुम चरण निर्भय, न पश्चाताप रह जाये।
चुनौती दे रही तुमको, सिहरती रात यह काली।
न है सूरज, न है चन्दा, सजाओ आज दीवाली॥
करो अर्जित पुनः अर्जुन, सरीखा शक्ति औ–संयम।

जला दो ज्ञान के दीपक, मिटे अविवेकरूपी तम॥
रुके पहले पतन, तब फिर, सृजन का सूर्य मुस्काये॥

समय की माँग है, खुद जाग जाओ प्रात से पहले।
व्यवस्थायें जुटालो, रोशनी की, रात से पहले॥
भटक जाये न कोई राह के, संकेत हों निश्चित।
न मुरझा जाये नव अंकुर, प्रथम कर दो उन्हें सिञ्चित॥
नया युग आ रहा है, भाव स्वागत के न सो जायें।

संस्कारों की पर परा

संस्कारों की परम्परा से, भारत रहा महान।
संस्कारों की गरिमा से, भारत रत्नों की खान॥
    संस्कारों से सोना दमके, बने कोयला हीरा।
    संस्कारों से माटी मूरत, पीतल बने मँजीरा।
    संस्कार ही कर लेते हैं, मन चाहा निर्माण॥
लवकुश क्या थे ? संस्कार की थे जीवन्त कहानी।
और भरत के संस्कारों की, भारतवर्ष निशानी।
अभिमन्यु के संस्कार ही, कूद पड़े मैदान॥

लेकिन संस्कारों को जब से, देश गया है भूल।
तब से घर के नन्दन वन में, नहीं महकते फूल।
किधर जा रही है? भारत की वर्तमान सन्तान॥

कुसंस्कार आक्रमण कर रहे, संस्कृति करने ध्वस्त।
घर-घर में घुस पैठ कर रहे, भोगवाद के शस्त्र।
सुसंस्कार ही रोकेंगे अब, ये घातक तूफान॥

जन्म दिवस को छोड़, "बर्थ-डे" मना रहा है देश।
जो देता है अंधकार फैलाने का सन्देश।
"तमसो माँ ज्योतिर्गमय" का भूल गये हैं गान॥

संस्कार की परम्परा को, चलो करें प्रारम्भ।
भारत के उज्ज्वल भविष्य के, खड़े करें स्तम्भ।
है संस्कार समारोहों का इसीलिए अभियान॥

मुक्तक-

संस्कारों की गरिमा समझो, और इसे सब अपनाओ।
अपनी संस्कृति को धारण कर, फिर जगवन्दित हो जाओ॥

स्वागत गीत

स्वागतम् शुभ स्वागतम्-

नित स्वागतम् अथ स्वागतम्॥

आनन्द मंगल मंगलम्–

प्रिय नित्य भारत भारतम्॥

आपका स्वागत महोदय–हृदय की श्रद्धा समर्पित।

स्नेह बन्धन शक्ति देता–मार्गदर्शन है अपेक्षित।

आप आये है हृदय नम॥ स्वागतम्...... ॥

हम सदा कर्तव्य पथ पर–चल सकें विश्वास भर दो।

शील सत्य हो ध्येय अपना–प्रेममय रस धार कर दो।

आप आये धन्य हैं हम॥ स्वागतम्...... ॥

सुख चाहे यदि नर जीवन का

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर।
है वही सुमिरने योग्य सखा, तू और किसी को याद न कर।।
अस्थिर हैं जग के ठाठ सभी, यदि बिछुड़ गये तो अचरज क्या।
हो लोभ-मोह के वशीभूत, सिर धुन के शोक-विषाद न कर।।
धनमाल अपार बटोर भले, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घरबार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर।।
परनिन्दा को तजकर प्रकाश, आदर्श बना निज जीवन को।
सद्ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से, दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर।।

सप्तर्षि आवाहन

गौतम ऋषि आवाहनम्:-

श्रौत कर्म के सम्प्रदाय का-जिनने किया प्रवर्तन था।
अग्निहोत्र की परम्परा में किया सुखद संशोधन था॥
सभी प्राणियों के जो प्रिय, उन गौतम ऋषि को आज नमन।
ऋषि प्रिय थे जो रहे न निष्क्रिय, गौतम ऋषि को आज नमन॥

ऋषि भरद्वाज आवाहनम्:-

सदा अध्ययन को तत्पर, ऋषि भरद्वाज का है वन्दन।
अतल ज्ञान के थे सागर, ऋषि भरद्वाज का है वन्दन॥

हे ऋषिवर ! यह भावभरा आमन्त्रण है, स्वीकार करें।
हम सबका आतिथ्य यज्ञ में, आकर अंगीकार करें।।

महर्षि विश्वामित्र आवाहनम्:-

तेजस्वी प्रज्वलित अग्नि से, तप की जो प्रतिमूर्ति बने।
गायत्री की प्रतिष्ठापना, करके जग की पूर्ति बने।।
उन ऋषि विश्वामित्र सिद्ध को, करते हम सब नमन यहाँ।
कृपा करें ब्रह्मर्षि ! आपका हो सुखकर आगमन यहाँ।।

कश्यप ऋषि आवाहनम्:-

हे कश्यप ऋषि ! सदा आपको, जगती ने सम्मान दिया।

और आपने प्राणि मात्र को, विपुल दया का दान दिया।।
है प्रार्थना हमारी हम पर, भी कुछ कृपा करें ऋषिवर।
हम सबकी पूजा-अर्चा, स्वीकारें यहाँ स्वयं आकर।।

जमदग्नि ऋषि आवाहनम्:-

हे ऋषिवर जमदग्नि! जिन्हें, बिल्कुल समान हर सुख दुःख था।
औ कठोर तप के सुतेज से, जो जाज्वल्यमान मुख था।।
तपोमूर्ति उन ऋषि का होता, यहाँ आज आवाहन है।
महायज्ञ में उन्ही पूज्यवर, का वन्दन-अभिनन्दन है।।

ऋषि वशिष्ठ आवाहनम्:-

सबके परम हितैषी ऋषिवर, आप धर्म-प्रतिरूप रहे।
कार्यकुशल इतने कि कर्म से, हर युग के अनुरूप रहे॥
जनहित से जन की करुणा से, भरा सदा जिनका मन है।
उन मुनि श्रेष्ठ वशिष्ठ पूज्यवर, का सादर आवाहन है॥

ऋषि अत्रि आवाहनम्:-

हे ऋषि! ब्राह्मण श्रेष्ठ विश्व में, जन-जन के हितकारी हे।
तपःपूत हे! सत्यरूप हे! तेजस्वी व्रतधारी हे॥
हे महान ऋषि अत्रि! आपको, नमस्कार हम सबका है।
आज आप पर भी ऋषिवर, कुछ यज्ञ-भार हम सबका है॥

ऋषि माता आवाहनम्:-

सुख सौभाग्य प्रदात्री माता, बालक शीश झुकाते हैं।
इस पुनीत बेला में हे ऋषि माता! तुम्हें बुलाते हैं।।
हम अबोध बालक हैं माता! करलो पूजा ग्रहण अभी।
यहाँ यज्ञ-मण्डल में होवे, ममता का अवतरण अभी।।

सर्वतोभद्र आवाहन (गायन)

1 गणपति (विवेक) पीला

विघ्न विनाशक हे सुरपूजित, हे घट-घट वासी।

देवों के भी देव गजानन, गणपति कैलाशी।।
विश्वमूर्ति विद्यासागर, विद्या विस्तार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

जय गणेश गणपति

जय गणेश गणपति गणनायक वन्दे।
सकल विघ्न नाशक, सुखदायक वन्दे।।
महायज्ञ में भगवन, सभी विघ्न दूर हों।
यज्ञ क्षेत्र में भगवन, सिद्धियाँ भरपूर हों।।
प्रथम पूज्य गणनायक, आप ही हैं आशा।

साधकों के जीवन से, दूर हो निराशा।।
सकल विघ्न नाशक, सुखदायक वन्दे।।

2 गौरी (तपस्या) हरा

चार भुजाओं तीन दृगों, वाली देवी दाता।
वस्त्राभूषण धारण कर, आओ गौरीमाता।।
देश, धर्म, मानव जीवन का, माँ उद्धार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

3 ब्रह्मा (निर्माण) लाल

आदि पितर हम सबके स्वामी, ब्रह्मा चतुर्मुखी।

अखिल विश्व के धारक हो यह, सारा राष्ट्र सुखी।
हो दिग्विजय देवसंस्कृति की, बल संचार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो॥

4 विष्णु (ऐश्वर्य) सफेद

वक्षस्थल पर चिन्हित भृगु पद, कौस्तुभमणि धारी।
नीलकमल से श्यामवर्ण हे, जगमंगलकारी॥
विष्णु रमापति! देव यज्ञ के, दोष सुधार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो॥

5 रूद्र (दमन) लाल

हे एकादश रूद्र लोकपति, हे कपाल धारी।
ले त्रिशूल खट्वाङ्ग पधारो, भोले भण्डारी॥
सफल करो यह यज्ञ, दुष्टता का संहार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो॥

6 गायत्री (ऋतम्भरा प्रज्ञा) पीला

वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता को नमन।
आस्था हम खो चुके, अज्ञान से लाचार हैं।
ज्योति पाने को नयी, आये तुम्हारे द्वार हैं॥
ज्ञान दो सद्भाव दो, सद्कर्म का दो आचरण॥

7 सरस्वती (बुद्धि, शिक्षा) लाल

हंसारूढ़ सरस्वति माता!-विद्या की दाता।
कृपा आपकी ही हो माता तो-जन-जन सुख पाता॥
जीवन विद्या देकर माता, जग उद्धार करो॥
महायज्ञ में आओ आहुतियाँ स्वीकार करो॥

सरस्वती आवाहन (गीत)

जो बैठे चरणों में तिहारे, उसे वाणी का वरदान मिले।
माँ तू जिसकी ओर निहारे, उसे गुणियों में स्थान मिले।।
कण्ठ समर्पित गान समर्पित, हृदय समर्पित, तान समर्पित।

अर्पित श्रद्धा भाव हमारे, हमें साँचे स्वर का ज्ञान मिले।।

८ लक्ष्मी (समृद्धि) सफेद

साधन, वैभव, सुखदाता हो, तुम लक्ष्मी माता।
जग की हो धन-धान्य पूर्णा, सकल कष्ट त्राता।।
प्रकृति स्वरूपा विष्णुप्रिया, वैभव विस्तार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

९ दुर्गा (संगठन) लाल

दुष्ट दलनि हे असुर निकन्दनि, हे दुर्गामाता।
हे अर्धांग शरीर धारिणी, गौरी शिव दाता।।

स्थिरमति हमको दो माता, यह उपकार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो॥
जगजननी जय माँ अम्बे, जगजननी जय दुर्गे माँ।
भयहारिणी भवतारिणी, भवभामिनी तू माँ॥
दसविद्या नवदुर्गा तू है, अष्टमातृका योगिनी तू है।
तू है परधाम निवासिनी हे माँ..................... ॥

10 पृथ्वी (क्षमा) सफेद

मनुज मात्र की रक्षक, पावन हे धरती माता।
बिना आपकी कृपा न कोई, भी वैभव पाता॥

सागर धारण करने वाली, जग का भार हरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

11 अग्नि (तेजस्विता) पीला

त्रिकालज्ञ पावक देवों के, हव्यवाह आओ।
हमें यज्ञ में लक्ष्य प्राप्ति का, सम्बल दे जाओ।।
लोकगणों के साथ पधारो, तेज प्रसार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

12 वायु (गतिशीलता) सफेद

प्राण रूप देवत्व सहायक, मृग वाहन धारी।

प्रखर प्राण की आशा करती, आज प्रजा सारी।।
प्राणवायु ! आओ सिद्धों के, सहित विकार हरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

13 इन्द्र (व्यवस्था) लाल

सिद्ध साधकों द्वारा वन्दित, सुरपति अभिमानी।
और अप्सराओं द्वारा, सेवित सुरेश ज्ञानी।।
आओ रक्षा करो यज्ञ की, सिर पर हाथ धरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

14 यम (न्याय) सफेद

धर्ममूर्ति यमराज शुभाशुभ, सकल कर्मज्ञाता।
हे अनुशासन के अधिनायक, हे आनन्द दाता।।
हो सबका कल्याण देश में, वह संस्कार भरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

15 कुबेर (मितव्ययिता) काला

16 अश्विनीकुमार (आरोग्य) पीला

जन्म सुपोषण परिवर्तन, करने वाले स्वामी।
हे देवों के वैद्य विशारद, सत्वर पथगामी।।
हे अश्विनी कुमार हमारे, स्वास्थ्य सुधार करो।

महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

17 सूर्य (प्रेरणा) काला

सुन्दर, लाल सिंदूर सदृश हे, प्रखर किरण वाले।
रथ पर बैठ पधारो सादर, सात अश्व वाले।।
हे द्वादश आदित्य हृदय में, दिव्य प्रकाश भरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।

18 चन्द्रमा (शान्ति) लाल

नक्षत्रों के सखा सोम, ओषधियों के स्वामी।
पितरों सहित पधारें मख में, हे नभ पथगामी।।

महायज्ञ के लिए सोम रस, का संचार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

19 मंगल (कल्याण) सफेद

20 बुध (संतुलन) हरा

21 बृहस्पति (अनुशासन) पीला

हे गुरुवर हमने तो बस, तेरी महिमा गाई।
महायज्ञ की शक्ति आपसे, ही हमने पाई।।
वेगि पधारो यज्ञभूमि में, भूल सुधार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

महाकाल आवाहन

महाकाल हमने तो बस, तेरी महिमा गायी।
महायज्ञ की शक्ति आपसे, ही हमने पायी।।
वेगि पधारो यज्ञभूमि में, भूल सुधार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

22 शुक्र (संयम) हरा

23 शनि (तितिक्षा) लाल

24 राहु (संघर्ष) पीला

25 केतु (साहस) लाल

26 गंगा (पवित्रता) सफेद

पाप नाशिनी मकर वाहिनी, तोय कुम्भ धारी।
हे गंगा माँ पुण्यदायिनी, जनमंगल कारी।।
यह संसार पवित्र करो, मख मण्डल में विचरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

गंगा आवाहन (गीत)

गंगे नमामि, नमामि नमामि॥
गंगे तेरे स्मरण मात्र से, शीतल मन हो जाता है।
एक बार भी नाम लिये से, जनम-मरण मिट जाता है।।

कानों में सुख देने वाला, गंगा नाम तुम्हारा हो।
अन्त समय तेरे मुख में, नामामृत का प्याला हो।।

27 पितृ (दान) पीला

28 इन्द्राणी (श्रमशीलता) सफेद

हाथी के मस्तक पर बैठी, देवी इन्द्राणी।
सहस्त्र-नेत्रा देव-वन्दिता, जननी कल्याणी।।
दो हमको वैभव अपार, कुछ ऐसी कृपा करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

29 रूद्राणी (वीरता) काला

महाकाल की शक्ति अम्बिके, परिवर्तन कारी।
माहेश्वरी प्रणाम आपको, करते संसारी।।
बैठ वृषभ पर आओ, झोली में वरदान भरो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

30 ब्रह्माणी (नियमितता) पीला

हंसारूढ़ चार मुख वाली, सृष्टि रूप अम्बे।
ब्रह्माणी सौभाग्य-शालिनी, दाता जगदम्बे।।
डूब रही नैया भक्तों की, बेड़ापार करो।
महायज्ञ में आओ, आहुतियाँ स्वीकार करो।।

31 सर्प (धैर्य) काला

32 वास्तु (कला) हरा

33 आकाश (विशालता) नीला

संगीतमय शान्तिपाठ

शान्ति कीजिए, शान्ति कीजिए।
प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिए।।
जल में, थल में और गगन में, शान्ति कीजिए।
अन्तरिक्ष में, अग्नि पवन में, शान्ति कीजिए।।

औषधि वनस्पति, वन उपवन में, शान्ति कीजिए।
सकल विश्व के, जड़ चेतन में, शान्ति कीजिए।।
शान्ति विश्व, निर्माण सृजन में, शान्ति कीजिए।
नगर-ग्राम में, और भवन में, शान्ति कीजिए।।
जीव मात्र के, तन में-मन में, शान्ति कीजिए।
और जगत के, हर कण-कण में, शान्ति कीजिए।।

शान्तिकुञ्ज गुरुकुल है पावन

शान्तिकुञ्ज गुरुकुल है पावन, युगऋषि का तप-धाम है।

यहाँ हिमालय की छाया है, गंगा–गोद ललाम है॥
तपस्थली सप्तऋषियों की, वातावरण दिव्य इसका।
युग का विश्वामित्र यहीं है, सारा विश्व मित्र जिसका॥
युग–वशिष्ठ के ज्ञान यज्ञ की, लपट यहाँ अविराम है।
दीप–अखण्ड यहाँ जलता है, किरण फूटती ज्ञान की।
दर्शन से उकसा करती है, बाती साधक–प्राण की॥
कोटि-कोटि गायत्री जप से, सिद्ध पीठ यह धाम है।
माँ की ममता प्यार पिता का, शिष्य यहाँ पर पाते हैं।
दिव्य आचरण यहाँ गुरू के, जीवन कला सिखाते हैं॥

युग के तक्षशिला, नालन्दा, गुरुकुल, तुम्हें प्रणाम है।
आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, क्रान्ति यहाँ से होती है।
ज्ञान और विज्ञान मिलन की, यहाँ अनूठी रीति है॥
इसी धरा पर स्वर्ग सृजन की, छटा अरे! अभिराम है।
नर–नारी का, ऊँच–नीच का, जाति–धर्म का भेद नहीं।
सब ही एक समान यहाँ हैं, राग–द्वेष अब शेष नहीं॥
कन्धे से कन्धे मिल करते, महाकाल का काम हैं।
यह अशान्ति से ग्रसित विश्व, अब शान्ति यहाँ ही पायेगा।
आज नहीं तो कल सारा जग, इस छाया में आयेगा॥

माँ-भगवती दुलार लुटातीं, संरक्षक श्रीराम हैं।

मुक्तक-

शान्तिकुञ्ज की तपस्थली का, चलो चलें हम वन्दन कर लें।
नवयुग के सच्चे तीर्थस्थल का, अभिनव अभिनन्दन कर लें।।
आओ हम धरती पर ऐसी, स्वर्ग भूमि के दर्शन कर लें।
जहाँ मिटे भ्रम जहाँ जगें हम, उसका ही तीर्थाटन कर लें।।

शान्तिकुञ्ज की तरुणाई

शान्तिकुञ्ज की तरुणाई ने, झकझोरा तरुणाई को।

आत्मशक्ति का बोध कराया, तरुणाई विष पायी को।।
युवा-चेतना के प्रवाह में, ज्वार उठ रहा है ऐसा।
कोई परमहंस गढ़ता है, शिल्प विवेकानन्द जैसा।
फिर इतिहास करेगा अंकित, तरुणों की अँगड़ाई को।।
अप संस्कृति ने भोगवाद के, सागर को मथ डाला है।
काम, वासना की ज्वाला से , भरा भोग का प्याला है।
तरुणाई उदरस्थ न होने देगी, इस कुटिलाई को।।
शिव-ताण्डव के साथ करेगी, तरुणाई अब तो नर्तन।
कुचल दिए जाएँगे अब तो, घातक पीड़ा और पतन।

देर नहीं अब दुर्गुण दुर्व्यसनों की, अरे! विदाई को॥
विकृतियों, कुरीतियों का विष, अब न अरे! चढ़ पाएगा।
अब दहेज का भूत, बेटियों को ना तनिक सताएगा।
तरुण, तरुणियाँ उठे पाट दें, कुरीतियों की खाई को॥
अब तरुणाई द्वारा होगा, ऐसे भारत का निर्माण।
नवयुग का नेतृत्व कर सके, भारत ऐसा बने महान।
विश्व-वेदना ने झकझोरा, यौवन की करुणाई को॥

मुक्तक-

शान्तिकुञ्ज की क्रान्ति लहर ने, युवकों को ललकारा है।

महाक्रान्ति को तीव्र बनाओ, वीरों फ़र्ज़ तुम्हारा है॥

शायद रूठ गई नारी से

शायद रूठ गई नारी से, उसकी ही तक़दीर।
उसकी तोड़ी गई प्यार की, सोने की जंजीर।।
नारी श्रद्धा है, शुचिता है, स्नेह मूर्ति साकार।
किया प्यार ने उसके, जन-जन में जीवन संचार।।
उसी प्यार को बना रहे क्यों? कुत्सित और अधीर।।
सुन्दरता हो गई प्यार का, अगर कहीं आधार।

तो फिर कम सुन्दर कन्या को, कौन करेगा प्यार॥
प्यार नहीं श्रृंगार प्यार तो, शैशव और फकीर॥
    प्यार स्वर्ण है उसे दे दिया, लोहे जैसा रूप।
    इस पवित्रता को कर डाला, काला और कुरूप॥
    इसे न बेचो गलियारों में, प्यार तत्व गम्भीर॥
प्यार नहीं सौदा बिकता वह, कभी नहीं बाजार।
आँख मिलाते उमड़ पड़े वह, कभी न होता प्यार॥
प्यार नहीं उपभोग मानवों, वह जीवन की पीर॥
    अरे! सिनेमा वालों सम्भलो, इतना करो न पाप।

पड़े झेलना कहीं न संस्कृति को, भारी सन्ताप।।
प्यार खिलौना नहीं प्यार तो, श्रद्धा की तस्वीर।।

ओ लंका निवासियों रोको, रावण के उत्पात।
नहीं बनाओ सूर्पणखा को, जंगल की बारात।।
प्यार डकैती नहीं प्यार तो, मीरा और कबीर।।

प्यार एक ऐसी उपासना, जिसका आदि न अन्त।
उसे साधने वाला केवल, हो सकता है सन्त।।
लेकर नाम प्यार का देखो, पीटो नहीं लकीर।।

मुक्तक:-

ओ समाज के पहरेदारों, यदि समाज का हित चाहो।
तो नारी का दर्द समझकर, पहले उसका हल चाहो।।
उसके प्रति जो हीन मान्यता, बना रखी उसको छोड़ो।
उसकी ममता को पूजो अब, शोषण का कुचक्र तोड़ो।।

शारदे वरदान दे माँ

शारदे वरदान दे माँ, शारदे वरदान दे ।
हंसवाहिनि, ज्ञानदायिनि, ज्ञान का भण्डार दे ।।
चल सकें हम सत्य पथ पर, गा सकें शुभ गीत हितकर।

भाव का संचार दे माँ। शारदे वरदान दे माँ...।।
हम सभी तेरे कहायें, प्रेम बाँटे प्रेम पायें।।
दिव्य निर्मल प्यार दे माँ। शारदे वरदान दे माँ...।।
हीनता से बच सकें हम, लक्ष्य अपना पा सकें हम।
वह प्रगति का द्वार दे माँ। शारदे वरदान दे माँ...।।

मुक्तक-

ज्ञान की भण्डार माता, ज्ञान का वर दे हमें।
सत्यपथ गामी बनें, इस भाव से भर दे हमें।।

शान्तिकुञ्ज सुन्दर है नगरिया

शान्तिकुञ्ज सुन्दर है नगरिया हो, चला दर्शन कराद।
दर्शन कराद हमर, ललसा पुराद।
सुनहि के मनवा लुभावे हो, चला दर्शन कराद॥
    हरकी पौड़ी से आगे, ऋषिकेश रहिया में।
    सप्तऋषि आश्रम के, पासे डगरिया में।
    लौकेला गुरू के, दुअरिया हो॥
गायत्री सिद्ध कैलन, एही कलयुगवा में।
कहे सब लोग, अवतार यही युगवा में।

सिखलैलेन चले के, डगरिया हो॥
श्रीराम शर्मा, विख्यात वाटे नमवां।
कैलन अनुवाद शास्त्र, वेद और पुरनवां।
उनके बनावल है, नगरिया हो॥
नित्य हवन नेम जप, करे परिजनवां।
सामवेद स्वर गूँजे, गीत के मध्यमवां।
लागे जैसे स्वर्ग की, बजरिया हो॥
धर्म और विज्ञान के है, जोड़ेसमनवां।
ब्रम्ह्मवर्चस शोध करे, के है संस्थनवां।

देखव भरि-भरि के, नजरिया हो।।
माई के प्रसाद और, मुक्त के भोजनवाँ।
स्नेह प्यार मिले और, मिले वरदनवाँ।
तप से तपावल है, नगरिया हवे।।

शत्-शत् तुमको प्रणाम्

शत्-शत् तुमको प्रणाम्।
सदगुरु तुमको प्रणाम्॥
हम आये हैं शरण तुम्हारी,

शक्ति जागृत करो हमारी।
परम शक्ति के धाम।।
ज्ञान रश्मि में ज्योति जगा दो,
उर में भक्ति का दीप जलादो।
तृप्ति होय जप नाम।।
माया तम को दूर भगा दो,
अन्तर ज्योति अखण्ड जलादो।
उर में आठों याम।।
जन कल्याण हो कर्म हमारा,

मानव सेवा धर्म हो प्यारा।
सेवा हो निष्काम।।

मुक्तक-

गुरुदेव आपके लिये शत्-शत् प्रणाम है।
हैं आप ज्ञान पुञ्ज और शक्तिधाम हैं॥
सद्पथ प्रशस्त कीजिए, सेवा की शक्ति दे।
गिरतों को उठाना, यही हम सब का काम है॥

शंख बजे दीप जले

शंख बजे दीप जले—साज बजे गीत चले।
दीपयज्ञ घर-घर मनाओ रे॥
हाँ भैया द्वार-द्वार दीपक जलाओ रे॥

अस्त हुआ सूरज यह, दुनियाँ की रीति है।
उगा नहीं चन्दा तो—मन क्यों भयभीत है॥
एक दीप स्वयं बनो—ज्योति का आह्वान करो।
झिलमिल फिर जग को, चमकाओ रे॥
ज्योति पुत्र—अँधियारा, जग का मिटाओ रे॥

फैला अँधियारा है–भीषण अनीति का।
भूल गया मानव, पथ ईश्वर की नीति का॥
श्रद्धा–विश्वास जगे–जनहित की लगन लगे।
ऐसा अभियान, अब रचाओ रे॥
ओ साधक–जन–जन में आस्था जगाओ रे॥

जड़ता का स्वार्थ भरा–व्यूह आज तोड़ दो।
कर्मठता सेवा से, जन–जन को जोड़ दो॥
आलस को दूर करो–मन में उल्लास भरो।
मानव का गौरव जगाओ रे॥

कर्मवीर जीवन की विद्या सिखाओ रे॥
गायत्री माता जो–सबको दुलरायेगी ।
माया तो नटनी है–जग को नचायेगी॥
माया से मोह तोड़–माता से नेह जोड़ ।
धन को शुभ कर्म में लगाओ रे।
ओ सपूत! व्यसनों से उसको बचाओ रे॥
मानव को दानवता–के भय से मुक्त करो ।
मानवता विकसित हो–ऐसी कुछ युक्ति करो॥
इस जग की शान बनो–युग के वरदान बनो।

अग्रदूत युग के कहलाओ रे॥
युग सैनिक–घर घर जा अलख जगाओ रे॥

हे ! हंसवाहिनी माँ

हे ! हंसवाहिनी माँ, हे सृष्टि की विधाता।
हे ! आद्यशक्ति जननी, हे शुद्ध बुद्धि दाता।।
आनन्द रूप सत्-चित्, सत्यम् शिवम्, तू सुन्दर।
अविचल, अनादि अमले, तू ब्रह्म है अगोचर।
तू विधि-वधू, रमा तू, तू ही उमा है दाता।।

कर्त्ता, विधाता, भर्ता, हरि, शम्भु नाशकारी।
अनघे अजातशत्रु, अमिताभ कला धारी।
हे पाप नाशनी माँ, तू वेद की है माता।।
तू राम-कृष्ण, सीता, सतरूपा, विधा राधा।
तू कल्पवृक्ष, माया, हरती है भव की बाधा।
करती है भय-हरण माँ, जो तुझको सदा ध्याता।।
सुर-मुनि की मोहिनी तू, शोभा की तू है धारा।
करुणामयी तू जननी, भक्तों का तू सहारा।
उस पर दया दिखाती, तेरी शरण जो आता।।

मुक्तक-

ईश, प्रकृति, माया तुम्हीं, रवि, शशि, भू-संसार।
अमित रूप माँ आपके, निराकार, साकार।।

हमें भक्ति दो माँ

हमें भक्ति दो माँ, हमें शक्ति दो माँ,
सतत् साधना की, तपन माँगते हैं।
न धन-धाम कुछ, आपसे माँगते माँ,
विमल ज्ञान की, एक किरण माँगते हैं॥

हृदय भावना से, प्यार से भरें हों,
लगे दीन की पीर, बनकर छलकने।
द्रवित हो उठे, बाँटने दीन का दु:ख,
लगे अश्रु बनकर, नयन में मचलने॥

नहीं कामना, वासना चाहिए माँ,
सतत् साधना का, वरण माँगते हैं॥

नहीं स्वर्ग की, सिद्धि की कामना माँ!
नहीं मुक्ति की, कर रहे याचना है।
नहीं पद प्रतिष्ठा, न यश चाहिए माँ!

नहीं स्वर्ग की, कर रहे कामना है॥
    अहं को गलाकर, करें प्रेम शिव को,
    विमल भक्ति का, वर गहन माँगते हैं॥
तुम्हीं वेदमाता, तुम्हीं देवमाता,
तुम्हीं विश्वमाता, तुम्हीं भगवती हो,
पतन–पाप से मुक्त, करने तुम्हीं तो,
पतित–पावनी हो, भागीरथी हो॥
    न वरदान अनुदान, कुछ चाहिए माँ!
    तुम्हारे चरण में, शरण माँगते हैं॥

चलें लोक मंगल, पथ पर सदा ही,
करें लोक सेवा, निष्काम होकर।
जुटें युग सृजन में, समय श्रम लगाकर,
सृजन-चेतना का, प्रखर-प्राण लेकर॥
महाकाल के, काम में हों समर्पित।
इसी हेतु जीवन, मरण माँगते हैं॥

मुक्तक-

माँ हमें वह भक्ति दो, संवेदना से छलछलाएँ।
माँ हमें वह शक्ति दो, हर अनीति से जूझ जाएँ॥

स्वार्थ से रह दूर माँ, सर्वार्थ में जीवन लगा दें।
पतन पीड़ा को मिटाकर, नव सृजन के काम आयें।।

है यह सत्य अटल यह

है यह सत्य अटल यह दुनियाँ बदलेगी,
आज नहीं तो कल यह दुनियाँ बदलेगी॥
बदलेगी, बदलेगी, निश्चय दुनियाँ बदलेगी॥
होंगे तब भी धरती और आकाश यही,
अग्नि, वायु ,जल का होगा आभास यही।

सूरज, चाँद, सितारे ऐसे ही होंगे,
दृश्य जगत के सारे ऐसे ही होंगे।
केवल दृष्टि बदल जायेगी मानव की,
मन होगा निर्मल यह दुनियाँ बदलेगी॥

उन्नति नहीं रुकेगी आविष्कारों की,
रुक जायेगी किन्तु होड़ हथियारों की।
वैज्ञानिक जन सृजन सहायक ही होंगे,
साधन फिर सच्चे सुखदायक ही होंगे।
होगा युग निर्माण, रुकेगा युद्धों का—

भीषण दावानल, यह दुनियाँ बदलेगी॥
नहीं स्वयं को फिर शरीर हम समझेंगे।
सत्साधक को शूरवीर हम समझेंगे॥
आत्मा का आनन्द अमर हम जानेंगे।
हम हैं कौन? स्वयं को हम पहचानेंगे॥
होगी मूर्च्छा दूर सगर सन्तानों की।
पाकर गंगाजल यह दुनियाँ बदलेगी॥
संघबद्ध सब नेक सदाचारी होंगे,
सज्जन सन्त दुर्जनों पर भारी होंगे।

दुष्ट दुराचारी में शक्ति नहीं होगी,
कर्म करेंगे सब आशक्ति नहीं होगी।
सदाचार सम्मानित होगा धरती पर,
होगा जनमंगल यह दुनियाँ बदलेगी॥

जरा सोचलें अब हमको क्या करना है,
पाना है अमरत्व कि पल–पल मरना है।
ऐसा जीवन जिएँ कि अपराजेय बनें,
पीड़ित मानवता के हित पाथेय बनें।
वर्तमान में प्रभु के हों सब सहयोगी,

है भविष्य उज्ज्वल यह दुनियाँ बदलेगी॥

मुक्तक-

बदलना है जमाना यह, सुनिश्चित है न संशय है।
प्रकृति का रूप बदलेगा नहीं, बदलाव निश्चय है॥
मनुज की प्रकृति बदलेगी, व परिवर्तन विचारों में।
मनुज में देव, भू पर स्वर्ग, नवयुग का यह परिचय है॥

हर प्राणी में रूप तु हारा

हर प्राणी में रूप तुम्हारा, पंकज सा मुस्काता।

रविमण्डल की ज्योति तुम्हीं हो, हे गायत्री माता॥
    जड़ मिट्टी के इस पुतले को, किया तुम्हीं ने चेतन।
    बुद्धि विवेक तुम्हीं से पाकर, सार्थक हुआ मनुज तन।
तुम्हें समर्पित होकर मानव, परमहंस बन जाता॥
खेला करता अंश तुम्हारा, शिशु की निश्छल छवि में।
तुम्हीं साधना हो साधक में, दिव्य कल्पना कवि में।
अखिल ज्ञान का सत्य तुम्हारा, गौरव निश-दिन गाता॥
    हर नारी में देखी जिसने, प्रकट तुम्हारी छाया।
    उसने ही जगजननि तुम्हारा, अनुपम दर्शन पाया।

तुमको पाकर जुड़ जाता है, सबसे निर्मल नाता॥
ऐसी शक्ति हमें दो अम्बे, युग परिवर्तन लायें।
दुःख दैन्य रह जाए न भू–पर, नया समाज बनायें।
मानवता की कीर्ति बढ़ायें, बनकर संकट त्राता॥

मुक्तक–ः

जगजननी! जग के कण-कण में, आप स्वयं संव्याप्त हैं।
लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा की, सभी शक्तियाँ प्राप्त हैं।।
अपनी गोद बिठा लो माता, अभय सभी से हो जाएँ।
फिर अज्ञान, अभाव, निर्बलता, सब व्यवधान समाप्त हैं।।

हे गुरुवर हे जगजननी माँ

हे गुरुवर हे जग जननी माँ, हमको यह वरदान दो।
जन-जन में देवत्व जगायें, प्राण भरा अनुदान दो॥

अपने मद में फूला मानव, भूल गया भगवान् को।
तुच्छ स्वार्थ में भटक रहा है, छोड़ दिया ईमान को।
ईश्वर के अनुशासन पालें, ज्ञान और विज्ञान दो॥

दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रहीं हैं, व्यसनों की भरमार है।
अनाचार के कारण जग में, फैला हाहाकार है।
इस कुचक्र को काटो माता, संस्कृति को उत्थान दो।

सुरदुर्लभ जीवन को मानव, भार समझकर ढोता है।
ऊपर से हँसता रहता है, अन्दर–अन्दर रोता है।
जीवन विद्या का सिंचन कर, इनको जीवनदान दो ॥
मन में ज्वार उठा बासन्ती, पहना केसरिया बाना।
हमें भा गया आदर्शों पर, हँस–हँसकर बलि हो जाना।
हम तप करने को उद्यत हैं, जग को जन कल्याण दो॥
आप महाप्रज्ञा को भू पर, लाये भागीरथ बनकर।
हम जन–जन को उससे जोड़ें, सच्चे युग साधक बनकर।
हमें शक्ति दो तप करने की, जग को नया विहान दो॥

मुक्तक-

गुरू से मिले प्रखरता हमको, माता से करुणा की धार।
विकसित हो देवत्व हृदय में, स्वर्ग धरा पर ले अवतार॥

हे ऋत्विज होताओं! आओ

हे ऋत्विज होताओं! आओ, आओ यजन करो।
यशकामी श्रोताओं! आओ, आओ यजन करो।
आओ मिलकर यजन करो॥

देववैद्य संग सरस्वती ने, मिलकर यज्ञ रचाया था।

तुष्ट हो गये सभी देवगण, ऐसा यजन कराया था॥
इन्द्रराज को मिला यज्ञ से, बल ऐश्वर्य अकूता था।
जिसकी ऊँचाई त्रिलोक में, कहीं न कोई छूता था॥
बल ऐश्वर्य बढ़ाने आओ! आओ, यजन करो।
ओ बहिनों–माताओं! आओ, आओ यजन करो॥
यज्ञपुरुष से ही देवों ने, दान अपरिमित पाये हैं।
प्रबल, पराक्रम भरा देह में, वे अजेय कहलाये हैं॥
मिली अलौकिक वाक्शक्ति–अतुलित बल भरा शिराओं में।
पायी अनुपम श्रवणशक्ति–यश फैला दसों दिशाओं में॥

प्राण पराक्रम पाने! आओ, आओ यजन करो।
आस्थावान् प्रजाओं आओ! आओ यजन करो॥

यज्ञों से इन्द्रादिदेव में, दिव्य ज्ञान की ज्योति जली।
ओज मिला शुभ तेजस् जागा, देवों को सद्‌बुद्धि मिली॥
दिव्य श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति के, सद्‌गुण थे सबमें उभरे।
दिव्य लाभ मिल गये यज्ञ से, मन्यु और सामर्थ्य भरे॥
दैवी लाभ उठाने आओ! आओ, यजन करो।
पुत्रों और पिताओं आओ, आओ यजन करो।

महा भेषजों–औषधियों से, यज्ञ देव सन्तुष्ट हुए।

मिला सोम इन्द्रादिदेव को, पाकर वे परिपुष्ट हुए॥
ऋषि प्रणीत यह महायज्ञ जो, जीवन में अपनाता है।
सुख-समृद्धि दाता देवों का, कृपा पात्र बन जाता है॥
दिव्य कृपा अपनाने, आओ, आओ यजन करो।
हे प्रबुद्ध नेताओं! आओ, आओ यजन करो॥

ऐसा होवे यज्ञ कि जो हर, मानव का कल्याण करे।
दुश्चिन्तन मिट जाय और, सद्‍चिन्तन का निर्माण करे॥
आज मनुजता बिलख रही है, उसको धैर्य बँधाना है।
दैवी संस्कृति के सिंचन से, नव उल्लास जगाना है॥

जीवन धन्य बनाने आओ! आओ यजन करो।
ओ जाग्रत आत्माओं! आओ, आओ यजन करो॥

तुम ईश्वर के राजकुँवर हो, मत कर्तव्य भुलाओ तुम।
स्वार्थ भरी संकीर्ण डगर पर, अब मत पाँव बढ़ाओ तुम।।
जनमंगल के लिए समर्पित, जो कुछ भी कर जाओगे।
विविध रूप में उसे असंख्यों, गुना यहाँ तुम पाओगे।।
दैवी भाव जगाने आओ-आओ यजन करो।
नवयुग की प्रतिभाओं आओ-आओ यजन करो।।

होता है सारे विश्व का

होता है सारे विश्व का, कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से॥
    ऋषियों ने ऊँचा माना है, स्थान यज्ञ का।
    भगवान् का यह यज्ञ है, भगवान यज्ञ का।
    जाता है देवलोक में, इन्सान यज्ञ से॥
जो कुछ भी डालो यज्ञ में, खाते हैं अग्निदेव।
एक-एक के बदले सौ-सौ, दिलाते हैं अग्निदेव।
पैदा अनाज करते हैं, भगवान् यज्ञ से॥

होता है कन्यादान भी, इसके ही सामने।
पूजा है इसको कृष्ण ने, भगवान् राम ने।
मिलती है राजकीर्ति व सन्तान यज्ञ से॥

इसका पुजारी कोई, पराजित नहीं होता।
इसके पुजारी को कोई भी, भय नहीं होता।
होती है सारी मुश्किलें, आसान यज्ञ से॥

चाहे अमीर हो कोई, चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है, वह खुश नसीब है।
उपकारी मनुज बनता है, देवयज्ञ से॥

मुक्तक–

यज्ञ पिता हैं सुर–संस्कृति के, यज्ञ सृष्टि के निर्माता हैं।
इसीलिए हर संस्कार में, आवश्यक समझा जाता है॥
देवशक्तियाँ यज्ञदेव, द्वारा ही तो प्रसन्न होती हैं।
जीवन, प्राण, धान्य, समृद्धि, यश, वैभव 'होता' पाता है॥

हमारा है यह दृढ़ संकल्प

हमारा है यह दृढ़ संकल्प, नया संसार बसायेंगे।
नया इन्सान बनायेंगे, नया संसार बसायेंगे॥

क्षीर सागर में सोया जो, उसे झकझोर जगायेंगे।
उसे प्रिय है केवल इन्साफ, जगत् को यह समझायेंगे।
कर्मफल देना जिसका काम, नया भगवान् बनायेंगे॥

विषमता नहीं टिकेगी कहीं, एकता समता लायेंगे।
न होगा नारी का अपमान, उसे गुणखान बनायेंगे।
निकम्मे प्रचलन बदलेंगे, धरा को स्वर्ग बनायेंगे॥

न आलस बरतेगा कोई, उठेंगे और उठायेंगे।
पसीने की रोटी पर्याप्त, मुफ्त का माल न खायेंगे।
करे जो आदर्शों से प्रीति, नया ईमान बनायेंगे॥

चलेंगे नहीं छद्म पाखण्ड, सच्चाई सब अपनायेंगे।
भ्रान्तियों की न गलेगी दाल, ज्ञान के दीप जलायेंगे।
अँधेरे को न मिलेगा ठौर, नया अभियान रचायेंगे॥
उनींदे नहीं रहेंगे हम, जगेंगे और जगायेंगे।
रहेंगे मिल-जुलकर सब एक, हँसेंगे और हँसायेंगे।
करे जो दुर्गा को साकार, नया सहकार जगायेंगे॥

मुक्तक-

सुनो व्रत ले लिया हमने, सदा इसको निभायेंगे।
मशालें क्रान्ति की हम आज, घर-घर में जलायेंगे॥

मनुज को त्रस्त करती जो, वही जड़ता मिटायेंगे।
हृदय का ताप हरने, ज्ञान की गंगा बहायेंगे॥

हम गायत्री माँ के बेटे

हम गायत्री माँ के बेटे, तुम्हें जगाने आये हैं।
जाग उठो भारत के वीरों, तुम्हें जगाने आये हैं॥
एक बनेंगे नेक बनेंगे, प्यार बढ़ाने आये हैं।
तपोभूमि मथुरा के नारे, तुम्हें सुनाने आये हैं।
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के नारे, तुम्हें सुनाने आये हैं॥

हम सुधरेंगे युग सुधरेगा, यही बताने आये हैं।
हम बदलेंगे युग बदलेगा, यही बताने आये हैं।
ऊँच-नीच और जाति-पाँति का भेद मिटाने आये हैं॥

गायत्री के महामन्त्र की, महिमा गाने आये हैं।
हर मानव में सद्बुद्धि का, दीप जलाने आये हैं॥
देवसंस्कृति निर्मित करने, नई प्रेरणा लाये हैं।
युग निर्माण योजना का, सन्देश सुनाने आये हैं॥

अनाचार का अन्त करेंगे, लोभ मिटाने आये हैं।
कुरीतियों और पाखण्डों को, जड़ से मिटाने आये हैं॥

नया उजाला नई रोशनी, जग में लेकर आये हैं।
अनाचार के अन्धकार को, जड़ से मिटाने आये है।
ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल, तुम्हें थमाने आये हैं।
श्री राम शर्मा जी का, सन्देश सुनाने आये हैं॥

मुक्तक-

गायत्री का जग भर को सन्देश सुनाएँगे।
भटक गये हैं जो उनको सद्पथ दिखलाएँगे।।
टिक न सकेंगे अब अज्ञान, अभाव निबलतायें।
जूझेंगे कुरीतियों से, अब पाखण्ड मिटायेंगे।।

हम बदलेगें युग बदलेगा

हम बदलेगें, युग बदलेगा, यह सन्देश सुनाता चल।
आगे कदम बढ़ाता चल, बढ़ाता चल, बढ़ाता चल॥

अन्धकार का वक्ष चीरकर, फूटे नव प्रकाश निर्झर।
प्राण–प्राण में गूँजे शाश्वत, सामगान का नूतन स्वर॥
तुम्हें शपथ है हृदय–हृदय में, स्वर्णिम दीप जलाता चल।
स्नेह सुमन बिखराता चल तू, आगे कदम बढ़ाता चल॥

पूर्व दिशा में नूतन युग का, हुआ प्रभामय सूर्य उदय।
देव दूत आया धरती पर, लेकर सुधा–पात्र अक्षय॥

भर ले सुधा–पात्र तू अपना, सबको सुधा पिलाता चल।
शत्–शत् कमल खिलाता चल तू, आगे कदम बढ़ाता चल॥
ओ! नवयुग के सूत्रधार, अविराम सतत् बढ़ते जाओ।
हिमगिरि के ऊँचे शिखरों पर, स्वर्णिम केतन फहराओ॥
मंजिल तुझे अवश्य मिलेगी, गीत विजय के गाता चल।
नव चेतना जगाता चल तू, आगे कदम बढ़ाता चल॥

मुक्तक–

यह राग द्वेष का समय नहीं, दुखियों का दर्द मिटाता चल।
युग परिवर्तन की बेला में, तू सबको गले लगाता चल॥

महानिशा के इस घेरे में, दीप पुञ्ज फैलाता चल।
सत्यम् , शिवम् , सुन्दरम् पथ पर, आगे कदम बढ़ाता चल॥

हर दिनों से ये दिन कितना

हर दिनों से ये दिन कितना प्यारा।
हो मुबारक जनम दिन तुम्हारा॥
हम विजयमाल तुमको पहनायें,
माथे ऊपर तिलक हम लगायें॥
ये घड़ी है न केवल खुशी की,

प्रेरणा लें नई जिन्दगी की॥
करती उज्ज्वल भविष्य का इशारा॥
ये मनुज तन ही दुर्लभ जनम है,
करना उद्धार इसका धरम है।
जिन्दगी का है अनमोल हर क्षण,
काट लें दुर्विचारों का बन्धन।
अब समय ने तुम्हें है पुकारा॥
देें न इन्द्रिय सुखों की दुहाई।
श्रेष्ठ चिन्तन में ही है भलाई॥

चिरञ्जीवी हो बधाई–बधाई।
हो सदा सद्गुणों से मिताई॥
सब सफल हो मनोरथ तुम्हारा॥
बेला युग सन्धि की है ये आई,
दे रही रण की भेरी सुनाई।
विकृति–संस्कृति की है ये लड़ाई,
दे रही है मनुजता दुहाई॥
दें मनुज संस्कृति को सहारा॥
मुक्तक–

समय बड़ा ही मूल्यवान प्रिय!, अपने गौरव को पहचानो।
जन्मदिवस पर निज जीवन को, श्रेष्ठ बनाने का प्रण ठानो॥

हरि ओम् हरि ओ ्

हरि ओम् हरि ओम्, सब मिल गाओ।
हरि का ही काम करो , हरि के हो जाओ॥
बैर भाव सब दूर भगाओ।
ज्ञान-भक्ति की धार बहाओ॥
एक पिता के पुत्र सभी हैं।

आपस में सब प्रेम बढ़ाओ॥
दीन–हीन अब मत कहलाओ।
अपनी सोई शक्ति जगाओ॥
लेना–लेना ही मत सोचो।
सब के सुख–दाता बन जाओ॥
सुख को बाँटो–दुख बँटाओ।
जन–जन में अपनत्व जगाओ॥
पाप–पतन का चक्र काट दो।
अन्तर का देवत्व जगाओ॥

मन में श्रद्धा भाव जगाओ।
जन-जन के सेवक बन जाओ॥
सब में अपने प्रभु को देखो।
सादर सबको शीश झुकाओ॥

मुक्तक-

जीभ से गुणगान हम, हरि नाम का करते रहें।
हाथ से भगवान का ही, काम हम करते रहें॥
दुःख बँटाएँ और सुख, बाँटे यही हो साधना।
जिन्दगी भर कर्म ही, निष्काम हम करते रहें॥

हमको अपने भारत की

हमको अपने भारत की, मिट्टी से अनुपम प्यार है।
अपना तन-मन जीवन सब, इस मिट्टी का उपहार है॥
इस मिट्टी में जन्म लिया था, दशरथनन्दन राम ने।
इस धरती पर गीता गाई, यदुकुलभूषण श्याम ने।
इस धरती के आगे मस्तक, झुकता बारम्बार है॥
इस माटी की जौहर गाथा, गाई राजस्थान ने।
इसे बनाया पावन गाँधी, के महान् बलिदान ने।
मीरा के गीतों की इसमें, छिपी हुई झंकार है॥

इस, मिट्टी की शान बढ़ायी, तुलसी, सूर, कबीर ने।
अर्जुन, भीष्म, अशोक, प्रतापी,भगतसिंह से वीर ने।
इस धरती केकण –कण में,शुभ कर्मों का संस्कार है॥
कण–कण मन्दिर इस माटी का,कण,कण में भगवान् है।
इस मिट्टी का तिलक करो,ये अपना हिन्दुस्तान है।
इस माटी का हर सपूत, भारत का पहरेदार है॥

मुक्तक–

तुझमें खेले गाँधी, गौतम, राम, कृष्ण बलराम।
मेरे देश की माटी तुझको, सौ–सौ बार प्रणाम॥

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में, माँगे मातृभूमि से यह वर।
तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे ना रहे॥

हमने आँगन नहीं बुहारा

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान्।
मन का मैल नहीं धोया तो, कैसे आयेंगे भगवान् ॥

हर कोने कल्मष कषाय की, लगी हुई है ढेरी।
नहीं ज्ञान की किरण कहीं है, हर कोठरी अँधेरी।
आँगन चौबारा अँधियारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

हृदय हमारा पिघल न पाया, जब देखा दुखियारा।
किसी पन्थ भूले ने हमसे, पाया नहीं सहारा।
सूखी है करुणा की धारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

अन्तर के पट खोल देख लो, ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर, का आभास मिलेगा।
सच्चे मन से नहीं पुकारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

निर्मल मन हो तो रघुनायक, शबरी के घर जाते।
श्याम सूर की बाँह पकड़ते, शाक विदुर घर खाते।
इस पर हमने नहीं विचारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

मुक्तक-

कबीरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
हरि पाछे-पाछे फिरैं कहत कबीर-कबीर॥

हे जगजननी मातु भगवती

हे जगजननी मातु भगवती, पदवन्दन स्वीकार करो।
गुरु की गरिमा माँ की ममता, से जग का उद्धार करो॥
जाने कैसे आदर्शों से, मन का रिश्ता टूट गया।
इसीलिए सौभाग्य हमारा, माता हमसे रूठ गया॥

तेजस्वी गुरुता से माता, दुर्भावों को फटकारो।
माँ अपनी पावन ममता से, सद्भावों को पुचकारो॥
जैसे भी हों रोगी मन का, अब तो तुम उपचार करो।
हम क्या जानें कैसे हम सब, प्रभु चरणों से दूर हुए।
जाने क्यों माँ अमृत छोड़कर, हीन नशे में चूर हुए॥
भले-बुरे जैसे भी हैं माँ, आखिर तेरे बेटे हैं।
भटक गये थे लेकिन अब तो, तव चरणों में लेटे हैं॥
टूटे हुए थके तन-मन में, नवल शक्ति संचार करो॥
समय ध्वंस की ओर बढ़ रहा, माँ तुम रक्षक बन जाओ।

महाकाल का रूप धरो माँ, इसे राह पर ले आओ।।
शुष्क मनों में प्रेम भावना, फिर से भर दो हे! माता।
द्वेषभाव मिट जाये बढ़े फिर, भाई चारे का नाता।।
कलि की कुटिल कुचाल काटकर, सतयुग का संचार करो।।
हम सब पूत तुम्हारे माता, यज्ञ भाव से आये हैं।
जीवन यज्ञ रचायेंगे हम, यह संकल्प उठाये हैं।।
तेरा प्यार पिया है माता, उसको नहीं लजायेंगे।
यज्ञ हेतु आहुति बनकर, हम तेरा कर्ज चुकायेंगे।।
माँ बलिदानी भाव जगा दो, बस इतना उपकार करो।।

मुक्तक-

हे जगदम्बे हमें शक्ति दो, दुर्भावों से जूझ सकें।
हे कल्याणी हमें भक्ति दो, सद्भावों पर रीझ सकें॥
बचा ध्वंस से नए सृजन में, हमें लगा दो हे! माता।
ऐसी सृष्टि बनायें जिसमें, गीत प्यार के गूँज सके॥

हे गुरुवर श्रीराम तु हारी

हे गुरुवर श्रीराम तुम्हारी, महिमा अपरम्पार है।
मानवता ने तुमसे पाया, नव बल का संचार है॥

देवदूत बनकर आये, तपोपूत तुम कहलाये।
ऋषि बनकर सबको भाये, नमन तुम्हें शत् बार है।
राष्ट्र धर्म में मस्त रहे, जप तप के अभ्यस्त रहे।
नये सृजन में व्यस्त रहे, जान गया संसार है॥
तुमने कार्य महान किया, जगती का कल्याण किया।
संस्कृति का उत्थान किया, जो युग का उपचार है॥
यज्ञ और गायत्री को, सविता को सावित्री को।
माता देवि धरित्री को, दिया नया उपहार है॥
मिटा गये अज्ञान तुम, लुटा गये अनुदान तुम।

बाँट गये वरदान तुम, यह अद्भुत व्यापार है।।

हे प्रभो! जीवन हमारा

हे प्रभो! जीवन हमारा, यज्ञमय कर दीजिये।
सृष्टि को सुरभित करें हम, शक्ति वह भर दीजिये॥
विश्व यह सारा समझलें, एक पावन यज्ञशाला।
ज्ञान दीपक का यहाँ पर, हो सदा अभिनव उजाला॥
यज्ञकुण्डों से सजे हों ये, सभी भूखण्ड सुन्दर।
संगठन की अग्निज्वाला, हो प्रकट जिनमें प्रखर हर॥

भावना मंगल कलश सी, शान्ति सुख कर दीजिये।
आचमन में धो सकें हम,सब कलुष तन,मन,वचन के ।
अंग सब इस देह केहों, उपकरण दैनिक हवन के॥
देवताओं को करें, सत्कर्म की आहुति समर्पित।
सौम्यता की शर्करा हो, स्नेह का निर्मल नवल घृत।
हो वसोधारा न खण्डित, हृदय उर्वर दीजिये॥
लक्ष्य अपना पूर्ण कर लें, सफल पूर्णाहुति वही है।
मन्त्र हों सिद्धान्त जिनमें, त्याग की ध्वनि रम रही है।।
आरती ऐसी करें परमार्थ हो, जगमग जगत में।

शंख सी गूँजे विजय की, ध्वनि हमारे पुण्य पथ में।।
युग नया रच दें यही, संकल्प दृढ़ कर दीजिए।।

मुक्तक

यज्ञमय जीवन जिएँ, वह शक्ति हमको दें प्रभो।
लोकमंगल साधना की, भक्ति हमको दें प्रभो।
शुद्ध हो तन-मन हमारा, लोकहित आहुति बनें।
समर्पित जीवन जिएँ, अनुरक्ति हमको दें प्रभो।।

हे! जगजननी गायत्री माँ

हे ! जगजननी गायत्री माँ, कल्याणी सुन्दर अभिराम।
कृपा करो माँ हम भक्तों पर, स्वीकारो माँ सतत् प्रणाम।।
सद्विचार सद्ज्ञानदायिनी, निशिदिन ध्यान धरूँ तेरा।
हे अखिलेश्वरि दया करों माँ, मन न कभी भटके मेरा।
शिशु सुत हैं हे माँ हम तेरे, जानें केवल तेरा नाम।।
हृदय हमारा विमल करो माँ, अपने को हम पहचानें।
भाव उदय हो मन में अपने, जैसा ही सबको जानें।
हम सबके हों सभी हमारे, करें सर्वदा ही शुभ काम।।

जीवन लक्ष्य हमारे माता, पूरे हों हम यह चाहें।
गुरु के चरणों से ही निकलें, जीवन की सारी राहें।
हे जगदम्बे हृदय हमारा, बने आपका पावन धाम।।
कृपा आपकी मिले कि जिससे, जीवन सफल बना पायें।
जीवन के अन्तिम क्षण तक माँ, गीत सृजन के ही गायें।
अपने ही सुन्दर श्रीचरणों, में देना अन्तिम विश्राम।।

मुक्तक:-

तेरा पावन रूप निहारूँ, विमल सृष्टि के कण-कण में माँ।
मन से वाणी और कर्म से, करूँ अनुगमन तेरा ही माँ॥

हम लौह खण्ड ही हैं

हम लौह खण्ड ही हैं—पारस हमें छुला दो।
हैं आप सिद्ध पारस—सोना हमें बना दो॥
नीरस हुआ है जीवन संवेदना नहीं है।
है प्राण, पर उछलती सद्प्रेरणा नहीं है॥
अमृत कलश! छलककर—अमृत हमें पिला दो॥
मृग सा भटक रहे हैं, हो कामना ग्रसित हम।
हे आप्तकाम गुरुवर! हो कामधेनु ही तुम॥
पय तृप्ति का पिलाकर—निष्काम ही बना दो॥

हम कल्पना जगत् में, रहते सदा भटकते।
मिलती न शान्ति छाया–रहते हैं सिर पटकते॥
हे कल्पवृक्ष! अपनी छाया सुखद दिला दो॥

'गुरुमन्त्र' आपका ही, आकार हो गया है।
'प्रज्ञास्वरूप' ही तो, साकार हो गया है॥
आनन्दकन्द! हमको, आनन्द रस चखा दो॥

'प्रज्ञा–प्रकाश' में हम, बढ़ते चलें निरन्तर।
सोपान–साधना के, चढ़ते चलें निरन्तर॥
'उज्ज्वलभविष्य' से अब, अविलम्ब ही मिला दो॥

मुक्तक–

पारस, अमृत, कल्पवृक्ष अरु, कामधेनु का नाम सुना है।
पता नहीं किसके द्वारा यह, ताना–बाना गया बुना है।
इन चारों से लाभ उठाकर, दुनियाँ को जादू बतलाने।
जीवन में प्रयोग करने को, गुरुवर हमने तुम्हें चुना है॥

हम नव जागृति के कर्णधार

हम नव जागृति के कर्णधार हैं, दुनियाँ नई बसाएँगे।
जय बोलेंगे मानवता की, जन–जन को गले लगाएँगे॥

पिछले युग की कुण्ठाओं को, आश्रय न मिलेगा सच मानो।
भय, क्रोध, अविद्या, लोभ, मोह,कम होंगे यह निश्चय जानो॥
गुण, कर्म, प्रकृति आधार मान, मानव का होगा मूल्यांकन।
जिसमें होगा साहस अजेय, उसका ही होगा अभिनन्दन॥
सहमे-सहमे दुर्बल मन में, पावन पुरुषार्थ जगाएँगे।
जय बोलेंगे मानवता की, जन-जन को गले लगाएँगे॥

नूतन-नूतन निर्माणों की, शृंखला एक बन जाएगी।
साधन सुविधाओं की वर्षा, जीवन को रम्य बनाएगी॥
दानों का ढेर लगा देंगे, फिर कहीं नहीं होगा अभाव।

भुखमरी और निर्धनता का, फिर कहीं नहीं होगा प्रभाव॥
श्रम कण से सींचेंगे धरती, माटी से स्वर्ण उगाएँगे।
जय बोलेंगे मानवता की, जन–जन को गले लगाएँगे॥

अब चरण बढ़ेंगे नव पथ पर, है लक्ष्य एक साथी अपना।
देवता कर्म को मानेंगे, सच होगा सतयुग का सपना॥
हर घर को स्वर्ग बना देंगे, हर मानव को सच्चा मानव।
यह विश्व बनेगा नन्दन वन, चमकेगा भारत का गौरव॥
जिसमें न कहीं होगी पीड़ा, ऐसा संसार बसाएँगे।
जय बोलेंगे मानवता की, जन–जन को गले लगाएँगे॥

हो रहा हो संस्कृति सीता हरण

हो रहा हो संस्कृति सीता हरण,
राम के हनुमान तुम क्यों मौन हो।
निश्चरों से हीन करने को मही,
राम के आह्वान तुम क्यों मौन हो॥
हो रहा शोषण निरीहों का सतत्।
धर्म का पाखण्ड करता है मदद॥
बुद्ध! की करुणा कहाँ पर सो गई।
बुद्ध, करुणावान तुम क्यों मौन हो॥

सत्य का खुलकर निरादर हो रहा।
राष्ट्र हिंसा का प्रताड़न ढो रहा।।
सुप्त क्यों है अहिंसा महावीर की।
पीर, बापू! की कहो क्यों मौन हो।।

धर्म, संस्कृति, राष्ट्र पर संकट घिरे।
आस्था, विश्वास के आँसू झरे।।
क्या हुआ, गुरुभक्ति नानक देव की।
ज्ञान, गोविन्दसिंह के क्यों मौन हो।।

राष्ट्र की सामर्थ्य क्यों सोई हुई।

किसलिए व्यामोह में खोई हुई।।
शहीदों का रक्त क्या ठण्डा हुआ।
बसन्ती बलिदान तुम क्यों मौन हुये।।

मुक्तक-

जब-जब भी अनीति बौराई, साहस ने प्रतिकार किया है।
जब-जब जन पीड़ा गहराई, करुणा ने अवतार लिया है।।
मौन नहीं रह पाई संवेदन, साहस की शक्ति कभी भी।
हुँकारा है शौर्य राष्ट्र का, करुणा ने भी प्यार दिया है।।

हरो विश्व विपदा श्रीराम

हरो विश्व विपदा श्रीराम, हे अन्तर्यामी सुखधाम।

जब-जब विपत्ति धरा पर आई, दुःख दर्दों की बदली छाई।
तब-तब शपथ तुम्हीं ने खाई, और आसुरी वृत्ति जलाई॥
पुनः सम्भालो बिगड़े काम, अजर अमर हे! नाथ अकाम॥
हरो विश्व विपदा श्रीराम, हे अन्तर्यामी सुखधाम॥

तुमने ही हर युग में आकर, दमकाया कर्त्तव्य दिवाकर।
अर्जुन को सन्देश सुनाकर, रची विश्व हित गीता सुखकर।
करते विनय सुबह और शाम, रचो परिस्थितियाँ अभिराम॥

हरो विश्व विपदा श्रीराम, हे अन्तर्यामी सुखधाम।।

असुरवृत्तियाँ दूर भगा दो, साहस और विवेक जगा दो।
नवलसृजन में चित्त लगा दो, सद्गुण की गंगा उमगा दो।
भरो प्रेरणा आठों याम, हों समृद्ध नगरी और ग्राम।।
हरो विश्व विपदा श्रीराम, हे अन्तर्यामी सुखधाम।।

मुक्तक-

धरा पर पाप बढ़ते हैं, तभी अवतार आते हैं।
तभी तो राम, कृष्ण, गौतम व गाँधी तड़फड़ाते हैं।।

असुरता बौखलाई फिर, है विपदा देवसंस्कृति पर।
पुनः श्रीराम से युग मुक्ति की आशा लगाते हैं।।

हाथ पर यूँ हाथ रखकर

हाथ पर यूँ हाथ रखकर तुम न बैठो।
सोच लो अब यह समय संक्रान्ति का है।
कुछ न कुछ अब कर गुजरने का समय है।
यह सहस्राब्दी बदलती सन्धि बेला।।
ठहर पायेगा नहीं तूफान में अब।

वह निबल हो या सबल कोई अकेला।।
बस यही संकेत है मिलकर चलो तुम।
अब समय क्षण भर नहीं विश्रान्ति का है।।

हर तरफ हैं दृश्य ऐसे इस समय की।
धार में बिगड़ा हुआ हर सन्तुलन है।।
सब ढलानों पर फिसलते जा रहे हैं।
इस तरह निश्चित पराभव है, पतन है।।
सावधानी से तुम्हें हर पग बढ़ाना।
यह समय हर ओर घोर अशान्ति का है।।

आत्मबल लेकर अगर तुम बढ़ सकोगे।
लक्ष्य पर ही दृष्टि यदि हर पल रहेगी।।
तो समझ लो इस भयंकर धार में भी।
नाव मन चाही दिशा में ही बहेगी।।
आज तो निश्चित अडिग संकल्प ले लो।
यह समय बिल्कुल न अब दिग्भ्रान्ति का है।।
बस तुम्हारी ही समन्वित शक्ति से ही।
स्वर्ग का फिर अवतरण होगा धरा पर।।
प्रकट होकर नवसृजन की चेतना से।

प्रीति का वातावरण होगा धरा पर।।
आ रहा है जो समय निश्चित समझ लो।
वह बहुत पावन, सुनिश्चित शान्ति का है।।

मुक्तक:-

हाथ पर धर हाथ बैठने से हार होती है।
बाहुओं की बल्ली से, नाव पार होती है।।
पाँव जब उठते अडिग, विश्वास लिए राही के।
राह देने को क्षितिज में दरार होती है।।

है निमन्त्रण पुनः जागरण

है निमन्त्रण पुनः, जागरण केन्द्र से।
घण्टियाँ बज रहीं, शंख बजने लगे।।
    ऊँघने का समय, अब नहीं रह गया।
    जागरण के नये, साज सजने लगे।।
ध्यान देकर जरा, युग प्रभाती सुनो।
हर दिशा जागरण, गान गाती सुनो।।
रात की कैद से, छूटने के लिये।
बेड़ियाँ पाँव की, झनझनाती सुनो।।

रास्ते मुड़ गये, रोशनी की तरफ।
और गति के चरण, फिर थिरकने लगे।।
ज्ञान के मन्त्र पढ़ने, लगा युग वहाँ।
कर्म की मूर्ति गढ़ने, लगा युग वहाँ।।
भावना भक्ति के, पग मचलने लगे।
स्वर्ण सोपान चढ़ने, लगा युग वहाँ।
सुप्त देवत्व का, हो रहा फिर उदय।
स्वर्ग के पग, धरा पर उतरने लगे।।
महायज्ञों की जग में, मची धूम है।

दुष्टता पर विजय की, मची धूम है।।
हो रहा है अनुष्ठान, निर्माण का।
साधना व्यक्ति निर्माण, परिवार का।।
    युग बदलकर रहेगा, कि सन्देह क्या।
    व्यक्ति के आचरण, जब बदलने लगे।।
ओ! सृजनशिल्पियों युग नया अब गढ़ो।
ओ! सृजनसैनिकों व्यूह रचकर बढ़ो॥
जूझते तुम रहे जिन्दगी भर सही।
श्रेष्ठतम कर गुजरने का अवसर यही॥

झोंक दो प्राण समझो सुनिश्चित विजय।
प्राण बलिदान के हित, मचलने लगे॥

मुक्तक–

आज बज उठी रणभेरी, नवयुग के निर्माण की।
उठो साथियों लिखो कहानी, त्याग और बलिदान की॥

हम अपने पथ को

हम अपने पथ को पा जायें, इतना विश्वास हमें दो माँ॥
तम की बेला है–राह कठिन, कण्टक मेला है–राह कठिन।

चौराहे पर चौराहे हैं, पग–पग रेला है–राह कठिन।
भटकावों में न कहीं आयें, वह पुण्य प्रकाश हमें दो माँ॥
बादल बिजली में होड़ ठनी, गहरे दल–दल से राह सनी।
पावों का वेग–रोकने को, शूलों की भीड़–लगी इतनी।
धीरज से पाँव बढ़ा पायें, अपना मधुहास हमें दो माँ॥
हो बुद्धि शुद्ध–शुभ चाह बनें, हर पाँव उठे तो–राह बने।
उठती तूफानी आँधी में, साकार बनें जीवन सपने।
तम पर प्रकाश बन छा जायें, जलता हर श्वाँस हमें दो माँ॥

मुक्तक–

माँ ! हमें वह शक्ति दो, संघर्ष पथ पर चल सकें।
राह में जो भी मिलें, उन कण्टकों को दल सकें।।
लोकमंगल के लिए माँ, कर चले संकल्प हम।
भय-प्रलोभन सामने हों, पर न पथ से टल सकें।।

हर युग का इतिहास उठाओ!

हर युग का इतिहास उठाओ ! युग निर्माता रही जवानी।
जब भी शिवसंकल्प किये हैं, स्वर्ग सृजेता रही जवानी।।
त्याग, तपस्या कर ऋषियों सी, उसने कायाकल्प किया था।

उसने राम-कृष्ण, गौतम व, महावीर का शिल्प किया था।
तुलसी, सूर, कबीरा, नानक, सन्त प्रणेता रही जवानी।।
लेकिन जब-जब भी वह बहकी, रावण, कंस शिशुपाल दिये हैं।
आतंकी अपराधी बनकर, बढ़-चढ़कर अपराध किये हैं।
अरे! क्रूरता को अपनाकर, पीड़ादाता रही जवानी।।
व्यवसायी नेता, अभिनेता, सब गुमराह किये हैं उसको।
और धर्म के धन्धे वाले, अपने साथ लिए हैं उनको।
कठपुतली बन उनकी उनका, भाग्यविधाता रही जवानी।।
जाग जवानी फिर अतीत की, गौरव-गरिमा बुला रही है।

वर्तमान की पतनावस्था, भारत माँ को रुला रही है।
क्यों पीड़ादाता बनती है, तू तो त्राता रही जवानी।।

मुक्तक-

जवानी दिशा पाकर, इस धरा पर स्वर्ग ला देती।
इसे मत भटकने दो, अन्यथा आफत मचा द९गी।।

हमें फिर से धरा पर

हमें फिर से धरा पर, ज्ञान की गंगा बहानी है।
जगत विख्यात भारत के, सपूतों की कहानी है॥

विवेकानन्द से जग ने, नवल आध्यात्म पाया था।
कि सोया कर्मदर्शन, रामतीरथ ने जगाया था।
जला सकती न आग इन्हें, डुबा सकता न पानी है॥
निशा में उर्वशी को माँ कहे, इस भूमि का अर्जुन।
निरख रमणी शिवा का, मातृ भावों से भरा था मन।
यही निष्ठा पुनः सबके, चरित्रों में जगानी है॥
हुई है धन्य जिनके त्याग से, स्वातन्त्र्य बलिवेदी।
भगतसिंह और नेताजी, कि जिनके स्वर गगन भेदी।
खुशी से प्राण देना ही, शहीदों की निशानी है॥

वही है वीर जो निज ध्येय को, हर मूल्य पर पाये।
पराक्रम वह कि जिससे, काल की गति भी ठहर जाये।
पराक्रम इन्द्र है शिव है, कि भैरव है भवानी है॥

मुक्तक-

प्रगति पथ पर ध्वजा नूतन, सदा अध्यात्म ने बाँधी।
इसी की शक्ति लाती है, सदा जनक्रान्ति की आँधी॥
धरा पर राज्य की ताकत, गिरा सकती है एटमबम।
नहीं पैदा वो कर सकती, विवेकानन्द और गाँधी॥

होनहार देश के, कर्णधार

होनहार देश के, कर्णधार देश के।
देश की पुकार पर, आज तुम बढ़े चलो॥

मातृभूमि के लिए, प्राण के जला दिये।
तुम नयी बहार को, ज्योति का शृंगार दो॥
जोश यह घटे नहीं, पाँव अब हटें नहीं।
पाठ स्वाभिमान का, आज तुम पढ़े चलो॥

यह धरा दहल उठे, सिन्धु भी मचल उठे।
तुम जिधर चरण धरो, जीत का वरण करो॥

तुम कहीं रुको नहीं, तुम कहीं झुको नहीं।
आज आसमान पर, शान से बढ़े चलो॥
देश के गुमान तुम, शूरमाँ महान् तुम।
तुम अमर सपूत हो, तुम ही शान्तिदूत हो॥
क्रान्ति की मशाल बन, और बेमिसाल बन।
त्याग की कहानियाँ, आज तुम गढ़े चलो॥

मुक्तक-

भारत माता के गौरव हो, तुम तो अरे! सृजन सेनानी।
मातृभूमि के लिये दिये हैं, तुमने प्राण अरे! बलिदानी॥

देश, धर्म के लिये तुम्हें फिर, तूफानों से टकराना है।
नवयुग स्रष्टा के सैनिक हो, तुम हो अरे! विश्वनिर्माणी॥

मुक्तक- (हमने पायी थाह आज माँ)

प्यार तुम्हारा पिया बहुत माँ, पीनी है अब पीर तुम्हारी।
चुका सके ऋण थोड़ा भी तो, जागेगी तक़दीर हमारी॥
तेरी शपथ उठाते हैं माँ!, तिल-तिलकर हम जल जायेंगे।
तेरा नेह प्रकाश बनाकर, दुनियाँ भर में फहरायेंगे॥

हमने पायी थाह आज माँ

हमने पायी थाह आज माँ–तेरे मन की पीर की।
चले चदरिया ओढ़ बसन्ती–हम बलिदानी वीर की॥
यही बसन्ती चादर ओढ़ी–नानक ने रैदास ने।
ऊँच नीच का भेद मिटाया–था श्रद्धा विश्वास ने॥
सियाराम–मय सारे जग को–जाना तुलसीदास ने।
मोको कहाँ ढूँढ़ता बन्दे–मैं तो तेरे पास में॥
गूँज उठी थी इसी वेश में–वाणी सन्त कबीर की॥
पहना था यह वेश बसन्ती–जब रणवीर प्रताप ने।

छुड़ा दिये छक्के दुशमन के–फिर चेतक की टाप ने॥
इसी वेश में निकले बिस्मिल–भगतसिंह आजाद थे।
किये निछावर प्राण न लेकिन, मुख पर दुःख अवसाद थे।
कड़ी बनेंगे हम भी बलिदानों–की उस जंजीर की॥
गये विवेकानन्द विश्व में–इस बासन्ती वेश में।
फहरायी थी ध्वजा देवसंस्कृति की देश विदेश में॥
वह संस्कृति जिसकी सुगन्ध पर, जन–जन को अभिमान था।
जिसके कारण मिला जगद्गुरु–का हमको सम्मान था॥
जिसके सम्मुख गन्ध न भायी–चन्दन और अबीर की॥

माँ है शपथ तुम्हारी–हम सब जायेंगे संसार में।
मन न किसी का रहने देंगे–भँवरों में मझधार में॥
शान्तिकुञ्ज से निकल पड़े–हम इस बासन्ती वेश में।
पायेगा संसार शान्ति अब–गुरुवर के सन्देश में॥
चिन्ता रही न हमको धन की–साधन और शरीर की॥

हम सुरक्षित नहीं

हम सुरक्षित नहीं, घर अगर जल रहा।
देश में इन दिनों, बस यही चल रहा॥

हम सुरक्षित नहीं देश के वासियों,
बाल, विद्यार्थियों, गृही, संन्यासियों।
वन सुरक्षित नहीं, हिमशिखर भी नहीं,
नद, नदी, सिन्धु की हर लहर भी नहीं॥
इस धरा धाम को, छद्म है, छल रहा।
है किसी आँख में भी नहीं जल रहा॥
खेत–खलिहान तक है, लपट ही लपट,
कारखानों घरों में कपट ही कपट।
मन्दिरों, मस्जिदों में, लगी आग है,

हर कला और साहित्य में दाग है ॥
अब सिने–संस्कृति का, जहर घुल रहा।
देश का यह पतन, क्यों नहीं खल रहा ॥ टेक ॥
जल रही काश्मीरी सुगढ़ वादियाँ,
हैं सभी ओर आतंक बरबादियाँ।
जिस्म पूरे वतन का झुलसने लगा,
यह जहर नस, रगों बीच घुसने लगा।
आज सारे वतन का, जिगर जल रहा।
देश में हाय कैसा ज़हर पल रहा ॥

देवसंस्कृति, कसम दे रही है हमें।
राष्ट्रपीड़ा भसम कर रही है हमें,
जन्म देती हैं माँ बस इसी के लिये।
धन्य सन्तान वह राष्ट्र हित जो जिये॥
वक्त जीवन–मरण का, अरे चल रहा।
सो रहे तुम हिमालय, उधर गल रहा॥
कर्ज अब मातृ–भू का उतारें चलो,
लाज अब, दूध की हम बचा लें चलो।
हो उठा है विकल, देश का देवता,

है नहीं क्या भला आपको यह पता॥
क्या तुम्हें, दर्द उनका, नहीं खल रहा।
चेत जाओ तुम्हें, शत्रु है छल रहा॥
शक्ति से आज जागृत् करें राष्ट्र को,
भक्ति से संस्कारित करें राष्ट्र को।
आइये! इस पतन से बचा लें उसे,
आग जो लग रही है, बुझा लें उसे॥
जाग जाओ सपूतों, समय कह रहा।
अब 'करो या मरो' बस, यही हल रहा॥

मुक्तक–

स्वार्थ, द्वेष आपाधापी ने–आग लगायी देश में।
अरे सपूतों निद्रा त्यागो–जल्दी आओ होश में॥
इन विनाश की ज्वालाओं से–अपना देश बचाना है।
कुर्बानी देकर भी माँ के–प्रति कर्त्तव्य निभाना है॥

हृदय से लगा लो

हृदय से लगा लो–या आँचल हटा लो।
मगर भक्ति माँ तेरी–करते रहेंगे॥

पड़े हैं पगों में यही आस लेकर–
कभी तो दया दृष्टि होगी तुम्हारी।
कभी शीश पर हाथ तेरा फिरेगा–
तुम्हारी चरण धूलि के हम भिखारी॥
हमें चाहे तारो–कभी न उबारो–
मगर मन्त्र जप तेरा करते रहेंगे॥
नमो वेदमाता नमो विश्वमाता–
भला कौन जग में तुम्हें जो न भाता।
परम भक्त वत्सल परम ज्योति जननी–

हृदय में हमारे यही भाव आता॥
कि होकर रहेंगे–कभी तो तुम्हारे–
कभी तो तुम्हीं में माँ खोकर रहेंगे॥

गहन वेदना से दुःखी सारी दुनियाँ–
जगत् के अन्धेरे मिटाने चले हैं।
तुम्हारी कृपा की किरण के सहारे–
अमित ज्ञान दीपक जलाने चले हैं॥
अगर मिल गया माँ तुम्हारा सहारा–
तो सचमुच ये व्रत पूर्ण करके रहेंगे॥

मुक्तक–

माँ का आँचल छोड़ कहाँ पर जायेंगे–
ठोकर में भी प्यार तुम्हारा पायेंगे।।
हम बालक हैं हमसे गलती होगी तो–
माँ के संरक्षण में सद्पथ पायेंगे।

हे गुणधाम हे सुखधाम

हे गुणधाम हे सुखधाम, हे घनश्याम राजाराम।
सीताराम सीताराम, सीताराम सीताराम।।

राधेश्याम राधेश्याम, राधेश्याम राधेश्याम॥

हमें घेरे असुर भारी, दुःखी हैं उनसे नर नारी।
अनास्था बन घुसे मन में, बसे आलस्य बन तन में॥
करो इनका कुचक्र बेकाम, हे घनश्याम राजाराम॥

मनों में स्वार्थ का डेरा, पड़ा अज्ञान का घेरा।
इसी में श्रम खपा जाता, समय सारा चुका जाता॥
कर सकें कुछ तो प्रभु के काम, हे घनश्याम राजाराम॥

सुन सकें युग की करुण पुकार, रहा युग पुरुष हमें ललकार।
निभायें हम भी तो युग धर्म, समझ लें जीवन का यह मर्म॥

जीत लें जीवन का संग्राम, हे घनश्याम राजाराम॥
जुबाँ पर नाम हो प्रभु का, तनों से काम हो प्रभु का।
हृदय निज धाम हो प्रभु का, सदा ही ध्यान हो प्रभु का॥
लगन से लगे रहें अविराम, हे घनश्याम राजाराम॥

मुक्तक-

आपका गुणगान करते हैं प्रभो, आप दुःख से त्राण करते हैं प्रभो॥
हर सकें युगवेदना, वह शक्ति दो, आप तो अनुदान झरते हैं प्रभो॥

हमें आपका स्नेह

हमें आपका स्नेह मिलता रहेगा,
तो यह कारवां साथ चलता रहेगा।
सतत् कारवाँ साथ चलता रहेगा॥
बिछुड़ हम गए थे गले से लगाये,
न जाने कहाँ से हमें ढूँढ लाये।
भटक जब रहे थे हमें पथ दिखाया,
दिया प्यार इतना कि अपना बनाया।
उसी प्यार को मन, मचलता रहेगा॥

जिन्हें आपने त्याग-तप से जलाईं-
हमें आपने वे मशालें थमाईं।
चलेंगे मशालें लिए साथ में हम,
थमा हाथ को आपके हाथ में हम॥
कि यह कारवां तम कुचलता रहेगा॥

रुकेगा नहीं सारथी! आपका रथ,
सुनेंगे नये जागरण गीत जनपथ।
जलेंगे प्रखर ज्ञान के दीप बनकर,
तिमिर चीरते हम चलेंगे उछलकर॥

बुझेगा न हर दीप जलता रहेगा॥
वचन दे रहे साथ में सब चलेंगे,
न बदनाम हम कारवां को करेंगे।
रुकेंगे न जब तक की मंजिल मिलेगी–
चलेंगे सभी साँस जब तक चलेगी॥
वचन प्राण–पण से यह पलता रहेगा॥

मुक्तक–

आप कितनों के सहारे बन गये–डूबतों के भी किनारे बन गये।
कारवां चलता रहेगा साथ यदि–स्नेह संरक्षण तुम्हारे मिल गये॥

हे गायत्री माता तेरी

हे गायत्री माता तेरी, महिमा अपरम्पार है।
यह अद्भुत अति सुन्दर तेरा, रचा हुआ संसार है।।
तू सृष्टा है विश्व की, तू है पोषक सृष्टि की।
परिवर्तन के चक्र पर, तेरा ही अधिकार है।।
सद्भावों की स्रोत है, तू विवेक की ज्योति है।
सद्कर्मों के मूल में, तेरा ही संचार है।।
तू अनादि गुरुमन्त्र है, अनुशासन जीवन्त है।
राम, कृष्ण सबको मिला, तेरा ही आधार है।।

तुम देवों की माता हो, शक्ति प्रगति सुखदाता हो
महाविकट भवरोग पर, तू अमोघ उपचार है।।
हमको माँ सद्ज्ञान दो, संजीवन विज्ञान दो।
संस्कृति का उत्थान दो, जो जीवन आधार है।।

हे प्रभो! अपनी कृपा की

हे प्रभो! अपनी कृपा की, छाँह में ले लीजिए।
कर दूर खोटी बुद्धि सबको, नेकनीयति दीजिए।।
हम आपके होकर रहें, शुभ प्रेरणा लें आपसे।

सुख बाँटकर दुःख लें बँटा, प्रभु भाव यह दे दीजिए।।
करते रहें नित पुण्य हम, बचते रहें हर पाप से।
उज्जवल चरित्र बना हमें, उज्ज्वल भविष्यत दीजिए।।

श्रीराम सदगुणधा । भजमन

(युगऋषि वन्दना)

श्रीराम सद्गुणधाम भजमन, नित्य सद्गुरु रूपिणम्।
जय भगवतीपति सदाशिव प्रभु, जगत हितकारी परम्।।
जय वेदमूर्तिम् ज्ञानघन, कल्याणकर भवभयहरम्।

जय तपोनिष्ठ त्रितापहर, विज्ञानमय साधकवरम्।।
युगशक्ति गायत्री प्रबोधक, प्राज्ञ, भ्रम-संहारकम्।
युगधर्म-धारक, यज्ञ-नायक, युगसुधारक शुभकरम्।।
युगऋषि प्रवर, व्यासादि, विश्वामित्र नारदमुनिसमम्।
जय युग-भगीरथ, याज्ञवल्क्य, वशिष्ठमुनि जगहितकरम्।।
जय देवसंस्कृति, मान-रक्षक, मोक्षकर लोकप्रियम्।
उज्ज्वल भविष्यत् हेतु शुभ, युग-क्रान्तिवीर धुरन्धरम्।।
जय मातृवत् पावन हृदय, प्रिय सर्वहित करुणाकरम्।
मम हृदय गेह निवास कुरु, प्रभु सकल दोष-विभञ्जनम्।।

ज्ञान गंगा नहाले

ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे।
धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥

युग ऋषि ने सुन ले तुझे बुलाया।
वह फिर से ज्ञान गंगा ले आया॥
एक डुबकी लगा ले मन मेरे।
मैल सारा बहा दे मन मेरे॥

मन मेरे दुविधा में मत रह जाना।
सुन मनवा आलस में मत रह जाना॥

लाभ कुछ तो उठा ले मन मेरे।
बात बिगड़ी बना ले मन मेरे।।

दुनियाँ यह पापों में झुलस रही है।
मानव की आत्मा तड़प रही है॥
शान्ति सिंचन करा दे मन मेरे।
धार रस की बहा दे मन मेरे॥

युगऋषि का सन्देशा सबको सुना दे।
घर–घर जा निष्ठा सभी में जगा दे॥
राह सच्ची दिखा दे मन मेरे।

लक्ष्य उत्तम बना ले मन मेरे॥

मुक्तक-

भगीरथ बनके वे आये, ज्ञान गंगा बहाई है।
किया स्नान मन से जिनने, सद्गति, मुक्ति पाई है॥

ऋत भरा माँ तु हें प्रणाम

ऋतम्भरा माँ तुम्हें प्रणाम॥
प्राञ्जल प्रज्ञा तुम्हें प्रणाम॥
तुम हो सद्विवेक की जननी।

असद् अविद्या की क्षय करणी॥
सविता की प्रकाश किरणों की।
प्रखर अरुणिमा तुम्हें प्रणाम॥
शुचि शीतल सात्विक निर्झरणी।
मनःताप दुःख पीड़ा हरणी॥
विमल ज्ञान गंगा प्रवाहिनी।
मानव मेधा तुम्हें प्रणाम॥
माँ ममता मयी गोद हमें दो।
समता जन्य प्रमोद हमें दो॥

सद्प्रवृत्तियों सद्कर्मों की।
प्रबल प्रेरणा तुम्हें प्रणाम॥
सुरभित सुखद बयार चलाती।
जीवन के जलजात खिलाती॥
काव्य–कुमुद विकसाने वाली।
पावन प्रतिभा तुम्हें प्रणाम॥
हंसवाहिनी हंस हृदय दो।
जीवन निश्छल निर्मल कर दो॥
नीर–क्षीर के सद्विवेक की।

अनुपम महिमा तुम्हें प्रणाम॥

मुक्तक–

आदिशक्ति माँ की सुनो–महिमा शक्ति अपार।
जो कुछ जग में श्रेष्ठ है–वह सबकी आधार॥

श्रद्धा सहित जो आया

श्रद्धा सहित जो आया, गुरुदेव की शरण में।
स्वर्णिम सुयोग पाया, गुरुदेव की शरण में॥
विपरीत आँधियों में, जब पाँव डगमगाये।

जिनको डरा रहे हैं, हर पल कुरूप साये॥
उनमें नयी उमंगे, उत्साह प्राण भरती।
शीतल सुरम्य छाया, गुरुदेव की शरण में॥

गुरुदेव से जुड़ा जो, मन से विमल बना है।
कल जो रहा मरुस्थल, शीतल सजल बना है॥
सूखे हुए हृदय में, संवेदना बहाई।
जब शीश यह झुकाया, गुरुदेव की शरण में॥

गुरुदेव की कृपा का, बादल सदा बरसता।
लेकिन कठोर पत्थर, जल बूँद को तरसता॥

पाता कृपा कि जिसने, व्यक्तित्व झील जैसा।
विस्तृत गहन बनाया, गुरुदेव की शरण में॥
धुलने लगे तभी से–कल्मष जनम–जनम के।
कटने लगे कठिनतम–भ्रम–पाश घोर तम के॥
गुरु ने कुशल करों से, हीरा हमें बनाया।
आलोक जगमगाया–गुरुदेव की शरण में॥
चरणारविन्द का जो–मकरन्द बन गया है।
दैवी सुगन्ध पाकर–वह वन्द्य बन गया है॥
छल–छद्म छोड़ सारे–सबसे मिला हृदय से।

कोई नहीं पराया–गुरुदेव की शरण में॥

मुक्तक–

गुरु से जो कुछ भी मिलता है–श्रद्धा द्वारा ही मिलता है।
उसका जीवन सदा महकता–श्रद्धा–सुमनों सा खिलता है॥
उनकी राह चला करता जो–मंजिल उनके चरण चूमती।
लक्ष्य सदा ही उनके पीछे–पीछे अरे! चला करता है॥

श्रीराम भक्ति ऐसी

श्री राम भक्ति ऐसी श्रद्धा उभारती है।

निष्काम भाव शबरी, ऋषि पथ बुहारती है॥
गाये जटायु ने थे, कब भक्ति के तराने।
श्रीराम को गिलहरी पहुँची न जल चढ़ाने।
पर भक्ति भावना से जीवन सँवारती है॥
हनुमान भक्त ऐसे, माला घुमा न पाये।
श्रीराम को पुजापा, केवट चढ़ा न पाये।
इनका चरित्र पावन, प्रतिभा निखारती है॥
बारह बरस जगे तब, लक्ष्मण में शक्ति आई।
शासक भरत बने पर, आसक्ति छू न पाई।

तब श्रेष्ठ भक्त जगती, इनको पुकारती है॥
यदि भक्त हम कहायें, तो श्रेष्ठ काम करना।
श्रीराम काज करने, अन्याय से न डरना।
युग धर्म को निभाने, प्रज्ञा पुकारती है॥

मुक्तक-

भक्ति भाव जब जगता है तो, मन आन्दोलित हो जाता है।
राम काज को किए बिना फिर, मन को चैन नहीं आता है॥

ऋषियों के तप त्याग

ऋषियों के तप त्याग तेज गुण, मानव धर्म महान् की।
भूली हुई कहानी फिर से, याद करो बलिदान की॥
जिस धरती को धर्म का सूरज, देता सदा प्रकाश है।
जिस धरती को कर्म और कौशल, पर ही विश्वास है॥
जहाँ गुणों का सद्भावों का, हरदम रहा निवास है॥
जिस धरती ने मानवता की, फैलाई मृदुहास है।
वह है भारतवर्ष कि जिसने, ज्योति जगायी ज्ञान की॥
मुनि वशिष्ठ ने परशुराम ने, राजतन्त्र का गठन किया।

विश्वामित्र भगीरथ ने था, नयी सृष्टि का सृजन किया॥
ऋषि-मुनियों ने ज्ञानदान हित, सारे जग में भ्रमण किया।
विश्ववन्द्य कहलाये इनको, सारे जग ने नमन किया॥
वही भूमिका फिर बननी है, ऋषियों की सन्तान की॥

हम भी पूत उसी जननी के, आज हमारी है बारी।
करना है कल्याण विश्व का, आज करें वह तैयारी॥
नये सृजन के लिए बढ़ें अब, शक्ति झोंक दें हम सारी।
ज्वाला बनकर धधक उठे यह, नये सृजन की चिनगारी॥
हमको ही लिखनी है फिर से, कथा नये निर्माण की॥

मुक्तक–

देवभूमि की ओ सन्तानों–पहचानों फिर अपने को॥
पूर्ण करो तुम अब इस युग के, भारत माँ के सपने को॥
शंकर, ज्ञानेश्वर, गौतम की, आत्मा तुम्हें बुलाती है॥
सीता, अनसुईया, दुर्गा की, परम्परा अकुलाती है॥

गायत्री माँ की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता॥

जयति जय गायत्री माता......

आदि शक्ति तुम अलख-निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख-शोक-भय-क्लेश-कलह-दारिद्र्य-दैन्यहर्त्री॥
जयति जय गायत्री माता......

ब्रह्मरूपिणीं प्रणत पालिनी, जगत धातृ अम्बे।
भव-भयहारी, जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥
जयति जय गायत्री माता......

भय-हारिणि,भव-तारिणि,अनघे,अज आनन्द राशी।
अविकारी, अघहरी, अविचलित,अमले, अविनाशी॥

जयति जय गायत्री माता......

कामधेनु सत–चित– आनन्दा, जय गङ्गा–गीता।

सविता की शाश्वती, शक्ति तुम, सावित्री–सीता॥

जयति जय गायत्री माता......

ऋग्, यजु , साम, अथर्व प्रणयिनी,प्रणव महामहिमे।

कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना, शोभा गुण–गरिमे॥

जयति जय गायत्री माता......

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी।

जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी॥

जयति जय गायत्री माता......

जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख, दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे॥
जयति जय गायत्री माता......

स्नेह–सनी करुणामयि माता! चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै॥
जयति जय गायत्री माता......

काम–क्रोध–मद–लोभ–दम्भ–दुर्भाव–द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये॥

जयति जय गायत्री माता......

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि–पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
जयति जय गायत्री माता......

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारम् संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तम् हृदयारविन्दे भवंभवानी सहितं नामामि॥
मंगलम् भगवान् विष्णुः मंगलम् गरुडध्वजः ....॥
सर्वमङ्गलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके ....॥

श्री गायत्री चालीसा

दोहा

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड॥
जगतजननि, मंगलकरनि, गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥

हंसारूढ़ सितम्बर धारी। स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक, पुष्प, कमण्डलु माला। शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत दुःख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया। निराकार की अद्‌भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं। जो शारद शत मुख गुण गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महांमत्र जितने जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रूद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहि पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी। जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना। तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा। तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं। माता तुम सब ठौर समाईं॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे। सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता। पालक, पोषक, नाशक, त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी। तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। तापर कृपा करे सब कोई॥
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें। रोगी रोग रहित ह्वै जावैं॥
दारिद्र मिटै, कटे सब पीरा। नाशै दुःख हरे भव भीरा॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी। नाशै गायत्री भय हारी॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावैं। सुख सम्पति युत मोद मनावैं॥
भूत पिशाच सबै भय खावैं। यम के दूत निकट नहिं आवैं॥

जो सधवा सुमिरें चित लाई। अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी। विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी। तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें। सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी। लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता। सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, योगी। आरत, अर्थी, चिन्तित, भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवैं। सो सो मन वांछित फल पावैं॥
बल,बुधि,विद्या, शील,स्वभाऊ। धन, वैभव, यश, तेज, उछाऊ॥

सकल बढ़ें उपजें सुख नाना। जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

दोहा–

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योः नः प्रचोदयात्।

॥ गायत्री स्तवन १ ॥

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालम्, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।

दारिद्र्य-दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।1।।

शुभ ज्योति के पुंज, अनादि अनुपम, ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्त्ता।
दारिद्र्य, दुःख भय से मुक्त कर दो, पावन बना दो हे देव सविता।।

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्, विप्रैःस्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित। हे भर्ग! भवबन्धन-मुक्ति कर्त्ता।
स्वीकार कर लो वंदन हमारा। पावन बना दो हे देव सविता।।

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं, त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त- तेजोमय- दिव्यरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

हे ज्ञान के घन, त्रैलोक्य पूजित। पावन गुणों के विस्तार कर्त्ता।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण। पावन बना दो हे देव सविता॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं, धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं॥

हे गूढ़ अन्तःकरण में विराजित। तुम दोष-पापादि संहार कर्त्ता।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो। पावन बना दो हे देव सविता॥

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं, यदृग- यजुः- सामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं॥

हे व्याधि-नाशक, हे पुष्टि दाता। ऋग्, साम, यजु, वेद संचार कर्त्ता।

हे भुर्भूवः स्वः में स्व प्रकाशित। पावन बना दो हे देव सविता।।

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण-सिद्धसङ्घाः।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

सब वेदविद् चारण, सिद्ध योगी। जिसके सदा से हैं गान कर्ता।
हे सिद्ध सन्तों के लक्ष्य शाश्वत्। पावन बना दो हे देव सविता।।

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं, ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल-कालादिमनादिरूपम्, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं।।

हे विश्व मानव से आदि पूजित। नश्वर जगत में शुभ ज्योति कर्त्ता॥
हे काल के काल-अनादि ईश्वर। पावन बना दो हे देव सविता॥ ७॥

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं, यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं॥ ८॥

हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित। हे भक्त पालक, हे पाप हर्त्ता।
हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी। पावन बना दो हे देव सविता॥८॥

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं, उत्पत्ति-रक्षा-प्रलयप्रगल्भम्।
यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं॥ ९॥

हे विश्व मण्डल के आदि कारण। उत्पत्ति-पालन-संहार कर्त्ता॥
होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब। पावन बना दो हे देव सविता॥ ९॥

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः, आत्मा परंधाम-विशुद्धतत्त्वम्॥

सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ १० ॥

हे सर्वव्यापी, प्रेरक, नियन्ता। विशुद्ध आत्मा, कल्याण कर्त्ता ॥

शुभ योग पथ पर हमको चलाओ। पावन बना दो हे देव सविता ॥१० ॥

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः ॥

यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ ११ ॥

हे ब्रह्मनिष्ठों से आदि पूजित। वेदज्ञ जिसके गुणगान कर्त्ता ॥

सद्भावना हम सब में जगा दो। पावन बना दो हे देव सविता ॥ ११ ॥

यन्मण्डलं वेद-विदोपगीतं, यद्योगिनां योगपथानुगम्यं ॥

तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ १२ ॥

हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक। सद्ज्ञान के आदि संचार कर्त्ता॥
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का। पावन बना दो हे देव सविता॥१२॥

यज्ञ महिमा

यज्ञरूप प्रभो! हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल–कपट को, मानसिक बल दीजिए॥
वेद की बोले ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को।

धर्म–मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥

नित्य श्रद्धा–भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें॥

कामना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर–नारि की॥

लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु ,जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए॥

स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम–पथ विस्तार हो।
इदं न मम् का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥

हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ! करुणारूप करुणा, आपकी सब पर रहे॥

आरती श्री प्रज्ञा पुराण की

आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की, युगदृष्टा के दिव्य ज्ञान की।।
जन पीड़ा से हो संवेदित, थे देवर्षि विकल उद्वेलित।।
युग जिस पीड़ा से है पीड़ित, की श्रीविष्णु समक्ष निवेदित।।
पीड़ा युग के विकल प्राण की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
दीन-दयालु! दुःखी जन-जन है, त्रयतापों से तापित मन है।

दूषित हुआ मनुज चिन्तन है, विकृत होता जन-जीवन है।।
युक्ति बतायें आप त्राण की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
जनमंगल की चिन्ता जिनको, मेरा द्वार खुला है उनको।।
साधुवाद हे! नारद तुमको, जन-सेवक से ममता हमको।।
मिली कृपा करुणानिधान की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
नारद समाधिस्थ हो जाओ, युग का समाधान फिर पाओ।।
लो! प्रज्ञा पुराण ले जाओ, प्रज्ञा-पुत्रों को समझाओ।।
यह कृति है युग समाधान की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
यह प्रभु का प्रज्ञावतार है, युग-पीड़ा का शमन सार है।।

ज्ञानामृत की सुधा-धार है, दुश्चिन्तन-मद का उतार है।।
विधि भव-रोगों के निदान की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
हो श्रद्धा से युक्त पढ़ें जो, जीवन में आचरण करें जो।।
दुश्चिन्तन से सहज लड़ें वो, प्रज्ञा के सोपान चढ़ें वो।।
यह विधि है प्रज्ञावधान की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।
प्रज्ञा देवोपम गुण खानी, महाप्राज्ञ, ऋषिवर्य बखानी।
सुलभ ब्रह्मविद्या यह वाणी, है यह जन-जन की कल्याणी।।
युग महर्षि के विमल ज्ञान की, आरति श्री प्रज्ञा-पुराण की।।

गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। जय गणेश...।।
पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करे सेवा।। जय गणेश...।।
एकदन्त, दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसक सवारी।। जय गणेश...।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश...।।

हार चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।।
सूरश्याम शरण आए, सुफल कीजे सेवा।। जय गणेश...।।

आरती श्री सद्गुरु चरणन की

आरति श्री सद्गुरु चरणन की।
तन, मन, धन सन्ताप शमन की।।
भक्ति की धूप भाव का दीपक।
सजी आरती सत्य लगन की।।
सुमन माल हिय में पहनाऊँ।

भेंट करूँ सेवा सुफलन की।।
    बाल वृद्ध मिल आरति गावैं।
    पावें सकल सुफल निज मन की।।
दोऊ कर जोरि भक्त सब विनवैं।
भक्ति चारु चरणोदक नख की।।

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किस की।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किस की।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख, खल,कामी, कृपा करो भर्ता।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।

किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।।
दीनबन्धु, दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।।
विषय, विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।
तन-मन धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।।

श्री गीता जी आरती

ॐ जय भगवद्गीते, जय-जय भगवद्गीते।

हरि-हिय, कमल, विहारिणि, सुन्दर, सुपुनीते।।

कर्म-सुमर्म, प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।

तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा।।

ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

निश्चल-भक्ति, विधायिनि, निर्मल, मलहारी।

शरण-रहस्य, प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी।।

ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

राग, द्वेष, विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय, हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा।।
ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

आसुर-भाव, विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी।।
ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी।।
ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

दया-सुधा बरसावनि मातु, कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै।।
ॐ जय भगवद्गीते.. ॥

शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, जय हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्धांगी धारा।।
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसानन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे।। ॐ जय शिव...।।

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहै।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहै।। ॐ जय शिव...।।

अक्षमाला, वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन-मृगमद सोहै भाले शशिधारी।। ॐ जय शिव...।।

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक, ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे।। ॐ जय शिव...।।

कर में श्रेष्ठ कमण्डलु, चक्र, त्रिशूल धर्ता।
जगकरता, जगहरता, जगपालन कर्ता।। ॐ जय शिव...।।

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका।। ॐ जय शिव...।।

त्रिगुण शिव की आरति, जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।। ॐ जय शिव...।।

श्री कृष्ण आरती

वसुदेव सुतं देवं, कंस चाणूर मर्दनम्।

देवकी परमानन्दम्-कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम।।

आरती कुञ्जबिहारी की।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।।

गले में बैजन्ती माला ऽऽऽऽ माला।
बजावे मुरली मधुर वाला ऽऽऽऽ वाला।।
श्रवण में कुण्डल झलकाला ऽऽऽऽ झलकाला।
नन्द के नन्द, श्री आनन्दकन्द, मोहन बृजचन्द।।
श्री नटवर रासबिहारी की।
श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।
गगन सम अंग कान्ति काली ऽऽऽऽ काली।
राधिका चमक रही आली ऽऽऽऽ आली।।
लतन में ठाढ़े वनमाली ऽऽऽऽ वनमाली।

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक।।
ललित छबि श्यामा प्यारी की।
श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।
जहाँ ते प्रकट भई गंगा ऽऽऽऽ गंगा।
कलुष, कलिहारिणि श्री गंगा ऽऽऽऽ गंगा।।
स्मरण से होत मोह भंगा ऽऽऽऽ भंगा।
बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरे अघकीच।।
चरण छबि श्री बनवारी की।
श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।।

जब जन्में कृष्ण भगवान्

जब जन्में कृष्ण भगवान्, जेल दरम्यान।
मुरलिया वाले, खुल गये जेल के ताले॥
देवकी ने पति को जगाया था।
सपने का हाल सुनाया था॥
ले जाओ पुत्र यशोदा के करो हवाले॥
वसुदेव की बेड़ी टूटी थी।
तकदीर कंस की फूटी थी॥
सो गये मस्त जितने थे पहरे वाले॥

लेकर वसुदेव मुरारी को।
बढ़ते ही गये अगारी को॥
यमुना जी उमड़ी पड़े जान के लाले॥
वसुदेव भेद नहीं पाया था।
श्रीकृष्ण ने पैर बढ़ाया था॥
यमुना जी बोलीं कृष्ण पैर धुलवाले॥
वसुदेव समझ नहीं पाये थे।
श्रीकृष्ण ने पग लटकाये थे॥
छूकर पग जमुना घटीं बढ़े मतवाले॥

जग में पीड़ा पतन

जग में पीड़ा पतन बढ़ा है, ओ बनवारी आओ।
सूख चला वृन्दावन फिर से, मधुवन इसे बनाओ॥
आरत हुआ तुम्हारा भारत, धर्म ग्लानि में डूबा।
पूर्ण हो रहा दुर्योधन का, फिर से हर मन्सूबा॥
आकर आकुल धर्मराज को, फिर से धैर्य बँधाओ॥
हर द्रुपदा के नयनों से, अब बहता है जल खारा।
मनुज मात्र के मन का अर्जुन, फिर से हिम्मत हारा॥
बनो सारथी पाञ्चजन्य का, घोष पुनः कर जाओ॥

भौतिकता में डूबा मानव, महल लाख के बनते।
इस नश्वर शरीर को लेकर, शाश्वत् का हक हनते॥
कृपा करो प्रभु एक बार फिर, गीता ज्ञान सुनाओ॥
तरस रहे हैं आज दूध को, ग्वाल–बाल खुद सारे।
श्री, सम्पदा हुई इकट्ठी, दुष्ट कंस के द्वारे॥
विनती सुनो पुनः आकर प्रभु, भारी दुःख मिटाओ॥
सूखा वृन्दा विपिन हृदय का, बस करील रक्षित हैं।
है अकाल पड़ गया प्रेम का, प्राणी सभी तृषित हैं॥
एक बार फिर रास रचाकर, सबमें प्रेम बढ़ाओ॥

हमको जीवन नीति सिखाने

हमको जीवन नीति सिखाने, मानव बने कृष्ण भगवान्।
सच्चा योगी हमें बनाने, लीला रचे कृष्ण भगवान्॥
लीला रचे कृष्ण भगवान्, गीता रचे कृष्ण भगवान्॥

कहीं लिया था जन्म कहीं पर, पलकर बड़े हुए थे।
कदम-कदम पर जीवन के हित, संकट खड़े हुए थे॥
फिर भी हँसते और हँसाते, विकसे बढ़े कृष्ण भगवान्॥

ग्वाल-बाल या विप्र सुदामा, सबको गले लगाया।
भेदभाव को दूर हटाकर, जीना हमें सिखाया॥

सबमें समता भाव जगाने, सबके मित्र बने भगवान्॥
कंस, पूतना, जरासन्ध, इन सबको नष्ट कराया।
ग्वालों और पाण्डवों सबको, उनका हक दिलवाया॥
शोषण मुक्त समाज बनाने, न्यायाधीश बने भगवान्॥
छोटे-छोटे राज्य तोड़कर, भारत एक बनाया।
अहंकार में जो ऐंठे थे, उनको सबक सिखाया॥
शौर्य के संग सहकार सिखाने, योद्धा बने कृष्ण भगवान्॥
प्रथम पूज्य थे किन्तु यज्ञ में, पाँव सभी के धोये।
द्वेष, दम्भ को हटा सभी में, बीज प्रेम के बोये॥

सबको सेवा धर्म सिखाने, सबसे नम्र बने भगवान्॥

कृष्ण गोविन्द गोपाल

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मन को विषयों के विष से हटाते चलो॥
 कृष्ण योगेश हैं, सत्य भूलो नहीं।
 सब सुयोगी बनो, यों कुयोगी नहीं॥
 श्रेष्ठ पथ पर स्वयं को बढ़ाते चलो॥
नाम जपते रहो, काम करते रहो।

पाप की वासनाओं से डरते रहो॥
खुद उठो दूसरों को उठाते चलो॥
दु:ख में टूटो नहीं, सुख में फूलो नहीं।
अपना रिश्ता है प्रभु से ये भूलो नहीं॥
प्रेम विश्वास को दृढ़ बनाते चलो॥

श्री राधे गोविन्दा

श्री राधे गोविन्दा, मन भजले हरि का, प्यारा नाम है।
गोपाला हरि का प्यारा नाम है, नन्दलाला हरि-- ॥

मोर मुकुट सिर गले बनमाला, केशर तिलक लगाये।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, सबको नाच नचाये॥
यमुना किनारे धेनु चरावे, माधव मदन मुरारी।
मधुर मुरलिया जब भी बजावे, हर ले सुध-बुध सारी॥
गिरधर नागर कहती मीरा, सूर को श्यामल भाया।
तुकाराम और नामदेव ने, विट्ठल-विट्ठल गाया॥
राधा शक्ति बिना न कोई, श्यामल दर्शन पायें।
आराधन कर राधे! राधे! कान्हा दौड़े आयें॥

कृष्ण कन्हाई मेरे

कृष्ण कन्हाई मेरे कृष्ण कन्हाई।
विकल हुए भक्तों ने टेर लगाई ॥

जन-जन जब दुःखी हुआ, तुमने अवतार लिया।
दुष्टों को दण्ड दिया, भक्तों को मुक्त किया॥
आपकी उस नीति की, देते हैं दुहाई॥

दुष्ट कर रहे कुचाल, फिर से प्रभु आ जाओ।
पीड़ित हैं ग्वाल-बाल, धीरज तो दे जाओ॥
अब तक तो कभी, नहीं देर लगायी॥

द्रुपद सुतायें अनेक, बुला रहीं कर विलाप।
वीर ठगे बैठे हैं, रोकेगा कौन पाप॥
आप बिना आज करे, कौन सहाई॥
करते हैं इन्तजार, पाण्डव और ग्वाल–बाल।
आओ तो साथ चलें, दिखा दें फिर कमाल॥
दुनियाँ की और तरह, नहीं है भलाई॥

सखी आज गोकुल

सखी आज गोकुल में जन्मे कन्हाई।

चलो नन्द बाबा को देंगे बधाई॥
भादौं का महिना घटा काली काली।
उस पर बदरिया घुमर घिर आई॥
नाचेंगे गायेंगे दे देके ताली।
महफिल में बाँटेंगे सबको मिठाई॥
बड़े भाग्य है नन्द रानी के बहना।
बुढ़ापे में मालिक ने की है सुनाई॥

कब आओगे कृष्ण कन्हाई

कब आओगे कृष्ण कन्हाई।
फिर से श्याम घटा घिर आई॥
भोगवाद की सघन घटाएँ, भादों की घन सी मँडराए।
क्रूर कंस फिर से बौराए, देव-संस्कृति पर मँडराए॥
देखो दानवता इतराई, फिर से श्याम घटा घिर आई॥
पतन-पाप पूतना विषैली, दुष्प्रवृत्तियाँ हैं जहरीली।
उगल रहा विष काम कालिया, कब नाथोगे हे! साँवलिया॥
जन जीवन जमुना अकुलाई, फिर से श्याम घटा घिर आई॥

हैं धृतराष्ट्र मोह के अन्धे, दुर्योधन के धोखे धन्धे।
बढ़ते हैं कुकृत्य कौरव के, पाण्डव वंचित हैं गौरव से॥
भीष्म, द्रोण पर जड़ता छाई,फिर से श्याम घटा घिर आई॥
देव–संस्कृति बुला रही है, करो दिग्विजय समय यही है।
पाञ्चजन्य में फिर स्वर फूँको, कहो पार्थ से अरे न चूको॥
गीता की फूँको तरुणाई, फिर से श्याम घटा घिर आई॥

मुक्तक–

भारत में फिर से आओ!, मुरली बजाने वाले।
फिर तान वह सुनाओ, गिरिवर उठाने वाले॥

आओ चक्र सुदर्शन धारी

आओ चक्र सुदर्शन धारी, हे मन मोहन गिरधारी॥
कृष्ण कन्हैया सच कहते हैं, मरा नहीं है कंस।
द्वापर से दस गुना हो गया, दुर्योधन का वंश॥
फिर अधर्म का हुआ धर्म के, ऊपर पलड़ा भारी॥
क्या गौ औ क्या गोकुल कान्हा, सब पर ताप चढ़ा है।
इस धरती पर तब से लेकर, अब तक पाप बढ़ा है॥
हर दिल अब सहमा-सहमा है,हर मन भारी-भारी॥
इस दुनियाँ में जितना दुःख है, उसका नाम मिटा दो।

प्रेम प्यार की अमृत धारा, जन–जन पर बरसा दो॥
सब सुख सारी खुशियाँ दे दो, सबको कृष्ण मुरारी॥

जय गोविन्द गोपाला

जय गोविन्द गोपाला, मनमोहन मुरली वाला।
हे! नटवर गोपाला, घनश्याम नन्द के लाला॥

तू है नटवर नाग कालिया, तूने नाथ दिखाया।
असुर शक्तियों से भी तुमने, जग को मुक्त कराया॥
हम भी हों तेरे अनुगामी, जपें न केवल माला॥

जो भी यज्ञभूमि में आया, तुमने पाँव पखारे।
विनयशीलता के सेवा के, अद्‌भुत कार्य तुम्हारे॥
यही भाव हम भी पा जायें, हो जग में उजियाला॥

निश्छल मन के ग्वाल–बाल के, भोजन तुमको भाये।
अन्यायी की रुची न मेवा, शाक सन्त के खाये॥
देवसंस्कृति–सदाचार का, तू सच्चा रखवाला॥

जो तू मिटाना चाहे

जो तू मिटाना चाहे जीवन की तृष्णा।

सुबह–शाम बोल बन्दे, कृष्णा, कृष्णा, कृष्णा॥
तृष्णा है डायन सुन लो, वही पूतना है।
कृष्णा की कृपा से हमको, उसे जीतना है॥
विजयी बनाना है यदि तो, बोल कृष्णा, कृष्णा॥
तृष्णा है प्यास भयानक, प्रभु रस का है सागर।
प्यासा मत रह जा बन्दे! सागर तक तू आकर॥
रस से भर ले जीवन को, बोल कृष्णा, कृष्णा॥
तृष्णा का साथ छोड़ दे, क्यों उससे लिप्त है तू।
प्रभु का कहलाकर भी क्यों, यों सन्तप्त है तू॥

तुझको भी तृप्ति मिलेगी, बोल कृष्णा, कृष्णा॥
वह तो बस पूर्णकाम है, कोई नहीं कामना।
तृष्णा की तपन नहीं है, कोई नहीं वासना॥
बच जा इन असुरों से तू, बोल कृष्णा, कृष्णा॥

मुक्तक-

तृष्णा की यदि तपन मिटाना, और सुयोगी बनना।
कृपा अगर पाना है उनकी, तो बोलो श्रीकृष्णा॥

जय धनवन्तरि भगवान की

जय धनवन्तरि भगवान की। जय धनवन्तरि भगवान की॥
सागर मन्थन से प्रगटे, पीताम्बर धारी चतुर्भुजी।
कर में अमृत कलश सुशोभित, अमरों के अमरत्वयुजी।।
रुग्ण जीर्ण जनता के षोषक, पीड़ान्तक दुखियान की।
इष्ट करन, नाशक अनिष्ट औ ईति, भीति इन्सान की।
सकल सुरासुर वन्दन करते, तोयधिसुत तव चरणों में।
व्याधि विनाशक वन्दन करते, शुभ संयत संवरणों में।।
विश्व चकित लखि शक्ति अपूरब, भारतीय विज्ञान की।

अखिल धरा पर फैल रही गति, आयुर्वेद महान की।।
साधारण द्रव्यों के भी, औषधीय गुण प्रकट किये।
अति अलभ्य रस तत्व, चराचर से सहेज सन्निकट किये।
आदिदेव अति अलंकार युत, धड़कन ध्वनि सुनसान की।
हर्षित, कर्षित, दर्षित दुति हो, कुंज कुटिल कलियान की।।

वृक्ष देवता वन्दना

स्वास्थ्य देव हे श्री धन्वन्तरि, पग वन्दन कर लो स्वीकार।
आज कृपा कर पुनः पधारो, आमन्त्रण कर लो स्वीकार।।

आधि-व्याधि से सभी ग्रस्त हैं, चाह रहे जीवन विज्ञान।
शारीरिक मानस रोगों का, समुचित होता नहीं निदान।
स्वस्थ अजर जीवन हो सबका, सिखला दो प्रभु वह उपचार।।
हरित वनस्पति सुधा कलश, विज्ञान शंख से करो निनाद।
जीवन का अस्तित्व सँवारो, दूर करो भ्रम और विवाद।
दिव्यज्ञान जागृत कर फिर से, कर दो प्रभु जग का उद्धार।।
वैद्य वर्ग, जीवन कामी जन, करते वन्दन हे भगवान्।
हम चैतन्य बनें अब से ही, शक्ति हमें दे दो श्रीमान्।
बढ़े जीवनी शक्ति सभी की, दो वह सबल अटल आधार।।

धन्वन्तरि जी की आरती

जय धन्वन्तरि देवा, जय धन्वन्तरि देवा।
जरा रोग से पीड़ित, जन-जन सुख देवा॥

तुम समुद्र से निकले अमृत कलश लिये।
देवासुर के संकट आकर दूर किये।

आयुर्वेद बनाया जग में फैलाया।
सदा स्वस्थ रहने का साधन बतलाया।

भुजा चार अति सुन्दर, शंख सुधा धारी।
आयुर्वेद वनस्पति से शोभा भारी।

तुमको जो नित ध्यावे, रोग नहीं आवे।
असाध्य रोग भी उसका निश्चित मिट जावे।
हाथ जोड़कर प्रभुजी दास खड़ा तेरा।
वैद्य समाज तुम्हारे चरणों का चेरा।
धन्वन्तरि जी की आरति जो कोई नर गावे।
रोग शोक नहिं आवे, सुख-समृद्धि पावे।।

आज दीप से दीप जलाओ

आज दीप से दीप जलाओ।

दीपों का त्यौहार मनाओ।
हृदय–हृदय का तिमिर मिटाओ॥
फिर से दिवस सुहाना आया।
लहरों जैसे मन लहराया॥
उजियारे की धूमधाम से–
फूलों जैसे हँसो– हँसाओ॥
जगमग–जगमग भीतर–बाहर।
लगता है गागर में सागर॥
दीपों से सज गये थाल हैं।

कितने मनहर कितने सुन्दर॥
दुनियाँ में प्रकाश फैलाओ॥
भेदभाव को दूर हटाकर।
आपस में शुभ नेह जगाकर॥
माँ लक्ष्मी का आवाहन हो।
जन-जन में सहकार बढ़ाकर॥
हँसी-खुशी की बीन बजाओ॥

आई दीवाली आई दीवाली

आई दीवाली आई दीवाली–
देखो आई दीवाली आई दीवाली।
दीपक सी निष्ठा की करना रखवाली–
आई दीवाली॥

धन साधन सभी लोग, लक्ष्मी से पायेंगे।
सद्विवेक सन्तुलन, गणपति सिखलायेंगे॥
धन का हो सदुपयोग, फैले खुशहाली॥

सम्पत्ति से जनहित के, दीपक सजायेंगे।

सद्विवेक पाकर सब, ज्योतित हो जायेंगे॥
मिट जाये अन्धियारा, फैले उजियाली॥

नरकासुर गन्दगी को, घर से निकाल दो।
आलस को दूरकर, उमंगे उछाल दो॥
फूले फले खुशियों से, जीवन की डाली॥

मन में ना स्वार्थ रहे, तन से पुरुषार्थ हो।
तन–मन से धन से नित, पावन परमार्थ हो॥
सबमें उल्लास रहे, कोई नहीं खाली॥

प्रेम उमंगे खुशियाँ लाया

प्रेम उमंगें खुशियाँ लाया, दीपों का त्यौहार।
हृदय-हृदय से दीप जलाकर, बाँटो नव उपहार॥
सूरज-चन्दा छिप जायें तो, दीपक सा आलोक बिखेरें।
अन्धकार अज्ञान मिटाने, शिव-सा विष का प्याला पीलें॥
बढ़े कदम अब नहीं रुकेंगे, इसका करो प्रसार॥
दीपावली मनायें हम सब, संकल्पों को धारण कर।
खुशियाँ बाँटें हम आपस में, दुःखीजनों के आँसू पीकर॥
तभी बनेगा यह पावन दिन, समता का त्यौहार॥

डरें नहीं घनघोर रात्रि से, यह सन्देश दिवाली देता।
आश रखें उज्ज्वलभविष्य की, नन्हा दीपक भी कह देता॥
रामराज्य निश्चित आयेगा, होगा जग उद्धार॥

दूर करेंगे तम अनीति का

दूर करेंगे तम अनीति का, ज्योति जगायेंगे।
दीप से दीप जलायेंगे, ज्योति का पर्व मनायेंगे॥
मन का भ्रम जग का अँधियारा, रह न सकेगा वह बेचारा।
ज्ञान और विज्ञान एक हों, सृष्टि सजायेंगे, नया सौभाग्य जगायेंगे॥

द्वेष, दीनता नहीं रहेगी, छल कुरीतियाँ नहीं चलेंगी।
प्रेम और सद्भाव मनुज का भेद मिटायेंगे, विश्व परिवार बनायेंगे॥
अन्धकार, आलस्य जलेंगे, स्वार्थ, निराशा नहीं रहेंगे।
विनय और सहयोग शान्ति का मार्ग बनायेंगे, मनुज को देव बनायेंगे॥

सन्देश नया कुछ लाया

सन्देश नया कुछ लाया, यह ज्योति पर्व है आया।
दीपक सा जीवन जी लो, यह मर्म सिखाता आया॥
पात्रता सुदीप बना लो, शुभ लगन वर्तिका डालो।

शुभ स्नेह भाव सरसालो, तो ज्योति दान भी पा लो॥
दीपक कहकर मुस्काया, साधक के मन को भाया॥

सूरज को छिप जाने दो, चन्दा को सुस्ताने दो।
तारागण दमक रहे हैं, हमको भी मुस्काने दो॥
दीपक दल आगे आया, तो दीपावली कहाया॥

मत सकुचो आगे आओ, घर घर प्रकाश पहुँचाओ।
अन्धियारे को धकियाओ, भटकों को राह दिखाओ॥
जीवन को धन्य बनाया, झिममिल चमकेगी काया॥

सद्‍भाव विवेक बढ़ा लो, पावन पुरुषार्थ जगा लो।

उल्लास उमंगे बाँटो, शुभ दीप भाव अपनालो॥
जिसको यह जीवन भाया, उसको प्रभु ने अपनाया॥

मुक्तक–

सदा जलते रहो साथी!, यही सन्देश दीपक का।
प्रकाशित हों सभी के मन, हरो अन्धियार इस जग का॥

दीप हैं जलते रहेंगे

स्नेह के बल पर अँधेरे से सतत् लड़ते रहेंगे॥
पार जायेंगे हमारा मन कभी हारा नहीं है।

जो हमें पथ से डिगा दे बनी वह धारा नहीं है॥
कौन रोकेगा स्वयं तूफान थककर रुक गये हैं।
हर लहर से प्रेरणा ले, लक्ष्य तक बढ़ते रहेंगे॥
रोक पायी कब शिलायें, उमड़ता गतिमान निर्झर।
प्रेम के हम दूत अपना, साथ देते सभी पथ पर॥
प्रबल वर्षा आँधियों से भी, हमें सहयोग मिलता।
बिजलियों की चमक से निज मार्ग पर बढ़ते रहेंगे॥
हम अमर शिव के पुजारी, कर रहे विषपान हँसकर।
ज्योति के हम पुत्र रचते, ज्योतिमय अभियान घर-घर॥

बन स्वयं वरदान हमने, शाप को दे दी चुनौती।
बन प्रबल संकल्प अपना, मार्ग भी गढ़ते रहेंगे॥

मुक्तक-

नहीं बुझते कभी डरकर, प्रलय की आँधियों से हम।
नहीं डिगते कभी पथ से, अनय की व्याधियों से हम॥

ज्योति जली घर घर

ज्योति जली घर घर में, आई-आई दिवाली।
दीप शिखा मुस्काई, आई-आई दिवाली॥

घर आँगन देहरी दरवाजे, जगमग आज सुशोभित साजे।
नव उल्लास सभी में, लाई–लाई दिवाली॥

पर्व मनोरम यह दीपों का, राम भरत से कुल दीपों का।
भ्रातृ प्रेम ले आई, आई–आई दिवाली॥

अँधियारा कितना हो भारी, नन्हीं ज्योति करे उजियारी।
स्नेह डगर दिखलाई, आई–आई दिवाली॥

मन्दिर, मस्ज़िद या गुरुद्वारा, नन्हा दीप सभी को प्यारा।
सबमें प्रीत जगाई, आई–आई दिवाली॥

मन का अँधियारा मिट जाये, दीवाली का पर्व मनायें।

घर–घर खुशियाँ छाईं, आई–आई दिवाली॥

मुक्तक–

दीपावली मनायें हम सब, संकल्पों को धारण कर।
खुशियाँ बाँटे हम आपस में, दुःखीजनों के आँसू पीकर॥

दीपावली शुभ पर्व पर

दीपावली शुभ पर्व पर–दीपक जलाना चाहिए।
बाहर उजाला चाहिए–भीतर उजाला चाहिए॥
घर में उजाला चाहिए–मन में उजाला चाहिए॥

सूर्य, चन्दा है नहीं–इस रात में तो क्या हुआ।
दीपकों को उभरकर जग–जगमगाना चाहिए॥
पात्रता छोटी मगर–मन प्रेम से भरपूर है।
प्राण की बाती जला–शुभ ज्योति पाना चाहिए॥
वेदनाएँ विश्व में–फैली हुई हैं हर जगह।
दु:ख बँटाकर दूसरों का–मुस्कुराना चाहिए॥
कर सकेगा पाप अँधियारा–हमारा क्या अरे?
ज्योति ले परमार्थ की हर–पग बढ़ाना चाहिए॥
धन व्यसन बनने न पाये–सावधानी से चलें।

खर्च पर सुविवेक का—अंकुश लगाना चाहिए॥
स्वार्थ का दुर्बुद्धि का—घेरा अगर है तोड़ना।
यज्ञ का सुविचार का—कुछ क्रम बनाना चाहिए॥

मिटायेंगे धरा पर

मिटायेंगे धरा पर, अब अँधेरा रह न पायेगा।
खुशी से देश सारा, यह हमारा लहलहायेगा॥
युगों से पल रही आयी, अविद्या और बेकारी।
दिलों में जल रही थी, द्वेष की दुःख की महामारी॥

सुलगती आ रही, चिनगारियों को हम बुझायेंगे।
निरक्षरता, गरीबी और बेकारी, हटायेंगे॥
करो संकल्प सब मिल, फिर मनोबल जाग जायेगा॥
प्रगति उनकी रुकी रहती, भरोसे भाग्य जो रहते।
समय आलस्य में खोते, थपेड़े हैं वही सहते॥
नहीं पाते कभी मंजिल, कि जो बहते कगारों पर।
सफलता है टिकी संकल्प, साहसमय विचारों पर॥
युवक अब देश का कोई न श्रम से, जी चुरायेगा॥
समझ लो चरण विश्वासी, हमारे रुक नहीं सकते।

किसी के सामने हम चिर प्रवासी झुक नहीं सकते॥
दुहाई धर्म देता है, हमें मंजिल बुलाती है।
अनेकों दीन दुखियों की, हमें पीड़ा रुलाती है॥
अगर दो साथ तुम भी, तो चमन यह चहचहायेगा॥

मुक्तक-

चरण रुकेंगे कभी न क्षण भर, सदा बढ़ेंगे आगे।
दीप जल चुका है गुरुवर का, दुःख दुनिया से भागे॥

शुभ दिवाली आ गई

शुभ दिवाली आ गई, दीपक जले।
घर के आँगन द्वारे–द्वारे अनगिनत दीपों के जैसे॥
मन खिले------हाँ मन खिले॥
श्री गजानन–लक्ष्मी का वन्दन करें, वन्दन करें।
उनके भाल पे तिलक औ चन्दन धरें, चन्दन धरें॥
श्रद्धा से पूजें इन्हें, खुशियाँ मिलें, खुशियाँ मिलें॥
मातु भगवति पूज्यवर का ध्यान कर, नित ध्यान कर।
देवी माँ को पूजकर, कल्याण कर, कल्याण कर॥

ज्योतिमय जीवन तेरा, फूले फले, फूले फले॥
अवधवासी सा बनालें, अपना मन, हाँ अपना मन।
ध्यान धर श्रीराम लौटे हैं भवन, लौटे भवन॥
अब न फिर वन जायेंगे वर माँग लें, वर माँग लें॥

मुक्तक–

ज्योतिमय जीवन हो सबका, दो यही आशीष माता।
आपका वैभव सदा शुभ हो, यही हर जन मनाता॥
आप गणपति संग आ, पूजन यहाँ स्वीकार कर लें।
आपके बिन मातु इस जगती में, सुख कोई न पाता॥

जय देव-देव जय महादेव

जय देव–देव जय महादेव–योगी कहलाने वाले।
हे ! त्रिपुर जलाने वाले–हे ! रुद्र कहाने वाले॥
दुष्टों के तुम हृदय विदारक–डमरू बजाने वाले।
मन को संयत करने वाले–काम जलाने वाले॥ शिव
तुम त्रिशूलधारी भक्तों के–शूल मिटाने वाले।
दुःख दोष हटाने वाले–हे मुक्ति दिलाने वाले॥
माथे पर हैं चन्द्र विराजें–शान्ति बढ़ाने वाले। सुख
तुम पिशाच को, विषधर को भी–गले लगाने वाले॥

सिर पर गंगा पापनाशिनी–ताप मिटाने वाले।
सन्ताप मिटाने वाले–रसधार बहाने वाले॥

मुक्तक–

महादेव प्रभु आपका, भक्त करें गुणगान।
ऐसी कृपा करो प्रभु, हो जग का कल्याण॥
त्रिविध ताप इस जगत में, तीन भयंकर शूल।
त्रिपुरारी शिव कर कृपा, करें इन्हें निर्मूल॥

हे महादेव! हे महादेव!

हे महादेव! हे महादेव!, सब बोलो मिलकर महादेव।

लो डमरु की आवाज सुनो, क्यों बजा रहे हैं राज गुनो।
अब ताण्डव उन्हें रचाना है, दुष्टों को उन्हें छकाना है॥
अब महाकाल हैं महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

जो उनको शीश झुकायेंगे, जो उनके संग हो जायेंगे।
जो बदलेंगे अपने विचार, शिव होंगे जिनके सदाचार॥
वरदानी होंगे महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

अब ध्वंस ध्वस्त हो जायेगा, आतंक नष्ट हो जायेगा।

दुर्गुण, कुटेव अब छूटेंगे, दुश्चिन्तन के सिर फूटेंगे॥
मिट जायेंगे धोखा फरेब, सब बोलो मिलकर महादेव॥
परिवर्तन निश्चित होना है, अब नहीं पाप को ढोना है।
रौंदा जायेगा दानव दल, कुचला जायेगा अब तो छल॥
छूटेंगे अब कुत्सा कुटेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥
आओ हम उनके संग चलें, आओ शिव के अनुरूप ढलें।
उज्ज्वल भविष्य अब आयेगा, युग परिवर्तन हो जायेगा॥
गूँजेगा जय-जय महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

सत्य ् शिव ् सुन्दर ्

सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् तुम्हीं हो,
हे शिव हमारा उद्धार करना।
हैं वन्दना के स्वर ये हमारे,
हे नाथ! इनको स्वीकार करना॥

रची है तुमने ये सारी सृष्टि,
तुम्हीं ने दी है ये हमको दृष्टि।
इतनी कृपा और कर दो दाता,
हम देख पायें हर कर्म अपना॥

देवों को तुमने अमृत दिया था,
विषपान हँसकर खुद कर लिया था।
परहित की ऐसी ही भावना हो,
प्रभु हमारे ही मन में भरना॥

बोले मेरी साँसों का

बोले मेरी साँसों का एक तारा, जय शिव ओम्कारा।
मिलकर बोलो मन्त्र ये प्यारा-प्यारा, जय शिव ओम्कारा॥
जिसने शिव का ध्यान लगाके, शिव को याद किया।

अपनी कृपा से शिव ने उसको, दु:ख से मुक्त किया॥
मिल गया उसको अँधियारे में,सुख का उजियारा॥ जय शिव० ॥

तन, मन, जीवन कर दिया अर्पण, जब ये मैंने तुझे।
मोह के बन्धन क्या बाँधेंगे, अब तो नाथ मुझे॥
मेरी भक्ति अटल है ऐसी, जैसे ध्रुव तारा॥ जय शिव० ॥

संसार तु हारा जहाँ-जहाँ

संसार तुम्हारा जहाँ–जहाँ, अवतार तुम्हारा वहीं–वहीं।
प्रभु चरण तुम्हारे जहाँ पड़े, है तीर्थ हमारा वहीं–वहीं॥

शिवजी के इष्ट राम रघुवर, हैं इष्ट राम के शिवशंकर।
यह सत्य विदित सारे जग को, इसका प्रमाण है रामेश्वर॥
है इष्ट वही है भक्त वही, ऐसा दुनियाँ में कहीं–नहीं॥
काशी हो या हो उज्जयिनी, तुम तो रहते हो मरघट में।
तुम योगी बनकर विचर रहे, उर अन्तर में हो घट–घट में॥
सन्देश तुम्हारा है सबको, जीवन की सीमा यहीं नहीं॥
संसार साधनों पर रीझा, तुमको तो रुची साधना है।
रुकना है नहीं रूढ़ियों में, श्रम करके उन्हें लाँघना है॥
साधक ने पायी सिद्धि सदा, बाधायें पथ की टिकी नहीं॥

तुम भोले भाले श भु

तुम भोले भाले शम्भो, भस्मी रमाने वाले।
हे नाथ! भक्त जन के, संकट मिटाने वाले॥
तुमने सुधा सहित सब, सम्पति बाँट डाली।
अवघड़ उदार दानी, रहते हो हाथ खाली॥
जगहित स्वयं गरल भी, मुख से लगाने वाले॥
है वेश तो अशिव पर, कल्याण रूप तुम हो।
तुम आशुतोष भी हो, तप, त्याग रूप तुम हो॥
पिछड़ों को साथ लेकर, आगे बढ़ाने वाले॥

तुम सन्त सज्जनों के, रक्षक हो सदाशिव हो।
हो रुद्र रूप भी तुम, यदि सामने अशिव हो॥
हो ज्ञान भावना की, धारा बहाने वाले॥

जय-जय आद्यशक्ति जय शंकर

जय–जय आद्यशक्ति जय शंकर,
जय श्रद्धा–विश्वास पूज्यवर॥

आज विश्व यह हुआ दुखारी, असुर नाचते भीषण भारी।
ताल कुबुद्धि, कुकर्म दे रहे, दुष्ट सुखी हैं सन्त रो रहे॥

जागो दुर्गा हे प्रलयंकर, जय–जय आद्यशक्ति जय शंकर॥
अब है शिव ताण्डव की बारी, करें लोकहित यह तैयारी।
आद्यशक्ति युग शक्ति प्रकट हों, दूर विश्व के सब संकट हों॥
हो अवतरण तुम्हारा घर–घर, जय–जय आद्यशक्ति जय शंकर॥

त्यागें हीन अशिव को जन–जन, शिव संकल्प करें सबके मन।
दिव्य प्रेरणा दिव्य दृष्टि दो, रचें–रचायें नयी सृष्टि को॥
कृपा करो अब हे! विश्वम्भर, जय–जय आद्यशक्ति जय शंकर॥

शिव विचार शिव कर्म भावना, शिव हों सब संकल्प कामना।
शिवमय सभी वर्ग जुड़ जायें, बनें एक युग शक्ति कहायें॥

बने विश्व फिर सत्, शिव, सुन्दर, जय-जय आद्यशक्ति जय शंकर॥

मुक्तक-

ताण्डव नृत्य करो प्रलयंकर, आद्यशक्ति के संग आओ।
दुर्गुण सबके दूर हटाकर, शुद्ध भावना विकसाओ॥

हे नीलकण्ठ त्रिपुरारी

हे नीलकण्ठ त्रिपुरारी, करते नन्दी की सवारी, वे हमारे शिव हैं।
करते भक्तों की रखवारी, वे हमारे शिव हैं॥
आशुतोष सबके हितकारी, जटाजूट में गंगाधारी।

सुर नर मुनि सब ध्यान लगावें, परम कृपा शंकर की पावें॥
दर्शन जिनका मंगलकारी, अपने भक्तों के दुःखहारी॥
अंग–अंग में भस्म रमाये, सर्प माल उर में लिपटाये।
अंग कान्ति देखत मन मोहे, डमरू अरु त्रिशूल कर सोहे॥
जय जय जय भोले शुभकारी, दुनियाँ कहती है त्रिपुरारी॥
गणपति जिनकी गोद विराजें, कार्तिकेय कन्धे पर साजें।
वाम भाग में शैलकुमारी, वीरभद्र करते रखवारी॥
जिनकी महिमा सबसे न्यारी, चारों वेदों में उजियारी॥
ताण्डव देख भुवन थर्राया, त्रिपुरासुर को मार गिराया।

कालकूट विष पिया भयंकर, रौद्र रूप जिनका प्रलयंकर॥
त्राहिमाम्–त्राहिमाम् पुकारी, सब देवन आरती उतारी॥

मुक्तक–

शिव विग्रह का भक्ति से, करें सदा जो ध्यान।
उनके जीवन का सदा, होता अभ्युत्थान॥

शिव शक्ति रूप भगवन्

शिव शक्ति रूप भगवन्, डमरू बजाने वाले।
शुभ योगपथ दिखा दो, योगी कहाने वाले॥

विष हो या फिर हलाहल, सबको गले उतारा।
हो नीलकण्ठ स्वामी, जग ने तुम्हें पुकारा॥
संजीवनी पिला दो, विषपान करने वाले॥

पिछड़े हैं जो जगत् में, शिव गण वही कहाते।
ऊपर उठाया उनको, शिवमय उन्हें बनाते॥
सद्प्रेरणा हमें दो, भस्मी रमाने वाले॥

शिवरात्रि पर्व पावन, संकल्प शुभ जगा लें।
चिन्तन चरित्र में भी-शिव भावना बढ़ा लें॥
निर्मल बना दो जीवन, गंगा बहाने वाले॥

तुम हो अनादि भगवन्–कण, कण में तुम समाये।
गायें तुम्हारी महिमा, हर मन में तुम ही छाये॥
सन्ताप को मिटा दो, त्रय ताप हरने वाले॥
हे! महाकाल भगवन्, जग के तुम्हीं हो स्वामी।
हे! रुद्र, हे! नटेश्वर, दर्शन दो हमको स्वामी॥
ध्यानी हमें बना दो,ध्यानी कहाने वाले॥

मुक्तक–

हे! योगेश्वर भक्तजनों में, शिव अनुशासित शक्ति जगाओ।
हे! सत् ,चित् ,आनन्द रूप, प्रभु इनके सब सन्ताप मिटाओ॥

जीवन को नश्वर समझ, कर लो सद्उपयोग।
भस्म रमाकर शिव सदा, करते यही प्रयोग॥

शिव का सुमिरन

शिव का सुमिरन हर घड़ी, करना कराना चाहिए।
यों अशिव के संग से, बचना बचाना चाहिए॥
    मान जा मन हर घड़ी, आठों पहर शिव ध्यान कर।
    तोड़ रिश्ता अशिव से, भव पार होना चाहिए॥
क्यों अरे तू पड़ गया, चक्कर में माया जाल के।

सत्य, शिव, आनन्द में, मन को लगाना चाहिए॥
क्यों वियोगी की तरह तू, जल रहा सन्ताप से।
इस कुयोगी हृदय को, योगी बनाना चाहिए॥

मुक्तक-

चाहते बचना अशिव से, शिव का सुमिरन कीजिए।
हृदय अपना, सत्य, शिव, आनन्द से भर लीजिए॥

शिव भोले हितकारी

शिव भोले हितकारी, लाज राखो हमारी।

एक तुम्हीं हो धन-बल मेरे।
तुम स्वामी, हम सेवक तेरे।।
हे डमरू के धारी, लाज राखो हमारी।।

राह हमारी काँटों भरी है।
पापों की गठरी, सिर पर धरी है।।
चलना पड़े आज भारी, लाज राखो हमारी।।

पावन नाम तुम्हारा भोले।
लोभ-मोह केबन्धन खोले।।
माँगू शरण तिहारी, लाज राखो हमारी।।

तुम बिन और नहीं है दूजा।
करते देव तुम्हारी पूजा।।
सबके पालन हारी, लाज राखो हमारी।।
विधि-विधान पूजा ना जानूँ।
केवल तुमको अपना मानूँ।।
चरण पड़ा दुखियारी, लाज राखो हमारी।।

मन का मैल मिटाने

मन का मैल मिटाने होली खेलो रे।

सबमें प्यार बढ़ाने, होली खेलो रे॥
जन–जन की दूर उदासी करने को आओ।
हँसी–खुशी का सबको पाठ पढ़ाओ॥
नीरसता मार भगाओ मेरे भाई रे।
जीवन का रंग सजाओ मेरे भाई रे॥
रस की धार बहाने होली खेलो रे॥
मन का छोटापन आओ दूर भगायें।
पिछड़ों को गले लगाकर राह दिखायें॥
द्वेष को दूर हटाओ मेरे साथी रे।

प्रेम का रंग जमाओ मेरे साथी रे॥
भेद को मार भगाने होली खेलो रे॥
धरती माता के बेटे मिलकर रहेंगे।
खुशियों के फूल मनों में खिल कर रहेंगे॥
मन में देवत्व जगाओ मेरे भाई रे।
धरती को स्वर्ग बनाओ मेरे भाई रे॥
आशा के सुमन सजाने होली खेलो रे॥

मन में नव उल्लास भर

मन में नव उल्लास भर, होली मनाना चाहिए।
पर्व के उल्लास में, सबको नहाना चाहिए॥
भर रही है कीच मन में, द्वेष की दुर्भाव की।
साफ कर अन्तःकरण को, होली मनाना चाहिए॥
हैं सभी इन्सान, हो इन्सानियत से प्यार भी।
भेद सारे मेट कर, होली मनाना चाहिए॥
बच गये प्रह्लाद, जलकर मर गयी थी होलिका।
नीति हित साहस जगाकर, होली मनाना चाहिए॥

पक गई है फसल तो, पहले प्रभु को दें चढ़ा।
यज्ञ में दें आहुति तब, अन्न खाना चाहिए॥
स्वार्थ की भीषण तपन से, हैं सभी झुलसे हुए।
प्यार का है रंग रुचिकर, सबको लगाना चाहिए॥

रंग बरसे मस्त मनायें

रंग बरसे मस्त मनायें होली रंग बरसे।
ना तन में सुस्ती ना मन में उदासी।
राग रंग रच दें ना चिन्ता जरा सी॥

मस्तों की निकल पड़ी टोली॥ रंग बरसे...... ॥

ऐसा सजायें ये जीवन का मेला।

कोई न दीन हीन कोई अकेला॥

भेदभाव छोड़ बनें हमजोली॥ रंग बरसे...... ॥

कीच ना उछालें ना मन को दुखायें।

सबको उठायें गले से लगायें॥

प्रेम से लगायें चलें रंग रोली॥ रंग...... ॥

होली का पर्व आया है

दुर्गुण हटाने सद्‌गुण बढ़ाने...२।
होली का पर्व देखो आया है, आओ रंग गुलाल लगालो रे।
बैर भाव को दूर भगाओ,
प्रेम भाव भर आगे आओ।
आपस में मन को मिला लो रे॥ आओ रंग गुलाल........॥
भक्ति भाव से परिजन आये,
होली का त्यौहार मनाये।
हृदय से सबको लगा लो रे॥ आओ रंग गुलाल........॥

ध्रुव, प्रह्लाद सी भक्ति जगालो,
इस धरती को स्वर्ग बनालो।
तन–मन ऐसा रंगा लो रे॥ आओ रंग गुलाल........ ॥

दिव्य हिमालय से गुरुवर आये,
माँ भगवती को साथ में लाये।
अनुदान–वरदान पालो रे॥ आओ रंग गुलाल........ ॥

होली का पर्व देखो आया है, आओ रंग गुलाल लगालो रे।

आया मंगल पर्व

आया मंगल पर्व, यज्ञमय होली का।
करो परस्पर तिलक, प्रेम की रोली का॥
होली में दुर्भाव झोंक दो, द्वेष, द्रोह, कुविचार फेंक दो।
मातृभूमि का तिलक लगाओ, हर पिछड़ों को गले लगाओ॥
बाँटों प्रेम प्रसाद, आज निज झोली का॥
दुष्ट होलिका की न चलेगी, अपने छल से वही जलेगी।
बन नृसिंह फिर प्रभु प्रकटेंगे, हिरण्य कश्यपु के हृदय फटेंगे॥
कहता यही पुकार, पर्व यह होली का॥

यज्ञ भावना सबमें जागे, भेदभाव सब डरकर भागें।
दुष्ट स्वार्थी पीछे जायें, जागृत आत्मा आगे आयें॥
उभरे नया स्वरूप, अनोखी होली का॥

होली आई रे आई रे

होली आई रे आई रे, होली आई रे।
मस्ती लाई रे लाई रे, मस्ती लाई रे॥
कोई बजावे ढोल मंजीरा, कोई बजावे चंग।
प्रेमभाव को लेकर आई, अन्तर की उमंग॥

मस्ती खोज रहे क्यों बाहर, क्यों पीते हो भंग।
अन्तर मन में लहर उठे तो, थिरक उठे हर अंग॥
    कोई लगावे रोली सिर पर, कोई लगावे रंग।
    संयम को अपनाओ भाई, छोड़ो सब हुड़दंग॥
कोई उछाले कीच जोर से, कोई दुखावे अंग।
बैरी को भी गले लगाकर, प्रकट करो तरंग॥

मस्ती में झूम जाओ

मस्ती में झूम जाओ, होली सुहानी आयी।

कुमकुम अबीर रोली, सबके दिलों को भायी॥
गाओ धमाल सबमिल, सोयी उमंग जागे।
डालो गुलाल ऐसा, मन का मलाल भागे॥
सद्‌भाव की निराली, मनहर कली खिलाई।
नीले गुलाबी पीले, मुखड़े सफेद काले।
बाकी रहे न कोई, सबको गले लगा लें॥
होली खिलाने आयी, समता की रस मलाई॥
मिलकर मनाओ खुशियाँ, दुनियाँ के गम भुलाओ।
पिचकारियों की धुन पर, होली के गीत गाओ॥

बालक, जवान, बूढ़े, सब पर बहार आई॥
उल्लास हर मनों में, मधु गन्ध भर रहा है।
रंग दो धरा का आँचल, आकाश कह रहा है॥
उज्ज्वल भविष्य सन्मुख, ही दे रहा दिखाई॥
फागुन का पर्व प्यारा, रंगो का पर्व न्यारा।
कोई उदास बैठे, हमको नहीं गँवारा॥
सबके दिलों में हलचल, इस पर्व ने मचाई॥

होली खेलो रे आज मिल

होली खेलो रे आज मिल ऐसी होली, होली खेलो रे।
होली खेलो रे, होली खेलो रे, आज मिल ऐसी होली... ॥

बालक हो बूढ़ा हो सुन्दर जवान हो।
नर हो या नारी हो कोई इन्सान हो॥
सबमें उमंगे जगा दो रे, होली खेलो रे॥

फेरी का ठेला या ऊँची दुकान हो।
भारी हवेली या कच्चा मकान हो॥
हमदर्दी सबमें जगा दो रे, होली खेलो रे॥

अक्खड़ जवान हो या फक्कड़ किसान हो।
भोला मजदूर हो या नेता महान हो॥
अपनापन सबमें जगा दो रे, होली खेलो रे॥
कोई हो जात–पाँत दूर या करीब हो।
धन का कुबेर हो या बिल्कुल गरीब हो॥
सबको गले से लगाओ रे, होली खेलो रे॥
हिन्दू ,यहूदी हो चाहे ईसाई हो।
गुरु का हो बन्दा या इस्लामी भाई हो॥
मानवता सबको सिखा दो रे, होली खेलो रे॥

चोरी की होरी को भ्रष्ट मुफ्तखोरी को।
दुष्ट–धूर्त शोषण को स्वार्थ जमाखोरी को॥
अपने ही हाथों जला दो रे, होली खेलो रे॥
प्रह्लादी निष्ठा को नरसी की साख को।
बलिदानी माटी की होली की राख को॥
अंग–अंग में आज रमा लो रे, होली खेलो रे॥

प्रज्ञा पुत्रों की टोली

प्रज्ञा पुत्रों की टोली, सबके हाथों में रोली।

पर्व है होली खुशियों का, चले हैं प्यार बढ़ाने॥
खुशियों से नहलायेंगे, मस्ती से सहलायेंगे।
सद्ज्ञान पढ़ो अब भाई, जन-जन को समझायेंगे॥
नन्हें दीपों की होली, ले ज्ञान फूल की झोली।
लेकर माँ का मधुर प्रसाद, चले हैं अलख जगाने॥
दुर्गुण से टकरायेंगे, सद्गुण को अपनायेंगे।
उल्लास जगाओ भाई, सबको यह सिखलायेंगे॥
हम आपस में हमजोली, अवसर शुभ है यह होली।
पाकर पावन आशीर्वाद, चले रस धार बहाने॥

अब फाग मधुर गाना है, संवेदन बरसाना है।
प्रेरक गायन अपनाकर, भक्ति रस बरसाना है॥
सज्जन बच्चों की टोली, लेकर अबीर और रोली।
माँ के सम्मुख हम गाकर, चले युगगान सुनाने॥

अब मन को नहीं दुखाओ, शुभ प्रेमभाव बतलाओ।
गन्दे किताब गानों को, होली में पुनः जलाओ॥
माँ के पुत्रों की टोली, त्यौहार पुनः है होली।
सतयुग का बन आधार, चले समता फैलाने॥

भावों का रंग उड़ेंलो, श्रद्धा, अबीर तुम ले लो।

बिछुड़ों को गले लगाकर, मुस्कान मधुर तुम ले लो॥
है ब्रह्मबीज की टोली, लेकर गुरुवर से रोली।
युग की पीड़ा हम गाकर, चले युगघोष सुनाने॥

आओ हिलमिल होली

आओ हिलमिल होली खेलो रे, भर प्रेम-भाव का रंग।
भर प्रेम-भाव का रंग, भर आत्मभाव का रंग॥
भेदभाव का भूत भगाएँ, ऊँच-नीच को छोड़।
घृणा, द्वेष के दुर्भावों से, लें अपना मुँह मोड़॥

मानव होकर, मानव का मुख, करें नहीं भदरंग॥
स्नेह और ममता के जल में, रंग ममता का घोल।
प्रेमभाव का रंग बरसाएँ, मीठी वाणी बोल॥
कीचड़, गोबर पोत मुखों पर, करें नही हुड़दंग॥
श्रम की चलो गुलाल उड़ाएँ, सबके मुख पर लाली।
नाच उठे खुशियों से, श्रमिकों की टोली मतवाली॥
स्नेह और सहयोग करें सब, सबमें एक तरंग॥
गहरा रंग चढ़े सब पर ही, ऐसा युग निर्माणी।
दोष, दुर्गुणों, दुष्प्रवृत्तियों की, हो खत्म कहानी॥

नवयुग की होली सब खेलें, सद्भावों के संग॥

खेलो खुशी से भैया

खेलो खुशी से भैया, होली में दिल मिला लो।
खुशियों का रंग डालो, पिचकारियाँ चला लो॥
कैसा उछल रहा है, दिल हर्ष से सभी का।
ऐसा मचल रहा है, मौसम ये भीगा भीगा॥
मौसम भी है गुलाबी, होली के गीत गालो॥
फागुन की ये हवायें, रंगो की ये घटायें।

मदहोश कर रही हैं, दुनिया की ये फ़िजायें॥
संगीत की धुनो पर, उत्साह फिर लगा लो॥
    नाराजगी हटाओ, दल में हमारे आओ।
    तुम भी हमारे जैसे हर रंग में नहाओ॥
    नकली खुशी से हटकर, असली खुशी मना लो॥
पक्षी भी आज के दिन, फागुन के गीत गाते।
धरती गगन दिशायें, उल्लास में नहाते॥
मन का गुबार फेंको, इन पर भी दृष्टि डालो॥

प्यारी होली रंग रंगीली

प्यारी होली रंग रंगीली फिर से आई भइया।
सब पर फागुन की खुमारी कैसी छाई भइया॥
त्यौहारों में बड़ा निराला, होली का त्यौहार।
मन सबके मिल जाते करते सभी मधुर व्यवहार॥
चटक रंग चटकाती होली आई भइया॥
जब बहार फागुन की आती नाच उठे मन मोरा।
दूध भरा बर्तन भी दिखता रंगो भरा कटोरा॥
ऐसी रंग भरी पुरवाई, होली लाई भइया॥

सूखा रंग लगाता कोई, कोई डाले पानी।
होली की हम देके दुहाई, करते सब मनमानी॥
सूरत सतरंगी बहुरंगी पड़े, दिखाई भइया॥
एक साल का जमा गर्द गुब्बार आग में झोंको।
गाढ़ा रंग चढ़े मन ऊपर राह नहीं अब रोको॥
कर लो सबसे मीत मिताई, होली आई भइया॥
बाना पहन खुशी का भइया, सबको गले लगाओ।
भाई–भाई रंग खेलकर शिकवे गिले मिटाओ॥
खाओ मिलकर प्रेम मिठाई होली आई भइया॥

रंगों का ये मौसम

रंगो का ये मौसम, रंगो का त्यौहार।
मस्ती बरसाता आया, होली का त्यौहार॥
बैर मिटाओ मन से भाई, सबको कर लो प्यार।
घर–घर में तुम आज बसा लो, खुशियों का संसार॥
अपना प्यारा शान्तिकुञ्ज है, अपना ही परिवार॥
नीले पीले लाल गुलाबी, उड़ता आज गुलाल।
रंग पर्व में निकल रहा है, अन्दर का मलाल॥
प्यार हमारा बढ़ता देखो, बढ़ता है सहकार॥

नाचो कूदो रंग लगाओ, फागुन का त्यौहार।
गले लगाने बैरी को भी, हो जाओ तैयार॥
माताजी का प्यार यहाँ है, गुरुवर हैं करतार॥
छोटे से प्रह्लाद बच गये, ईश भक्त कहलाये।
असुर तत्व सब खाक हो गये, सजा पाप की पाये॥
हम अपनी मुस्कान बिखेरें, पहनायें फिर हार॥

होली के रंग से प्रभो

होली के रंग से प्रभो, मन भी जरा रंगा दो।

सब द्वेष–द्रोह छूटे बस, प्यार वह जगा दो॥
मन का मलाल छूटे, खुलकर गुलाल खेलें।
मस्ती बरस रही है, जी भर के लाभ ले लें॥
आलस उदासियों को, अब दूर ही भगा दो॥
सब प्यार के रंगो की, पिचकारियाँ चलायें।
भदरंग हो गये जो, रंग में उन्हें डुबायें॥
तन–मन में जो लगा है, वह मैल सब हटा दो॥
सबको गले लगायें, कोई नहीं पराया।
उन सबको प्यार बाँटे, प्रभु ने जिन्हें बनाया॥

खुशियों का मस्तियों का माहौल प्रभु बना दो॥

समता का शंख बजाता

समता का शंख बजाता, यह होली पर्व है आया।
मन का दुर्भाव हटा लो, यह मर्म सुनाता आया॥
सबमें सत्प्रेम जगा लो ओछापन दूर भगा लो।
भटकों को राह दिखाकर, पिछड़ो को गले लगाओ॥
जिसने यह पथ अपनाया, जीवन को धन्य बनाया॥
प्रह्लाद हमें बनना है, विपदा से क्यों डरना है।

तूफानी बधाओं से, दिग्भ्रमित नहीं होना है॥
फूलों की सुविधा तज कर, काँटो में मार्ग बनाया॥
सबमें सद्भाव जगा लो, अपनेपन को विकसालो।
घर की गन्दगी हटाओ, जन–जन को पाठ पढ़ाओ॥
सन्देश जो यह पहुँचाया, युग साधक वही कहाया॥

रंग बसन्ती प्रभा केशरी

रंग बसन्ती प्रभा केशरी, पर्व होली का आ गया।
तन, मन में उल्लास जगाने, रंग बसन्ती छा गया॥

रंग अबीर गुलाल लगाकर, प्रेम भाव मन में भर दें।
बिछुड़ों को भी गले लगाकर, समता भाव प्रकट कर दें॥
फूल झरायें तिलक लगायें, यह हम सबको भा गया॥

होली का त्यौहार सुहावन, छटा बिखेरे कण–कण में।
सरस बनायें जीवन अपना, प्यार भरें हम नस–नस में॥
खुशियाँ देने, सखा बनाने, मस्ती यह बरसा गया॥

बैरी नहीं सभी भाई हैं, भाव भरें सबके मन में।
ऊँच–नीच का भेद नहीं है, प्रेम भरे हर जीवन में॥
हर फूलों में, हर कलियों में, खुशियाँ यह बिखरा गया॥

माताजी का प्यार भरा है, गुरुवर का आशीष यहाँ।
प्यार बाँटते परिजन देखो, बरस रहा है रंग यहाँ॥
काम करें हम, नाम जपें हम, होली पर्व समझा गया॥

हम सब झूम उठे हैं देखो, शान्तिकुञ्ज के आँगन में।
जीवन धन्य बनाने देखो, माताजी के आँचल में॥
खुशियाँ मन में, मस्ती तन में, मन को यह हर्षा गया॥

होली का आया त्यौहार

होली का आया त्यौहार, बहार लिये संग में।

मस्ती का हुआ संचार, संचार रग–रग में॥
कोई वीराना न कोई पराया।
जो भी मिला वो गले से लगाया॥
समता का आया उभार, उभार जन–जन में॥
मस्ती का आलम है सुस्ती हराम है।
अंग–अंग पुलक रहा दुःख का क्या काम है॥
रस से भरा है संसार, संसार पग–पग में॥
द्वेष, बैर को होली में झोंको।
गन्दी मलिनता को झाड़ पोंछ फेंको॥

शठता पर है ये प्रहार, प्रहार घर–घर में॥
कोई गरीब है न कोई अमीर है।
ना कोई सेठ है न कोई फकीर है॥
सबमें उमड़ता है प्यार, प्यार हर दिल में॥

मुक्तक–

नये सृजन का सुखद सन्देशा, होली पर्व है लाया।
जो है श्रद्धावान स्वयं, अनुदान वही ले पाया॥

प्यार तो है हमें जिन्दगी से

प्यार तो है हमें जिन्दगी से बहुत, किन्तु जीना हमें हाय आता नहीं।
क्योंकि जिससे जिसे प्यार होता अधिक, वह उसे व्यर्थ यूँ ही गँवाता नहीं॥

चाहते हम सभी हैं युगों तक जियें, और जीवन सुधा हम हमेशा पियें।
शाल फटने लगे जिन्दगी की अगर, जिस तरह हो उसे आखिरी तक सियें।
प्यार तो ज़िन्दगी में सभी चाहते, किन्तु कोई उसे साध पाता नहीं॥

ज़िन्दगी यूँ सिसकती हुई जा रही, सम्पदा यह बिखरती हुई जा रही।
होश हमको नहीं हम चले जा रहे, यह धरोहर छिटकती हुई जा रही।

चाहते हैं सभी मौज काटें सदा, मौज करना हमें किन्तु आता नहीं ॥
लाड़ ही लाड़ में हम ज़हर दे रहे, प्यार ही प्यार में प्राण ही ले रहे ।
हम अनाड़ी पनें से जिये ज़िन्दगी, जी रहे शान से यह कहे जा रहे ।
ज़िन्दगी की कला सीख पाये न हम, कोई ऐसी कला क्यों सिखाता नहीं ?

हम मनुज हैं मनुज की अदा से जियें, मानवी संस्कृति सम्पदा से जियें ।
यह मनुज जन्म पशुवत् बितायें न हम, श्रेष्ठ है तो उसे सभ्यता से जियें ।
त्याग, तप, सादगी जिन्दगी की कला, वासना से कला का तो नाता नहीं ।

क्यों न हम ज़िन्दगी की कला सीख लें, इस मनुज से सबक सीख लें ।

काश ! मरकर भी आ जाये जीना हमें, ज़िन्दगी का यही हौसला सीख लें।
ज़िन्दगी की कला जब निखरने लगे, देखकर कौन फिर मुस्कराता नहीं॥

मुक्तक–

जीने की तो चाह बहुत है, पर जीने का ढंग न आता।
जीवन है संघर्ष पर हमें, संघर्षों का संग न भाता॥
जीने को तो पशु भी जीते, पर मानव का ढंग अलग है।
जीवन के जीवन चित्रों में, हमको भरना रंग न आता॥

प्यार है यदि हमें राम

प्यार है यदि हमें राम के नाम से,
राम के काम करते चलो रात दिन।
जिसको लग जाये प्रभु काम की ही लगन,
वह कहीं और अपना लगाता न मन॥

भक्त बजरंग को प्यार था वास्तविक–
रात दिन राम के काम में जुट गये।
पूँछ में लग गई आग तो क्या हुआ–
इष्ट के काम में जम गये डट गये॥

प्यार जिसको किया वीर बजरंग ने–
बस उसी का किया कर्म से कीर्तन॥
    पुण्य ही मानते थे जटायू जिसे–
    वे भी करते रहे बस उसी काम को।
    बिन कहे राम के काम में जुट गये–
    देख पाये नहीं थे अभी राम को॥
पाप से जूझते पंख भी कट गये–
पर हटाये नहीं पुण्य पथ से चरण॥
    वह जरा सी गिलहरी भरी भाव से–

बिन कहे राम के काम पर डट गई।
कर्म के कण उड़ेला करी सिन्धु में-
भावना भव्य निर्माण में जुट गई॥

क्या पता नाम उसने जपा या नहीं।
जा टिके किन्तु खुद राम जी के नयन॥

राम को तो जुबानी जमा खर्च से-
प्यार बिल्कुल नहीं प्यार है कर्म से।
इसलिए सिर्फ बातें बनायें न हम-
हो विमुख राम के काम युग-धर्म से॥

स्वर्ग के इस धरा पर सृजन के लिए–
देववत् हों हमारे सभी आचरण॥

इस तरह से रामनवमी

इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए।
राम की शिक्षाओं को, जीवन में लाना चाहिए॥
राम का आदर्श जीवन, सीख हमको दे रहा।
आके इस दुनियाँ में कुछ, करके दिखाना चाहिए॥
इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए॥

मातु, पितु औ गुरु की सेवा, और आज्ञा के लिए।
समझकर कर्तव्य, तन, मन, धन लगाना चाहिए॥
इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए॥

भाइयों से प्रेम और, मित्रों से सच्ची मित्रता।
प्रेम हो जिसमें गले, उसको लगाना चाहिए॥
इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए॥

विभीषण से नेक बन्दे, ही हमारे मित्र हों।
कुम्भकरण, रावण से दुष्टों को, मिटाना चाहिए॥
इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए॥

दुर्गुणों को त्यागकर हम,राममय हो जायेंगे।
इस धरा पर राममय, दुनियाँ बसाना चाहिए॥
इस तरह से रामनवमी, को मनाना चाहिए॥

ओ लार्ड! यू आर द काज़

ओ लार्ड! यू आर द काज़ आफ अवर एक्ज़ीस्टेंस।
यू आर डियरर टू अस देन अवर लाईफ।
ओ लार्ड! यू आर द काज़॥
यू आलवेज़ कीप अस आफ फ्राम एविटस।

यू , गिव अस, अवर डिज़ायर्ड ब्लिस ॥
इन दीस वेरी अर्थली लाईफ ॥ ओ लार्ड ! ...

यू आर द क्रिएटर आफ द व्होल यूनिवर्स ।
यू, कीप आल थिंग्स, अण्डर योवर कण्ट्रोल ॥
यू आर द एबोड आफ आल ॥ ओ लार्ड ! ...

यू आर द मोस्ट एक्सेप्टेबल ।
यू आर द प्योर इन्टेलिजेन्स ॥
ओ लार्ड यू आर द काज़ ॥ ओ लार्ड !...

मे वी ओ फादर, डेवोटेड टू यू ऑनली ।

एन्टरटेन यू इन अवर सोट्स॥
विथ द अटमोस्ट लव एण्ड रिवरेंस॥ ओ लार्ड!...
आलेवज़ सैफगार्ड अवर, ईंटलेक्ट फ्राम आल इविटस।
दैट, वी माइट, अदरवाइज़ फाल इन टू॥ ओ लार्ड!...
गाइड अस टू द राइटियस पाथ।
गाइड अस टू डू ऑनली व्हाट इस गुड॥
ओ लार्ड! यू आर द काज़ आफ अवर एक्ज़ीस्टेंस।

श्री गुरुपद-चिन्ह (वन्दना)

१ **गुरुं-गुरोर्वन्द्य पदं पुनीतं परमात्मरूपं परतः परंच।**
युगर्षिरूपं-वेद स्वरूपं, गुरुपाद चिह्नं हि नमस्करोमि॥
श्री गुरु चरण चिन्ह पुनीत पावन,चित्‌शक्तिमय दिव्य महिमा अगम है।
ऋषिकल्प तप-ज्ञान के स्रोत अनुपम, गुरुपादचिन्हों को नित नमन है॥

२ **ओंकार-ह्रीं-श्रीं-क्लीं-बीजमन्त्रान्‌अधीत्य मर्मज्ञविशेषवन्द्यम्।**
शिष्येभ्य एतान् प्रतिपादयच्छ्री,गुरुपाद चिह्नं हि नमस्करोमि॥

ओंकार ह्रीं श्रीं क्लीं बीजमन्त्रादि, गूढ़ार्थ बोधक–प्रेरक सघन हैं।
शिष्यादि के उज्ज्वल पथ–प्रदर्शक, गुरुपादचिन्हों को नित नमन है॥

३ **यज्ञाग्नि–होत्रादि–विधिष्वजस्त्रं, प्रतिभासमानं धीरं–विनीतम्।**
ब्रह्मात्मनोरैक्य विवेकिनं श्री, गुरुपाद चिह्नं हि नमस्करोमि॥

यज्ञादि–परमार्थ के रूप शाश्वत्, विनम्रता धैर्य के शुद्धघन हैं।
आत्मा–परब्रह्म के योगकर्ता, गुरुपादचिन्हों को नित नमन है॥

४ **दोषादि–व्यालावलि वैनतेयं, विवेक–वैराग्य–ममत्वयुक्तम्।**
आत्मावबोधेन विनीतशिष्यं, गुरुपाद चिह्नं हि नमस्करोमि॥

दोषादि–सर्पादि भक्षक गरूड़सम, विवेक, वैराग्य ममता सदन हैं।

प्रिय–दिव्यनायक,आत्मा प्रबोधक, गुरुपादचिन्हों को नित नमन है॥

५ **अनन्त संसार समुद्र पारे, गन्तुं महानावमिव प्रबुद्धम्।**

जाड्यादि दोषाब्धि सुवाडवाग्निं,गुरुपाद चिह्नं हि नमस्करोमि॥

अनन्त संसार भवसिन्धुतारक, द्रढ़पोत सम श्रेष्ठ करते यतन हैं।

दोषादिशोषक, सद्भाव पोषक, गुरुपादचिन्हों को नित नमन है॥

विषयानुसार गीतों की सूची

वन्दना

माँ तेरे चरणों में हम शीश
नमो वेदमाता नमो देवमाता
हमें भक्ति दो माँ हमें शक्ति
माता तेरे चरणों में स्थान जो
माँ जैसे भी हैं हम पर पुत्र
माँ इतनी कृपा कर दे
हे गुरुवर हे जगजननी माँ
जगत्वन्द्य माँ शक्ति दो
हे हंसवाहिनी माँ
शारदे वरदान दे माँ
वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता
ऐसी ज्योति जगा जगदम्बे
हम अपने पथ को पा जायें

माँ भगवती परमेश्वरी
माँ गायत्री प्रज्ञा माता
माँ तू हम सबको वर दे
आदि शक्ति भगवती आपको
हे जगजननी मातु भगवती
घने अंधेरे में हम घिरे हैं
आपके पूत हैं प्यार भी है
कर रहे भाव पूजन तुम्हारा
मातेश्वरी वर दे हमें

अब तेरा दु:ख दर्द हृदय का
चलेंगे हम जगत जननी
जगदम्बे सविनय प्रणाम
माँ उमड़ती जब हृदय में
लागी रे लगन ओ माँ
हृदय से लगा लो या
आपसे माँ ! हमें यह
आया आया युग परिवर्तन
तू सत्चित आनन्दमयी

माँ की ममता पीकर
भक्ति की झंकार उर के
कर लो माँ स्वीकर हमारे
अपनी भक्ति का अमृत
ऋतम्भरा माँ तुम्हें प्रणाम
आज ऐसी कृपा आप
नमामि मातु भगवतीम्
मनुजता विकल है
माँ बस यह वरदान
माँ शारदे वर दे हमें

गायत्री महिमा

अवतरित हुई माँ गायत्री
पवन सुगन्धित जैसे मन
हर प्राणी में रूप तुम्हारा
सविता का ध्यान धरते
ऐसी कृपा करो जगजननी
गायत्री के महामंत्र से
गायत्री माँ की उपासना

हे जगजननी गायत्री माँ
हे गायत्री माता तेरी महिमा
रोम–रोम पुलकित हो
पाप–ताप हर लेती सबके
युग–युग पूजित गायत्री
बिलख रहे होते सारे प्राणी
सौंदर्य से तुम्हारे

गुरु महिमा (वन्दना)

ज्योति से ज्योति जगाओ
एक तुम्हीं आधार
गुरुवर दया के सागर
स्वयं भगवान हमारे गुरु
गुरु तेरे चरणों में
गुरु की छाया में
गुरुवर तुम्हीं बता दो
दरबार हजारों हैं
याद हमको आ रहे हो
सदगुरु बिना किसी को

गुरु ब्रह्मा हैं, विष्णु वही हैं
वह सच्चाई आँखिन देखी
गुरुदेव आप ऐसी झँकार
जो नहीं दे सका
तुम्हारे पद्म चरणों में
गुरु बिन ज्ञान नही-नहीं रे
गुरु तेरे कौन-कौन गुण गाऊँ
आज मोहे गुरुवर की
आप हैं गुरु रूप भगवन्

गुरु बिन कौन लगावे पार
गुरु ही नैया, गुरु खिवैया(अ)
गुरु ही नैया, गुरु खिवैया(ब)
अनुदान और वरदान प्रभो!
गुरु का अमृत जिसे मिला
शत्-शत् तुमको प्रणाम्
मिल न पाये सद्गुरु
सद्गुरु के ही चरणों में
जन्म लिया आँवलखेड़ा में

सुनों युग ऋषि के जीवन की
धन्य है जिन्दगी यह हमारी
आप हैं प्राणों के आधार
श्रीराम सद्गुणधाम
मिले गुरु से अनुदान उदार
दो हमें गुरुवर सहारा
अपनी राह चला लो गुरुवर
सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने
जिन गुरु में साकार हो गई

तपः पूत यह कौन दमकता
राम और श्रीराम एक हैं
हे गुरुवर श्रीराम तुम्हारी
अंधकार आसुरी वृत्ति का
अनुदानों का ऋण चुका सकें
अद्वितीय है निर्माणों में
आप क्या मिल गये
उन चरणों को पूजो जिनने
एक ही आधार गुरुवर

क्रांति का अध्याय लिखकर

कर रहे हैं साधना हम

क्यों न गुरु को करें हम

गुरुवर ने सौंपी पीर

गुरुवर हम शिष्य कहाते हैं

गुरुदेव इस अधम पर

गुरु चरणों में आकर देखो

गुरुरूप की तुम्हारे

चरणों में तेरे जीना मरना

हम लौह खण्ड ही हैं

गायत्रीमय आप हो गये

गुरुसत्ता का मिला हमें

गुरु महिमा है अपार

जब कभी असहाय तुम

पूज्य गुरुवर शक्ति दे दो

रंग लाने लगा त्याग

सद्गुरु हमको सहारा

श्रद्धा सहित जो आया

कलश यात्रा/यज्ञ गीत

आओ-आओ सुहागिन नारि
मंगल कलश सजाकर
देव कलश आये
ओ बहिनो माताओं आओ
होता है सारे विश्व का
हे ऋत्विज होताओं आओ
हे प्रभो! जीवन हमारा
महायज्ञ पर्व है यजन करो
गायत्री यज्ञ हेतु आइए
आइए श्रेष्ठ जन
वरण आचार्य करने की
चाहते यदि बनाना जगत को
जिन्दगी हवन करें चलो
सप्तऋषि आवाहन्
सर्वतोभद्र पूजन गीत
देवताओं की विदाई

महाकाल से साझेदारी

जब–जब पीड़ित पाप–पतन
महाकाल की चली सवारी
युग धर्म निभाने को
बिगुल बज गया महाक्रांति
चलो गुरुदेव के सपने
यह राह नहीं है फूलों की
उनके पद्चिन्हों पर चलकर
चल-चल ओ साथी चल
हम बदलेंगे, युग बदलेगा

हो रहा हो संस्कृति सीता
है यह सत्य अटल यह
नये देश को मैं नई शक्ति
मनुज देवता बनें
समय आ गया नये सृजन
जन्म लिया फिर भगीरथ ने
देव संस्कृति दिग्विजय को
मातृभूमि की माटी लेकर
महाकाल को नये सृजन का

सावधान हो जाओ नवयुग
कसकर कमर खड़े हो जाओ

कार्यकर्त्ता गोष्ठी

हमारा है यह दृढ़ संकल्प
अब फिर से सतयुग आयेगा
हम गायत्री माँ के बेटे
जागेगा इन्सान जमाना
हाथ पर यूँ हाथ रखकर
इन दिनों बात उनसे
भ्रम के भटकावे छोड़ो
जुट जाएँ हम सब मिलकर
अब नवयुग की गंगोत्री से
परिवर्तन के बिना न होता
हम नव जागृति के कर्णधार
लिया पाथेय भी पूरा
साथ दे जाओ जरा
घड़ी संकट भरी यह अब
है निमंत्रण पुनः जागरण

समयदान और अंशदान
सही रूप उभरेगा उस दिन
साथियों! यदि हमें सिद्धियाँ
एक रहेंगे नेक रहेंगे
करें व्यक्ति निर्माण
आत्म साधना ऐसी हो
देव संस्कृति वेदना अनुभव
युग की यही पुकार
विश्व हमारा धरती अपनी

नया युग क्यों न आयेगा?
तुम्हारी शपथ हम
युगऋषि ने युग का तम हरने
राहें नयी दिखा जाता जो
पुकारती नयी धरा
तुम्हें आत्म मंदिर की प्रतिमा
दे न पाओ यदि मुझे विश्वास
घर-घर अलख जगायेंगे
बदल दो जमाना धरा

बदला जाये दृष्टिकोण
हमने पायी थाह आज माँ
समय रहते जगो साथी
सुप्त युग जागृत करो
हमें आपका स्नेह मिलता
ऋषियों के तप त्याग तेज

नारी जागरण

देवियाँ देश की
आदि शक्ति तुम वीर प्रसूता
नारी तेरी साध सुगढ़
बहुत सो चुकी अब तो जागो
शायद रूठ गई नारी से
इस दहेज ने ही फैलाया
लाखों घर बरबाद हो गये
अपना रूप निहारो री बहनो
जाग गई नारियाँ सावधान
सुनो-सुनो भारत माता की
इतने रत्न दिये हैं कैसे

उठो–उठो हे मातृशक्ति
जिसकी साँसे और पसीना
दुनियाँ आगे बढ़ती जाये
नहीं स्वयं को अबला समझो
ये हैं भारत की महिलायें
उठो प्रबुद्ध नारियों
नारी युग जल्दी ही आयेगा

शांतिकुंज परिचय

शांतिकुंज गुरुकुल है पावन
ऐसा कोई सुमन नहीं है
चलो रे मन शांतिकुंज हरिद्वार
चलो रे मन शांतिकुंज
सुखधाम
मंदिर समझो मस्ज़िद समझो
शांतिकुंज सुन्दर है नगरिया
युगतीर्थ में जब साधक आते

विद्यालय व युवाओं हेतु

ओ सपूतों भारत की

नन्हे बच्चों आने वाले
नौजवानों उठो वक्त
नौजवानों उन्हें याद कर लो
हमको अपने भारत की
इस धरा के लिए
ऐ वतन गम न कर
चन्दन सी इस देश की माटी
हमें फिर से धरा पर
गढ़ फिर कोई दीप नया

इतनी शक्ति हमें देना दाता
वह शक्ति हमें दो
विश्व हमारा धरती अपनी
भारत है देश सबकी
भारत वर्ष हमारा प्यारा
भारती पुकारती
बढ़े चलो, बढ़े चलो
अगर हम नहीं देश के
जोश न ठंडा होने पाये

जवानों! निरर्थक जवानी नहीं
तपकर ज्योति अखण्ड जलाई
नौजवान देश के
देश के रण बाँकुरो
ओ धर्म की पताका
कौमी तिरंगे झण्डे
होनहार देश के
हम सुरक्षित नहीं
ये हमारा वतन

जो देते लहु वतन को
हर युग का इतिहास उठाओ!
युवा चेतना तू हिमालय
मोर्चे जब जवानी सम्भाले
सपूतों भारती के माँ!
शांतिकुंज की तरूणाई
धर्म ध्वजा फहरे
आज जरूरत भारत माँ को
आज दाँव पर लगा देश का

उठो जवान देश के
उठो सुनो प्राची से उगते
आज युग पुकारता
तरुणाई को जमाना
युवा शक्ति को झकझोरें
राष्ट्र के जागरण का समय
सावधान होशियार नौजवान
ऐ वतन गम न कर

संस्कार परक

फिर से संस्कार परिपाटी
संस्कारों की परम्परा
तुम्हें जन्म दिन की बधाई
जन्म दिन पर सभी हम
ऐ धरती के रहने वालों
नशे आदमी को कर देते
सदा सुखी सम्पन्न ये जोड़ी
जन्म दिन के शुभ समय पर
इस कुल का ये दीपक

हर दिनों से ये दिन कितना
पाप–पतन से आज मनुज को
इन्द्र धनुष सी छटा निराली
इस विवाह में वर वालों ने
विवाह दिन पर सभी हम

कीर्तन भजन

हमने आँगन नहीं बुहारा
आदत बुरी सुधार लो
गाये जा गाये जा

जय अम्बे जय जगदम्बे
हे गुणधाम हे सुखधाम
आओ मन में बसा लें
नर से नारायण बन जाएँ
हरि ओऽम हरि ओऽम
नटवर नागर नन्दा
ओऽम भूः ओऽम भुवः
पितु मातु सहायक
ज्ञान गंगा नहाले

सत्संग है ज्ञान सरोवर
जपले हरि का नाम
हरो विश्व विपदा श्रीराम
ओऽम नमः नमों ओंकार
सत्संग की गंगा बहती है
सावधान हो जाओ
काटना है अगर जिन्दगी का
अब सौंप दिया इस जीवन
सुख चाहे यदि नर जीवन

मेरे घटवासी राम
आ जाना बन ध्यान
प्रभु के सुन्दर हैं सब नाम
पाओगे जीवन का सार
तुझमें ओ३म् मुझमें ओ३म्
श्रीराम भक्ति ऐसी

मानव जीवन की गरिमा

मानव जीवन इस जगती
जीवन बड़ा महान भाईयों

जीवन के देवता को
बड़े भाग्य से ये मनुज तन
परम पिता से प्यार नहीं
जो अपना कर्त्तव्य उसी पर
जीवन बन तू फूल समान
सबसे पहले स्वयं बदलने
सीख नहीं पाये चादर
कर्मों के फल से न बचोगे
इन्सान से नफरत करते हो

किसी के काम जो आये
कहाँ छुपा बैठा है अब तक
चार दिन की जिन्दगी है
एक दिन ही जी मगर
औरों के हित जो जीता है
गवाँ दिया किसलिए बावरे
जीवन ईश्वरीय अनुकम्पा
रे मन! जीवन धन्य बना ले
मन रे! तू बन जा कुशल

संग्राम जिन्दगी है
जीवन खतम हुआ तो
वह जीवन भी क्या जीवन
रोज खोया गँवाया है
प्यार तो है हमें जिन्दगी से

प्रेरणा गीत

निष्ठा लगन परिश्रम से
युग-युग तक जग याद करे
कोठरी मन की सदा रख
देख खुला है द्वार पुजारी
स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन
बदलो अपनी चाल
गिरिजा गिरे न मस्जिद टूटे
जिसे कसे हैं क्रूर प्रथाओं
थाम लो भारत माँ के लाल
ऐ मेरे दिल के टुकड़ों
ऐ हिन्द देश के लोगों
स्वागत गीत

आपका स्वागत है श्रीमान्
प्रभाती कोई दूर पर
मुसीबत कितनी ही आये
देवत्व को बचाने संघर्ष
यदि तुम अपना मन धो लो
नये जगत की नई कल्पना
आदमी–आदमी को सुहाता
जब तक मिले न लक्ष्य
जिसने जल–जलकर

चाहता है यदि सफलता
लाँघ चला सारी सीमायें
लाल ये मशाल पूज्य
किये मंत्र जप माला फेरी
ऐसी भी क्या कायरता
आज बेचैन है स्वर्ग
जिनके हों पद्चिन्ह अमिट
संस्कृति रही कराह
विश्वासों के दीप (अ)

विश्वासों के दीप (ब)
रंग बसन्ती प्रभा केशरी
रामायण पर्याप्त न पढ़ना
युग–युग से हम खोज
मानवता का पतन देखकर
भागीरथ तो गये किन्तु
फिर अपने गाँवों को
प्रगति पंथ पर एक साथ
आओ शिवसंकल्प करें

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में
उगो सूर्य की तरह गगन में
ग्राम स्वावलम्बन
जन्म शताब्दी वर्ष आ (अ)
जन्म शताब्दी वर्ष आ (ब)
न सोचो अकेली किरण
पर्यावरण बचाओ
आज आपके लिये दिलो में

विदाई गीत

ज्योति पुँज के द्वार साँझ
तुम्हें प्यार से था बुलाया
विदाई ले रहे सबसे
युग तीर्थ में जब साधक
महकना फूल सी बनकर
कुल की परम्परा मर्यादा
जिस डाल में बनकर फूल
पाकर जन्म पिता के घर

दीपयज्ञ गीत

दीपयज्ञ का पर्व आया
चलो करें स्वागत
सजे दीपक के थाल
घर-घर में निराली
जय महाकाल
जब तक करूणा पिघल
घर-घर, नगर-नगर में
शंख बजे दीप जले
जीवन के बुझते दीपों में

धरा पर अंधेरा बहुत

जब–जब सौ–सौ बाँह

दीप हैं जलते रहेंगे

आरती प्रार्थना

गायत्री माता की आरती

आरती श्री प्रज्ञापुराण की

श्री गायत्री चालीसा

गायत्री स्तवन

यज्ञ महिमा

आरती श्री सद्गुरु की

हे प्रभो अपनी कृपा की

संगीतमय शांतिपाठ

आरती शिव जी की

आरती श्रीमद्भगवत् गीता

ओ३म् जय जगदीश हरे

जय गणेश गणपति

श्री गणेश जी की आरती

श्री कृष्ण जी की आरती

विधाता तू हमारा है

कृष्ण जन्माष्टमी

जब जन्मे कृष्ण भगवान

जग में पीड़ा पतन बढ़ा है

हमको जीवन नीति सिखाने

कृष्ण गोविन्द गोपाला

श्री राधे गोविन्दा मन

कृष्ण कन्हाई मेरे कृष्ण

सखी आज गोकूल में

कब आओगे कृष्ण कन्हाई

आओ चक्र सुदर्शन धारी

जय गोविन्दा गोपाला

जो तू मिटाना चाहे

धन्वन्तरि

आयुर्वेद महान

जय धन्वन्तरि भगवान की

वृक्ष देवता वन्दना

आरती धन्वन्तरि जी की

दीपावली पर्व

आज दीप से दीप जलाओ
आई दीवाली
प्रेम उमंगे खुशियाँ लाया
दूर करेंगे तम अनीति को
संदेश नया कुछ लाया
दीप हैं जलते रहेंगे
ज्योति जली घर घर में
दीपावली शुभ पर्व पर
मिटायेंगे धरा पर
शुभ दिवाली आ गई

महाशिवरात्रि पर्व

जय देव-देव जय महादेव
हे महादेव हे महादेव
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
बोले मेरी सांसो का
संसार तुम्हारा जहाँ जहाँ
तुम भोले भाले शम्भू

जय–जय आद्यशक्ति शिव
हे नीलकण्ठ त्रिपुरारी
शिव शक्ति रूप भगवन्
शिव का सुमिरन
शिव भोले हितकारी

होली पर्व

मन का मैल मिटाने
मन में नव उल्लास भर
रंग बरसे मस्त मनायें होली
होली का पर्व देखो आया है
आया मंगल पर्व
होली आई रे आई रे
मस्ती में झूम जाओ
होली खेलो आज मिल
प्रज्ञा पुत्रों की टोली आई
आओ हिलमिल खेलें रे
खेलो खुशी से भैया
प्यारी होली रंग रंगीली

रंगों का ये मौसम
होली के रंग से प्रभो
समता का संग बजाता
रंग बसन्ती प्रभा केशरी
होली का आया त्यौहार
पर्व होली का आ गया

रामनवमी गीत

प्यार है यदि राम के
इस तरह रामनवमी
ओ लार्ड! यू आर दी काज़
श्री गुरुपद चिन्ह वन्दना